



श्री  
सिद्धांत शिरोमणि

खण्ड  
कर्त्ता,

स्वर्गस्थ कीर्तिमान् परमपूज्य ( गच्छाधिपति ) श्री श्री श्री  
१००८ श्री श्री श्री रेखराजजी महाराजके पौत्र गिष्य  
श्री महामुनि कुन्दनमलजी महाराज तच्छिष्य  
वालप्रह्वचारी मुनि श्री रामचंद्रजी महाराज.

छपाके प्रसिद्ध कर्त्ता,  
मगनमलजी गणेशमलजी कासवा, हिंगणघाट.

प्रथमावृत्ति-प्रत ५००

अहमदाबाद-“ भारतवधु मिन्टिंग वर्स ” छापखानेमें  
शाह वाडीजाल मोतीजालने छापा.

संवत् १९६७.-इ. स. १९१०. वीर संवत्. २४३६.

विना मूल्य.

## ॥ प्रार्थना ॥

- सिद्धांत शिरोमणि गद्य ए रच्यो बुद्धि अनुसार ॥  
खोट कसर होवे टिका लीजो विरुध सुधार ॥ १ ॥
- आगम अबुधि अति गहन नया तरंग अपार ॥  
अल्प मती क्षकृजालमें निपुण करे विचार ॥ २ ॥
- नहि बुद्धी नल याद कम नही सहायक लार ॥  
तदपि सुगुरु कृपायकी किंचित् कसो विचार ॥ ३ ॥
- पठण करो उस ग्रंथको पाठक रिवर करि गन ॥  
तत्त्व बोध छिनमे छुवे मिटे भ्रम भवि जन ॥ ४ ॥

गणेशमल कांसवा.

ग्रंथ कर्ता.

## सूचना.

इस ग्रंथको यत्नासे पढना, असातना नही करना.  
उगाहे मुंबे तथा दीपकरे सामने नही पढनां.  
और गुणोंके ही अनुरागी होना, दोषको गोज देना.



## मुनिश्रीका संक्षिप्त जीवन चरित्र.

मुनिश्रीका जन्मभूमि स्थान 'गारवाड' देशमें 'जोयपूर' राज्या-  
 र्गंत 'रीया' ग्राम हे. इनके पिताका नाम 'महाराजजी'. माताका  
 नाम 'वाली'बाड. मुनिश्रीका जन्म सन् १९३९ आश्विन शुद्ध १  
 ये शुभ दिनपर हुवा. जन्मके पाच म्हे वरस अनन्तर इनके मातापिता  
 कोइ मसंगप्राप्ततासे 'नया'शहर आ रहें. वहां चार पाच मास रहकर  
 फिर मातापिता तो 'जमी 'रिया' को पिटे चले गये. तब मुनिश्रीको  
 आग्रहसे इनके मातापिताके पाससे छेकर महाशय गेठ फसेचदजी  
 गुलाबचन्दजीकाकरिया नयाशहर घामी इनोने अपने पालन रख लीये.

इनका बाल्यभार बढती व्यतीत हुआ. एक समय स्वर्गीय पूज्य  
 फीर्तिमान गच्छाधिपति साधुवर्ग शिरोमणि व्याकरण शास्त्र कोष  
 छन्द न्यायाभो निधि सर्व गुणगणालहृत श्री श्री १००८ श्री श्री  
 'रेखराजजी' महाराज "तच्छिष्य" पूज्य श्री १०८ श्री 'नथमलजी'  
 महाराज "तच्छिष्य" महामुनि श्री कुन्दनमलजी महाराजका आगमन  
 हुना. उनका स्थानक्रमें व्याख्यान होता था. व्याख्यानको नगरवासी  
 सर्व जैनधर्मीय जन जाते थे. तिसमे ५० गुलाबचन्द काकरियादे  
 साथ बालपणमे मुनिश्री भी जाते थे. नित्य व्याख्यान सुननेसे  
 इनका वैराग्य भाव प्राप्त हुआ आर दीक्षा देनेको तैयार हुये. फिर  
 मातापिताके अनुज्ञासे मुनिश्रीके पास इनोने बडे धामधूमसे दीक्षा  
 धारण कीथी. तब इनकी ऊपर १३ वरसकी थी. " दीक्षा धारण  
 म्वत्त १९५२ म्येष्ठ शुद्ध ७ मी धे दीन हुवा. "

मुनिश्री अपने गुरुके साथ विहार करने लगे. यह गुरु शिव्यनं गथम चोमासा 'नया'शहरका ही कीरा. दूसरा चोमासा मेवाड शाह-पूरका. ३ रा चोमासा मेडतेका. ४ था शाहपुरका. ५ वां जिल्हा झालरापाटनकी 'जवनी'का. ६ ठा मेवाडमें केरुडीका. यह पांच चोमासों मुनिश्रीने अपने गुरु महाराजके संग करे. और छठे चोमा-सोंमें गुरुवर्यका वियोग काल आया. मुनि श्री 'वृन्दनमलजी' गुरुवर्य महाराजने आयुष्यकी समाप्ती जानकर ३ दीनका संथारा किया और चौथे दिन संवत् १९५७ श्रावण शुद्ध १० को स्वर्ग चले गये. फिर सर्व श्रावकोंने मिलकर मुनिश्रीकी महोत्सवसे प्रेत क्रिया कियी. उस समय आश्चर्यजनक रात यह हुई की उनका चोल पट्टा और गुपती अग्निसे विमल निरूले. इनपर एक ढाग भी नहीं था. यह जैनधर्म सत्क्रिया पालनका प्रभाव !

गुरुवर्यका वियोग हुआ. पासमें अन्य कोई सत नहीं. उमर नव तात्प्य दशाका आरभ. इस प्रकार सक्रममें भी धीरतासे सत्क्रिया चरण गुरुके पास ५ नरसकै किये ज्ञानाभ्याससे व्याख्यानदि मु-नवाना देश विदेशगमन इत्यादि करने लगे. उस चोमासेके बाद विहारकरके शाहपूर आये. ओर सातवां चोमासा श्रावकोंके विन-तीसे वहां शाहापूरका ही किया. वहांसे फिर 'नया'शहर आये. और पिपलीया बजार स्थानकमे उतरे. वहां सब श्रावक मुनिश्री को एकानी देरा और गुरुवर्यका वियोग मुन बहुत दुःखित हुए ओर फिर श्रावकवर्य गुलाबचंदजीने महाराजको वहांसे आगे जाने दिया नहीं. और एक विद्वान गीर्वाण भापा निपुण शास्त्रीको मुनिश्रीके ज्ञानाभ्यासके लिये रख दीया. उनके पास मुनिश्रीने कितने दिन तक अभ्यास किया. ओर आठमा चोमासाभी यहां का हुआ \*

\* यह जो आठ चोमासे मुनिश्रीने लगोलग (पास-पासही) किये हे सो कारणसे किये हैं (शास्त्रोंमें नियम तीसरे वर्षका है)

वहाँसे इतर (दूसरे) सतोंका सग मिलनेपर विहार करके मुनिश्री जोधपूर आये. वहाँ मुनिश्रीको शिष्यका लाभ हुवा. (जो अभी हर्षचद्रजी महाराज विद्यमान है.) फिर विहार करके मारवाड जिल्हा परवतसर ग्राम बडु आये. यहाँही नववा चोमासा कीया. दसवा फिर मारवाडांतर्गत गोडवाड गांतमें घाणेरावके पास सादडी शहरमें हुवा.

चोमासाके अनंतर विहार करके (श्रावकोंकी विनती आनेपर) जालोर पधारे और जालोरसे पीछे 'नयाशहर' आते मार्गमें 'रास' है यहां वैशाखके महिने आये (यह नयाशहरसे दस कोस है.) वहाँ मुनिश्री हर्षचद्रजीकी (संवत् १९६२ ज्येष्ठ शुद्ध १३ के दिन महोत्सवके साथ) दीक्षा हुई. मुनिश्रीको शिष्य प्राप्ति होनेपर फिर नया पहर आये. इग्यारमा चोमासा यहाँका हुवा.

घारवा चोमासा मेवाडमें शाहापूरका. तेरवा फिर सादडीका हुवा ॥ चोमासा होनेके पश्चात् मुनिश्री शिष्य सहित मेवाड उदेपूर राज्यान्तर्गत ग्रामोंमें विचरतेये. उस वस्त (संवत् १९६४) जिल्हा ग्वालियर शहर लप्करके श्रावकरवर्ष रीखवदासजी धाडीवाल मुनिश्रीके दर्शनार्थ रूपायली ग्राममें आये. और लप्कर आनेकी बहुत विनती की. विनतीको मुनिश्रीने मान्यकर अवसर देख लप्करको प्रयाण कीया, ( और भाई पीछे लौट गये. ) मार्गसे जाते २ देश हाडोती कोटा बुढी होते हुए देश झालावाड शहर झालरा पटण पधारे. वहाँ श्रावकरवर्ष रीखवदासजी लप्करके सर्व श्रावकोंके तर्फसे चोमासाकी विनती लेकर आ पहुचे. उस विनतीको मान्यकर मुन सीपरीकी छावनी होकर मुनिश्री लप्करमें आपाड शुद्ध १० मीकै आये. यह चन्द्रवा चोमासा यहाँका हुवा.

चोमासाके अनन्तर मुनिश्री आग्रा पधारे. आग्राके नगरीके  
 देखे मुनिश्रीका इरादा पजाबमें प्रवेश करनेका था. परन्तु उधरका  
 पानी बगैरा नही सधनेसे पीछे लौटना भाग पडा. फिर पीछे  
 छपार होकर सीपरीकी छावणी गये. धोली चोमासा यज्ञका  
 कीया. और वहा लक्ष्मीचदनी नामके पितर एक शिष्य ( महाराज  
 साहेबके ) हुए.

दीक्षा देकर मालवा भोपाल गये. वहां चोमासेनी विनती  
 होनेपर मुनिश्रीनें भोपाठमेंही चोमासा किया. यह पंथरावा चोमासा.  
 यह चोमासा होनेपर मुनिश्रीका विचार बुखारल होकर दक्षिणकी  
 ओर जानेका था. परन्तु वहाके मुख्य आतक फुलचदजी कोठारी  
 इन्होंने कहा कि मुनिश्री आप बदनूर बैतूल और भमरावती होते  
 हुए जाइये, वयोहि इस ओर आज तक कोई मुनिश्रीका जाना नही  
 हुआ है और मुनिश्रीके गमनसे ये क्षेत्र भी पुनीत होंगे. और धर्म  
 की भी बहुत वृद्धी होगी. परन्तु उधरका मार्ग विकट है तो श्रम  
 होवेगे. इस विनती पर मुनिश्रीनें उधर ही धर्म वृद्धीके वास्ते  
 आगमन किया.

भोपाठसे हुशगावाद और हुशगावादसे शिवनी धाये. शिव-  
 नीमें गोरक्षण करनेका निर्बंध किया गया. और मुनिश्री १ मास  
 ठहरे. वहा तपरया बगैरा भी बहुत अच्छी हुई.

फिर वहांसे इटारसी और इटारसीसे बदनूर आये. वहां शा-  
 फवर्य सेठ लखमीचदजी मिश्रीमलजी गोठी ( यह एक अच्छे श्रीमत  
 गृहस्थ है. ) और अन्य भी वहां दस बारा साधुमार्गी सांप्रदायके  
 घर है. परन्तु वहां कोई मुनि न जानेसे वे सब मन्दिरमार्गी ही रहे  
 थे. मुनिश्रीनें पधार कर सबको गुरु आम्नाय दी. और सब साधु-

पागी बनाये होती चोमारा भी वहाँका जीया. और २१६ रु० मुनिश्री के उपदेशसे जलधर कान्फरन्स को भेजे गये.

होती चोमासाके बाद बिहार रुके चांगोड बजार आये. वहाँ न्यातम दोन धडे थे. उसका मुनिश्रीने समेट जीया. वहाँसे फिर अमरावती आये. वहाँ मुनिश्रीके उपदेशसे एक (सिधा) धर्मस्थानक मोल लेने के लीये रु० ७०० इकठ्ठे कीये गये. मुनिश्री अमरावती आनेपर हम लोगोंको खबर समझी. हम भी ( चुनीलाठजी कटारिया खेमराजजी भडारी वक्तापरमलजी गाधी ) अन्यानंदसे मुनिश्रीको (आग्रहसे) जानेकी विनती करनेको अमरावती गये. वहाँ मुनिश्रीको नम्र विनती कर जरूर हिंणवाट जानेका आग्रह किया, जिससे मुनिश्रीने भी विनती मान्य की.

मुनिश्री अमरावतीसे चलेके उडनेरा आये. वहाँ भी धर्मस्थान-कके रास्ते रु० ७०० इकठ्ठे किये गये. वहाँसे याम्क बाहुलगांव इन क्षेत्रोंमें विचरते हुए राळे गांव आये. वहाँ भी ११०० रु० वर्ग-णी गार्मरानकके रास्ते कीयी गयी. और राळे गांवसे हिंणवाट आ पहुचे. रत्नचिंतामणी सभामें मुक्काम कीया. और ज्ञान वृद्धीमा उपदेश लगाया.

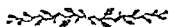
सं० श्रे० १५० १० वि० समा







## ग्रंथ प्रसिद्ध कर्त्ताका जीवन चरित्र.



मारवाड देशमें हरसोर नामक ग्राम है. वहां बहुत कालसे कासवा ये वंश वास करता है. वहां जे भाणजी नामके इसवंशके गुरु पुरुष थे. इनको ३ पुत्र हुए. जोहारमलजी ( १ ) नेमिदाभजी ( २ ) मगनमलजी ( ३ ). मगनमलजीका जन्म १८९९ संवत् में हुआ. जोहारमलजी और नेमिदाभजी व्यापार निमित्त द्विगणघाट आये. उनके बाद मगनमलजी भी संवत् १९१३ में भाईके पास आके व्यापार करने लगे. मगनमलजीका व्याह लृणकर्णजी पोगरणाके कन्या (दोलीवाई) से हुआ. भाग्यसे सपत्नी प्राप्त हुई, परंतु उनका सतान न रहा. फिर सपत्नीको वारिस होना इसलिये अजमेरमें जनानमलजी कासवा का पुत्र गणेशमलजीको दत्तक ( खोले ) लीये. यह ही इस ग्रंथके प्रसिद्ध कर्त्ता.

इनका जन्म स० १९४४ आश्विन वदि ० को छगणीवाईके कुक्षीसे हुआ. दत्त विधान १९५७ सालमें हुआ. तबसे मगनमलजीके सपत्नीके मालिक हो गये.

मगनमलजीका संवत् १९६४ में मृत्यु हुआ, तब गणेशमलजीकी उमर २० वर्ष की थी. इनोंने मृति श्री दयाचंजी के पास अजमेरमें सम्यक्त्व धारण लीथी. इनोंने रु० ७०० इस ग्रंथ छपानेमें खर्च कीये है. इस लीये इस महाशयको अन्याय है. और ऐसे ही अन्य महाशय पुस्तकें छपावें तो स्वधर्मीय लोगोंको और उसको ज्ञान प्राप्ती होगी. और जगत्के धन्यवादको पाव होगा.



प्रसिद्ध कर्ता

श्रीयुत. गणेशमल सिरदारमल कांसवा.

(जन्म स० १९२४)

(जन्म स० १९६६)

हिंगणघाट





## धन्यवाद.



यह 'सिद्धान्तशिरोणणि' अमूल्य ग्रन्थ, पूज्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री 'स्वामिदास'जी महाराजके सांप्रदायानुयायी पाटानुपाट बालब्रह्मचारी मुनिश्री 'रामचंद्र'जी महाराजने प्रणीत किया है। अनेक श्रावकोंके मन्त्र विनती पर लक्ष देके और उन्हो की अपने पास शिमल भक्ति देखकर मुनिश्रीने यह काम हाथमें लिया. और २ मासके अत्यल्पावधिमें बहुत ग्रंथ निरीक्षण करके सारभूत सत्रः फलदायक ऐसे प्रचुर विषयोसे यह ग्रन्थ पूर्ण किया. इसमें मुनिश्री इतर कर्म व्यग्रतासे बहुत श्रम पाये. लोकोद्धारार्थ देह भी समर्पण करनेका दृढ मनःपरिग्रह, उस मुनिश्रीों ये श्रम कुछ मनमें लाये नहीं। इसके हृम अनतवार मुनिश्रीपदाब्जी प्रणत हो कर आजन्म आभारी है. यह उपकार और भव व्याघ्र जभाके भयसे यह ग्रन्थरूपस्वह्मने वचाया इसके पावेपर देह घसघस यदि व्यय कीया जाय तो भी भर पानेका नहीं. यह निश्चित है. मुनिश्रीकी इस विषयमें प्रशंसा की उतनी थोड़ी है. हम भविजन यदि अहर्निश आजन्म स्तुती करेंगे, तथापि थोड़ी ही है. मुनिश्री की पूज्यता देख हम हर्ष मुग्ध हो गये है इसलिये मुनिश्रीको अनंत पूज्यवाद समर्पण करते है.

समेतही इस ग्रथका स्व द्रव्य खर्चकर छपाके प्रसिद्ध करने हारा को भी धन्यवाद दीये जाते है. मुनिश्रीके नित्य व्याख्यानका परिणाम जिगोदे मन पर हुवा उनमेसे यह गृहस्थ एक है. इनका नाम 'मगनमलजी ग.प.शमलजी कासवा' इन्होंने अपना और दूसरेका भी तारण करनको (ज्ञानवृद्धीसे) स्व द्रव्यसे उपाय कीया. मुनिश्रीका अमूल्य ग्रथ भवपारदायक इम् उपायसे आदीनधनी जनको विना मूल्य जान लाभ देवेगा । यह सर्व श्रेय महाशय 'गणेशमलजी'के ऊपर ही है. और वे शतशः धन्यवाद पात्र है.

श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी ( साधुमार्गी )

रत्नचितामणी सभा.

शहर हीगणघाट जीले वर्धा.

( सी० पी० )

### प्रेसमालककी विनंति.

हिगणघाट सभाकी ओरने जो पोथी छापनेको मुझे मिलीथी बराबर उस मगनुग मुजबही छापनेका मेरा अधिकार था और उस मुजब ही छाप दिया है और भी सभाके हुकमसे मेने यह काम उति ही शीघ्रतासे याने १२ मासका काम ३ मासम पूरा कर दिया है

मालक, ' भारतवधु प्रिण्टिंग वर्कस '



## भूमिका.



॥ ' स्व स्वधर्म स्ताः सर्वे प्राप्नुवन्ति परांगतिं ' ॥



सुष्ठु महाशयो !

इस दुस्तर और दुःखमय भव सागरके पार होनेको एक धर्मही मार्ग है । धर्म विना अन्य मार्ग नहीं. अर्थात् जो जो प्राणियोंको मुक्त होनेकी अभिलाषा होवे इस मार्गसे अवश्य क्रमण करे । परन्तु यह धर्म जाननेकी बुद्धी एक मानव प्राणियोंमेंही है, जिस कारणसेही मानव श्रेष्ठ समझा जाता है. केवल यह ही नहीं तो स्वदेहको कष्ट दे अपने मनको आत्मवश कर धर्मके तत्वसे वर्ताव करनेकी भी शक्ति उत्पन्न कर सकता है यह श्रेष्ठ कारण है.

प्रत्येक प्राणियोंको उनके भाषासे कहा समझता है; परन्तु एक स्वाभाविक धर्म छोड़ मोक्षमार्गसे जाना यह बुद्धी उनको होती नहीं. यह बुद्धी मानवको उपदेशसे आती है और उसमें वर्ताव करनेकी उत्सुकता भी प्राप्त होती है, तस्मात् मानव श्रेष्ठ है.

परंतु यह धर्म मार्गसे मानव यदि क्रमण न करै तो तिर्यच प्राणीमें और मानवमें कुछ भी तफावत नहीं, वह पशु ही है. क्योंकि कहा है:—

‘आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणां ॥  
ज्ञानं हि तेषामधिकं विशेषे ज्ञानेनहीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार सुषुप्त्यादि सर्व गुण सर्व प्राणियोंमें वास्तव्य करते हैं जैसे मानवमें भी है तो मानवेतर और मानवमें फिर अंतर क्या है? कुछ भी नहीं. मानव पशु ही है—बलके पशुसे भी नीच है. धिक्कार ! मानवको; यदि उसे सिंहासन मिलके उस मुताबिक वर्तान करता नहीं.

तिर्यचोंको अपने धर्मसे चलना यह अभिमान—और मानव पराया धर्मका अनुकरण करता यह देव अज्ञानी तिर्यचोंको सदेह ही प्राप्त होता है कि ‘अपन कौन? और ये कौन? वर्तान तो एक ही है. क्या हम मानव हैं? अगर हो तो (हसके) अत्यानदसे हमको भी मुक्तता प्राप्त होगी’। तिर्यच यह नहीं समझता कि मुक्ति मिलनेका मार्ग अन्य है. क्योंकि मानवको यह श्रेष्ठ समझके उसके मुताबिक वर्तान करना चाहता है. कहा है:—

‘यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः’

जैसे श्रेष्ठ आचरते हैं वैसे इतर भी आचरते हैं ॥ मानव सदृश अपना भी वर्तन समझकर आनंद मानते । इसका कारण यह है की मानवोंने अपना जो श्रेष्ठाचरण उसको छोड़ दिया यह एक प्रकारका अपमान है. नीचने ऊंचके समान बैठना यह क्या ठीक है ? यह व्यावहारिक दृष्टान्तसे भी जान पड़ता है.

कर परम पुण्यसे मानव देह लेता है, क्यों, कर ? मुक्तयथं. मानव देहमें जाकर ज्ञानसे मुक्ति प्राप्त करना यह जीवका इष्ट हेतु.

## ज्ञान प्राप्त करनेको धर्म होना.

उक्तं च:—

‘धर्मोऽय वै ज्ञान मार्गोपदेशो येनाय वै शुद्धतां याति देहः’ ॥

धर्मका शास्त्रोक्ताचरण ऐसा अर्थ है. उसके जीवदया दान इत्यादि अर्थ भी होते हैं. यह धर्माचरण करके मुक्ति प्राप्त होती है। देखिये; जीवोंके उपर दया करना जिसको जीवदया कहते हैं.

दान देना यह गरीबोंके उपर एक प्रकार दया ही है. और धन-मानादिक प्राप्त हुये उपर मत्तता प्राप्त होती है उसको शासन सन्मार्ग पर लाना इसको शास्त्रोक्ताचरण बोलते हैं. यह आचरण कर परिजनको आनन्द जिससे वे भी सन्मार्गका वर्ताव करते हैं. किं बहुना? प्राणसे भी प्यारा अपना धर्म समझते हैं.

कहा है कि:—एकः प्रेम्णा पश्यत्यन्यः पश्यति तथैवतप्रेम्णा ॥

तत्सदृशाचरणं तत्कुरुते गच्छत इतः परभद्र’ ॥

यह धर्माचरणसे मोक्ष मिलता है. पुण्यसे ईह परत्र सुख होता है. दयासे कीर्ती प्राप्त हो कर नाम मरे ऊपर भी चिरस्थायी होता है. जिधर उधर अत्यानन्द हो परिजनोको भी उसका अनुकरण करके मुक्ति प्राप्त करनेकी इच्छा होती है.

देखिये महाशयो ! यह मानव देहसे कितना लाभ है?



## यह धर्म किस तरह है?

अनेक संशयोच्छेदी परोक्षार्थस्यदर्शकम् ॥

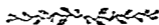
सर्वस्य लोचन शास्त्रं यस्य नास्त्यथ एव सः ॥

मनमें आये हुवे अनेक संशयोंका छेदन कर श्रेष्ठ फल दिखाने-चाला यह शास्त्ररूप लोचन नाम नेत्र है, यदा यदा मानव सन्मार्गसे भ्रमित हो अन्य मार्ग पर जाता है उसको फिरसे उसी मार्ग पर यह शास्त्रही लाता है ॥ इसको लोकमें 'विवेक' कहते हैं, विवेक शास्त्र ग्रंथोंके पठणसे आता है, अर्थात् पठण करना अत्यावश्यक है.

यह उद्देशसे ही यह ग्रंथ करनेमें आया है, पूर्वकालमें अपने पूर्वज बहुतरे धीमान् हो गये, उन्होंने क्वि प्रणीत सस्कृत अर्द्ध-मागधी भाषाके मूल ग्रंथ पठण किये, परंतु इस कालमें सस्कृत मागधी अल्पमति लोक बलके और निरुद्योगी चैनी होनेसे उनको अगम्य हो गया है, जिससे मोक्ष और ज्ञान और धर्म उनको मिलना अशक्य है, यह देख पूर्वज बहुत दयासे सस्कृत मागधीकी भाषा करनेमें उद्योगी भये, यह उपकार फिटता नहीं, वह ही भाषा प्रबंध प्रायः मार्ग दिखानेमें दक्ष है, यह मनमें ले कर ये ग्रंथ रचना की है, जिसको निरंतर एक चित्त पठण कर मुमुक्षु महाशय ज्ञान और धर्म प्राप्त करेंगे यह प्रबल आशा है.



## ग्रंथका संक्षिप्त वर्णन.



इस ग्रंथका नाम सिद्धान्तगिरोमणि है. ये २ खण्डमें विभक्त किया है. दोनो खण्ड मिलके एकदर ३८ प्रकरण ग्रथित किये हैं. प्रथम खण्डमें ७ और दुसरेमें ३१ डाले हैं. इस ग्रंथभी जैन धर्मीय लोगोको जो जरूर सो सत्र आया है. इसमें नित्य स्तवन स्तोत्र छन्द और ज्ञान विषय भी भली भांति रखे गये हैं. यह श्रावक तथा साधु लोगोके पठन पाठन योग्य है. जिससे सावधान वाचन करने पर धर्म ज्ञान और मोक्ष लाभ होवेगा, ये निश्चित है. इस प्रकार ग्रंथ मुनिश्रीनें भविजन तारणार्थ किया और गणेशमलजी कासवाने प्रसिद्ध किया ये जैन धर्मीय लोगो पर उपकार हुआ है. उनकी उदारताको धन्य है.

सर्व भाइयोका कृपाभिलाषी,

भवानीदासजी चुनीलालजी कटारिया }  
 प्रेसिडेंट,  
 श्री जैन श्वेतांबर स्थानरूत्रासी  
 (साधुमार्गी) रत्नचिंतामणि सभा.  
 हिंगणघाट जि० वर्धा.  
 सी. पी.

जेठमल लोढा, सेक्रेटरी  
 रत्नचिंतामणी सभा.  
 हिंगणघाट.  
 जि० वर्धा.  
 सी. पी.



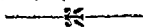


## अनुक्रमणिका.

सामायिक—प्रतिक्रमणादिक नित्यस्मरणम्.

१ सामायिक.	१
२ प्रतिक्रमण.	७
३ दश पञ्चखण्ड.	२१
४ तीर्थ मनोरथ.	३५
५ चार सरणा.	३७
६ चौदे नियम.	३९
७ सामायिकके ३२ दोष.	४१
८ अणुपूर्वि.	४४
९ २४ तीर्थरकरके नाम.	४९
१० २० विहरमानके नाम	५०
११ ११ गणधरके नाम	५१
१२ सोल सतीके नाम	५२
१३ आलोयणा अथवा संथारा करनेकी विधि.	५३
१४ पद्मावती.	६१
१५ उपदेशक दोहा.	६६

# सिद्धान्त शिरोमणि-प्रथम खंडः



## प्रकरण १ ला—स्तोत्रः—

१ चतुर्विंशति जिनस्तुति.	१
२ अकलंक स्तोत्रम्.	२
३ महिम्न स्तोत्रम्.	४
४ सिद्ध विंशतिका.	९
५ सिद्धान्तेऽष्ट पदार्था दुरधिगम्या.	११
६ महावीराष्टक	१२
७ जिन सहस्र नाम स्तोत्रम्.	१३
८ वर्धमान स्तोत्रम्.	२२
९ दर्शन स्तोत्रम्.	२४
१० पार्श्वनाथ स्तोत्रम्.	२५
११ पार्श्व स्तोत्रम्.	२५
१२ आत्मरक्षा स्तोत्रम्.	२६
१३ पचपष्टि यत्र स्तोत्रम्.	२७
१४ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्.	२८
१५ पार्श्व स्तोत्रम्.	२८
१६ शांतिधारा	२९
१७ ब्रह्मशांति स्तोत्रम्.	३२
१८ उवसगहर स्तोत्रम्.	३४
१९ जिनवानी अष्टक.	३५
२० परमात्मा स्तोत्रम्.	३५

## प्रकरण २ रा—छन्दः—

२१ पार्श्वनाथ छन्द.	३६
---------------------	----

२२ पार्श्वनाथ स्वामिनो शिलोको.	४३
२३ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.	४८
२४ " " "	४९
२५ " " "	५०
२६ छन्द-भुजग प्रयात	५१
२७ पार्श्वनाथ स्वामी छन्द.	५१
२८ सिद्धाष्टकम्.	५२
२९ शान्तिनाथाष्टकम्.	५३
३० ऋषभदेवनो छंद.	५४
३१ पार्श्वनाथ स्तुति.	५५
३२ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.	५६
३३ " " "	५८
३४ शान्तिनाथ स्वामिनो छंद.	५९
३५ गौतम " "	६१
३६ चिंतामणीनो छंद.	६१
३७ शान्तिनाथ प्रभूनो छंद.	६२

### प्रकरण ३ रा--पद:-

३८ भवि तुम सांझ सवेरे जिनवदो.	६५
३९ माया मतवाली निज ज्ञान भुलावे रे.	६६
४० कैसे कर ए वहेरे अज्ञानी.	६६
४१ पृथ्वी पति अरज हमारी.	६६
४२ सतगुरु साचे सिपाई.	६७
४३ काची कायारे तेरा क्या गुन गावूं	६८
४४ साहीनका नाम समर.	६८
४५ बुधजन पक्षपात तज देखो.	६९
४६ समजका घर दूर है वटा.	६९
४७ जिउ जाणो जिउ थांगनाथजी	७०

४९ ओंधु राम राम जग गावे.	७१
५० आसा ओरनकी क्या कीजे.	७१
५१ ओंधू नाम हमारा राखे.	७२
५२ ओंधू क्या मांगू गुनहीना	७२
५३ अब हय अमर भये न मरेंगे.	७३
५४ नाथ जगमें माया जाल बिछाया.	७३
५५ अये प्रभुसुनिये अरज अत्र म्हारी	७४
५६ नाथ तेरे चरणनकी में दासी.	७४
५७ जगदीश जगतपति प्यारा.	७६
५८ जगदीस मैं शगण तुमारी प्रभु.	७६
५९ सुन सत्य वचन मेरा.	७६
६० सुन नाथ अरज अब मेरी.	७६
६१ विना प्रभुके भजन मुफत जनम गुमाया.	७७
६२ अये दीनबंधु आज मेरी अरज सुन जरी.	७७
६३ मान मान मान कदा मान ले मेरा.	७८
६४ जाग जाग जाग मोह निंदसे जरा.	७८
६५ गाफिल तु जाग देख क्या तेरा स्वरूप है.	७९
६६ अपनेको आप भूलके हैरान हो गया.	७९
६७ गफलितसे जाग देख क्या.	८०
६८ अगर है मोक्षकी बांछा.	८०
६९ सुनो दिलको लगा प्यारे.	८१
७० विना प्रभु नामके सुमरे.	८१
७१ करो प्रभुका भजन प्यारे.	८२
७२ प्रभुको समर पियारे.	८२
७३ क्या भूलिया दिवाने.	८३
७४ गाफिल तु सोच मनमें.	८३
७५ इश्वर में दास तेरो.	८४

७६ चंचल मन निशदिन भटकत है.	८४
७७ अनहद धुनि सिरपे वाज रही	८४
७८ मेरी सुरत गगनमें जाय रही	८५
७९ दे दर्शन मोहै आज सावरिया.	८५
८० अब तो तजो नर रति विषयनकी.	८५
८१ जो के गर्मका इकरार था.	८६
८२ जो के इसका उपकार था.	८६
८३ जो के मोतका दीन आयगा.	८७
८४ भजन विन विरथा जन्म गयो.	८७
८५ भजन विन भवजल कौन तरे.	८८
८६ मुसाफर क्या सोवे ?	८८
८७ मुन मेरे मना अब तो समज कर चाल.	८८
८८ करोरे नर प्रभु चरनसे हेत.	८९
८९ घटहिमें उजियारा साधो	८९
९० " " " "	९०
९१ जोय जुगत हम पाइ साधो.	९०
९२ अनहदकी धुन प्यारी साधो.	९१
९३ सोहं शब्द विचारो साधो.	९१
९४ नाम निरंजन गावो साधो.	९२
९५ सतसंगत जग सार साधो.	९२
९६ गुरु विन कौन मिटावे भव दुःख	९२
९७ यह जग सूपना हे रजनीका.	९३
९८ जाग मुसाफिर क्या सुख सोवे ?	९३
९९ रे चेतन पोते तूं पापी.	९४
१०० चिंता वेग हरो.	९४

प्रकरण ४ था—स्तवनः—

१०१ प्यारा लागैजी, रुडा लागैजी.	९५
---------------------------------	----

१०२ अगज सुणीजे हो, मारानव भवराभरधार	९६
१०३ जिणद मोरी करणी नाहि निहारो	९७
१०४ वागुरको उर ध्यान हमारै	९८
१०५ सुगुरुकी शीख सुनो चतुरा रे	९९
१०६ अब तू चेतरे भाइ	९९
१०७ समज मन जीवडा.	१००
१०८ लख चउरासी मांहे.रुलता.	१०१
१०९ काई रे गुमान करे जीवडा.	१०२
११० गुमानी जीवडा गुरु ग्यान बतावेरे.	१०३
१११ गुफामें ध्यान धर्यो रहनेम.	१०४
११२ रटीये नाम नीरजनको रे.	१०५
११३ वृथा जन्म गमायो, जिनेसर-	१०५
११४ चाल सखी चित चावसू.	१०६
११५ दर्शन पायो मे सतगुरुको.	१०७
११६ मन थिर कर सुनियो जीनवानी.	१०७
११७ जी जीवा पचाश्रय दुखदाय,	१०८
११८ इतरानें दिक्षा मती दिजो.	१०८
११९ घामानंदन वदन हो.	१०९
१२० मुज गुरुको निंदो मती.	११०
१२१ क्रिण विध भेटूं हो जिणंद थारा चरणामे	
१२२ हांजी मझुजी लख चोरासी मांही.	११२
१२३ समवसर्या कोसवी श्री जिनराज रे.	११३
१२४ निंदक सम पापी नहीं जगमें.	११४
१२५ में तने वरजू रे स्यानां.	११५
१२६ मानव भव निरफल हार मती.	११५
१२७ पूज कनीरामजीरो जाप करो.	११५
१२८ पुत्र नाम तणी महिमा भारी.	११६
१२९ बालक सू तो मीत करे.	११७



१३० ऋषभ अजित संभय अभिनंदन.	१२१
१३१ प्रणमूं सिरीमधर सामी.	१२२

### प्रकरण ५ वा-लावणी:-

१३२ महावीरजीन जन्मसुदिन सुन	१२३
१३३ भला गुरु सोढी हे जगमें.	१२४
१३४ श्रावक सब ही है सच्चा.	१२४
१३५ बडा गुण शीलतणा जगमें.	१२५
१३६ भला है दान सदा देना.	१२५
१३७ सज्जन तप निहचें कर तपनां.	१२५
१३८ सुझानी जब लग मन गंधा.	१२६
१३९ सज्जन सुन क्रोध नही करना.	१२६
१४० सज्जन सुन मान बैग त्यागो.	१२६
१४१ सज्जन सुन माया दुखदाता.	१२७
१४२ सज्जन सुन लोभ दुष्ट भारी:	१२७
१४३ फकीरी या विधि ते साची.	१२७
१४४ सज्जन तूं गाफल किस बल तेरे.	१२८
१४५ जै शिव कामिनिकत वीर भगवंत.	१२८
१४६ लखी जिनचंद छवी थारी.	१२९
१४७ जातवंत शिक्ष हुवे सुपातर.	१३०
१४८ अव अवनीत शिष्य भये ज जैसे.	१३१
१४९ करामात कलजुगमें थोडी.	१३२
१५० अरे वागुवा गुल मत करे.	१३३
१५१ नाम प्रभूका दिलमें प्यारे.	१३४
१५२ सुन दिल प्यारे भज करले.	१३५
१५३ करौ प्रभुका भजन जन्म यह वार	
वार नहीं आता.	१३७

१५४ गर्भभासमें कौल कियाथा.	१३८
१५५ श्री जिन नाम निज सार मंत्र है.	१३९
१५६ त्रिया सात घोरोसे निकली.	१४०
१५७ वे वे कर्मोंके हात अंठ लिखनेका.	१४२

### प्रकरण ६ द्वा-होरी:-

१५८ प्रथम पुरुष राजा प्रथम.	१४४
१५९ राक्षसरूप बनें सब दुनिया.	१४९
१६० हमारे ऐसी होरी मन भावें.	१५०
१६१ या विधि होरी मचावें.	१५१
१६२ सुमति गृहे होरी मचाइ.	१५१
१६३ या कहा आदत पिय तोरी.	१५२
१६४ शाम कैसी खेलत होरी.	१५३
१६५ आयो बसत सखीरी.	१५३
१६६ सखी मिल खेलो शाम संग होरी.	१५४

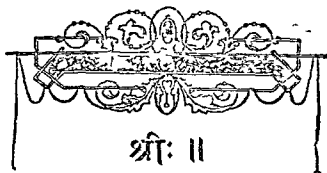
### प्रकरण ७ वा-व्याख्यान.—

१ आदिनाथ चरित्र.	१५५
२ ऋषभ प्रभु छद.	१६५
३ खदक पद्मविंशी.	१६७
४ फाटका निषेध.	१६९
५ महावीर जन्म कल्याण.	१७०
६ सत्यघोष चरित्र.	१८३
७ मुम्मन श्रेष्ठी चरित्र.	१९३
८ सागरांतर्गत गाफलरी ढाल.	१९७
९ देखोजी कनइयो खेले.	२०१
१० रुखमणीको कागद.	२०२
११ रामचरित्र-रावण प्रति सचिव वाक्य.	२०३
१२ सखी प्रति राजुल वाक्यम्.	२११

## द्वितीय खंड.

प्रकरण १ ला—नवतत्व.	२१५
” २—लघुदंडक.	२५०
” ३—भवनद्वार.	२८०
” ४—ज्योतिषीद्वार.	२८६
” ५—विमानिकद्वार.	२९९
” ६—गुणठाणाद्वार.	३११
” ७—पदवीद्वार.	३३२
” ८—सिद्धणद्वार.	३४१
” ९—विरहद्वार.	३४४
” १०—रूपीअरूपीद्वार.	३४७
” ११—सो बोलनो वासठियो	३४९
” १२—९८ बोलनो वासठीयो.	३५५
” १३—योगको वासठियो.	३६१
” १४—४३ बोलनी अल्पावहुत.	३६५
” १५—६५ बोलनी अल्पावहुत.	३६९
” १६—६२ बोलनी अल्पावहुत.	३७१
” १७—दिसाणुवाइ.	३७४
” १८—लड्डी.	३७८
” १९—कायस्थित.	३८७
” २०—गतागत.	३९७
” २१—सजया.	४०४
” २२—नियठा.	४१७
” २३—पंचमुमति तीन गुसीनो स्वरूप.	४३२
” २४—दस श्रावक यत्र.	४३५
” २५—इन्द्रिय द्वार.	४३९
” २६—सम्पवत्व स्वरूप.	४४३
” २७—प्रमाण बोध.	४४८
” २८—चौदा बोलनी लड.	४५६
” २९—चक्रवर्ति यत्र.	४५९
” ३०—बध्ने लगा मुक्के लगाना बोल.	४७०
” ३१—५६३ जीवके भेदनी चर्चा.	४७७

अगरचन्द्र (१) विद्या (२) विद्या  
जैत नचान्य ।  
धीदानं (२) (संस्कृतम्)



श्रीः ॥  
अथ नमस्कार ॥



णमो अरिहताण (१) णमो सिद्धाण (२) णमो अयस्सियाण (३)  
णमो उवज्झायाण (४) णमो लोये सच्चसाहण (५) एसो पच  
णमुधारो (६) सच्च पाप्पणासणो (७) मंगलार्ण च सच्चवेमि (८)  
पढम हवइ मगल (९) ॥

इति नमस्कार समाप्त ॥



अथ तिम्वुत्तोकी पाठी ॥

तिम्वुत्तो आयाहिण पयाहिण, वढामि, णममामि, सकारेमि.  
समाणेमि, कल्लण, मंगल, देवय, चेड्यं, पज्जुवासामि  
मत्थएण वढामि ॥

इति तिम्वुत्तोकी पाठी समाप्त ॥

## अथ इरियावहियाएकी पाठी ॥

इच्छामारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कामि इच्छम्.

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए (१) गमणा  
गमणे (२) पाणवमणे (३) वीयक्कमणे, हरियक्कमणे (३)  
ओसाउत्तिगपणगदगमट्टीमक्कडासताणासंक्कमणे (४) जे मे जीवा  
विराहिया (५) एगिदिया, देइदिया, ते इदिया, चउरिंदिया, पच्चि-  
दिया (व) अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघादया, सघट्टिया, परिया-  
विया, किलामिया, उद्विशा, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ  
ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७) ॥

इति इरियावहियाएकी पाठी समाप्ता ॥

## अथ तस्सउत्तरीकी पाठी ॥

तस्सा उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विस  
हीकरणेणं, पावाणं, कम्मण, णिग्घायणट्टाए, ठामि काउस्सग (८)

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,  
उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्चाए (१) सुहुमेहिं अंगसं-  
चालेहि सुहुमेहिं खेल संचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि (२) एव-  
माइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो (३)  
जाव, अरिहंताण भगवंताणं, णमुक्कारेण, न पारेमि (४) ताव, कायं.  
ठाडेण, मोणेणं, ज्ञाणेणं, अप्पाण, वोसिरामि (५)

इति तस्सउत्तरीकी पाठी समाप्ता ॥

## अथ लोगस्सकी पाठी ॥

अनुण्डुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थगरे जिणे । अरिहते कित्तडस्सं,  
चउवीसपि केवली ॥ १ ॥ [ आर्यावृत्त. ] उसम १ मजिय २  
च वदे, सभव ३ मभिणं ४ च सुमड ५ च । पउमण्ह ६ सुपास ७,  
जिण च चदण्ह ८ वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्हदंतं ९, सीअल  
१० सिज्जस ११ वासुपुज्जं १२ च । विलम १३ मगत १४ च  
जिण, धम्म १५ सति १६ च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं १७ अर १८ च  
मल्लिं १९, वदे सुणिसुव्वय २० नमिजिण २१ च । वंदामि रिद्वनेमिं  
२२, पास २३ तह वद्धमाण २४ च ॥ ४ ॥ एवं गए अभियुआ,  
विहुयरयमला पहीगजस्मरणा । चउवीसपि जिगवरा, तित्थारा मे  
पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्थिय वदिय महिया, जे ए लोगस्स उतमा  
सिद्धा । आरुग गोइलाभं, समाहिवर सुत्तं दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु  
निम्मलयरा, आउच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्ध  
सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामरु लोगस्सकी पाठी समाप्ता ॥

## अथ सामाइक लेनेकी पाठी ॥

करेमि भते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियपं  
पज्जुवासामि, दुविह तिविहेणं, न करेमि, नकारवेमि, मगसा, वयसा,  
कायसा, तस्स भते, पडिकमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं  
वोसिरामि ॥

इति सामाइक लेनेकी पाठी समाप्ता ॥

## अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुगंकी पाठी ॥

नमोत्थुगं, अरिहंताणं भगवंताणं (१) आङ्गराण तित्यगराणं,  
सय सवुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाण, पुरिससीडाणं, पुरिसवरपुंडरीयाण,  
पुरिसवरगधहत्थीगं (३) लोगुत्तमाणं, लोगनाहाण, लोगहियाण,  
लोगपईवाण, लोगपञ्जोयगराण (४) अभयदयाणं, चमखुदयाणं,  
मग्गदयाण, सरगदयाणं, ( जीयदयाणं ) वोहिऱ्याणं (५) धम्मदे-  
याण, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीगं, धम्मवरचाउरंत-  
चकरुवट्टीणं (६) दीवोताणं सरगगइपइठ्ठा ) अप्पडिह यवरनाणंदस-  
णधराण, त्रिभट्टुत्तमाणं (७) जिगाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,  
बुद्धाण वोइयागं, सुत्ताणं मोयगागं (८) सब्बन्नुगं सब्बदरिसीगं,  
सिव मयल महअ मगंत मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धिगंइ  
नामत्रेय ठाणं सयत्ताणं, नमो जिगाणं जिभमयाग ( ९ ) ॥

इति शक्रस्तवनी पाठी समाप्ता ॥

## अथ सामाधिक पारनेकी पाठी ॥

नमो सामायिक वतरे विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो  
आलोउ ॥ मन, वचन, कायारा जोगपाडुवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३  
सामायिकमें संभालना नहीं कीयी होय ४ अणपूगी पाठी होय ५  
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मनरां, दस वचनरा, वारे कायारा,  
वत्तीसे दोपांमायलो कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्क-  
डं ॥ सामायिकमें छी कथा, भक्त कथा, देश कथा, राजकथा, ए  
चार कथा मांयली कोई विरुथा कीयी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पाडनेकी पाठी समाप्ता ॥

## सामायिक पाठ्या पछे एवं पाठ कहवुं.

सामायिक समकोणं, फासियं, पालियं, सोडियं, तीरयं, क्रि-  
त्तिय, आराहिय, आगाएअणुपालिय, न भवद तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाठियां समाप्त ॥

## अथ सामायिक लेने की विधि ॥

आसण छोड, दो हात जोड, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, “इरि-  
यावही” की पाठी “जीवीयाओ ववरोचिया तस्स मिच्छामि दुक्कडं”  
पर्यंत भणवी ॥ पछे—“तस्सुत्तरीकी” पाठी भणने काउस्सग  
करवो. काउस्सगमें “इरियावही” की पाठी “जीवीयाओ ववरो-  
चिया” पर्यंत मनमेंही गुणभी “नमो अरिहताग” मनमें कहिनें  
काउस्सग पाठवो. पछे “लोगस्स” की पाठी कहवी ॥ पछे  
“करेमि भते” की पाठी “जाव नियम” सुधी कहिनें आगल  
सुहर्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे “पज्जुवासापि” थी ले  
“अप्पाण वोसिरामि” सुधी पाठ कहवु ॥ पछे डावो गोडो ऊभो  
साखी टोट्टु हाथ जोडी “नमुत्थुण” नी पाठी दोय वार कहवी ॥  
दूजा नमुत्थुण रे अते “ठाण सपाविउ कामस्सण णमो जिणाणं  
जिअ भयाण” एम कहवु ॥ पछे आसण माये बेसीनें, सामायिक  
कालमें “नमोकार, तथा बोलचाल” गुणणा, पढणा ॥

इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्ता ॥



## अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाडती वगत “ इरियावही ” की पाटी और “तस्स उत्तरी” की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमें “लोगस्स” की पाटी मनमें कहवी. ‘ नमोअरिहताणं ’ कही काउस्सग्ग पारवो. फेर ‘ लोगस्स ’ प्रगट कहणो ॥ दौय नमुत्थुणं पूर्ववत्त कहणा ॥ पछे नवमो सामायिक पारवाकी पाटी “ न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड ” सुगी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही जठुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्ता ॥





## अथ प्रतिक्रमण ॥

### अथ इच्छामिणं भंतेकी पाठी ॥

इच्छामिण भते तुव्भेहिं अभणुणायसमाणे देवसियं पडिक्कमणं  
ठाएमि, देवसिय णाण वसण चरित्ताचरित्त तप अतिचार चित्त-  
णार्त्यं वरेमि काउस्सग ॥

इति इच्छामिण भंतेकी पाठी समाप्ता ॥

### अथ इच्छामिं ठामिकी पाठी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग जो मे देवसियो अइयारो कओ,  
काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मगो अक्कप्पो अकरणिज्जो  
दुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणायारो अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो  
नाणे तहदंसणे चरित्ता चरित्ते सुण सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउ-  
न्हं रुसायाण पंचन्हमणु व्वयाण तिन्ह गुणव्वयाणं चउन्हं सिव्वत्ता-

वयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिय जं विराहियतस्स  
मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्ता ॥

### अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभया-  
गमे; एहवा श्री ज्ञानके विपै जे कोर्ट अतिचार लागो होय ते  
आलोउं; जवाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीणक्खर ३ अच्चक्खर ४ पय-  
रीगं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीण ८ सुट्टुदिन्न ९ दुट्टु  
पडिच्छियं १० अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ  
१२ असांज्जाए सज्जाइय १३ सज्जाये न सज्जायं १४ भणता गुणतां  
चित्तवतां ने विचारता ज्ञान अने ज्ञानवतनी आशातना कीनी होय  
तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति आगमे तिविहेकी पाटी समाप्ता ॥

### अथ दंसण श्री समकित की पाटी ॥

आर्या वृत्तम् ॥

अरिहतो महदेवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्तं  
त्तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहिय ॥ १ ॥ परमत्थ सथवो वा, सुदिठपरम-  
त्थसेवणा ववि । वावन्नकुदसणवज्जणा य सम्मत्तसदहणा ॥ २ ॥

एवा श्री समकितके विषै जे कोई अतिच्यार लागो हुवे तौ आलोउं  
जिन वचनमें शंका आणी होय १ परदर्शनरी वाडा कीधी होय २  
फल सदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी प्रज्ञसा कीधी होय ४  
पर पाखंडीरो संस्तव परिचय कीधी होय ५ तौ म्हारा समकित  
रूप रत्नरे विषै मिथ्यात्व रूपरज, मैल, खेह लागो होय तस्स मि-  
च्छामि दुक्कड ॥

इति दसण श्री समकितकी पाटी समाप्ता ॥

## अथ वारे व्रत और उनके अतिचार ॥

१ पहिलो अणुव्रत—धूलाओ पाणाइवायाओ, विरमण, व्रस-  
जीव, वेददिय, ते इदिय, चउरिंदिय, पचेंदिय, विन अपरावे जाणी  
भीठी आकुटी संकल्पी हणवारी बुद्धि करीनें हणवाहणावणका पच-  
ख्खाण जावजीवाए दुविह ति विहेण न करेमि न कारवेमि मणसा  
वयसा कायसा ॥ [ एवा पहिला धूल प्राणातिपात विरमण व्रतके  
विषै जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउं । रीस वशै गाढा  
बंधण बाध्या होय, गाढा घाव घाल्या होय, चामना छेद कीया होय,  
अतिभार घाल्या होय, भात पाणीना विच्छेद कीया होय तस्स  
मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रतः—धूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं,  
गोमालिय, भोमालियं, थापणमोसो, सूंकु ले कूडी साख, इत्यादिक  
मोटका झूठ बोलणका पचख्खाण । जावजीवाए दुविहं ति विहेण न  
करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ ( एवा दूजा धूल मृषा

वाद विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तो आलौंडं सहसात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय १ रहसछांनी वात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृषा उपदेश दीया होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ २ ॥

३ त्रीजो अणुव्रतः—थूलाओ अदिनादाणाओ विरमणं, खानर खिणी, गाठ छोडी, ताळो पर कूंची, वाट पाडी, पडी वस्त मोटकी धणिया सेती जांणीने लेवणका पचक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [ एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमणा व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलौंडं । चोरार्इ वस्तु लीधी होय १ चोरने साझ दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३ कूडा तोला कूडा मापा कीधा होय ४ वस्तुमें खेल समेल सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

४ चोथो अणुव्रतः—थूलाओ मेहुणाओ विरमण, पोतारी स्त्री उपरांत मैयुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए देवता संबधी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, मिख तिर्यच संबधी इक विहं इरुविहेणं न करेमि कायसा ॥ [ एवा चौथा थूल स्वदारा संतोप विरमण व्रतके विषै जो कोई अतिचार लागो होय तो आलौंडं । इत्तर थोडा काल राखीसूं गमन कीधा होय १ १ अप गृहीसूं गमन कीधा होय २ अतंग क्रीडा कीधी होय ३ पराया व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सेविया होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥

५ पाचवो अणुव्रत-थूलो परिग्रहाओ विरमण, खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपदको, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [ एवा पाचवा थूल परिग्रह विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ । खेत घरको १ रूपा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर विखराको ५ यथा परिणाम कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ५ ॥

६ छठो दिशिविरमण व्रत-उची नीची तिरथी दिशाको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत स्वइच्छायें जाईनें पाच आश्रवद्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [ एवा छठा दिशिविरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ ॥ उची नीची तिरथी दिशाको यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिशा घटाई होय, एक दिश बधाई होय ४ सदेह पडिया पथ आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रतः-ज्जुणियाविह १ दंतणविह २ फलविह ३ अब्भगणविह ४ उव्वट्टगणविह ५ मज्जगणविह ६ वथ्थविह ७ त्रिच्छेवणविह ८ पुप्फविह ९ आमरणविह १० धूपविह ११ पेजविह १२ भक्खणविह १३ ओदनविह १४ सूयविह १५ विंगयविह १६ सामविह १७ माहुरविह १८ जीमणविह १९ पाणीविह २० मुखवामविह २१ वाहनविह २२ सयणविह २३ पन्निविह २४ सचित्तविह २५ द्रव्यविह २६ इत्यादिक छाईस बोलांसी मरजाट कीधो छै ते उपरात उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण, जाव-

ज्जीवाए एगविह तिबिहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [ एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । पचक्खाण उपरांत सच्चिको आहार कीधो होय १ सचित्तप्रतिवद्धको आहार कीधो होय २ अपक्को आहार कीधो होय ३ दुपक्को आहार कीधो होय ४ तुच्छ ओषधि भक्खण कीधा होय; थोडो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ए भोजनथकी वहा. हिवे कर्म थकी पनरे कर्मादान श्रावकने जाणवा जोग छै पिण आदरवा जोग नथी. तं जहा, ते कहै छै इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दतवाणिज्जे ६ लक्खवाणीज्जे ७ रसवाणिज्जे केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११ निबलंछण कम्मे १२ दग्गिदावणया १३ सरदह तलाय परिसोसणया १४ असईजणपोसणया १५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दड विरमण व्रतः—चउन्विहे पण्णत्ते तं जहा, अवज्झाणाचरियं पमाया चरिय, हिंसपयाणं, पावक्कमोएस, एवा अनर्थ दड सेवणरा पचक्खाण, जावज्जीवाए दुहिहं तिबिहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ॥ ( एवा आठवां अनर्थदड विरमण व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं । कंदर्पकी कथा कीधी होय १ भड कुचेष्टा कीधी होय २ मुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उपभोग परिभोग अधिका वधाच्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रतः—सावज्जजोगं पचक्खाणि, जाव नियमं पज्जुवासाणि, दुग्गिहं तिबिहेणं न करेमि न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करुं ते वारे सिद्ध ॥

( एवा नवमा सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोड । मन वचन कायरा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्तया होय ३ सामायिकमें सभालना नही कीधी होय ४ अणपूगी पाटी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रतः—दिन प्रतिप्रभात थकी प्रारंभीनै पूर्वादिक उः दिशकी जेटली भूमिका मोकली राखी छै ते उपरात स्वच्छायें कायायें जईनै पाच आश्रवद्वार सेवणका पच्चखाण । जाव अहोरत्त दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसस कायसा ते मांदि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीरी छै ते उपरांत भोगणग पच्चखाण । जाव दिवस पञ्जुवासांमि, एगविह तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥ [ एवा दसमा देसाव गासि व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोड । नेधी भूमिकाथी वस्तु नारथी अणाई होय १ मोकलाई होय २ शब्द करी, रूप करी, पुहल नाखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रतः—असण पाण खाइमं साइमका पच्चखाण, अवभ सेवणका पच्चखाण, अमुक्कमणि सोवनका पच्चखाण, माला वग विलेपणका पच्चखाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगका पच्चखाण, जाव अहोरत्तं पञ्जुवासांमि, दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोडं, पोसांमेंसज्जा सथारो न जोयोहोय, माठी तरे जोयो



होय १ न पूंज्यो होय, माठी तरे पूंज्यो होय २ उच्चार, पासवण, मूमिका न जोइ होय, माठी तरे जोई होय ३ न पूजी होय, माठी तरे पूजी होय ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ जावता आवसहीर नही कीधु होय, आवतां निसि-हीर नही कीधुं होय, इंद्रमहाराजरी आज्ञा नही लीधी होय, थोडी दूर पूंज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन वार वोसरे वोसरे नही कीधुं होय, आयने चोईस थव नही कीधु होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ वारमो अतिथि सविभाग व्रतः—साधु निग्रंथनें पासु एष-णीरु शुद्ध, असणं १ पाण २ खाइम ३ साइम ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कवल ७ पायपुच्छणेणं ८ ( पाडिहारिय ) पीढ ९ फलग १० सिज्जा ११ संधारो १२ ओपध १३ भेषज १४ प्रतिलाभतो थको विचरू एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ उै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥

एवा वारमा अतिथि संविभाग व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, सूजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय २ पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अह-कार भावे दान दीधुं होय, थोडो दे घणो पोमायो होय ४ भोजन बेला टालीनें निमंत्रणा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १२ ॥

इति वारे व्रत तथा उनके अतिचार म्मात्त ॥

## अथ संलेखणाकी पाठी ॥

अहभते अपच्छिम मरणातिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषध  
 साला पूजीनें, उच्चार पासवण भूमिका पडिलेहीनें, गमणा गमणे  
 पडिकरुमीनें, दर्भादिक सथारो सथारीनें, दर्भादिक संथारे दुरुहीनें,  
 पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसणें वैसीनें, करयलसेपरिग-  
 हिय सिर सावत्त मत्थए अजली ति वट्टु, एवं वयासी, नमोत्युण  
 अरिहताण भगवताण जावसपत्ताण, एम अनंता सिद्धिजीनें वंदना  
 नमस्कार करीनें नमोत्युण अरिहंताण भगवताण जाव ठाणं सपविउं  
 कामे, इम दूजो नमोत्युण गुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थकर महारा-  
 जनें वदना नमस्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें,  
 साधु प्रमुख चार तीर्थ, खमावीनें, सर्व जीव राशि खमावीनें, पूर्वे  
 जे व्रत आद-या छै, तेना जे अतिचार दोष लागा छै, ते सर्व  
 आलोड, पडिकरुमी, निंदी, निःशल्य थई, सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि  
 मि । सव्व मोसावाय पच्चक्खामि । सव्व अदिन्नादान पच्चक्खामि ।  
 सव्व मेहुण पच्चक्खामि । सव्व परिग्गह पच्चक्खामि । सव्वं  
 कोइमाण जावमिच्छा दसणसल्लं, सव्व अकरणिज्जं पच्चक्खामि ।  
 जावज्जीवाए तिविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि, करंतं पि नाणु-  
 जाणामि, मगसा वयसा कायसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीनें,  
 सव्वं असणं पाण खाइम साइम चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए । एम चारे आहार पच्चक्खीनें,  
 जपीय, इम सरीर इह क्त, पिय मणुन्नं मणाम धिज्जं विसासियं  
 समय अणुमय बहुमय भंड करंडगसमाणं रयण करंडगभूर्यं माणसियमाणं  
 उन्ह, माण खूहा, माण पिशासा, माणंवाला, माण चोरा, माणं टंसा, माणं  
 मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कण्ठिय, संभीमं सन्निवाहियं, विविहा

रोगायंका, परिसहोवसग्ग फासा फुसति, एव पियणं, चरमेहि उ-  
स्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि ति कद्दु । एम शरीर वोसिरावीनें,  
कालं अणवकं खमाणे विहरामि । एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फर-  
सणा करुं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषै जे कोई अतिचार लागों होय तो आ-  
लोउ, इहलोगासंसप्पउगे १ परलोगासंसप्पउगे २ जीविया संस-  
प्पओगे ३ मरणा संसप्पओगे ४ कामभोगा संसप्पओगे ५ मा  
मज्ज हुज्ज मरणंते । श्रद्धा प्ररूपणामें फरक आयो होय तो तस्स  
मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति संलेखणा सातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्सकी पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अभ्वुट्ठिउ मि आराहणाए, विर-  
उ मि विराहणाए, ति विहेण पडिक्क तो वंदामि जिणे चउव्वीस ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स संब्वस्सकी पाटी ॥

तस्स संब्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासिय दुच्चितियं आ  
लोयते पडिक्कमामि ॥

इति तस्स संब्वस्सकी पाटी समाप्ता ॥

## अथ चत्वारि मंगलं की पाठी ॥

॥ चत्वारि मंगल, अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगल, साह मंगल, केवलि पन्नत्तो घम्मो मंगल; चत्वारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साह लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो घम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्वारि सरण पवज्जामि, अरिहते सरण पवज्जामि, सिद्ध सरण पवज्जामि, साहु सरण पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं घम्मं सरण पवज्जामि ॥

अरिहंतारो सरणो, सिद्धारो सरणो, केवलि प्ररूपित दय धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्गतिहरणा, और सरणो नही कोय जे भव्य प्राणी आडरै तो असय अमरपद होय ॥

इति चत्वारि मंगलं की पाठी समाप्ता ॥

## अथ अठारे पापस्थानककी पाठी ॥

अठारे पापस्थानक आलोडं । पैलो प्राणातिपात १ दूजो मृपा वाढ २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैयुन ४ पांचमो परिग्रह ५ छठे क्रोध ६ सातमो मान ७ आठमो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो द्वेष ११ बारमो क्रुह १२ तंतरमो अव्याख्या १३ चवदमो पैशुन्य १४ पनरमो परपरिवाद १५ सोळमो अरति १६ सतरमो माया मोसो १७ अठारमो मिथ्यादर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवाया होय, सेवता प्रतिभल जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाठी समाप्ता ॥

१० स्वर्लिंगी सिद्धा ११ अन्य लिंगी सिद्धा १२, गृहस्थ लिंग  
सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेक सिद्धा १५ ॥ आठ गुणाकरीने  
विराजमान—अनंतो ज्ञान १ अनंतो दर्शन २ अनंतो सुख ३ क्षा-  
यिक समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरु लघु  
७ अनंत अरुण वीर्य ॥ ८ ॥

## अदिल छंद ॥

अग्निनाशी अविकार परम रसगाम है, समाधान सरवंग सहज  
अभिराम है । शुद्ध बुद्ध अविच्छिन्न अनादि अनंत है, जगत शिरोमनि  
सिद्ध सदा जयवत है ॥ १ ॥ जठै जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण  
नहीं, रोग नहीं, सोग नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं, चाकर नहीं,  
ठाकर नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, क्लया नहीं, दुःख  
नहीं, दारिद्र नहीं, एक्में अनेक, जोतमें जोत विराजमान, एवा  
अनता सिद्ध भगवन छै, जानें म्हारो वनगा नमस्कार हुईजो ।  
कोई अगिनय आशातना हुई होय तौ वारम्बार हात जोड मान मोड  
खमाउ छु, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वारमन वचनकायाए करी  
भुजो भुजो वनगा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिवखुताका पाठ ३  
कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पठ नमो आयरियाणं कहतां सर्व आचारजजी महाराज  
भणी म्हारो वनगा नमस्कार हुईजो ॥ आचारजजी महाराज कैवा  
छै ॥ ज्ञानाचार १ ढंसणाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप  
आचार ५ ए पांच आचार पाळै ९ पंच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध  
आराधै ॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महाराज  
अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जा महापुरुषाने म्हारो वनगा

नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो बारबार हात जोड मान मोड खमाउ छूँ, आप खमवा जोग्य छो। १००८ बार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनग। नमस्कार हुईजो । तिवखुतो तीन बार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवञ्जायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी महाराज भगी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्यायजी महाराज कैव। छै ॥ उपाध्यायजी, गगरजी, स्थविरजी, बहुश्रुतजी, इग्यारे अग आचारांग १ सुयगडाग २ ठाणाग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासक दसा ७ अतगड दसा ८ अनुत्तरोत्तराई दसा ९ प्रश्न-व्याकरग १० विपाक ११ ॥ वारे उपाग-उत्तराई १ रायप्पसेगी २ जीवाभिगम ३ पन्नवगा ४ जनुद्वीपपण्णती ५ चंद्रपण्णती ६ मूरप-पण्णती ७ निरया वलिया ८ रूपविडसिया ९ पुष्किया १० पुष्क-चलिया ११ गन्दिदिस। १२ ॥ मूलसूत्र चार-उत्तरापयन १ दस-वैकालिक २ नदीसूत्र ३ अनुयोगद्वार ४ छेद्व्यार-दशाश्रुनस्कर १ दृढरूप २ व्यवहार ३ निशीय ४ ॥ वतीसमो आनश्यक ॥ आदि देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अग वारे उपांग चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पचीस गुणे करी विराजमान, तथा चउदे पूर इग्यारे अंग भणे भणावे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय प्रमाणके जाणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोटपण जेने विवादमें छलवाने समर्थ नहीं, सूत्रपाठका दातार उपाध्यायजी महाराज, जने म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो । कोट अविनय आशातना हुई होय तो बारबार हात जोड मान मोड खमाउ छूँ, आप खमवा जोग्य छो । १००८ बार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पठै तिवखुत्तरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सब्बसाहणं कहतां लोकरे विषे सर्व साधुजी महाराज भणी न्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ साधुजी महाराज कैवा छै । स्व'पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री स्वामीजी श्री रामचंद्रजी श्री हरखचंद्रजी महाराज ( तथा इण ठिकाणे आप आपके गुरुका नाम कैणा ॥ ) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी, पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, वयाळीस दोष टाळीने आहार पाणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, बावीस परिसहारा जीतण हार, वावन अनाचारके टालनहार, तेडया जाय नहीं, नूंत्या जीमे नही, निर्लोभी, निर्लालची, सूरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग सावै, भगवान् की आज्ञामें विहरै विचरै, शुद्ध सयम पाळै, सत्ताईस गुणाकरी विराजमान पचमहाव्रत पाळै ५ पांच इद्रिय बस करै १० च्यार कपाय टाळै १४ भाव सचे १५ करण सचे १६ जोगसचे १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवत १९ मन समाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ काय समाधारणीया २२ नाण सपन्ने २३ दसण संपन्ने २४ चारित्त सपन्ने २५ वेदनी समाअहियासणिया २६ मरणात्तिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजने न्हारो वनणा नमस्कार हुईजो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो चारवार हात जोड मान मोड खमाउं छूं, आप खमवा जोग्य छो । १००८ वार मन बचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो । पळै तिवखुत्तारो पाठ तीन वार कहणो ॥ ५ ॥

ए पंच पद लोकमें महा मंगलिक छै, महा उत्तम छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भवभवमें म्हने सरणो हुईजो ।

इति पंच पदाकी वंदना समाप्ता ॥

## अथ आयरिय उवज्जाए की पाटी ॥

आयरिय उवज्जाए, सीसे साठम्मिए कुलगणे जे । जे मे केड  
कसाया, सव्वे तिविहेण जामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समग संवस्स,  
भगवओ अजलिं करिय सीसे । सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स  
अहयपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिद्वियनियचित्ते  
सव्व खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहय पि ॥ ३ ॥

इति आयरिय उवज्जाएकी पाटी समाप्ता ॥

## अथ खमतखामणा ॥

अढाई द्वीप, पनरे खेत्र माहे तथा वारे श्रावक श्राविका दान  
देवे, शील पाळै तपस्या करै, भावना भावै, संवर करै, सामायिय  
करै, पोसह करै, पडिक्कमणा करै, तीन मनोरथ चउदे नियम चिंतवे  
एक व्रत धारी, तथा वारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते  
माहे मोटाने हात जोड मान मोड पगे लागी खमाउं छं, ओटाने  
समुच्चय खमाउं छं ॥

इति खमत खामणा समाप्ता ॥

## अथ चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात लाख तेउ  
काय, सात लाख वाउ काय, दस लाख इत्येक वनस्पति काय,



चउदे लाख साधारण वनस्पति णाय, दोय लाख वें इन्दी, दोय  
लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख देवता, चार लाख  
नारकी, चार लाख तिर्जच पचेंद्री, चउदे लाख मिनखरी जात,  
च्यार गत चौरासी लाख, जीवा जूण सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्या-  
प्तक जाणतां अजाणतां कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें  
भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख,  
चोइस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ स्वामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुट्टुप् वृत्तम् ॥

स्वामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु,  
चेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [ आर्या वृत्तम् । ] एवमहं आलोइय,  
णिदियं गरहिय दुगंठियं सन्न । तिविहेण पडिक्कंतो, वंटामि जिणे  
चउब्बीसं ॥ २ ॥

इति स्वामेमि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गंठि सहियं गुंठि सहियं नवकारसी पोरसी साढा पोरसी आप  
आपनी धारणा प्रमाणे तिविहपि चऊब्बिहपि आहारं असण पाण

खाद्यम साद्यमं 'अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वस  
मादिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥

इति समुच्चय पचम्खाण समाप्त ॥

## अथ पडिकमणाकी विधि ॥

पैली " चौईस स्तव " कीजै । पछै ऊभो होय आसण छोट  
" तिम्रुत्तौ " कहीजै । पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई  
वडासाधर्मी भाइयाकी आज्ञा मागी " देवसिक पडिकमणा करण की  
आज्ञा है " इसो रुही " इच्छामि ण भंते " की पाटी कहणी । पछै  
" नवकार " कहणो । पेर " तिम्रुत्ता " को पाठ कही, पैला  
आवश्यककी आज्ञा मागी " करेमि भते " की पाटी कहणी । पछे  
" इच्छामि ठामि काउस्सग्ग " की पाटी कहणी । पछै " तस्स  
उत्तरी " की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोयको करणो । गक्ति नहीं  
होय तौ पैठ सिद्धासन लगाय जिनमुद्राए काउरसग्ग करणो ।  
काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार " जगइद्ध " आदि अर्थ रूप  
चिंतावणा । पछै समकितका ५ अतिचार " जिन वचनमें शका आणी  
होय " इत्यादि चिंतावणा । पछे वारे व्रतारा दूजा भागरा एवा सु  
लगाय एक एक व्रतारा पाच पाच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा  
१५ सलेहणारा ५ एव ९९ अतिचार । १८ पापस्थानक तथा  
" इच्छामि ठामि " की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमें " तस्स मि-  
च्छामि दुवकड " कठेई नहीं कहणो ॥ ने " इच्छामि ठामी " की  
पाटीमें " ठामि काउस्सग्ग " की जगह " इच्छामि पडिकमिउं "   
कहणो ॥ पछै नवकार मनमें गुणीनें " नमो अरिहंताण " काउसग्ग  
पाठती उगत प्रगट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

चउदे लाख साधारण वनस्पति पाय, दोय लाख वें इन्दी, दोय लाख ते इन्दी, दोय लाख चउरिन्दी, च्यार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्जच पचेन्दी, चउदे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवा जूण सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोदस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥



अथ स्वामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुण्डुप् वृत्तम् ॥

स्वामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा स्वमेतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु,  
चेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [ आर्या वृत्तम् । ] एवमहं आलोइय,  
णिंदिय गरहिय दुगंठियं सन्न । तिविहेण पडिक्कंतो, वढामि जिणे  
चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति स्वामेमि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवसिक प्रायश्चित विशोधनार्थं करेमि काउस्सगं ॥



अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गंठि सहियं मुठि सहिय नवकारसी पोरसी साढा पोरसी आप  
आपनी वारणा प्रमाणे तिविहपि चउव्विहपि आहारं असणं पाण

खाद्यम साठमं अन्नतथणा भोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वस  
माहिवत्तिआगारेण बोसिरे ॥

इति समुच्चय पञ्चक्खाण समाप्त ॥

## अथ पडिकमणाकी विधि ॥

पैली “ चौईस स्तव ” कीजै । पठै ऊभो होय आसण छोड  
“ तिम्बुत्तौ ” ऋहीजै । पछे देव गुरु तथा साधुजी कर्ने आज्ञा लेई  
बडासाधर्मी भाइयांकी आज्ञा मागी “ देवसिक पडिकमणा करण की  
आज्ञा है ” इसो ऋही “ इच्छामि ण भते ” की पाटी ऋहणी । पठै  
“ नवकार ” कहणो । पेर “ तिम्बुत्ता ” को पाठ कही, पैला  
आवश्यककी आज्ञा मागी “ करेमि भते ” की पाटी कइणी । पछे  
“ इच्छामि ठामि काउस्सग्ग ” की पाटी कइणी । पठै “ तस्स  
उत्तरी ” की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो । शक्ति नहीं  
होय तौ बैठ सिद्धासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो ।  
काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार “ जवाइद्ध ” आदि अर्थ रूप  
चिंतावणा । पठै समकितका ५ अतिचार “ जिन वचनमें शका आणी  
होय ” इत्यादि चिंतावणा । पछे वारे वतरा दूजा भागरा एवा सु  
लगाय एक एक वतरा पाच पांच अतिचार कुल ६० कर्मादानरा  
१५ सलेहणारा ५ एव ९९ अतिचार । १८ पापस्थानक तथा  
“ इच्छामि ठामि ” की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमें “ तस्स मि-  
च्छामि दुक्कड ” कठेई नहीं कहणो ॥ ने “ इच्छामि ठामी ” की  
पाटीमें “ ठामि काउस्सग्गं ” की जगह “ इच्छामि पडिकमिउ ”  
कइणो ॥ पठै नवकार मनमें गुणीनें “ नमो अरिहंताण ” काउसग्ग  
पाठनी वगत प्रगट कइणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

पठै “ तिक्लुत्ता”को पाठ कही “दूजा आवश्यककी आज्ञा है”  
ऐसो कही प्रकृत “ लोगस्स ” की पाटी पढ़णी ॥

इति दूजो चउविसत्यो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

“ तिक्लुत्तो ” कही ‘तीजा आवश्यककी आज्ञा है’ ऐसो कही  
दोयवार “ इच्छामि स्वमासमणा ” की पाटी कहणी । साधु श्रावक  
दोनुं कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ऐ तीन सिवाय कांई  
नहीं राखै ॥ पाटीमें प्रथम “ निसीही ” शब्द आवे जद मितावग्र-  
द्धमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कणे बैठगो । पछे  
शुरूका चरणाके हाथ लगाय आपके माये लगावणा. ने छ आवर्त  
करणा. “ अहोकाय काय ” इणं अक्षरासूं तीन आवर्त हुवे है ।  
यथा-दोनु हाथ लंबा कर हातरी दस् आगलिया जमी माये धर  
मुखस् “ अ ” अक्षर नीचा स्वरस् कहगो । पठै थूंही दस् आग-  
लिया आंखियां उपर वरता “ हो ” अक्षर उंचा स्वरसूं कहगो ।  
ओ पैलो आवर्त हुवो । थूंहीज “ का ” ने “ यं ” उच्चारता दूजो  
आवर्त हुवे । तथा “ का ” ने “ य ” उच्चारतां तीनो आवर्त हुवे ॥  
पठै “ जत्ता भे जवणिज्ज च भे ” इणां अक्षरासूं तीन आवर्त हुवे ॥  
यथा प्रथम “ ज ” मद् स्वरस्, “ ता ” मध्यम स्वरस् “ भे ”  
उंचा स्वरस्, ऊपरली रीते दोनु हाथ जमी माये, विचमें ( आरती  
रूप ) ने आख्या माये, एक एक अक्षर क्रमसूं बोलता लगावणा ॥  
ओ पैलो आवर्त हुवो । “ ज. व. णि. ” ए तीन अक्षर त्रिविध  
स्वरस् ऊपर मुजव उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे । “ ज्जं. च. भे. ”  
ऐ तीन अक्षरासूं पूर्वोक्त रीतिसूं तीजो आवर्त हुवे । ऐसे ६ आवर्त  
एकवार गुणतां हुये । दोय वार पाटी गुणतां वारे आवर्त हुवे ।

चेले खमासमणामें “ वदकम ” ताई कहिने “ आवसियाए ” इण पद ऊपर ऊभो हुवणो. और गुरु चरणासू पाछले पगा सरकणो, मितावग्रह वारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो रही ज्ञेप पाठ पढणो । दूजा खमासमणामें पूर्व रीते थोडो शरीर नमात्रि “ इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए णिसीहियाए अणुजाणह मे मिउगह निसीही ’ ए पाठ कही गुरुके समीप जाय वैसीनें पूर्वोक्त-रीतिसू उ आवर्त देणा. सारो पाठ बैठो २ पढणो, गुरुके सामें दृष्टि राखणी. दूजा खमासमणामें “ आवसियाए पडिवकमामि ” ए दस अक्षर नहीं कहणा ॥

इति तीजो वदनावश्यक सपूर्ण ॥ ३ ॥

“ तिवसुत्तो ” को पाठ कही, ‘चौथा आवश्यककी आज्ञा है’ ऐसे कही उभो होय “ आगमें तिविहे ” की पाटी सूं लेयने “ इच्छामि ठामि ” की पाटी पर्यंत ९९ अतिचार काउस्सगमें कद्या सो प्रगटपणे कहाणा “ तस्स मिच्छामि दुक्कड ’ देणो ॥ पछे “ तस्स सच्चस्स ” की पाटी कहणी ॥ पछे नीचो बैठ जीवणो गोडो उभो रास “ नववकार ” कहणो । पछे “ करेमि भंते ” की पाटी कहणी । पछे “ चत्तारि मगलं ” की पाटी कहणी ॥ पछे “ इच्छामि ठामि ” की पाटी, पछे “ इरिया वहियाए ” की पाटी कहणी. पछे “ तिवसुत्तो ” गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार भेला कवणकी आज्ञा लेणी । पछे “ आगमे तिविहे ” की पाटी कहणी । पछे “ दसण श्री समकित ” की पाटी कहणी ॥ पछे वारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे सछेखणाको पाठ अतिचारा समेत कहणो ॥

पछे अठारे पाप स्यानकरी पाटी कहणी ॥ पछै “ इच्छामि ठामि ”  
 की पाटी कहणी ॥ अठाताई जीवणो गोडो उंचो राखिया वैठो रैणो ॥  
 पछै उभो होय हात जोड “ तस्स धम्मस्स ” की पाटी कहणी ॥  
 पछै “ इच्छामि खमासमणा ” की पाटी पूर्वोक्त रीतिस् दोय वार  
 कहणी ॥ पछै आज्ञा छेई, उदा गोडा बैसी, दोनु हात जोडी, मस्तक  
 जमीके लगावी, पांच पदाकी वदना करणी ॥ पछे उभो होय “ आ-  
 यरिय उवज्जाए ” की पाटी कहणी ॥ पछे “ अढाई द्वीप ” को पाठ  
 कहणो ॥ पछै “ चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वी  
 काय ” इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछे “ खामेमि सव्व जीवा ” को पाठ  
 कहणो ॥ पछै अठारे पाप स्यानक रहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥ ४ ॥

“ तिवखुत्तौ ” को पाठ पढी, ‘पांचवां आवश्यककी आज्ञा है’  
 जैसे रही, “ दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सग ” ॥  
 ओ पाठ कहणो ॥ पछै “ नवकार ” कहणो । पछै “ करेमि  
 भते ” की पाटी कहणी । पछै “ इच्छामि ठामि काउस्सग ” की  
 पाटी कहणी ॥ पछै “ तस्स उतरी ” की पाटी कहणी । पछै काउस्सग  
 करणो ॥ काउस्सगमें सदैव, देवसी, रायसी तथा पखी सवत्सरी पढिक-  
 मणामें ४ लोगस्स कहणा ॥ कितक आप आपकी आम्राय प्रमाणें  
 कमती जाटा करै है । मनमें “ नवकार ” गुणी, काउस्सग पारणो  
 पछे “ नमो अरिहंताणं ” इसो प्रकृत कहणो । पछे “ लोगस्स ”  
 प्रगट कहणो ॥ पांच पदांकी वदना पछै सागी क्रिया उभो २ करणी

पछै नीचो बैठ डावो गोडो उंचो राख, दोय “ नमोत्पुणं ”  
 पूर्ववत् पढणा. पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रते पचाग  
 नमाय, “ तिक्वुत्तौ ” का पाठसू १००८ वार वदना करुं छू, इम  
 कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वदना करवी । पछै उपाश्रयमें  
 जे मुनिराज होय तिणानें वदना करीने अपराध खमावणो । पछै  
 तपस्वी साधर्मी भाइयांसु खमत खामणा कर सुख साता पूछणी ।  
 पछै सारा साधर्मी भाइयासू खमत खामणा करणा अने सुख साता  
 पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामें “ मिच्छामि दुक्कड ” आवे तटै  
 दिवस सवधी मिच्छामि दुक्कड देणो ॥ राइ पडिक्कमणामें रात्री  
 संवधी कहणो । पक्खी पडिक्कमणामें देवसि पक्खी संवधी कहणो ।  
 चौमासीमें देवसि चौमासी संवधी कहणो । सवन्ठरी पडिक्कमणा  
 में देवसि सवत्सरी संवधी मिच्छामि दुक्कड कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्तः ॥







गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा उच्च हृति पोरिसिए । सत्तेव य पु-  
रिमद्धे, एगासणमि अट्टे व ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सउ, अट्टेव यअरि-  
ल्लमि आगारा । पचेव य भत्तट्टे, त्राप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥  
पच चउदो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ट नवय आगारा। अत्पाउरणे पचउ  
हवति सेसेमु चत्तारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पञ्चकखाण ॥

उग्गए मूरे नमुक्कार सहिय पञ्चकखामि । चउन्विहपि आहारं  
असण पाण खाद्म साद्म अन्नत्थणा भोगेण १ सहसागारेणं २ वो-  
सिरे इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पञ्चकखाण ॥

उग्गए मूरे पोरसिं पञ्चकखामि चउन्विहपि आहारं असणं पाणं

खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्नकालेण :  
दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ६ वोसि  
॥ इति ॥ २ ॥

### ३ साइह पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साइहपोरसि पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार अस  
ण पाण खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्नकाले  
ण ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ६  
वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

### ४ पुरिमइहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमइह पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असण  
पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्न काले  
ण ३ दिसामोहेण ४ साहुवयणेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्व समाहि  
वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

### ५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासण वियासण चउव्विह पि आहार असण पाण  
खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ सागारि आगारेण  
३ आउटण पसारेणं ४ गुरुअव्वभुटाणेण ५ पारिद्धावणियागारेण ६  
महत्तरागारेण ७ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

### ६ अथ एकल्लाणको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगद्धाण पच्चक्खामि दुविह ति विह चउव्विह पि आ-  
हार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २

साइमं साइमं अन्नत्यणा भोगेण १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३  
दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेणं ६ वोसिरे  
॥ इति ॥ २ ॥

### ३ साइह पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साइहपोरसि पच्चक्खामि चउच्चिह पि आहार अस-  
णं पाणं खाइम साइम अन्नत्यणाभोगेणं १ सहसागारेण २ पच्छन्नका-  
लेण ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ६  
वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

### ४ पुरिमइहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमइह पच्चक्खामि चउच्चिह पि आहारं असण  
पाण साइम साइम अन्नत्यणाभोगेण १ सहसागारेण २ पच्छन्न काले-  
णं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्व समाहि  
वत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

### ५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासण वियासण चउच्चिह पि आहार असण पाणं  
खाइम साइम अन्नत्यणाभोगेण १ सहसागारेण २ सागारि आगारेण  
३ आउटण पसारेणं ४ गुरुअव्भुटाणेणं ५ पारिद्धावणियागारेण ६  
महत्तरागारेण ७ सव्वसमाहि वत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

### ६ अथ एकल्लाणको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाण पच्चक्खामि दुविह ति विह चउच्चिह पि आ-  
हार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्यणाभोगेणं १ सहसागारेणं २

सागारियागारेणं ३ गुरुअभ्रुद्वाणेण ४ परिष्ठावणिया गारेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्वसमाहि वत्तियागारेण ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ६ ॥

### ७ अथ आयंवलिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे आयंवलं पच्चक्खामि तिप्पिहपि आहार असण पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेणं २ लेवालेवेण ३ गिद्धत्थससट्ठेण ४ उक्खित्तप्पिवेगेण ५ पारिष्ठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेण ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

### ८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तठ्ठ पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार असण पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पारिष्ठावियागारेण ३ महत्तरागारेण ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ५ वोसिरे ॥ इति ॥ ८ ॥

### ९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तठ्ठ पच्चक्खामि तिविह पि आहार असण पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पारिष्ठावियागारेण ३ महत्तरागारेण ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्चेण वा, उहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असिच्चेण वा, वोसिरे ॥ इति ॥ ९ ॥

### १० अथ चरम पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिम पच्चक्खामि चउव्विह पि आहार अरुणं पाणं खा-

इम साडम अन्नत्यणाभोगेणं १ सहसागारेण २ महत्तरागारेण ३  
सव्वसमाद्वित्तियागारेण ४ वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

### ११ अथ अभिग्रहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए मूरे गंठि सहिय मुठि सहिय पच्चक्खामि चउव्विहं पि  
आहार असण पाणं खाडम साडम अन्नत्यणाभोगेण १ सहसागारेणं  
२ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाद्वित्तियागारेण ४ वोसिरे ॥ इति ॥ ११ ॥

### १२ अथ निव्विगईको पच्चक्खाण ॥

उग्गए मूरे निव्विगइयं पच्चक्खामि चउव्विह पि अहारं असण  
पाणं मूरे खाडम साडम अन्नत्यणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवाले-  
वेण ३ गिहत्थससहेणं ४ उरिखत्तविवेगेण ५ पडुच्चमुक्खिण्ण  
पारिद्धावियागारेणं ७ महत्तरागारेण ८ सव्वसमाद्वित्तियागारेणं ९  
वोसिरे ॥ इति ॥ १२ ॥

इति दश पच्चक्खाण समाप्त ॥





## अथ तीन मनोरथ ॥

दोहा

आरंभ परिग्रह तजी करी । पच महाप्रत धार ॥

अत अवसर आलोचना । करु संयारो सार ॥ १ ॥

॥ पहला मनोरथ.—समणोपासक ( साधुकी सेवा करने वाला ) श्रावणजी ऐसा चिंतवे की, कब में चौदे प्रकारका वाद्य और नव प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहसे तथा आरंभसे निवर्तुंगा ? यह आरंभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कपायका बढानेवाला, दुर्गतिका दाता, मोह मत्सर राग द्वेषका मूल, धर्म ज्ञान क्रिया, क्षमा दया सत्य सतोप समकित संयम तप ब्रह्मचर्य सुमतिकानाश करने वाला अठारे पापका बढानेवाला, अनंत ससारमें भ्रमानेवाला, अश्रुत, अनित्य, अशाश्वता, असरण, अतरण, निग्रथोंका निर्दनीक, ऐसे अपवित्र आरंभ परिग्रहका मैं जब त्याग करुंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगो !

दूसरा मनोरथ.—समणोपासक श्रावणजी ऐसा चिंतवे—वि-

चारे की, कब में द्रव्ये भावे मुंड होके दश यतिधर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पाच महाव्रत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे सयम, वारे प्रकारे तप, छेकायका दयाल, अप्रतिवध विहार, सर्वसंग रहित, वीतरागकी आज्ञा मूजव चलनेवाला, होउगा ? जिसदिन निग्रंथका मार्ग अंगिकार करुंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा !

**तीसरा मनोरथः**--समणोपासक श्रावक ऐसा चिंतवे की, किस वक्तमें सर्व पापस्थानक आलोयी निंदी निःशल्य हो सर्व जीवोंसे स्वमतखापणा कर त्रिविध २ अठारे पापकों त्याग जिस सरीरको मैने अतिप्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छेले श्वासोच्छ्वास तक बोसीराके चारही आहारको त्याग के तीन आराधना चाग सरणा सहित आयुष्य पूरा करुंगा ? पंडित मरण करुंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होगा !

यह तीन मनोरथका विचार करता हुवा प्राणी महा निर्जरा उपार्जन करे, ससार प्रत करे । मोक्षके सन्मुख होय । अनुक्रमे सर्व दुःखसे छुटे, अनंत अक्षय सुख पावे.

टोहा.

तीन मनोरथ ए कहे । जे ध्यावे नित्य मन ॥  
सक्ति सार वरते सहू । तो पावे शिव सुख धन ॥ १ ॥

इति तीन मनोरथ समाप्त ॥





## चार सरणा.

॥ अरिहत सरण पव्वज्जामी । सिद्ध सरण पव्वज्जामी ॥ साहु  
सरण पव्वज्जामी ॥ केवली पन्नत घम्मसरण पव्वज्जामी ॥

( १ ) पहला सरणा श्री अरिहत भगवतका. आरिहतं प्रभु  
चौतीस अतिसय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रतिहार अनंत चतुष्टय,  
वारे गुण करके विराजमान, अठारे दोष करके रहित । चौपठ इंद्रके  
वदनीक पूजनीक, इत्यादिक अनंत गुणे करी विराजमान है । अरि-  
हत प्रभूका इस भव परभव भवोभव सरणा होज्यो ।

( २ ) दूजा सरणा श्रीसिद्ध भगवतका, सिद्ध भगवंत अष्टगुण  
इगतीस अतिसय करी सहित, मोक्षरूप सुखस्थानमें विराजमान,  
अनंत अक्षय, अव्यावाध, अजर, अमर, अविहारी, अनंत सुखमें  
विराजमान, अष्ट कर्म रहित है. सिद्ध भगवतका, इसभव, परभव,  
भवोभव सरणा होणा !

( ३ ) तीसरा सरणा साधू मुनिराजका, साधूजी सत्ता-



इस गुण करी सहित, कनक कामिनी के त्यागी, सतरे भेद सज्जम के पालणहार, वारे भेद तपके करणहार, छन्नु दोष टाली आहार वस्त्र स्थानक पात्रके भोगवणहार, निर्लोभी बावीस परिसह सम प्रणाम सहे, शांत-ज्ञात-क्षांत, इत्यादि अनेक गुण सहित ते निग्रथ साधुजी महाराजका इण भव परभव भवोभव सदा सरणा होणा !

( ४ ) चौथा सरणा केवली परुप्या दया धर्मका. धर्म दो प्रकारका-श्रुत धर्म सो द्वादशागी जिनागम । चारित्र धर्म सो आगारी अणगारी. यह धर्म आधि व्याधि उपायिका विणासणहार है, मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है. ये दया धर्मका उसभव परभव भवोभव सदा सरण होना !

दोहा

यह चार सरणा, दुःखहरणा, और न दुजा कोय ।  
जो भवी प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥ १ ॥

इति चार सरणा समाप्त ॥



## अथ चौदे नियम ॥

१ सचीतः—रुहीये काचो पाणी ॥ कोरो दाणो ॥ काची ली-  
लोती ॥ प्रमुख अनेक चीज जाणवी ॥ एनी मरजादा करणी ॥

२ द्रव्य ते—मुखम जितनी चीज घाले ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

३ वीगय ते—दूध ॥ दही ॥ घृत ॥ तेल ॥ खांड ॥ गुळ ॥ सरब  
मीठाईनी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

४ पनी ते—पगरखी ॥ तलीया ॥ भौजा ॥ पांढीया ॥ तेनी  
मरजादा करणी ॥

५ तपोल ते—लुग ॥ इलायची ॥ पान ॥ सोपारी ॥ इत्यादि  
एनी मरजादा करणी ॥

६ वय ते—वस्त्र पेहरणा ओढणा तेनी मरजादा करणी ॥

७ कुसम ते—मृगणें आवे जितनी चीज तेनी मरजादा करणी ॥

८ बाहण ते गाडी ॥ रथ ॥ तांगो ॥ वगी ॥ घोडा ॥ जात ॥  
१) असवारीमें काम आवे ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

९ सयण ते-गादी ॥ पीलग ॥ मांचो ॥ खुरसी ॥ अथवा,  
छपर पीलग विछावनेकी जात ॥ तेनी मरजादा करणी ॥

१० विलेपण ते-खेशर ॥ कुंकु ॥ तेल पीठी सरीरने विले-  
पण हुवे तेनी मरजादा करणी ॥

११ अवंभ ते-कुसीलनी भीरजादा करणी ॥

१२ दिसते ॥ पुरव दीस ॥ पश्चम दीस ॥ दिखण दीस ॥  
उत्तर दीस ॥ उंची दीस ॥ नीची दीस ॥ ये छै दिसमें जावणेकी  
सारी मरजादा करणी ॥ अथवा कागद देवणरी मरजादा करणी ॥

१३ नाहावण ते-स्नानरी ॥ मरजादा करणी ॥

१४ भत्ते सुते-आहार पाणी करणेरी मरजादा करणी ॥ ये  
चौदे नियमकी नित्य मर्यादा करनेसे सर्व लोक की अत्रत आणी  
वहुत बंध हो जाती है. जीवको थोड़ेही कालमें मोक्षके परम सुखकी  
प्राप्ती होती है ॥





## अथ समाईकके वत्तीस दोष ॥

जिसमे प्रथम मनके दस दोष कहते है ॥

१ औसर विना समाई करे तो दोष लागे ॥ २ ॥ यज्ञ किर्तिके अरये समाई करे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ इण लोकरा लाभरे अरये समाई करे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ गरव अहंकाररे अरये समाई करे तो दोष लागे ॥ ५ ॥ भयसें अर्यात् डरतो डरतो समाई करे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ समाईमें ससय करे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ समाईमें निहाणो करे तो दोष लागे ॥ ८ ॥ समाईमें रीस करे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ समाई विनय<sup>१</sup>हिन करे तो दोष लागे ॥ १० ॥ बेटीयानी परे समाई करे तो दोष लागे ॥ ए दस मनके दोष ॥

## अथ दस वचनके दोष ॥

॥ १ ॥ सामाईकमें झूट बोले तो दोष लागे ॥ २ ॥ अण बीमास्यो बोले तो दोष लागे ॥ ३ ॥ राम करीने गीत गावे तो

१. अविनयसें. २. भावरहीत.

दोष लागे ॥ ४ ॥ उतावलो उतावलो घणो बोले तो दोष लागे  
 ॥ ५ ॥ कलह करे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ च्यार विक्रिया करे तो  
 दोष लागे ॥ ७ ॥ हांसी करे तो दोष लागे ॥ ८ ॥ उतावलो २ अक्षर  
 पद गुणे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ अजुगती भाषा बोले तो दोष लागे  
 ॥ १० ॥ अत्रतीने आवो पत्रगे कहे तो दोष लागे ॥ ए दस वच-  
 नके दोष ॥

### अथ वारे कायाके दोष ॥

॥ १ ॥ ठाँसणी मारीने बेसे तो दोष लागे ॥ २ ॥ अधिर  
 आम्यण बेसे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ विषय सहित दृष्टी जोवे तो दोष  
 लागे ॥ ४ ॥ समाईकमें घरका कारज करे तो दोष लागे ॥ ५ ॥  
 विना कारण ओटो लेवे तो दोष लागे ॥ ६ ॥ सरीर संकोचीने  
 बेसे तो दोष लागे ॥ ७ ॥ क्रोध करीने अंग मोडे तो दोष लागे  
 ॥ ८ ॥ आलस आणे तो दोष लागे ॥ ९ ॥ कडका मोडे तो दोष  
 लागे ॥ १० ॥ सरीररो मेल उतारे तो दोष लागे ॥ ११ ॥ विना  
 हुंज्या खाज खिणे तो दोष लागे ॥ १२ ॥ विनाकारण समायकमें  
 प्रियावच करोव तो दोष लागे ॥ एवं समादकका वत्तीस दोष जाणवा ॥

### अथ पोसारा अग्रा दोष ॥

पोसा निमित्ते सरीरकी शुश्रुषा करे नही ॥ १ ॥ कुसील सेवे  
 ॥ २ ॥ सरस आहार करे नही ॥ ३ ॥ वस्त्र धुवावे नही ॥ ४ ॥

पग उपर पग घरके.

५

आनुपूर्वी.

६

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

१

आनुपूर्वी.

२

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

३

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

४

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

५

आनुपूर्वी.

६

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	३	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४



९

आनुपूर्वी.

१०

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

११

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

१२

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

१३

आनुपूर्वी.

१४

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

१५

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

१६

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

१७

आनुपूर्वी.

१८

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

१९

२०

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१



## २४ तीर्थकरोंके नाम-

- |                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| १ श्री ऋषभ देवजी.       | १३ श्री विमलनाथजी      |
| २ श्री अजित नाथजी.      | १४ श्री अनतनाथजी.      |
| ३ श्री संभवनाथजी.       | १५ श्री घर्मनाथजी.     |
| ४ श्री अभिनदनजी.        | १६ श्री शाति नाथजी     |
| ५ श्री सुमतिनाथजी.      | १७ श्री कुथूनाथजी      |
| ६ श्री पद्मप्रभूजी.     | १८ श्री अर्हनाथजी.     |
| ७ श्री सुपार्श्वनाथजी.  | १९ श्री मल्लीनाथजी.    |
| ८ श्री चद्र प्रभूजी.    | २० श्री मुनीसुत्रतजी.  |
| ९ श्री सुविधिनाथजी.     | २१ श्री नेमीनाथजी.     |
| १० श्री शीतलनाथजी.      | २२ श्री रिष्टनेमीजी.   |
| ११ श्री श्रेयांस नाथजी. | २३ श्री पार्श्वनाथजी.  |
| १२ श्री वासपूज्यजी.     | २४ श्री महानीर स्वामी. |



- |                         |                           |
|-------------------------|---------------------------|
| १ श्री मदीर स्वामी.     | ११ श्री वज्र वर स्वामी    |
| २ श्री जुगमंदीर स्वामी. | १२ श्री चंद्राननस्वामी.   |
| ३ श्री बाहुजी स्वामी.   | १३ श्री चंद्रबाहु स्वामी. |
| ४ श्री सुबाहुजी स्वामी. | १४ श्री भुजग स्वामी.      |
| ५ श्री सुजात स्वामी.    | १५ श्री ईश्वर स्वामी.     |
| ६ श्री स्वयम्भू स्वामी. | १६ श्री नेमम्भूस्वामी.    |
| ७ श्री ऋषभानन्द स्वामी. | १७ श्री वीरसेन स्वामी.    |
| ८ श्री अनन्तवीर स्वामी. | १८ श्री महाभद्र स्वामी.   |
| ९ श्री सूर्यभू स्वामी.  | १९ श्री देवयस स्वामी.     |
| १० श्री विसालधर स्वामी. | २० श्री अनन्तवीर स्वामी.  |



## ११ गणधरके नाम.

- |                        |                      |
|------------------------|----------------------|
| १ श्री इंद्रभृतिजी.    | ७ श्री मोरी पुत्रजी. |
| २ श्री अग्नीभृतिजी.    | ८ श्री अकपितजी.      |
| ३ श्री वायुभृतिजी.     | ९ श्री अचलजां.       |
| ४ श्री विगतभृतिजी.     | १० श्री मेतारजजी.    |
| ५ श्री सुधर्मा स्वामी. | ११ श्री प्रभासजी.    |
| ६ श्री मेढीपुत्रजी.    |                      |





## १६ सतीके नाम.

- |                    |                     |
|--------------------|---------------------|
| १ श्री ब्राम्हीजी. | ९ श्री मृगावतीजी.   |
| २ श्री मुंदरीजी.   | १० श्री चेलाणाजी.   |
| ३ श्री कौसल्याजी.  | ११ श्री प्रभावतीजी. |
| ४ श्री सीताजी.     | १२ श्री सुभद्राजी.  |
| ५ श्री राजेमतीजी.  | १३ श्री दमयन्तीजी.  |
| ६ श्री कुंताजी.    | १४ श्री सुलसाजी.    |
| ७ श्री द्रौपदीजी.  | १५ श्री शिवाजी.     |
| ८ श्री चंद्रणाजी.  | १६ श्री पद्मावतीजी. |

ये चोवीस तीर्थकर, बीस विहरमान, इग्यार गणधर, सोले सतीको त्रीकाल वंदणा नमस्कार होजो, तिस्रूतो जाव मध्येणं वंदामि.



## आलोचना अथवा संधारा करने कराने की विधि

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो  
उवज्जायाण । नमो लोए सब्ब साहूग ॥ १ ॥

॥ पहली नवकार एक कही । इरियावही पडिकमीने काउस्तग  
करी । एक लोगस्त उजोयगरे । कावसगमाहिचितीने “काऊसग”  
पारी एक लोगस्त उजोयगरे कही । “हेठा वेसीने ” नवकार  
एक कही । नमोअधुण एक कही ने । ए चउवीसत्थो कीजे । लो-  
गस्त उजोयगरे पडे नमोअधुण कहीये । पडे वर्तमान तीर्थकराने वदीए  
। पहली तो सम्यक्त सुद्ध करिये—तिहां ३ पदार्थ साचा सरधणा ।  
देव तो अरिहत देव ॥ १ ॥ गुरु साधु निर्मथ, जिनाज्ञाना पालगहार.  
॥ २ ॥ धर्मश्री केवली प्ररूप्यो दयामय धर्म ॥ ३ ॥ ए ३ तत्र साचा  
सरध्या न होय तो तस्त मिच्छामि दुकडं ॥ वली नव पदार्थ साचा  
सर्दवा ( तेहना नाम ) जीव (१) अजीव (२) पुण्य (३) पाप (४)  
आश्रव (५) सयर (६) निर्जरा (७) वध (८) मोक्ष (९) ए ९ पदार्थ  
साचा सरध्या न होय तो तस्त मिच्छामि दुकडं ॥ हिवे धर्मनो स्व-  
रूप कहे छे ॥



॥ गाथा ॥

सर्वेभ्य जेय अतीता, जेय पदुप्पन्ना, जेय आगमिस्ता, अरिहता  
 भगवतो, सव्वे ते एवमाइखन्ति, एवं भासन्ति, एव पन्नयन्ति, एव  
 परूवेत्ति, सव्वेपाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, न हंतवा  
 ॥ इत्यादि ॥

॥ मंत्र द्वितीय, आचारग, अध्ययन ४

अर्थ—जे गये कालमें अनता अरिहंत भगवत हुये, और वर्त-  
 मान कालमें सख्याता अरिहत भगवत विद्यमान है, और आवते  
 कालमें अनता अरिहत भगवत होवेंगे, उनोंने फरमाया है की सर्व  
 प्राणीनें सर्व भूतनें सर्व जीवनें सर्व सत्वनें दडादिके करी हणवानही  
 । बलात्कारी हणवो नही, दासनी परइ गीणवा नही । सरीर वेदना  
 मानसिक वेदना करी परितापवा नही । प्राण थकी दूर करवा नही ।  
 एहवी जीवदया पालवी । ते धर्म शुद्ध छे । निष्कलंक छै । मोक्षनो  
 हितकारी छै । एहवो धर्म साचो न सरध्यो होय तो तस्स मिच्छामि  
 दुरुड ॥ हिवइ सरणा कहे छै । चत्तारि सरण पवज्जामि १ अरिहत  
 सरण पवज्जामि २ सिद्ध सरण पवज्जामि ३ साहु सरणं पवज्जामि  
 केवली पण्णत्तो वम्म सरणं पवज्जामि ( अर्थ ) अरिहत सिद्ध साधु  
 केवली प्ररूपित दयामय धर्म ए चार सरणा आदरूं छू. हिवे अरिहत  
 सिद्ध केवलीनी साखे चौराशी लक्ष जीवाजोनीको खमावू छु.

॥ गाथा ॥

खामेभ्य सव्वे जीवा, सव्वे जीवा वि खमतु मे ॥  
 मित्ति मे सव्व भूएसु, वेर मज्ज न केणई ॥ १ ॥

अर्थ—सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदे लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख वेडद्रिय, दो लाख तेड्डीय, दो लाख चौरिन्द्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यच. चौदे लाख मनुष्यकी जात, एव चौराशी लाख जीवा ज़ोनीने मेरे जीव हणी होय, हणाई होय, हणता प्रति भलो जाण्यो होय, तो अठारे लाख चोवीस हजार एकसो बीस तस्स मिच्छामि दुरुड ॥ ए सर्व जीव मेरा अपराध क्षमो ! सर्व जीव मेरे मित्र है, मुझे किसीसे शत्रुता नहीं है ॥

हिवे अठारे पाप स्थानक आलाउछु, अठारे पाप स्थानकके नामः—

१ प्राणातिपात २ मृषावाड ३ अदत्तादान ४ मैद्युन ५ परिग्रह  
६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह  
१३ अव्याख्यान १४ पैसून्य १५ पर्परिवाद १६ रति अरति  
१७ माया मोसो १८ मिथ्या दर्शन सत्य ॥

( १ ) हिवे प्रथम प्राणातिपातनो स्वरूप रुहे छे ॥ प्राणातिपात कहता जीवकी हिंसा का करणा ते जीव उ कायके तेहना नामः—

१ पृथ्वी काय २ अप्पकाय ३ तेउ काय ४ वाउ काय ५ वनस्पति काय ६ त्रस काय.

पृथ्वी कायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ वादर । तेहना दो भेद १ प्रजाप्ता अने २ अप्रजाप्ता । सूक्ष्म पृथ्वी काय तो सर्व लोकपाही भरी छे और वादर पृथ्वी काय लोकना एक देशमें भरी छे, ते वादर पृथ्वी कायमें मट्टी, मूरड, ककर, पाषाण, खट्टी, गेरू, हिंगळ,

हिरमच, लृण, सोनो, रूपो, तावो, लोह, कथीर. जसद, पीतल, हीरा, पन्ना, मणी, माणिक, इत्यादि पृथ्वी कायना अनेक भेद छे ॥ उक्त पृथ्वी कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे, कीधी होय कराई होय—करतां प्रते भलो जाण्यो होय—तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकड ॥

( २ ) हिवे अपकायना दो भेद. १ सूक्ष्म और २ वादर ॥ तेहना दो भेद १ अमजाप्ता और प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म अपकायतो सर्व लोकमाही भरी छै—और वादर अपकाय लोकना एक देश विषे छे, ते वादर अपकायमें, कुवानो पाणी, नदीनो पाणी, तलावनो पाणी, ओस, धूर गार, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त अपकायके जीवोंकी हिंसा, मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करता प्रते भला जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसें मिच्छामि दुकड ॥

( ३ ) हिवे तेउकायना दो भेद १ सूक्ष्म और २ वादर ॥ तेहना दो भेद १ अमजाप्ता और २ प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म तेउ काय तो सब लोकमाही भरी है, और वादर तेउ काय लोकना एक देशनें विषे छे ॥ ते वादर तेउ कायमें, खीरा, अगारा, उल्कापात, बिजली, अग्नि, इत्यादिक अनेक भेद छे ॥ उक्त तेउकायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसूं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

( ४ ) हिवे वाउ कायके दो भेद सूक्ष्म और वादर ॥ तेहना दो भेद ॥ अमजाप्ता । अने प्रजाप्ता ॥

सूक्ष्म वाउ काय तो सर्व लोकाही भरी है ॥ और वादर वाउ-  
काय लोकना एक देशना विषे छे ॥ ते वादर वाउ कायमें उरुलिया  
वाय, मडलिया वाय, धन वाय, तन वाय, शुद्धवाय, सर्वतक वाय,  
इत्यादिक वाउकायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वाउकायके जीवोंकी  
हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई होय करता प्रति  
भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू मिच्छामि दुरुड ॥

( ५ ) हिवे वनस्पति कायना दो भेद सूक्ष्म और वादर ॥  
तेहना दो भेद ॥ प्रजाप्ता अने अपजाप्ता ॥ तथा प्रत्येक और साधारण ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकाय तो सर्व लोकाही भरी छे ॥ ओर वादर  
वनस्पतिकाय लोकना एक देशने विषे छे ॥ ते वादर वनस्पति  
कायमें, नीलण, फुलण, रुद्र, मूल, वीज, हरी, अकुरा, रञ्जित,  
मिश्र, इत्यादि वनस्पति कायना अनेक भेद छे ॥ उक्त वनस्पति  
कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इन भवे परभवे कीधी होय कराई  
होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू,  
तस्स मिच्छामि दुरुड ॥

( ६ ) हिवे त्रस कायना चार भेद ॥ वेइद्रीय, तेइद्रीय, चउ-  
रिंद्रीय, पचेन्द्रिय, सत्री, असत्री, समूर्द्धिय, गर्भेज, इत्यादि त्रस  
कायके जीवोंकी हिंसा मेरे जीव इनभवे परभवे कीधी होय कराई  
होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स  
मिच्छामि दुरुड ॥

इति प्रणानि पातः

( १२ ) हिवे दूजो मृपावाद कहे छे ॥ क्रोध करी, लोभ करी,

भय करी, हास्य करी, झूट बोल्यो होय बोलाव्यो होय बोलतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुःखं ॥

( ३ ) हिवे तीजो अदत्तादान कहे छे ॥ गुरुदत्त, देवदत्त, सहामि दत्त, सागारि दत्त, राजा दत्त, इत्यादिक तृणमात्र विनाज्ञा, कोई वस्तु लीधी होय लेयायी होय लेयता प्रति भलो जाण्यो होय, तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुःखं ॥

( ४ ) हिवे चोथो मैथुन रुहे छे ॥ देवगणा संघी, मनुष्य मनुष्यणी सवधी तिर्यच तिर्यचणी सवंगी काम भोग सेव्या होय सेवाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुःखं ॥

( ५ ) हिवे पांचमो परिग्रह कहे छे ॥ सचित अचित मिश्र परिग्रह राख्यो होय रखाया होय राखतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुःखं ॥

( ६ ) हिवे छटो-क्रोध ( ७ ) सातमो-मान ( ८ ) आठमो-माया ( ९ ) नवमो लोभ और दसमो ( १० ) राग ( ११ ) उग्या-रमो द्वेष-भीषो होय करायो होय करतां प्रति भलो जाण्यो होय तो तीन कर्ण तीन जोगसू तस्स मिच्छामि दुःखं ॥

( १२ ) बारमो-कलह-कहतां राड ( १३ ) तेरमो-आव्या-ख्यान कहता-झूठो कलंक देवो ( १४ ) चौदमो-पैरान्य-कहता-पार-की चुगली करवी ( १५ ) पधरमो-परपरिवाद-कहतां-पारकी निदा-का करना ( १६ ) सोळमो-रति अरति-कहता-मुख ओर दुख उपजां साता असातानो वेदवो ( १७ ) सत्रमो-मायापोसो-कहता-पराया

मरम प्रकाशना ( १८ ) अठारमो मिथ्या दसणसत्य रुहता-दुगुरु  
कुदेव कुयर्मने साचो सर्ववो ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय से-  
वाया होय सेवतां प्रति भलो जाण्यो होय तो अरिदतादिकनि साखे  
करी मुझे तस्स मिळामि दुकड ॥

हिचे इस जीवने अपार ससार समुद्रमें रलता अनेक भव क्रिये  
ते सक्षेपमात्र रुहे छे.

काजीना-मुल्लाना-दीरना-कसार्तना-वागुरियाना-मोचीना-थो-  
रीना, हल्लल खोरना, नाईना, वारीना, तवोळीना, तेलीना, गधी-  
ना, नीलगरना-तीरगरना-कनीगरना-सवनीगरना-हल्लवार्डगरना  
-दारुगरना-पनीगरना-रेगरना-खरीरुना-कठियाराना-मणिहा-  
रना-पटवाना-डाकौतना-लोहारना- सोनारना- भरावाना-ठठे-  
राना-कुभारना-पिंजाराना-वणकरना-घाचीना-कावीना- लोधाना  
-रगरेजना-छिपाना-चितार ना- खारोळना-ओडना-सिलावटना -  
कर्षणीना-माळीना-वागवानना-धोवीना- कशेराना-  
वडभूजाना-तमारुयाना-वेश्याना-भगतणना-भोयीना-  
नटना-धावडना-जाटना-काजराजा-मजूरोना-वीणाना-माडवीना-  
कोडुवीना-दर्जीना-कागदीना-आगडना-जागडना-जडियाना, तुना-  
राना-पायकना-ज लैवदारना-कुलगुरुना-भोजगना-चहुरुप्याना-  
भाडना-मात्रतना-पाशवानना-रेवाडीना-खरादीना- फराशवानना-  
चर्वादारना-दरोगाना-चरखीदारना-कूडीगरना-साहीगरना-सोरीगरना-  
कामडना-वावरना-मलाना-चोरना-शिकारीना-कहारना-गवालना-  
दाढीना-शिकाना-मूडचीराना-कनफडाना-कूजडाना- कालवेलि-  
याना-ठगना-भोपाना-जूलावाना-कोलीना-खोजना-कलालना-

पाशीगरना--खवासना--दासीना--रासधारीना-- कुलिटाना-- दूतीना--  
पातरना--गाडीवानना--ब्राह्मणना--गुजरातीना-- जोतशीना-- गारुडि-  
याना--मिस्रना--भटना--नागरना--सेठना--साहना--वजाजना--सरापीना  
--पसारीना--रजपूतना--वणजाराणा--रसोइदारना--पेलवानना-- डोढी-  
वानना-- चीडीमारना-- मच्छीगरना-- चारणना--भाटना-- जुवारीना--  
राजाना--वादशहाना--वजीरना--वगसीना--फोजदारना-- पोतदारना--  
हाक्रमना--प्रधानना--कोटवालना--भडारीना--किलादाग्ना-- पटेलना--  
पट्टारीना--हमालना--नायाना--शिशारना--उकार्दना--उढईना--पार-  
धीना--भिलना--यवननाः इत्यादिक भवने विषे अनेक पाप कीधा  
होय कराया होय करता प्रति भलो जाण्यो होय तो "तथा " इत्या-  
दिकसू वनज व्यापार कीया होय तो तस्स मिच्छामि दुकड ॥

“ तथा ” हिंसाने अर्थे तरवार, बंदूक, दारू, गोली, भाला,  
वरडी, वनुप्य, वाण, फरशी, छुरी, इत्यादिक, शस्त्रादिक, वणाव्या  
होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

\* तथा अनित्य भावना ( १ ) असरण भावना ( २ )  
एकंत भावना ( ३ ) ससार भावना ( ४ ) अभिनव भावना ( ५ )  
अशुचि भावना ( ६ ) आश्रव भावना ( ७ ) संवर भावना ( ८ )  
निर्जरा भावना ( ९ ) लोक स्वभाव भावना ( १० ) धर्म भावना  
( ११ ) बोध वीज भावना ( १२ ) ए वारे भावना मेरे जीवने नहीं  
भावी होय तो तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

\*\* तथा जो जो गुरु मुखथी व्रतपचखाणादिक आठव्या छे ते  
माही कोई अतिचार दोष लागो होय नो अनंत सिद्ध केवलीनीं  
साखे करी तस्स मिच्छामि दुकड

\* वारे भावनाको स्वरूप अन्य जगहसे जाणवो.

इसके बादमें “ अह भते अपच्छिम मरणातीय ” सें लेकर एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसगा कहं तेवारे सिद्ध ” तक सले-खणानी पाटी ( जो प्रतिरूपणमें पहिले कैआये है ) कहवी ॥ पश्चात्-पारयाप्रमाणे पचखाण करगा तथा करावा ॥ इत्यालोयणा ॥

उपर प्रमाणे ज श्रावक श्रावकः ए आलोयणा सामग्री-वाची-अत्माने शुद्ध करत ते भागधिन पर पामी समागरी तरण



## पद्मावती



( राग-वेराडी )

हिवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे,  
जाणपणु जगदोहीलु, एनी वेळाए आवे-ते मुज मिच्छामि दुरुडं॥१॥

भव अनताए करी, अरिहतनी शाख;  
जे में जीव विराधीया, चोराशी लाख.                      ते मुज. ॥ २ ॥

सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय,  
सात लाख तेउकायना, साते वळी वाय.                      ते मुज. ॥ ३ ॥



- दसलाख प्रत्येक वनस्पति, चौद साधारण,  
वेद्रियादिक\* जीवना, ते वे लाख विचार. ते मुज. ॥ ४ ॥
- देवता तिर्यच अने नारकी, चारचार लाख प्रकाशी;  
चौद लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी. ते मुज. ॥ ५ ॥
- आ भव परभव सेविया, जे पाप अठार;  
त्रितिथे त्रिविधे करी परिहरूं. दुरगति दातार. ते मुज. ॥ ६ ॥
- हीसा कीवी जीवनी, वोल्या मृखायाद.  
दोप अदत्तादाननो, मैथुन उनमाद. ते मुज. ॥ ७ ॥
- परिग्रह मेळव्यो कारमो, कीधो क्रोय विशेष;  
मान, माया, लोभ में कर्या, वळी राग ने द्वेष. ते मुज. ॥ ८ ॥
- वलेश करी जीव दुहव्या, दीधा कुडा कलंक,  
निदा कीधी पारकी, रति अरति निःशरु. ते मुज. ॥ ९ ॥
- चाडी खाधी चोंतरे, कीधो थापण मोसो,  
बुगुरु, बुदेव, कुधर्मनो, भलो आप्यो भरोसो. ते मुज. ॥ १० ॥
- खाटकीना भवमें कीधा, कीधी जीवनी घात;  
चडीमारने भव चरकला, मार्या दीन ने रात. ते मुज. ॥ ११ ॥
- माडीगर भव माछला, झाल्या जळवास;  
धीवर, भील, कोळी भवे, मृग पाडिया पास. ते मुज. ॥ १२ ॥
- काजी, मुल्लानें भवे, पढ्या मत्र कठोर;  
जीव अनेक झभ्मे कर्या, कीधा पाप अघोर. ते मुज. ॥ १३ ॥
- कोटवाळना भवे में कीधा, आकरा कर-दड;  
वधीवानने मराविया, कोरडा-छडी-डड. ते मुज. ॥ १४ ॥

- परमागामीना भवे, दीया नारकीने दुःख,  
छेदन-भेदन-वेदना, ताडन अति तीख. ते मुज. ॥ १५ ॥
- कुभारना भवे मे कीया, काचा नीभा पकाव्या,  
तेली भवे तिल पीळिया, पापे पिंड भराव्या. ते मुज. ॥ १६ ॥
- हाळी भवे हळ केडिया, फोडया पृथीना पेट;  
मूड निंदण कीया घणा, दीया वळड चपेट. ते मुज. ॥ १७ ॥
- माळीना भवे रोपिया, नाना विविज वृक्ष,  
मूळ-पत्र-फळ-फुलता, लाग्या पाप अक्ष. ते मुज. ॥ १८ ॥
- अयोत्राद्याना भवे भयो, अटकेरो भार,  
पोटी-उट कीडा पडया, न जाणी दया लागार. ते मुज. ॥ १९ ॥
- छीपाना भवे छेतया कीया रगण पास,  
अग्नि आरभ कीया तगा, धातुसोड अभ्यास. ते मुज. ॥ २० ॥
- सुरपणे रण झुझता, मार्या माणस वृद्ध,  
मास-मदिरा माखग भण्या, खाधां मूळ ने कंठ. ते मुज. ॥ २१ ॥
- ग्याण रगारी धातुनी, अणगळ पाणी उलेण्या,  
आरभ कीया अति तगा, पोते पापज सिंण्या. ते मुज. ॥ २२ ॥
- डगाल कर्म कीया वळी, धर्म दवज दीया,  
सुसम खाया वितगगना, कुडा कोपज कीया. ते मुज. ॥ २३ ॥
- त्रिली भवे ऊदर गळया, गगेळी हत्यारी,  
मुठ मुरख तणे भवे, मे जु लीख मारी. ते मुज. ॥ २४ ॥
- भाडभुजा तणे भवे, एकेट्रिय जीव;  
जाग-चगा-चडं सेरिया, पाडता रीव. ते मुज. ॥ २५ ॥

- खांडण-पीसण-गारीनो, आरभ कीधो अनेक;  
 रांधण-शीधण अग्निना, पाप लाग्या विशेक. ते मुज. ॥ २६ ॥
- विकथा चार कीधी वळी, सेव्या पांच प्रमाद;  
 इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विखाद. ते मुज. ॥ २७ ॥
- साधुने श्रावक तणां, व्रत लेइने भाग्या,  
 मुळें उत्तर तणा, मुज दुपण लाग्या ते मुज. ॥ २८ ॥
- साप-धीछी-सिंह-चितरा, सरुरा ने समळी:  
 हिंसक जीव तणे भवे, हिसा कीधी सवळी. ते मुज. ॥ २९ ॥
- मुवावट दुपण घणा, काचा गर्भ गळाव्या;  
 जे पांणी ढोळ्या घणा, शियळ व्रत भगाव्यां. ते मुज. ॥ ३० ॥
- धोवीना भव जे कर्या, जळना जीव मुवाळा,  
 धूळे करी जळ रोळिया, दान देता निवार्या.ते ते मुज. ॥ ३१ ॥
- लवारना भव जे कर्या, घड्या शस्त्र अपार;  
 कोस-कोदाळा ने पावडा, धिख धिखती तरवार. ते मुज. ॥ ३२ ॥
- गुजरना भव जे कर्या, लीला भारा वढाव्या,  
 पाडीने बेलां मेलियां; पाडे उठी छे ज्वाळा. ते मुज. ॥ ३३ ॥
- ओडना भव जे कर्या, कूवा-वाव खोदाव्यां,  
 सरोवर गळाविया, वळी टांका वधाव्या. ते मुज. ॥ ३४ ॥
- वाणियाना भव जे कर्या, कूडा लेख लखाव्या;  
 ओळुं आपी अधिकु लीधुं, कूडा माप रखाव्या. ते मुज. ॥ ३५ ॥
- हाथीना भव जे कऱ्या, वेलडी बलुरिया,  
 पखी माळ चुंधिया, पापे पेटज भरिया. ते मुज. ॥ ३६ ॥
- केरी ने कोर्ठावडा, वळी लीबुज मोर्या;  
 राड चढावी शेलणे, पोते पापज सिंच्यां. ते मुज. ॥ ३७ ॥

अणगळ आघण मेलिया, अणपूजे चले;  
अणसोया कण ओरिया, तेना पाप वेम ३ ले ? ते मुज. ॥ ३८ ॥

भव अनेक भमता थका कीधो कुट्टर सवय,  
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसर, तेणे शु प्रतिवध- ते मुज. ॥ ३९ ॥

भव अनेक भमता थका, कीधो देह सवय,  
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसर, तेणे शु प्रतिवध. ते मुज. ॥ ४० ॥

भव अनेक भमता थका, कीधो परिग्रह सवय;  
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसर, तेणे शु प्रतिवध. ते मुज. ॥ ४१ ॥

इणी पेरे इह भव परभवे, कीया पाप अखत्र;  
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसर, करु जन्म पवित्र. ते मुज. ॥ ४२ ॥

हवे राणी पदमावती, लीधा शरणा चार;  
सागारी अणसण कर्यो, जाणपणानुसार. ते मुज ॥ ४३ ॥

राग वेराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाल;  
समय मुंदर कहे पापथी, हुटो तत्काळ. ते मुज. ॥ ४४ ॥

॥ इति पदमावती ॥





## अथ उपदेशक दोहा ॥

- समय मात्र परमाड नित, धर्म साधना मांदि ॥  
अधिर रूप मंसार लख, रे नर करिये नांदि ॥ १ ॥
- छीजत छिनछिन आउखो, अजलि जल जिम मीत ॥  
कालचक्र माये भ्रमत, सोवत कहा अभीत ॥ २ ॥
- तन वन जोवन कारिमा, संध्या राग समान ॥  
सकल पदारथ जगतमें, सुपन रूप चित्त जान ॥ ३ ॥
- मेरामेरा मत करे, तेरा है नहि कोय ॥  
चिदानंद परिवारका, मेला है दिन दोय ॥ ४ ॥
- ऐसा भाव निहारी नीत, कीजे ज्ञान विचार ॥  
मिटे न ज्ञान विचारनि, अतर भाव विकार, ॥ ५ ॥
- ज्ञान रवि वैराग जस, हीरिटे चंद्र समान ॥  
तास निकट कहो किम रहे, मिथ्या तम दुखखान ॥ ६ ॥
- आप आपणे रूपमें मगन ममत मलखोय ॥  
रहे निरतर समरसी तास बध नवि कोय ॥ ७ ॥

- पर परणित परसगशु उपजत विणसत जीव ॥  
मिटे मोह परभावके, अचल अवाप्रित शिव ॥ ८ ॥
- जैसे रुचुरु त्यागथी, विणसत नही भुयग ॥  
देह त्यागथी जीव पग, तैसे रहत अभग ॥ ९ ॥
- जो उपजे सो तु नही, विणसत तेपण नाहि ॥  
डोटा महोटा तु नही, समज देख दिल माहि ॥ १० ॥
- वरणभाति तो में नही, जात पात कुचरेख ॥  
रापरक तु है नही, नहीं वाजा नही भेख ॥ ११ ॥
- तू सहुमें सहुथी सदा, न्यारा अलख सरूप ॥  
अरुथ रुथा तेरी महा, चिदानद चिद्रूप ॥ १२ ॥
- जनम मरण जिहा है नही, इतभीत लवलेश ॥  
नहीं शिर आण नरिंदकी, सोही अपणा देश ॥ १३ ॥
- विनाशिक पुढगल दिशा, अग्निनाशी तू आप ॥  
आपा आप विचारतां, मिटे पुण्य अरु पाप ॥ १४ ॥
- वेडी लोह रुनरुमथी, पाप पुण्य युग जाण ॥  
दोउथी न्यारा सदा, निज सरूप पहिउण ॥ १५ ॥
- जुगल गती शुभ पुण्यथी, इतर पापथी जोय ॥  
चारु गति निवारियें, तत्र पचम गति होय ॥ १६ ॥
- पचम गति विण जीवरु, सुख तिहु लोरु मजार ॥  
चिदानद नवि जाणजो, ए महोदो निरधार ॥ १७ ॥
- उम विचार हीरिदे करत, ज्ञान ध्यान रस लीन ॥  
निरवित्रल्प रस अनुभवी, विकल्पता होय छीन ॥ १८ ॥

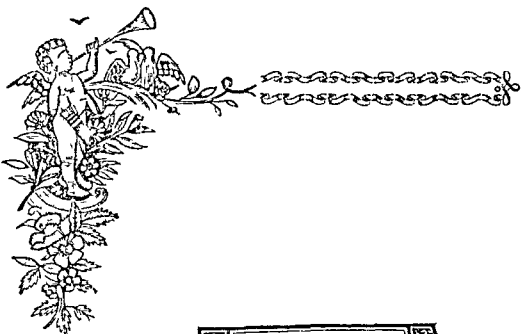
निरविकल्प उपयोगमें, होय समाधि रूप ॥	
अचल ज्योति जलके तिहां, पावे दरस अनूप	॥ १९ ॥
देख दरस अद्भूत महा, काल त्रास मिट जाय ॥	
ज्ञानयोग उत्तम दिशा, सदगुरु दीये वताय	॥ २० ॥
ज्ञानालयन दृढ ग्रही, निरालयता भाय ॥	
चिदानन्द नित आदरो, एहिज मोक्ष उपाय	॥ २१ ॥
शोडासामें जाणजो, कारज रूप विचार ॥	
कहत सुणत श्रुत ज्ञानका, कबहु न आवे पर	॥ २२ ॥
में मेरा ए जीवकूं बधन महोटा जान ॥	
में मेरा जाकु नही, सोही मोक्ष पीछान	॥ २३ ॥
में मेरा ए भावथी, बघे राग अरु रोष ॥	
रागरोष जौलें हिये, तौले मिटे न दोष	॥ २४ ॥
रागद्वेष जाकूं नही, ताकुं काल न खाय ॥	
कालजीत जगमें रहे, महोटा विरुद्ध धराय	॥ २५ ॥
चिदानन्द नित कीजीयें, समरण श्वासोश्वास ॥	
दृथा अमूलक जात है, श्वास खर नही तास	॥ २६ ॥
एक महूरत माहि नर, स्वरमें श्वास विचार ॥	
तिहुंतर अधिका सातसो, चालत तीन हजार	॥ २७ ॥
एक दिवसमें एक लख, सहस त्रयोदश धार ॥	
एक शत नेबु जात है, श्वासोश्वास विचार	॥ २८ ॥
मुनि शत सहस पंचाणवे, भाखे तेत्रीश लाख ॥	
एक मासमें श्वास इम, एहरी प्रवचन शाख	॥ २९ ॥

चउसत अडताली सहस, सप्तलक्ष स्वरमाहि ॥	
चार क्रोड डक वरसमा, चालत सशय नाहि	॥ ३० ॥
चार अत्रज कोडी सपत, पुनः अडतालीस लाख ॥	
स्वास सहस चालीस मुवि, सो वरसामें भाख	॥ ३१ ॥
वर्तमान ए कालमें, उत्कृष्टी धिति जोय ॥	
एकशत शोले र्पनी, अतिक्र न जीवे कोय	॥ ३२ ॥
सोपक्रम आयु रुद्यो, पचम काल मजार ॥	
सोपक्रम आयु त्रिपे, घात अनेक विचार	॥ ३३ ॥
श्वास श्वास प्रभु नाम ले, वृथा श्वास मत खोय ॥	
ना जानू ये अतको, यही श्वास नहि होय	॥ ३४ ॥
दूरा दूरा सत्रसू रुहे, दूरा न दीसे कोय ॥	
जो षट सोधू माहेरो, मोसू उरो न कोय	॥ ३५ ॥
सुख दिया सुख होत है, दुख दिया दुख होय ॥	
आप हणे नै औरकूं, तो आपन हणे न कोय	॥ ३६ ॥
राम कीसीकू मारे नहि, सबसें मोटा राम ॥	
आपहि आप मर जायगा करकर खोटा राम	॥ ३७ ॥

## ॥ प्रार्थना ॥

रुहेवामें आवे नहि अवगुण भन्या अनत ॥ लिखवामें क्रिम-  
कर लिखु, जाणो श्री भगवत ॥ ३८ ॥ करुणानिधि कृपा करी, कठिण  
कर्म मोय छेद ॥ मोह अज्ञान मिथ्यात्वको, करिये गठी भेद ॥ ३९ ॥  
पतित उधारण नाथजी, अपणो विरुद विचार ॥ भूल चूक सत्र  
महायरा, खमिये वारवार ॥ ४० ॥ माफ करो सब महायरा, आज  
तत्करना दोष ॥ दीन प्याळ आपो, मुजे, श्रद्धासील संतोष ॥ ४१ ॥  
अरिहत देव निग्रथ गुरु, सपर निर्जरा मर्म ॥ केवली भाषित  
शास्त्र ए, एही जिन मत मर्म ॥ ४२ ॥





इति सामायिक प्रतिक्र-  
मणादि नित्य स्मरणम् ॥

॥ श्लोकम् ॥

॥ इति प्रणीत गुरु रामचंद्रां-त्रि सेवकेनप्रभुपत्प्रसादात् ॥

॥ हर्षाग्रत श्रंद्र इतीव नाम्ना प्रीत्यै भवेत्सर्व जनस्यसम्यक् ॥



श्री ॥

# सिद्धांत शिरोमणि.

प्रथम खंडः ॥

प्रकरण पहिला-स्तोत्र ॥

चतुर्विंशति जिनस्तुतिः ॥

सार्दूल विक्रीडितम् ॥

वटे धर्म जिन सदा मुखरु चद्रमभ नाभिज । श्रीमद्री ग जिने-  
श्वर जयकरं कुयु च शक्तिं जिन॥ मुक्ति श्रीफलदायनंत मुनीप वटे  
मुपार्धे विशु । श्रीमन्मेध नृपात्मजच मुमतिं पार्धे नमामीष्ट ॥१॥  
श्रीनेमीश्वर मुप्रतौ च निमल पद्ममभ गागर । शेवेश भवशंकर नमि  
जिन महिं जयानदन ॥ वटे श्रीजिनसीतल च मुमुध सेवे जिन

मुक्तिद । श्रीसिध व्रत पच विशतितम साक्षादर वैष्णव ॥२॥ स्तोत्र  
 सर्वजिनेश्वरै रभिगतं मत्रेषु मत्र वर । मेतत्सगत यंत्र एव विजयो  
 द्रव्यैर्लिखित्वा श्रुभैः ॥ पार्श्वैः सप्रियमाण एव सुखदो मांगल्य मा-  
 लाप्रदो । वामागे वनिता नरस्तदतरे कुर्वन्ति ये भावतः ॥३॥ प्रस्थाने  
 स्थिति युद्धिवाद करणे राजादि सदर्शने । मार्ग्रे सविपमे द्वाग्नि  
 ज्वलिते चिंतादि निर्नाशने ॥ उप्यार्थे मुतहेतवे अनकृते रक्षतु पार्श्वे  
 सदा । यत्रोय मुनिने त्रसिह रुप्रिना संग्रथितः सौख्यदः ॥४॥

इति चतुर्विंशति जिनस्तोत्र समाप्त ॥

## २ अथ अकलंक स्तोत्रम् ॥

त्रैलोक्य सकल त्रिकाल त्रिपय सालोक्यमालोकितम् । साक्षात्त्रेन  
 यथा स्वयंकरतले रेखात्रय सागुलिम् ॥ रागद्वेषभयान्महातरुजरालो-  
 लत्व लोभादयो । नीलप्रत्पटलधनाय स महादेवो मया वंशते ॥१॥  
 दग्ध येन पुरत्रय शरभुवा तीर्त्वा चिंता वन्दिना । यो वा तृप्ति मत्त-  
 वत्पितृवने यस्यात्मजो वागुहः ॥ सोऽप्य किं मम शकरो भयतृपा  
 रोपार्ति मोहक्षयं । त्कृत्वा यः सतु सर्ववित्तनुभृता क्षेमंकरः शकरः ॥२॥  
 यत्नाधेन विदारितं कररुहैर्दैत्यैर्द्रवक्षःस्थल । सारध्येन धनजयस्य  
 समरे यो मारयत् कौरवान् ॥ नासौ विष्णुरनेक कालविषयं यद्ज्ञान-  
 मव्याहत । विश्व व्याप्य विजृभते स तु महा विष्णुः सद्विष्टोमम ॥३॥  
 उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो यदीयं पुनः । पार्त्वीं दडकमण्डलु  
 प्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं ॥ आविर्भावयितु भवेत्तु स कथं ब्रह्मा  
 भवेन्मदृशां । क्षुत्तृष्णाश्रम राग रोप रहितो ब्रह्मा कृतार्थोस्तुनः ॥४॥  
 यो जग्ध्वापि सित समत्स्य कबलं जीवस्य शून्य वदन् । कर्ता-कर्म  
 फल न भुक्त इतियद्वक्ता सनुद्धः कथं ॥ यद्ज्ञान क्षण वर्ति वस्तु सकल

ज्ञातुं न शक्य सदा । यो जानन् युगपज्जगत्रयमिदं साक्षात्सु बुद्धो  
मम ॥५॥ ईशः किं त्रिन्नर्लिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्या ।  
त्रायः किं भैक्षचारी यतिरिति सकथ सागनः सात्मजश्च ॥ आराजः  
किं त्वजन्मा सकल प्रिटिति किं वेत्तिनात्मातगाय । सक्षेपात् सम्यगुक्त  
पशुपति मपशु कोत्रवीमानुपास्ते ॥ ६ ॥ ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुर युवति  
रसावेश विभ्रातचेताः । शशुःखटवागधारी गिरिपति तनयारागली-  
लानुविद्धः ॥ विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहित रम गमत् गोपनायस्य मोहा ।  
दर्हन् विध्वस्तरागो जितसकलभयः कायमेवाप्तनाथः ॥ ७ ॥ एरु-  
स्तृप्तति विप्रसार्य ककुभा चक्रे सदस्र भुजा । मेरुः शेष भुजग भोग  
शयने आटाय निद्रायते ॥ दृष्टु चारु तिलोत्तमा मुखमगादेरु शतुर्व-  
चत्रता । मेते मुक्तिपथ वदति त्रिदुपा मुक्तकृत्सत्यद्भुत ॥ ८ ॥ यो  
विश्व वेद्य वेद्य जनन जलनिधेर्भगिनः पारदृष्टा । पूर्वा पर्या विरुद्धं  
वचनमनुपम निष्कलरु यदीया ॥ त उदे साधुत्रयं सकलशुणनिर्दिष्टस्त-  
दोपद्विपत । बुद्ध या वर्तमान शतदलनिलय केशव या शिव वा  
॥ ९ ॥ माया नास्ति जटा कपाल मुकुट चडो न मूर्धावली । खट-  
वाग नचवासुकिर्नच वनु शूल न चोग्र मुख ॥ कामो यस्य न का-  
मिनी नच वृषो गीत न नृत्य पुनः । सोय पातु निरजनो जिनपतिः  
सर्वत्र मृक्ष्म शिवः ॥ १० ॥ नो ब्रह्माकित भूलन नचहरेः शर्भार्नमु-  
द्राकित । नो चद्रार्ककराकित सुगपतेर्ब्राकित नैव च ॥ एहवत्रार्न-  
कित यौधदेवहुतमुग्यक्षोरैर्नार्कित । नग्न पश्य समंततो जगदिदं जै-  
नेद्र मुद्राकित ॥ ११ ॥ मौंजी दृढकमडलप्रभृतयो नो लाडन ब्राह्म गो ।  
रुद्रस्यापि जटा कपाल मुकुट कौपीन खट्वागिना ॥ विष्णोश्चक्रगदादि श-  
खमंतुल वौधस्य रक्तापर । नग्न पश्यतवादिनो जगदिदं जैनेन्द्र मुद्रां-  
कित ॥ १२ ॥ नाहकार वशीकृतेन मनस न द्वेषिण केवल ।  
नरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जने कौरुण्य बुद्धया मया ॥

राजःश्री दिग्शीतलस्य सदसि प्रायो विद्ग्धात्मनां । बोद्धौयान् सरु-  
 लान् विजित्य नुातःपादेन विस्फालिनः ॥ १३ ॥ खट्वाग नैवहस्ते  
 नरश्चिररचिता लमिता नैव माला । भस्मागं नैव शूल नचगिरि उडिता  
 नैवहस्ते कपालं ॥ चद्रार्थ नैव मूर्ध्नि नचष्टपगमन नैव कठे फणींद्रः ।  
 तंवदे त्यक्तदोषभवभयमथन ईश्वर देव देव ॥ १४ ॥ किंवाग्रो भग-  
 वानमेय महिमादेवो कलकः कलौ । काले यो जनता सुधर्मनिहतो  
 देवोऽलंकोजिनः ॥ यम्यस्फार विवेकसमुद्र लहरी जाले प्रमेयाकुला ।  
 निर्मग्नातनु ते तराभगवती तारा शिरः कपनं ॥ १५ ॥ साताराखलु  
 देवता भगवती मन्यापि मन्यामहे । पण्मासावग्नि जाड्य शख  
 भगवान् भट्टा कलक प्रभो ॥ वाक्कल्लोल परपराभिरमिते नूनं जने  
 मज्जन । व्यापार सहते स्मविस्मितमति सताडिते तस्तत ॥ १६ ॥

इति अकलक स्तोत्रम् समाप्तं ॥

### ३ अथ महिम्नस्तोत्रम् ॥

शिखरिणी वृत्त ॥

महिम्नः पारते परमल भमाना अपि विभो । भवति स्तोतारः  
 समवसृति भूमौ समुदिताः ॥ यदींद्रात्रास्त्वातज्जिनवृषभ भक्त्यास्तव-  
 यतो । समाप्येप स्तोत्रे हरनिरपवादः परिकरः ॥ १ ॥ स्वरूप चिद्रूप  
 किमपि तदरूपं भगवत । अनूरूपात्त्राह्नी यदि गदितु मीष्टेन भवतः ॥  
 ततः कस्य स्तुत्य किमुपम मिद् कस्य विषयः । पदेत्वर्वाचीने पतति  
 नमनः कस्य नवचः ॥ २ ॥ पद शैव केचित्परममन पेक्षा क्षयमुखं ।  
 स्तुवंति त्वा राज्यादिकपट कृते मदमतयः । भवेद्वा तत्त्वार्थे रति रति  
 तरां नैव भविनः । पदेत्वर्वाचीने पतति नमनः कस्य नवचः ॥ ३ ॥

गुणानामानत्रादविषयतया बाह्मनसयो । न शक्या तत्वज्ञैरपि तव  
विधातु स्तुतिरिय ॥ भवन्नामोच्चारं पुनरिनममैतां निजगिर । पुना-  
मीत्यर्थेस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ४ ॥ जटालकाराल कृतमथ  
दृषां कच भगवन् । पुनान विश्व त्वा प्रथम जिन मत्वा किमुतत. ॥  
जटा धृत्वा श्रुत्वा दृषमहमपि क्षमातलमिदं । पुनामीत्पर्ये स्मिन् पुरमथन  
बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ५ ॥ न कोपस्याटोपः स्वरिपुषु नचस्वेष्टपितथा ।  
इसत्तिनेर् कातादिकपरिकरः कश्चिदिति ते ॥ त्रिलोक्या मालोक्या  
प्यहह परमा प्राभयरमा । विहतुं व्याक्रोशी विदधत इहैके जडधियः  
॥ ६ ॥ ध्रुव कश्चित्कर्गां निखिल भुवनस्यापि सपुन । विंशुर्नित्यत्रैक-  
सतनु रतनु त्रैस्ववशतः ॥ स्वयसिद्धे प्यस्मिंस्नव मतमनात्पान् हत-  
धियः । कुतर्काय काश्चिन् मुखरयति मोहाय महतां ॥ ७ ॥ विगुप्तो  
रागाद्यै रपि भवति किं सर्वं पिदहो । विनात्वा सर्वज्ञ ननुजिन किमा-  
त्यो पिसचक्रिम् ॥ तदन्व्यो पि कापि त्रिजगति वतात्पस्वविषये । यतो  
मदास्त्रा प्रत्यमखर सशे गत इति ॥ ८ ॥ त्वमेवाहंन् बुद्धेा जगति  
परमेष्ठी च पुरुषो । तमो लभ्यो भाम्यान् त्रिबुध गुर रात्रीश्वर इति ॥  
विभो नानाव्याधिः सम विषम मार्गेषु चरतां । नृणामेको गम्य स्त्व-  
मसि पयसा मर्णव इव ॥ ९ ॥ इसादात्ते पुत्रा विषय सुख साम्राज्य  
ममजन । न केवासेवातस्तन्न वनरामृद्धिमगमत् ॥ तृपे त्वैणे स्वर्णे  
दृषटिच सदृक्ष पुनरहो । नहि स्वात्माराम विषय मृग तृष्णा भ्रमयति  
॥ १० ॥ भवत्तत्तादृक्षातिशय महिमे क्षाव ससमु । ज्वज्जक्तिव्यक्ता  
रिणरण कितातः करणतः ॥ अधिरच्युक्तुक्ता खिलजग दशम्यस्तवम-  
पि । स्तुवन् जिह्मेमि त्वा न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ११ ॥ न श-  
स्यौ कस्यस्ता नमि पिनमि पत्नी जिनपते । त्वदेकस्वामित्वात् क्रमक-  
मल सेवा मुरसिकैः ॥ प्रसादात्ते विद्या धरपति ततिर्यत्सविनय । स्वयं  
तस्येताभ्याम् तवकिमनुवृक्तिर्नफलति ॥ १२ ॥ तदा विद्याः प्राप्य  
ध्रुवमखिल विद्याधर महा । न्त्वय प्रादुर्भाव्य प्रथम मथवैतादय

विभुतां ॥ यदैतौ दुःसाध्यौ सुरवरनराणामभजतां । स्थिरायास्त्वद्भक्ते  
 स्त्रिपुर हरविस्पूजित मिद ॥ १३ ॥ तदैश्वर्यं वर्यं मदनं मद्यं विद्वंसच  
 महा । व्रति त्वं सर्वज्ञं त्वमसमविभृतिश्च परतः ॥ सिद्धासगश्चगः सत-  
 त्तमिति नो कस्य कृतिनः । स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर विस्पूजित  
 मिद ॥ १४ ॥ विवाहादौ नेतर्मुदुरूपकृतोपिप्रभिव । त्वया पार पर्या-  
 गत परिचयान्मोहं चरटः ॥ तथादूरं नष्टः क्वचिदपि यथा केवलं कला ।  
 प्रतिष्ठात्स्वग्यासीं त्रामुपचितो मुह्यति खलः ॥ १५ ॥ निजार्चास्पर्शा-  
 लुभेरत प्रिभुरासीन्मघव्रता । यदा पश्यस्पाद्धां सनमथसुखं केवलं  
 रमा ॥ तदेतस्मिन्सर्वं तव पदं त्रिनम्रे समुचितं । न कस्याप्युन्नत्यै  
 भवति गिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १६ ॥ निजं स्यात्पूर्वं क्षणमजगण-  
 च्चां भरत राट् । समं चक्रेणाहो तदिहविषयानां विषमता ॥ यदेत-  
 स्यार्चात्र प्रमितं फलदैवा शिवं सुखं । न कस्याप्युन्नत्यैभवति गिरस-  
 स्त्वय्यवनतिः ॥ १७ ॥ प्रभोत्वत्पुत्रस्या त्रुलवलवतो वा दुबलिनः ।  
 तपस्तीव्रं तादृक्सरस्वधिमानादपिकृतं ॥ निदानं पानस्य शुभमभवदा-  
 श्रयं मथवा । विरुरोपि श्लाघ्यो भुवनं भयं भगव्यसनिनः ॥ १८ ॥  
 न मुत्रामि यत्र प्रभवति विघातापि न विभुः । स वैकुण्ठः कुण्ठः किमपि  
 नभवश्चाभवदल ॥ जिगीषुः सत्वामप्यपरं सुखं दुर्मतिरभूत् । स्मरः स्म-  
 र्त्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यं परिभुव ॥ १९ ॥ प्रयुजान् स्वामिन्  
 स्वयमखिलं शिक्षान्यसुमतां । कला पुसा स्त्रीणामपि च सकला क्षमा-  
 पतिरपि ॥ कुलालादींस्तास्तान् क्षणमभिनयन् शिक्षणविप्रौ । जगद्र-  
 ष्थायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुतां ॥ २० ॥ प्रभो तैस्तैः सारैरण्  
 भिरखिलैः श्रामरवरैः । कृतं रूपं सर्वोत्तमं सुखमपगुणकमितं ॥ त्वदं-  
 गुणस्याग्रे शुभंति किलनागारक इवे । त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिर दिव्यं  
 तव वपु ॥ २१ ॥ प्रजां प्राज्यं राज्यं स्थविरजननी स्वस्यतनुजा ।  
 स्तनपद्मनास्पत्ता वपिच विहरन् वाहुवलिनः ॥ उपेक्षिता आत्तं वृतं नृप

सहस्रांश्च चतुर्गे । त्रिवेद्यै क्रीडत्यो न खलु परतत्रा प्रभुत्रिय ॥२२॥  
ददानो रम्नाना त्रयमखिल दौर्गत्य हरण । निदान सपत्ते त्रिभुवन  
जनानामनुदिन ॥ भवान्योगक्षेमा वपि विरचयन्मन्मधजये । त्रयाणा  
रक्षायै त्रिपुर वर जागर्ति जगता ॥ २३ ॥ यथा पूर्वं मुग्धास्तत्र  
समुपदेशा कगलिनः । सदा स्वामिन्नत्रा जनिपत सदाचार चतुराः ॥  
तथा कस्कः सपूत्यपिन विगदेषु त्वदुदित । श्रुतौ श्रद्धा बद्ध्वा दृढ-  
परिकरःकर्म सुजनः ॥ २४ ॥ तपस्तीत्रब्रह्म त्रत नियम निष्ठा बहु-  
विद्या । क्रिया कृष्टा स्पष्टा अपि जिन यदुष्टाशयतया ॥ त्वदाज्ञा  
ब्रह्माया नियत महिता यैव भविता । तत्र कर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचारा-  
यहिमग्वा ॥ २५ ॥ जगाभृन्मुग्धाः के नियत मधिमात्रा नपिसदा ।  
शयस्थान् शान्मौघान न दयति तरायस्य हतये ॥ अविघ्न त नित्रन्न  
सम समयस्तामसमुग । त्रसत तेत्रापि त्यजति न मृगव्या उरभसः  
॥ २६ ॥ परिभ्रम्यक्तेगार्जितमपि सहस्रेण शरदा । मदाश्विद्रत्न त्व  
सपदि मरुदेव्यो तदपिचेत् ॥ प्रभो निःस्नेह सात्रतसमय सर्वावगणना  
। द्वैति त्वामद्वा त्रत वरद मुद्गा सुवतय ॥ २७ ॥ महानदे यत्रप्यसि  
जिन दवी यस्य पि पदे । न रुष्टस्तुष्टश्च त्रिभुवन जनेषु कचिदपि ॥  
भवन्नामस्वामिन् स्वमनसि महामंत्र मनिश । तथापि स्मर्तृणा उरद  
परम मगलमसि ॥ २८ ॥ प्रभो प्रागायामा भ्यसनरसि क्त्वात्रिज-  
मनः । समाधावा धायान्त्रिलिपयतो क्षाणि युगपत् ॥ द्रुत प्रत्याठप्त  
स्थिर निहित नासाग्रनयना । दधत्य तस्तच्च किमपि यमिनस्तत्किञ्च  
भवान् ॥ २९ ॥ सुरदृःस्वकुभ सिदग सुरभीत्व सुरमणि. । पितामाता  
श्राता विधुरपि सुकृत्व च सुगुरुः ॥ परात्मा ब्रह्मापि त्वमसि परम  
दैवत मतो । नविद्मस्तच्च तद्वय मिहृदि यत्र न भवसि ॥ ३० ॥  
अकाराग्यैर्वर्णे स्त्रयिपरिणतान् पचपरमे । छिनःस्पष्ट पष्वाक्षर रच-  
नया नामनिगदत् ॥ कलानाद व्यक्ते किमपि परम ब्रह्मत्रिपय । सम-



स्त व्यस्तं त्वां शरणदृग्णा त्योमितिपदं ॥ ३१ ॥ नरागायैर्गस्तो  
 न पुनरनुकृप्यो मदपरः । कृपालुस्त्व त्तोन्यो न जगति नतेभ्यः पुन-  
 रल ॥ स्वय तैरत्याचैः किमितर सुरैश्चेति विमृशन । प्रियायास्मै धाम्ने  
 प्रविहित नमस्योस्मि भवते ॥ ३२ ॥ नमोनाशक्ताय कचिदपि विर-  
 क्ताय चनमो । नमःसबुद्धाय प्रसमदमरिद्धाय च नमः ॥ नमःसर्वज्ञाय  
 स्मरणपर तज्ज्ञाय च नमो । नमःसर्वस्मै ते तद्विदमिति सर्वायच नमः  
 ॥ ३३ ॥ दलिन रजसे शश्वद्विश्वा चिंताय नमोनमः । प्रहत तमसे  
 श्री सर्वज्ञाधिपाय नम ॥ जनहित कृते तुभ्य सत्त्वाधिकायनमः । प्रम-  
 हसि पदे निस्त्रै गुण्ये शिवाय नमोनमः ॥ ३४ ॥ कुसुम बहुदिवाह-  
 तचतुर्तौ किचनार्ह । कृतिभिरुरसि कठे वा गुणत्वा दर्शाय ॥ जिनवर  
 निजहर्षां त्कर्षतो कर्षमेव । वरद चरणयोस्ते वाग्यपुष्पोपहारं  
 ॥ ३५ ॥ प्राणु श्री सोमप्रशे जनिपत मुनयो मौक्तिकानीव शुद्धा ।  
 स्तेथप्येकावलीव प्रगुण गुणवती श्रीमदाचार्य पक्तिः ॥ जीयाद्राज्या  
 यद्नामिव गुरु जयचद्राद्वय श्री मुनीद्र. । तस्यामप्येप चितामणिरुचिर  
 रुचिर्नायकः कृष्णदेवः ॥ ३६ ॥ निहित चरम पाद श्री महिम्न स्तव-  
 स्य । त्रिभुवन महितस्य श्री युगादीश्वरस्य ॥ भ्रमर इव सदा तत्  
 पादपद्मोपजीवी । रुचिरमलघु वृत्तैःस्तोत्रमेतद्वय प्रत्त ॥ ३७ ॥ एव  
 शारद सोममुदर यशः स्तोम युगादीश्वर । चेतोभूज्जयचद्र मौलिभि-  
 रभिष्ट्वान्वहं योगिभिः ॥ ज्ञानप्राप्य विशाल राज दसमाल्हाट समाश्री-  
 यते । मुक्ते भूर्धनिरत्नशेखररमात्रमहैकतेजोमयी ॥ ३८ ॥

इति महिम्न स्तोत्र समाप्त ॥

## ४ अथ सिद्ध विशतिका ॥

### शिखरिणी वृत्त ॥

मुनीना दुस्तर्क्य खलुदुरधिगन्योमृत भुजा । गुणाना ते राशि  
 कलयति नरस्तत्कथममु ॥ विवक्षु प्रौत्सुक्यात्स्वधिय मविजानन् जड-  
 मति । निर्धातुकुभातर्निधिमभिलपामीहपयसा ॥ १ ॥ त्वमीशानोस्मा-  
 क वयमपिच भृत्यास्नव विभो । तदुच्चैर्भृद्धाना भगसि न कथ हतवरद  
 ॥ यदामादक्षेण स्फुरति तव लज्जा जडधिया । धिय स्वस्यादाने वट  
 किमिति कार्पण्यमतुला ॥ २ ॥ न रोधोनावज्ञा नच खलभय ना नवसरो । न-  
 चासिद्धिर्नास्थाचिरपरिचयेनोचटुवच विभोत्वत्सेवायामिहयदपि सौ  
 कर्य मखिलं । तथाप्यस्मच्चेतो हतमितरसेवास्पृहयति ॥ ३ ॥ श्रुते न  
 व्यासगो नच सतत सगोपि सुविदा । मभगो नोत्साहस्तपसि नच  
 दान नविरति ॥ गुणैस्स्पृष्टनो वत जनममु तारयसि चे । जडाना-  
 सुद्धारे वरद तवकाहो पुरषिका ॥ ४ ॥ भजतोर्मामप्यहह विषया  
 रूढ मनस । स्तदुद्धारे माभू श्लथित विनियोगो जडधिया ॥ त्यजामो  
 व्यासग विषम विषयाणा यद्वितदा । स्वयतूर्ण तीर्णा स्त्वपि किमिते  
 दैन्येन भगवन् ॥ ५ ॥ त्वमुद्धर्त्ता नृणामपि भवपयो धौनिपतता ।  
 विदित्वे त्यागाते दुरितभरभृग्नोपि शरण ॥ कुरुद्धारनोचेत्सममिह-  
 मदीयैश्चदुरितै । पराभृति गता वत वत विवाद् व्यतिकरे ॥ ६ ॥  
 मयागी चक्रे त्व परमपद लाभाहित धिया । त्वमीशौदासि य भजसि-  
 यदि वाच्यं किमु पुन ॥ विदूरेऽभीष्टार्थ प्रवितरण कीर्ति किमितिमे ।  
 कृतागीकार स्व परमनृण भाव न भजसि ॥ ७ ॥ त्वमीगस्मर्तृणां  
 वकुल भवभार निरसय । भतवर्षामाहक्षे श्रियमनुमपेया नितनुपे ॥

जनस्त्वा माख्याति श्रुतविदिह नीरागडतियस्तदाश्चर्य यद्वाद्भुत चरित  
 लक्षाह विभव ॥ ८ ॥ उदासीनो नाथ स्वमिह भजतामप्य भजतां ।  
 सुख वा दुःख वा नरवल्लु समदृश्वा स्मृहयसि ॥ पर त्वन्नामैवावति  
 ज्ञन ममुं विघ्न भरतो । भिधैव श्रान्या तत्त्वयि किमपि मोध वत  
 यश ॥ ९ ॥ त्रिलोकी त्वामतर्व सति जगदीशेति महिमा । तव  
 श्लाघ्यो लोकेऽखिल जन चमत्कार जनन ॥ मम त्वामप्यत त्वं दि  
 निवहत किंचन यशो । विना पुण्यै कीर्तिं जगति किल कश्चिन्न ल-  
 भते ॥ १० ॥ समच्छिन्नामेश्री कृतकलुप कर्मोग्र पटलै । प्रदेया सैवा  
 श्रु स्वयमिह समुद्घाटय सहसा ॥ अये कीर्तिं सौधारु किरण कां-  
 त्या सहचरीं । मदीय ता मद्य श्रिय मवितरन् कि न भजसे ॥ ११ ॥  
 प्रकुर्वन्त पापा न्यत्रि भय मुपेमो नहि मनाक् । तवैवार्थेऽस्माभिर्व्यर्राच  
 दुरिताना व्यतिकरः ॥ विनामादृक्षैस्ते विपमभव पायोऽधि पतितैः ।  
 कथ कार लभ्या वरदयति तो द्वार पदवी ॥ १२ ॥ तमुद्धर्तुं दीनान्  
 दुरित भर भुग्नानपि विभो । भवावधौ निक्षेप्तु ममदुरित मत्याग्रह  
 पय ॥ दिदक्षामो ब्रह्मत्रिहृदि यत वाद व्यतिकरे । प्रतिज्ञायाम् रुस्यो  
 लुसति दृढ भूमिः खलु हतः ॥ १३ ॥ समलस्त्व नाक्षणेन च वरद  
 चित्रानुकृति भाक् । नवा लक्षः स्रप्ने कथमपि न मेव्योऽसि वपुषा ॥  
 तथाप्यस्मच्चेत स्वयि भजति रागाद्वशगता । न जाने तद्ब्रह्मन्क-  
 तममभिचारं प्रययसि ॥ १४ ॥ भवश्चभ्रापातः स्फुरति व्रत राग  
 प्रभवइत्युपास्ते तां लोको वत निहतरागच विमृशन् ॥ अये चित्र  
 चित्र चरितमविचित्य वरद ते । श्रुतोप्यंतर्नृणा अतुल मनुराग जन-  
 यसि ॥ १५ ॥ निशम्य स्व दास कचिदपि विप्रद्विघ्निततनुं । त्वरते  
 स्वा व्रीडा हृदि निदग्गतो हत विभवः ॥ अये मामा क्रान्तं दृढ दुरित  
 लुटाग्नि करैः । मुहुः पश्यन्पश्यन्वत वत न लडा कलयसि ॥ १६ ॥  
 पयोधेर्गाभीर्य विपमतिमिनकै रूप हत । हत काठिन्येन श्रवमचल

राजस्य महिमा ॥ विनिर्मुक्ते दौषे रगणित गुणौघैः श्रितवति । त्वयि  
ब्रह्मन्धत्ते सतत सुपुमां तत् द्वयमपि ॥ १७ ॥ पशुर्धेनुः शैलो  
मणिरवनि जन्मातरू रथ, स्फुटं याचा दैन्ये ददति मितमर्थं कथमपि ॥  
तव ब्रह्मन्स्वैर श्रियमपरिमेयां वितरतो । न जाने त्रैलोक्ये कतरदु-  
ष्मानं विलसति ॥ १८ ॥

शार्दूल विक्रीडितम् ।

इत्थ भक्ति भरातुरेण मनसा वाचामगम्योपियो । नूनं नाथनूतो-  
सि शीघ्ररचितैरत्युन्न काव्यैर्मया ॥ तुष्टोयत्रसि साम्प्रत भवभव क्लेश-  
कुल हंतमा । मगीकुर्वन्नुरुपया जिनपते नोवेदनगीडुरु ॥ १९ ॥

॥ अनुष्टुभ् ॥

॥ त्वमनंगोऽसि भगवन्नगमग्यनुंकप्यताम् ॥

॥ ययायनागससर्गैः कर्हिचित्परिभूयते ॥ २० ॥

इति श्रमणोपासरु दलपतिरोय विरचिते सिद्ध विंशत्यां स्तोत्रम् ॥ ६ ॥

॥ २० ॥

५ । अथ सिद्धान्तेऽष्ट पदार्था दुरधिगम्याः ।

अनाश्रय सिद्धि प्रुवमुपगतस्तापुनरित-स्तथाप्येपारिक्ता नहि  
खलुरुदाचित्समभवत् ॥ तदेव दुस्तक्य व्यतिकर निरासा क्षमप्रिया-  
मचिन्त्यस्तेवाचो वहति महिमा श्वासननिधि ॥ १ ॥ वहत्यद्वा मुक्ते  
रविरतमय भव्य निररा-दनतोसोऽजाल स्तदपि नचते यातिविरति ॥  
तदेवं ॥ २ ॥ अवश्यंसेत्स्यति स्फुटमिहहि-भव्यास्तदपिभो-अमी-  
सिद्धभ्य स्यु खलयदिरुदानतगणिता ॥ त० ॥ ३ ॥ अभाज्ये  
क्षेत्रादौ रियतिमुपगत पुद्गलगणः-वृथग्रुपेण स्वनच भजति सत्रातनि-

चयं ॥ तदे० ॥ ४ ॥ प्रदेशःस्वस्येकः स्पृशातिखलु टिक्स्थानपिपशन्-  
 पृथग्वैशैः स्वस्याप्यवयवविहीन स्तदपिसः ॥ त० ॥ ५ ॥ दिगंते  
 जीवोयं व्रजति समयैकेन घटयन्नभोऽणुनिः संख्यांस्तदपिचनिरंशोहि-  
 संमयः ॥ त० ॥ ६ ॥ अणौशीतादीनां द्वयमिह चतुर्णां निगदितं-कृतः  
 स्कंधे चाष्टौ कथमिहहि शब्दादिघटना ॥ त० ॥ ७ ॥ कृतं पुसा  
 कर्म प्रभवति कथं तस्य घटना-निरादिः स्याद्वास्ता रुथमिहनिरादेर्वि-  
 चटनं ॥ त० ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्तेऽष्टपदार्थां दुरधिगम्या समाप्ता ॥

## ६ ॥ श्रीमहावीराष्टक लिख्यते ॥

यदीये चैतन्ये मुकर इव भावाश्चिदचितः-समभ्रातिश्रौव्य व्यय  
 जनिलसतोतरहिताः ॥ जगत्साक्षि मार्गप्रगटनपरो भानुखियो-महावीरः  
 स्वामी नयनपथगामी भवतुनः ॥ १ ॥ अताम्रयचक्षुः  
 कमल युगलं स्पदरहितं जनान कोपाथाय प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ॥  
 स्फुट मूर्तिर्यस्यप्रशमसमर्था वातिविमला महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकें-  
 द्राली मुकुटमणिभाजालजटिल लसत्पादां भोजद्वयमिह यदीय तनुभृता  
 भवज्वाला शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि महावीर स्वामी० ॥ ३ ॥  
 यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह क्षणादासीत्स्वर्गागुणगणसमृद्ध सु-  
 खनिधे. लभते सद्भक्ताः शिव मुख समानं किमुतदा महावीर स्वामी०  
 ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोप्यपगत तनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृ-  
 पतिवरसिद्धार्थतनय अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुतगति-  
 महावीरः० ॥ ५ ॥ यदीया वाग्गंगा विविध नय कल्लोल विमला वहद्  
 ज्ञानाभोधिर्जगति जनतायाश्नपयति । इदानी मप्येषा बुधजनमरालैः

परिचिता महावीरः० ॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः  
कुमाराप्रस्थायामपि निजबलात्त्रेनविजितः स्फुरन्नित्यानदप्रशमपट रा-  
ज्यायसजता महावीरः० ॥ ७ ॥ महा मोहातक प्रशमन परारुस्मिक  
भियक् निरापेक्षो वधुर्विदितमहिमामंगलकरः शरण्यःसाधूना भवभय  
भृतामुत्तमगुणो महावीरः० ॥ ८ ॥

अनुष्टुप्.

महावीराष्टक स्तोत्रं भक्त्याभाग्येदुनाकृतं  
यःपठेच्छृणुयाद्वापि सयातिपरमांगतिं ॥ ९ ॥  
इति महावीराष्टक स्तोत्रम् ॥

७ अथ जिन सहस्र नाम स्तोत्रम् ॥

प्रभो भवांग भोगेषु निर्दिण्णो दुःखभीरुः ॥ ॥ एष  
विज्ञापयापित्वा शरण्यरुरणार्णवम् ॥ १ ॥ सुखलाल सदा मोहाद्भ्रा-  
म्यन्वदि रितस्ततः ॥ सुखैरुहेतोर्नामापि तव न ज्ञातवानपुरा ॥ २ ॥  
अत्र मोहग्रहावेश शैथिल्यात्किचिदुन्मुख अनतगुणमाप्तेभ्य स्त्वाश्र-  
त्वास्तोतुमुग्रतः भक्त्या प्रोत्साह्यमानोपि दूर शक्त्या तिरस्कृतः ॥ त्वा-  
नामाष्टसहस्रेण स्तुत्वात्मानपुनाम्यह ॥ ४ ॥ जिन सर्वत्र यज्ञहिं ती-  
र्थकृन्नाथ योगिना । निर्वाण ब्रह्म उद्धान्त कृताचाष्टोत्तरैः शतैः ॥ ५ ॥

तत्रथा

जिनो जिनेद्रो जिनराट् जिनपृष्ठो जिनोत्तमं । जिनाधिपो जि-  
नाधीशो जिनस्वामी जिनेश्वर ॥ ६ ॥ जिननाथोजिनपतिर्जिनराजो-  
जिनाधिराट् । जिनप्रभुर्जिनविभुर्जिनभर्ता जिनात्रिभु ॥ ७ ॥ जिन  
नेता जिने शानो जिनेनो जिन नायक । जिनेट् जिनपरिवृढो जिन  
देवो जिनेगिप्ता ॥ ८ ॥ जिनात्रि राजो जिनपो जिनेशी जिनशा-

श्रीता जिनाधिनायोऽपि-जिनाधिपतिर्जिनपालकः ॥ ९ ॥ जिनचंद्रो-  
 जिनादित्यौ-जिनार्को जिनकुजर । जितेन्दुर्जिन धारेयो जिन धुर्यो-  
 जिनोत्तर ॥ १० ॥ जिनवर्यो-जिनवरो-जिनसिंहो जिनोद्वह । जिन-  
 र्शभो जिनवृषो जिन रत्नं जिनो रसं ॥ ११ ॥ जिनेशो जिनशार्दूलो-  
 जिनाय्यो जिनपुंगव । जिनहसो-जिनोत्तसो जिननागो जिनाग्रणी  
 ॥ १२ ॥ जिनप्रवेकश्च जिनग्राहणीर्जिनसत्तम । जिनप्रवर्ह- परमजिनो  
 जिनपुरोगम ॥ १३ ॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनमुख्यो जिनाग्रम ।  
 श्री जिनश्चोत्तमं जिनो जिनवृदारकोरिजित् ॥ १४ ॥ निर्विघ्नो वि-  
 रजा शुद्धो निस्तमस्को निरंजन । घातिकर्मात्कर्म मर्म वित्कर्महा-  
 नव ॥ १५ ॥ वीतरागोऽक्षुदद्वेषो निर्माहो निर्मदोगदः । वितृष्णोनि-  
 र्ममोऽसगो निर्भयोवीतविस्मयः ॥ १६ ॥ अस्वभो नि श्रमोऽजन्मानिः-  
 श्वेदोनिर्जरोमर । अरत्पतीतो निश्चितोनिर्विपादास्त्रिपष्टिजित् ॥ १७ ॥

इति जिनशतम् समाप्तम् ॥

सर्वज्ञ सर्व वित्सर्वदर्शी सर्वावलोकन अनत विक्रमो नत वीर्यो-  
 नंत सुपात्मक ॥ १८ ॥ अनंत सौख्यो विश्वज्ञो विश्वदश्वाखिलार्थदक  
 न्यक्षदक विश्वतश्चक्षुर्विश्वचक्षुरशेषवित् ॥ १९ ॥ आनंद परमानंद-  
 सदानंद सदोदय । नित्या नदोः महानंद परानंदः परोदय ॥ २० ॥  
 परमोजः परतेज परंधाम परमह । प्रत्यग्ज्योति परंज्योति परंब्रह्म  
 परगह ॥ २१ ॥ प्रत्यगात्मा प्रबुद्धात्मा महात्मात्ममहोदय । परमात्मा  
 अशांतात्मा परत्मात्म निकेतन ॥ २२ ॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठा-  
 त्मा स्वात्मनिष्ठित । ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरुद्धात्मा दृढात्म-  
 न्द्रक ॥ २३ ॥ एकविद्यो महाविद्यो महाब्रह्म पदेश्वर ।  
 पच ब्रह्ममय सार्व सर्व विद्येश्वर सुभू ॥ २४ ॥ अनत-

धीरजंतात्मा नतशक्तिरनतदृक् अनतानतधीशक्तिः स्नतचिदनत-  
मुत् ॥ २५ ॥ सदाप्रकाशः सर्वार्थ साक्षात्कारीसमग्रधी कर्मसाक्षी  
जगच्चक्षुरलक्षात्मा जगत्स्थिति ॥ २६ ॥ निराबाधोभक्तवर्यात्मा धर्म  
चक्रीविदावर भूतात्मा सहज ज्योतिर्विश्वज्योतीरताद्रियः ॥ २७ ॥  
केवलीकेवलालोको लोकालोक विलोकन विविक्त केवलोऽव्यक्त  
शरण्योऽचित्यवैभव ॥ २८ ॥ विश्वसृष्टिविश्वरूपोत्मा विश्वात्मा विश्व-  
तोमुख विश्वव्यापी स्वयज्योतिर्चित्यात्मामितप्रभ ॥ २९ ॥ महौदार्यो  
महाबोधी महालासोमहोदयः महोपभोगीमृगतिर्महाभोगोमहाजल ॥ ३० ॥

इति सर्वज्ञशत समाप्तम् २

यज्ञार्हो भगवानर्हन्महार्हो मघवार्चितः भूतार्थयज्ञपुरुषो भूतार्थ  
ऋतुपुरुष ॥ ३१ ॥ पूज्यो भट्टारकः तत्र भवानत्र भवान्महान महा  
महार्हस्तत्रायुस्ततोदीर्घायुर्गर्वाह ॥ ३२ ॥ आराध्यः परमाराध्यः  
पचकल्याणपूजित दृग्विशुद्धिगणोदग्रो उमुधारार्चितास्पद ॥ ३३ ॥  
सुखमदर्शीदिव्योजाः शचीसेवितमातृक स्याद्रलगर्भोःश्रीपूतगर्भोर्गर्भ-  
त्सवोस्थित ॥ ३४ ॥ दिव्योपचारोपचित पद्मभूर्निष्कलःस्वज  
सद्वीर्यजन्मापुण्यागो भास्वानुद्भूतदैरत ॥ ३५ ॥ विश्वविज्ञातसभूतो  
विश्वदेवागमाप्नुतः शचीष्ठप्रतिष्ठ सहस्राक्षदशुत्सवः ॥ ३६ ॥  
नृत्यदैरावतासीनं सर्वगक्र नमस्कृतः हर्षा कुलामरखगश्चारणर्षिमतो-  
त्सवः ॥ ३७ ॥ व्योमविश्रुपदारक्षा स्नानपीतायिताद्रिराट् तीर्थेशम-  
न्यदुग्धाब्धि स्नानाबुस्नातवासवः ॥ ३८ ॥ गधाबुपूत त्रैलोक्यो  
वज्रशूचीशुचिश्रवाः कृतार्थितशचीहस्तः गक्रोऽष्टे-नायकः ॥ ३९ ॥  
शक्रारब्धानद नृत्यः गची विस्मापितां विकः, इन्द्रनृत्यतपितृको रैदपूर्ण  
यनोरथः ॥ ४० ॥ आज्ञार्थीन्द्र कृता सेवा देवर्षीष्ट शिवोऽयमः दीक्षाक्षण  
क्षुब्धजगद्भूर्भुवः स्वःपतीडितः ॥ ४१ ॥ कुपेर निर्मितास्थानः श्री



युगयोगीश्वरार्चितः ब्रह्मेडयोब्रह्मविद्येयोयाज्योयज्ञपतिःऋतुः ॥ ४२ ॥  
 यज्ञांगममृतंयज्ञो हविःस्तुत्यः स्तुतीश्वरः भावोमहामहपतिर्महायज्ञोप्रया-  
 जकः ॥ ४३ ॥ दयायागो जगत्पूज्यः पूजार्हो जगदार्चितः देवाधिदेवः  
 शक्राचार्यो देवदेवो जगद्गुरुः ॥४४॥ संभूतदेव संघान्त्यः पद्मयानो  
 जयद्वजी भामंडली चतुःपष्टी चामरो देव दुदुभिः ॥ ४५ ॥ वागस्पृ-  
 ष्टासनस्तत्र त्रयराट्पुष्पवृष्टि भाक् दिव्याशोको मानमर्दीसगीताहेष्टि-  
 मंगलः ॥ ४६ ॥

इति यज्ञार्हशतम्. ३

तीर्थकृत्तीर्थसृष्टीर्थकर स्तीर्थकरःसुदृक् तीर्थकर्तातीर्थभर्त्तातीर्थेश-  
 स्तीर्थनायकः ॥ ४७ ॥ धर्म तीर्थकरस्तीर्थ प्रणेता तीर्थकारकः तीर्थ  
 प्रवर्तकस्तीर्थवेधास्तीर्थ विधायकः ॥ ४८ ॥ सत्यतीर्थकरस्तीर्थ सेव्य  
 स्तैर्थिकृतारकः सत्य वाक्याधिपः सत्यशासनो प्रतिशासनः ॥ ४९ ॥  
 स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्य भ्वनिख्याहतार्थवाक् पुण्य वागर्थ्य वागर्द्ध  
 मागो योक्तिरिद्धवाक् ॥ ५० ॥ अनेकात दिगेकान्त व्वांत भिद्रुर्न-  
 यातकृत् सार्थवागप्रयत्नोक्तिः प्रतितीर्थमद्वयवाक् ॥ ५१ ॥ स्यात्कार  
 ध्वज वागी हा पेतवागचलौष्टवाक् अपौरुपेय वाक् शास्तारुद्धवाक्स-  
 सभंगिवाक् ॥ ५२ ॥ अवर्द्धगी सर्व भाषा मयगीर्व्यक्त वर्द्ध-  
 गीः अमोघ वागक्रम वा गवाच्यानत वागवाक् ॥ ५३ ॥  
 अद्वैतगीः सूनृतगीः सत्यानु भयगीसुगीः योजन व्यापगीः  
 क्षीर गौरगीस्तीर्थकृत्वगीः ॥ ५४ ॥ भव्यैकः श्रव्यगुः स-  
 द्गुश्चित्रगुःपरमार्थगुः प्रज्ञातगुः प्राश्निकगुः सुगुर्नियतकालगुः ॥ ५५ ॥  
 च्युश्रुतिःशुश्रुतो याज्य श्रुतिः शुश्रुमहाश्रुतिः वर्मश्रुतिः श्रुतिपतिःश्रुत्यु-  
 र्ताश्रुतश्रुतिः ॥ ५६ ॥ निर्वाणमार्गद्विगमार्ग देशकः सर्वमार्गदिक् सा-  
 रस्वतपश्रुस्तीर्थ परमोत्तमतीर्थकृत् ॥ ५७ ॥ देश वाग्मीश्वरो धर्मशा-

सको धर्मदेशकः वागीश्वर स्वयीनाथस्त्रिभंगीशोगिरापतिः ॥ ५८ ॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञा सिद्धः सिद्धैकशासनः जगत्प्रसिद्धसिद्धान्त सिद्धमंत्रः सुसिद्धवाक् ॥ ५९ ॥ शुचि श्रवा निरुक्तोक्तिः तंत्रकृन्त्यायशास्त्रकृत् महिष्ठ वाग्महा नादः कवीद्रो दुदुभिस्वनः ॥ ५० ॥

### इति तीर्थकृच्छ्रतं ॥

नाथः पतिः परिष्टः स्वामीभर्ता विभुः प्रभुः ईश्वरोधीश्वरो धीशो धीशानो धीशिते शिता ॥ ६१ ॥ ईशोधिपति रीशान इनद्रोधिपोधिभूः महेश्वरो महेशानो महेशः परमेशिता ॥ ६२ ॥ अधिदेवो महादेवो देवस्त्रिभुवनेश्वरः विश्वेशो विश्वभूतेशो विश्वेश्विश्वेश्वरोधिराट् ॥ ६३ ॥ लोकेश्वरो लोकपतिर्लोकनाथो जगत्पतिः त्रैलोक्यनाथो लोकेशो जगन्नाथो जगत्प्रभुः ॥ ६४ ॥ पितापरः परतरो जेता जिष्णुरनीश्वरः कर्ताप्रभुष्णुर्भ्राजिष्णुः प्रभविष्णुः स्वयम्भुः ॥ ६५ ॥ लोकाजिद्विश्वजिद्विश्व विजेता विश्वजित्वरः जगज्जेता जगज्जैत्रो जराजिष्णुर्जगज्जयी ॥ ६६ ॥ अग्रर्णाग्रामणीर्नेता भूर्भुवः स्वर्धीश्वरः धर्मनायक ऋद्धीशो भूतनाथश्चभूतभृत् ॥ ६७ ॥ गतिः पाता वृषोवर्यो मन्त्रकृच्छ्रभलक्षणः लोका यक्षोदुराघर्षो लव्य वधु निरुत्सकः ॥ ६८ ॥ धीरोजगद्धितो जयस्त्रिजगत्पतिरीश्वरः विश्वासी सर्व लोकेशो विलम्बो भुवनेश्वरः ॥ ६९ ॥ त्रिजगद्दलम्भ स्तुम्भ स्त्रिजगन्मगलोदयः धर्मचक्रायुधः सयोजातः स्रैलोक्य मगलः ॥ ७० ॥ वरदो प्रतिघो छेद्यो द्द्वीयानभयकरः महाभागो निरोपम्यो धर्मसाम्राज्य नायकः ॥ ७१ ॥

### इति नाथशतकम् ॥ ५

योगी प्रव्यक्तनिर्वेदः साम्यारोहण तत्परः सामायिकी सामयिको निष्पमादो प्रतिक्रमः ॥ ७२ ॥ यमः प्रधान नियमः स्वभ्यस्त पर-

मात्मनः प्राणायाम चणः सिद्धः प्रत्याहारो जितेन्द्रियः ॥ ७३ ॥ धा-  
 रणाधीश्वरो धर्म ध्याननिष्ठः समाधिराद् स्फुरत्समीर सीभाव एकी  
 करणनायकः ॥ ७४ ॥ निर्ग्रथ नाथो योगीन्द्र ऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः  
 महर्षिः साधु धौरेयो यति नाथो मुनीश्वरः ॥ ७५ ॥ महामुनिर्महा  
 मौनी महाध्यानी महाव्रती महाक्षमो महाशीलो महाशांतो महादमः  
 ॥ ७६ ॥ निर्लेपो निर्भ्रमः स्वान्तो धर्माध्यक्षो दयाध्वजः ब्रह्मयोनिः  
 स्वयंबुद्धो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म तत्त्ववित् ॥ ७७ ॥ पूतात्मा स्नातकोदातो  
 भटतो वीतमत्सरः धर्म वृथा युधो क्षोभ्यः प्रपूतात्मासृतोत्सवः  
 ॥ ७८ ॥ मंत्रमूर्ति स्वसौम्यात्मा स्वतत्रो ब्रह्म संभवः सुप्रसन्नो गुणां  
 भोधिः पुण्यापुण्य निरोधकः ॥ ७९ ॥ सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा सिद्धा-  
 त्मा निरुपप्लवः महोदको महोपायो जगदेकः पितामहः ॥ ८० ॥ महा  
 कारुणिको गुण्यो महा क्लेशाकुशशुचिः अरिजयः सदायोगः सदाभो-  
 गः सदाधृतिः ॥ ८१ ॥ परमौढा सितानाश्वान् सप्ताशीः शालनायकः  
 अपूर्व वैत्रो योगज्ञो धर्ममूर्तिरधर्मवृक् ॥ ८२ ॥ ब्रह्मन्महा ब्रह्मपतिः  
 कृतकृत्यः कृतक्रतुः गुणा करो गुणोच्छेदी निर्निमेषो निराश्रयः ॥ ८३ ॥  
 सूरिः मुनय तत्त्वज्ञो महामैत्रीमयः समी प्रक्षीणबंधो निर्द्वंद्वो वेत्रदेवो  
 गुणाग्रणीः ॥ ८४ ॥

उति योग शतः समाप्तम्.

निर्वाणः सागरः प्राज्ञैर्महासाधुखटादृतः विमला मोक्ष शुद्धाभः  
 श्रीधरोदत्त इत्यपि ॥ ८५ ॥ अभलाभोऽप्युद्धरोग्निः सजयश्च शिवस्त-  
 था पुष्पांजलिः शिवगणउत्साहो ज्ञान सज्ञकः ॥ ८६ ॥ परमेश्वर इ-  
 त्युक्तो विमलेशो यशोधरः कृष्णो ज्ञानमतिः शुद्धमतिः श्रीभद्र शाति-  
 युक् ॥ ८७ ॥ वृषभस्तद्वदजितः सभवश्चाभिनदनः मुनिभिः सुमतिः  
 पद्मप्रभः भोक्तः सुपार्श्वकः ॥ ८८ ॥ चंद्रप्रभः पुष्पदन्तः शीतल श्रेय

आन्ध्रयः वासुपूज्यश्च विमलोनंतजिद्धर्म इत्यपि ॥ ८९ ॥ शांति कुयुर  
 रोमक्षिः सुव्रतो नमिरप्यतः नेमिः पार्श्वोर्द्धमानो महावीरः सुवीरकः  
 ॥ ९० ॥ सन्मतिश्चाकयमिहितमहावीर इत्यपि महापद्मः सूरदेवः सु-  
 प्रभश्च स्वयप्रभः ॥ ९१ ॥ सर्वायुधोजयो देवो भवेदुदयदेवकः प्रभा-  
 देव उदकश्च प्रश्न कीर्ति जयाभिधः ॥ ९२ ॥ पूर्णबुद्धिर्निष्कपायो  
 विज्ञेयो विमलप्रभः बहलो निर्मलश्चित्रगुप्तः समधि गुप्तकः ॥ ९३ ॥  
 स्वयंभूश्चापि कदर्पो जयनाथ इतीरितः श्रीविमलो दिव्यवादोनतवी-  
 रोप्युदीरितः ॥ ९४ ॥ पुरुदेवोयसुविधिः प्रज्ञापारमितो व्ययः पुराण  
 पुरुषो धर्म सारथिः शिवकीर्तिनः ॥ ९५ ॥ विश्वकर्माक्षरोडद्या विश्व  
 भूर्विश्वनायकः दिगवरो निरातको निरारेको भवातकः ॥ ९६ ॥  
 दृढव्रतो नयोत्तुगो निष्कलंकः कलाधरः सर्व बलेशा पहोक्षयः क्षातः  
 श्रीवृक्षलक्षणः ॥ ९७ ॥

### इति निर्वाण शतम्. ७.

ब्रह्मा चतुर्मुखो धाता विधाता कमलासनः अब्जभूरात्मभूः स्रष्टा  
 सुरज्येष्ठा प्रजापतिः ॥ ९८ ॥ हिरण्यगर्भो वेदज्ञो वेदांगो वेदपारगः  
 अजो मनुः गतानन्दो हसयानह्वयीमयः ॥ ९९ ॥ पिप्पु खिविक्रमः  
 शौरिः श्रीपति. पुरुषोत्तमः वैकुण्ठः पुडरीकाक्षेहपीकेशोहरिः स्वभूः  
 ॥ १०० ॥ विश्वभरो सुरः प्रसी माः प्रबो बलिबंधनः अधोक्षजो मधु-  
 द्वेपी केशवो विष्टरश्रवाः ॥ १०१ ॥ श्रीवत्स लाडनः श्रीमानच्युतो  
 नरकातरुः विष्णुसेनश्चक्रवर्ती पद्मनाभो जनार्दनः ॥ १०२ ॥ श्रीरुडः  
 शंकरः शशुः कपाली वृषकेतनः मृत्युजयो विरूपाक्षो वामदेवखिलो-  
 चनः ॥ ३ ॥ उमापतिः पशुपतिः स्वरारिन्निपुरातकः अर्बनारी स्वरो-  
 रूढो भवोर्भगः सदाशिवः ॥ ४ ॥ जगत्कर्ता प्रकोरातिरनादि निप्रनो  
 हरः महासेनस्तारकजिद्धणनाथो विनायकः ॥ ५ ॥ विरोचनो पियद्र-

स्म द्वादशात्मा विभावसुः द्विजाराध्यो बृहद्भानुश्चित्रभानुस्तनूनपात्  
॥ ६ ॥ द्विजराजः सुधीः शोचिरोपधी शोकलानिधिः नक्षत्रनाथः शु-  
भ्रांशुः सोमः कुमुदवांधवः ॥ ७ ॥ लेखर्षभो निलःपुण्यजनः पुण्यज-  
नेश्वरः धर्मराजो भोगिराजःप्रचेताभूमिनंदनः ॥ ८ ॥ सिहिकातनय  
स्थायानंदनो बृहतापतिः पूर्वदेवो पदेष्टाच द्विजराज समुद्भवः ॥ ९ ॥

### इति ब्रह्मशतम्.

बुद्धो दशबलः शाक्यः पडभिन्नस्तथागतः समंतभद्रः सुगतःश्री-  
घनो मूलकोटिदिक् ॥ १० ॥ सिद्धार्थो मारजिच्छास्ताक्षणिकैक  
सुलक्षणः बोधिसत्को निर्विकल्पदर्शनोद्रयमात्रपि ॥ ११ ॥ महाकृपा-  
न्तुर्नैरात्म्यवादी संतानशासकः सामान्य लक्षणचणः पचस्कधमयात्म-  
दक् ॥ १२ ॥ भूतार्थभावनासिद्धश्चानुभूमिकशासनः चतुरार्यः सत्य-  
वक्ता निराश्रयविदन्वयः ॥ १३ ॥ योगोवैशेषिकस्नुच्छा भावमित्  
पद पदार्थदक् नैय्यायिकः षोडशार्थः वाटीपंचार्थ वर्णकः ॥ १४ ॥  
ज्ञानांतरा-यक्ष बोधः समवायप्रशार्थभित् भक्तेकसाधकर्मातो निर्विशे-  
षगुणामृतः ॥ १५ ॥ साक्षः समीक्षः कपिलः पंचविंशतितत्ववित् व्य-  
क्ताव्यक्तज्ञ सुज्ञानीज्ञानचैतन्यभेददक् ॥ १६ ॥ अश्व सविदित ज्ञान  
वादी सत्कार्य वादवित् निष्प्रमाणोऽक्षप्रमाणःस्याद्वाहकारिकाक्षदक्  
॥ १७ ॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषो नरो नाचेतनःपुमान् अकर्तानिर्गुणो  
मूर्तो भोक्तासर्वगतोक्रियः ॥ १८ ॥ दृष्टस्तदस्थः कूटस्थो ज्ञातानि-  
बैधनोभवः वहिर्विकारो निर्मोक्षः प्रधान बहुधानकं ॥ १९ ॥  
प्रकृति स्यातिरारूढः प्रकृतिः प्रकृतिप्रियः प्रधानभोज्यो प्रकृतिर्विरम्यो  
विकृतिः कृतिः ॥ २० ॥ मीमांसकोस्त सर्वज्ञः श्रुतिपूतः सदोत्सवः  
परोक्ष ज्ञान वादिष्टोभासकः सिद्धकर्मरुः ॥ २१ ॥ चार्वाको भौतिक  
ज्ञानो भूताभिव्यक्तचेतनः प्रत्यैक्षरुप्रमाणस्यःपरलोको गुरु श्रुतिः

॥ २२ ॥ पुरदरो विद्धकर्णो वेदाती सविद्वयी शब्दाद्वयी स्फोटवादी  
पाखडघ्नोनयौघयुक् ॥ २३ ॥

इति बुद्धशतम्.

अतकृत्पारकृत्तीर प्राप्तः पारेततः स्थितः त्रिदही दडितारातिर  
ज्ञान कर्म समुच्चयीः ॥ २४ ॥ सहतध्वनिरुत्सन्न योगः सुप्तार्णवोयमः  
योगः श्रेहापयायोगः कीदृङ् निर्लेपनोद्यतः ॥ २५ ॥ स्थिति स्थूल  
वपुर्योगो गीर्मणो योग काश्यक. सूक्ष्मवाक्चित्त योगस्थः सूक्ष्मीकृत  
वपुःक्रियः ॥ २६ ॥ सूक्ष्म कार्य क्रियास्थायी सूक्ष्मवाक्चित्त योगहा  
एक दडीच परमहसः परमशवरः ॥ २७ ॥ नैऋतम सिद्धः परमःनि-  
र्जरः प्रज्वलत्प्रभः मोघकर्मा व्रुट्कर्म पाशःसैलेश्य संस्कृत ॥ २८ ॥  
एकाकारो रसास्वादः विश्वाकार रसाकुलः अजीवन्मृतको जाग्रदमुप्तः  
शून्यतामयः ॥ २९ ॥ प्रेयानयोगीचतुरः गितिलक्ष गुणोगुणः नीपि-  
तानद पर्यायो त्रिशा संस्कार नाशकः ॥ ३० ॥ वृद्धो निर्वचनीयोणु-  
रणीयाननणुप्रियः प्रेष्ट. प्रेयान्स्थिरोनेष्टः श्रेष्ठोज्येष्टः चुनिष्ठितः ॥३१॥  
भूतार्थ सूरु भूतार्थः दूर. परमनिर्गुण. व्यवहार सुसुप्तोति जागरूकोति  
शुस्थित ॥ ३२ ॥ उदितोदिति माहात्म्यो निरुपाधि रतिक्रिय. अ-  
प्रेय महिमात्यतशुद्ध. सिद्धि स्वयंवर. ॥ ३३ ॥ सिद्धानुज. सिद्ध-  
पतिः पार्थ. सिद्ध गुण स्थितिः सिद्ध सगन्मुख. सिद्धार्णिगे सिद्धो  
पगूढक. ॥ ३४ ॥ पुष्टोष्टादश साहस्र शीलश्व पुण्य सभद्रः वृत्ताग्र  
युग्मे परमः शुक्लवेद्योपचारकृत्. ॥ ३५ ॥ क्षेपिष्टोत्यक्षण सन्वा पच  
लक्षुरस्थितिः द्वासप्तति प्रकृत्यासीन्नयोदश कलिमणुत्. ॥ ३६ ॥  
अयदो याजको याज्यो याज्यो नम्र परिग्रहः अनग्रिहोत् परमनिस्पृहो-  
त्यत निर्दयः ॥ ३७ ॥ अशिष्यो शासको टीक्षो दीक्षको टीपितोद-  
यः अगम्यो गमको, रम्यो रमको ज्ञाननिर्दर. ॥ ३८ ॥

## इत्यंत कृच्छ्रतम्.

महा योगीस्वरो द्रव्य सिद्धोदेहोपुनर्भवः ज्ञानैकचिज्जीवघनः सिद्धो लोकाग्रनामकः ॥ ३९ ॥

## इत्यंताष्टकम्.

इदमष्टोत्तर नाम्नां सहस्रं भक्तितोहतं योनता नाम धीतेसौ मुक्त्यंताभुक्ति मश्रुते ॥ ४० ॥ इदं लोकोत्तमपुसा इदं शरणमुत्तम इदं मंगलमग्रीय इदं परम पावनं ॥ ४१ ॥ इदमेवपर तीर्थ मिदमेवेष्ट साधनं इदमेवाखिलक्लेश संक्लेश क्षय कारणं ॥ ४२ ॥ एतेषा मेरुमप्यर्हनाम्नामुच्चारयन्नघैः मुच्यतेकि पुनः सर्वान्यर्थज्ञस्तु जिनायते ॥ १४३ ॥

इतिश्री जिनसहस्रनामानि.

## ८ अथ वर्द्धमान स्तोत्रम्.

वर्द्धमान स्तुमः सर्वं नयनघर्णवागम सक्षेपतस्तदुद्गीत नयभेदानुचादतः ॥ १ ॥ नैगमः संग्रहश्चैव व्यवहार ऋजुसूत्रकौ शब्द समभिरूढैवं भूताश्चेतिनयाः स्मृताः ॥ २ ॥ अर्था सर्वेषां सामान्य विशेषो भयधर्मकाः सामान्य तत्र जात्यादिर्विशेषस्तद्विभेदकः ॥ ३ ॥ एकाचुद्धिर्घटशते भवेत्सामान्य धर्मतः विशेषाच्च निजनिजं लक्षयन्ति घटजनाः ॥ ४ ॥ नैगमोमन्यते वस्तु तदेतदुभयात्मकं निर्विशेषं न सामान्यं विशेषोपिनतद्विनाः ॥ ५ ॥ संग्रहो मन्यते वस्तु सामान्यात्मकमेवहि सामान्य व्यतिरिक्तोस्ति न विशेषंखण्डुप्यवत् ॥ ६ ॥ विनाचनस्पतिः कोपिर्निवाप्रादिर्नदृश्यते दस्ताग्रतर्भाविनोहि नागुल्याग्रास्ततः पृथक् ॥ ७ ॥ विशेषात्मकमेवार्थं व्यवहारश्चमन्यते विशेष भि-

न्नः सामान्य मसत्त्वरविषाणवत् ॥ ८ ॥ वनस्पतिं गृहाणेति प्रोक्तेगृ-  
 ष्हातिकोपिर्किं विनाविशेष नाम्नादिस्तन्निरर्थकमेवतत् ॥ ९ ॥ व्रण  
 पिंडी पादलेपादेको लोक प्रयोजने उपयोगो विशेषैः स्यात्सामान्येन  
 न कर्हिचित् ॥ १० ॥ ऋजु सूत्र नयो वस्तु नातीत नाप्यनागत म-  
 न्यते केवल वस्तु वर्तमान तथा निज ॥ ११ ॥ अती तेनानागतेन  
 परकीयेण वस्तुना नकार्य सिद्धि रित्येत दशद्वगन पद्मवत् ॥ १२ ॥  
 नामादिषु चतुर्विधेप भावमेवचमन्यते ननाम स्थापना द्रव्याण्येवमग्रेत-  
 नावपि ॥ १३ ॥ अर्थ शब्दनयोनेकैः पर्यायैरेकमेवपत् मन्यते कुभ  
 कलश घटात्रैकार्थ वाचकाः ॥ १४ ॥ वृते समभिरुद्दोर्य भिन्नपर्याय  
 भेदतः भिन्नार्थ कुभ कलश घटा घटपदादिवत् ॥ १५ ॥ यदि पर्याय  
 भेदपि न भेदोवस्तुनोभवेत् भिन्न पर्याययोर्नस्यात्सकुभ पटयोरपि  
 ॥ १६ ॥ एकपर्यायाभिधेय मणिवस्तु च मन्यते कार्य स्वकीय कुर्वाण  
 मेव भूतनयोपुवः ॥ १७ ॥ घटकार्यमकुर्वाणः पीप्यतेतत्तयासचेत् तदा  
 पट्टेपिन घट व्यपदेशः किमिप्यते ॥ १८ ॥ यथोत्तर विशुद्धास्युः न-  
 र्यासप्ताप्यमीतया एकैरुः स्याच्छतत्रिधस्ततः सप्तशतान्यपि ॥ १९ ॥  
 अथैव भूत समभिरुद्दयोः शब्द एवचेत् अतर्भाप्रस्तदापच नयापच  
 श्रुतीभिदा ॥ २० ॥ द्रव्यास्तिरु पर्यायास्तिरुयोरतर्भवेति सर्वेमी प्र-  
 यमे प्रथम चतुष्टय मत्येचात्याह्वयस्तत्र ॥ २१ ॥

वसततिलका.

सर्वेनया अपि विरोध भृतो मिथस्ते  
 सभूय साधु समय भगवन्भजते  
 भूयाद्व प्रतिभटा भुवि सार्व भौम  
 पादाजुज प्रधनयुक्त पराजिताद्रा ॥ २२ ॥



इत्थ नयार्थ कवचः सुसमैर्जितेन्दु वीरोर्चितः सविनयं विनयाविधेत  
श्रीद्वीपवदिरवरे विजयादिदेव स्ररीशित्तुर्विजयसिंह गुरुश्चतुष्टौ ॥२३॥

इति वीर स्तवनं.

## ९ अथेदमारभ्यते दर्शन स्तोत्रम्.

दर्शन देवदेवस्य दर्शनं पाप नाशनं दर्शनं स्वर्गं सौख्यान दर्शनं  
मोक्ष साधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणा साधूनां वदनेन च न तिष्ठति  
चिर पापं त्रिद्वहस्ते यथोदक ॥ २ ॥ वीतराग मुखदृष्टवा पद्मराग  
समप्रभ बहु जन्म कृत पापं दर्शनेनैव नश्यति ॥ ३ ॥ दर्शनं जिन  
सूर्यस्य ससार ध्वान्तनाशनं बोधनंचित्त पद्मस्य करोत्यर्थं प्रकाशनं  
॥ ४ ॥ दर्शनं जिन चद्रस्य सद्धर्मा मृतवर्षण जन्मनोध विनाशाय वि-  
तनोति सुखं चिर ॥ ५ ॥

जीवारि तत्त्व प्रतिदर्शकायः सम्पृक्त मुख्याष्ट गुणाश्रयाय  
जिनाय देवाय दिगवराय नमो जिनायैच नमो जिनाय ॥ ६ ॥

चिदानदैकरूपाय जिनाय परमात्मने परमात्म प्रकाशाय नित्य-  
स्वाभ्यात्मने नमः ॥ ७ ॥ अन्यथा शरणं नास्तित्वमेव शरणं मम  
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥ नहि त्राता नहि त्रा-  
ता नहि त्राता जयत्रये वीतरागात्परोदेवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥  
जिने भक्तिः जिने भक्तिः जिने भक्तिर्दिनेदिने सदा मेस्तु सदा मेस्तु २  
भवेभवे ॥ १० ॥ जिनधर्मं विनिर्मुक्तो मा भव चक्रवर्त्यपि स्याच्चे-  
त्सोपि दरिद्रोपि जिन वर्मानुवासित ॥ ११ ॥ जन्म जन्म कृत पापं  
जन्म कोटि समार्जित जन्म मृत्यु जरायोग हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥

त्रैलोक्य सकल त्रिकाल विषय सालोक्यमालोकितम्

साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रय सांगुल  
रागद्वेष भयान्महातक जरा लोलत्व लोभादयो  
नालंघ्यत्पट लघनाय समहादेवो मयावद्यते ॥ १३ ॥

इति दर्शन स्तोत्रम्.

## १० अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्.

वरस वरस वरस वरस । भवद भवद भवद भवद । सममा  
सममा सममा सममा । गमभ गमभ गमभ गमभ ॥ १ ॥ दग्म दग्म  
दग्म दग्म । गतर गतर गतर गतर । गरस गरस गरस गरस ।  
नवर नवर नवर नवर ॥ २ ॥ रमुदा रमुदा रमुदा रमुदा । समिनं  
समिनं समिनं समिनं । विदित विदित विदित विदित । नमते नमते  
नमते नमते ॥ ३ ॥ यतना यतना यतना यतना । नयमा नयमा नय-  
मा नयमा ॥ क्षणल क्षणल क्षणल क्षणल । क्षरद क्षरद क्षरद क्षरद  
॥ ४ ॥ प्रमदा प्रमदा प्रमदा प्रमदा । नकरा नकरा नकरा नकरा ॥  
नवमा नवमा नवमा नवमा । नसदा नसदा नसदा नसदा ॥ ५ ॥  
तरसा तरसा तरसा तरसा । दयनो दयनो दयनो दयनो ॥ कदम क-  
दमं कदमं कदमं । विभवा विभवा विभवा विभवा ॥ ६ ॥ इति पार्श्व-  
जिनेश्वर ते स्तवन । रचित खचित यमकै सुपरिः ॥ रजित दक्ष नर-  
प्रकर असता शिवमुन्दर सौख्यभरम् ॥ ७ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

## ११ पार्श्व स्तोत्रम्

प्रणम्य परमात्मान श्री पार्श्वं तव दर्शनात् पवित्रयामि सग्रोहं  
ज्जानवासो ज्जान्दिव ॥ १ ॥ चरीकृति नमस्कार बालधी वृद्धि मि-

द्वये श्रीमत्पार्श्व जिनेन्द्राय तेषांजन्म फले ग्रहि ॥ २ ॥ उल्लिखित तत्र  
 धाताय श्री वामानन्दनोजिन. सारस्वती मृजुं कुर्वे गतिस्वस्ते सतांनसा  
 ॥ ३ ॥ श्री आश्वसेने सिद्धांता राधनंतावकंविना विदधानोऽपिनो  
 सिद्धयत्प्र क्रियांनाति विस्तरां ॥ ४ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं फणीनांत्व  
 मनुग्रहात् कृतवानुत्तमं तस्य युक्तं क्रमचणोभवः ॥ ५ ॥ पारदृश्व सु-  
 भोदको नययु शब्दवारिधे ऋद्धिर्बृद्धिर्निधिः सिद्धि भवते पार्श्व-  
 सेवक. ॥ ६ ॥ पादप्रसाद पार्श्वस्य श्रीमतोहिममैनस प्रक्रियांतस्य कृ-  
 त्सनस्य यस्मा क्लेशो भवे भवे ॥ ७ ॥ सुधां धसां गुरु. पारयेपां  
 नापसमायुपा तान्गुणान्पार्श्व देवस्यक्षमोवक्तु नर कथ ॥ ८ ॥ इति  
 श्री मात्र जिन पार्श्वो जीरापल्लिपुरीप्रभु. प्रणितःपार्श्वचंद्रेण भूयाद्भूरि  
 विभूतये ॥ ९ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

## १२ अथ आत्मरक्षा स्तोत्रम्.

परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मक आत्मरक्षाकर वज्रं पंजरामं  
 स्मराम्यह ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहताण शिरस्थ तुशिरस्थतथा ॐ नमो  
 द्विच सिद्धाण मुपेमुपपटांवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाण अगर्क्षा  
 तिशायिनी ॐ नमो उवझायाण आयुत्र हस्तयोर्दृढ ॥ ३ ॥ ॐ नमो  
 लोए सव्व साहुण पचके पादयोः सुभे एसो पच नमोकारो शिला  
 वज्रमयीतले ॥ ४ ॥ शव्व पात्रप्रणासीणो वप्रो वज्रमयोवही मगला-  
 णच सव्वेसि स्वादिरगारकातिका ॥ ५ ॥ स्वाहातच पदज्ञेय पढम ह-  
 वड मगलं वप्रोपरिवज्रमयं प्रधान देहि रक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभाव  
 रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी परमेष्ठी पटोद्भूत कथित पूर्व सूरिभिः  
 ॥ ७ ॥ यथैत्र कुरुते रक्ष परमेष्ठी पदे सदा तस्यनस्याद्भय व्याधि  
 राद्विश्वापि कटाचन ॥ ८ ॥

इत्यात्मरक्षा स्तोत्रम्.

## १३ अथ पंचपट्टि यंत्र स्तोत्रम्

आदौ नेमिजिनं नैमि संभवं सुविधिं तथा घर्मनाथं महोदव शां-  
तिं शांतिं कर सदा ॥ १ ॥ अनंतं सुव्रत भक्त्या नमिनाथं जिनोत्तमं  
अजितं जितकंदर्प्यं चद्र चद्र समप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथ तथा देवं  
सुपार्थं विमलं जिनं मल्लिनाथं गुणोपेतं धनुषा पचविंशति ॥ ३ ॥  
अरनाथ महावीरं सुमार्तिचं जगद्गुरुं श्री पद्मप्रभं नामानं वासपूज्यं  
सुरैर्नुतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयासं श्रेयसे सदा कुंडुनाथं च  
वामेयं श्री अभिनंदनं विभु ॥ ५ ॥ जिनानां नामनिर्वद्धं पचपट्टि स-  
मुद्भवः यत्रोय राजते यत्र तत्र सौगंयं निरतरं ॥ ६ ॥ यस्मिन्गृहे  
महाभक्त्या यत्रोय पूज्यते बुधैः भूतैः पितृणां पिशाचादिभ्यः तत्र न वि-  
द्यते ॥ ७ ॥ सकलं गुणनिधानं यत्रमेनं प्रसिद्धं हृदयं कमलकोशं  
धीमतां येयं रूपे ॥ जय तिलकं गुरुं श्री सुरिराजस्य शिष्यो वद-  
ति सुखनिदानं मोक्षलक्ष्मीनिवासं ॥ ८ ॥

इति पचपट्टि यंत्र स्तोत्रम्.

यंत्रम्

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१०	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

## १४ अथ पार्श्वनाथ स्तोत्रम्. ॐ

ॐ ही श्रीं तं नमह पासनाहं । ॐ ह्रीं श्री धरणिंदनमसियं दुहवि-  
नाश ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जदशपभावेणस्येया । ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवदवा  
चहवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पइसमरंताणमणे । ॐ ही श्रीं नहो इवा  
हीन त महा दुरकं ॥ ॐ ही श्रीं नामविय पिहुमंतसमं । ॐ ही श्रीं  
पयडं नयिध्य संदेहो ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जलजलण भय तह सप्य  
सीह । ॐ ह्रीं श्रीं चोरारि संभवे खिप्यं ॥ ॐ ही श्रीं जो समर इ-  
पासनाहं पहु । ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पुह विन रुयाविकंतश्श ॥ ३ ॥ ॐ  
ही ह्रीं श्रीं श्रीं इहलोगठी परलोगठी । ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं जो समरइ  
पासनाहत्तु ॥ ॐ ही ह्रीं ह्रीं गार्गींगः तंतहसिद्धइखिप्यं । ॐ ह्रीं श्रीं  
इयनाऊ सरह भगवत्त ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ग्रा श्रीं ग्रीं ह्रीं ह्रीं कलि  
कुंड स्वामिने नमः स्वाहा ॥ ( इति मूल मंत्र. )

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

## १५ अथ पार्श्व स्तोत्रम्

द्रे द्रे कि धप मप धुधुमि वो वो प्रसकि धरमप धौरव । दों दों  
कि दों दों दिगइदि दिगइदिकि द्रमकि द्रणरण द्रेणव ॥ इइ इइ किं  
इं इं इणण रणरण निजकि निज जन रंजनं । सुरशैल शिखरे भवतु  
सुखद पार्श्व जिनपति मजनं ॥ १ ॥ ऋरि गिणियो गिणिरुयु गि-

\* ८ स्तोत्र पवित्र थइ नित्य सातवार भजिजे मन वचन काया  
शुधधमे मास ६ तों अवश्य राज्य लक्ष्मी मिलै जिने लिखी कडे वाधि  
तिने पुत्र थाय जिने खोल-पावे घ्यतरादिक सर्व दोष टले कष्टमें आ-  
विल करै ३, १२५०० जाप धोळी माळाये जपिजे भूमि शयन कीजे  
शील पालिजे मिथ्या नहिं बोलिजे चिंतित कार्य सिद्धि होय सर्वत्र  
जय होय इत्यादि अनेक गुण हे विशेष गुर मुखयी धारिये

गिह् दा धुधुकिधुट नट पाटवं । गुणगुण गुणगुण रणकि णें णें गु-  
 णण गुणगुण गौरव ॥ झ झ झें किं झें झें झणण रणरण निजकि ।  
 निज जन सज्जना । कलयति कमला कलित कलि मल मकलमीश  
 महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठें किं ठें ठें ठकिं ठकिं ठकिं पट्टानाइयते ।  
 तलि लों किं लों लों त्रैपि त्रैपिनिठेपि डेपि निवायते ॥ ॐ ॐ किं  
 ॐ ॐ कथुगि रुयुगिनि थोंगि थोंगिनि कलरवे । जिनमत मनत महि  
 मतनुतानमत सुरनरमुत्सवे ॥ ३ ॥ खुदाकिं खुदां खुखुइदि खुदां खु-  
 खुइदि देां देां अम्बरे । चाचपट वच पटरणकि णें णें इणण डें डें  
 डंबरे ॥ तहिं सरगि मपधुनि निघपमगरि सससससस सुरसेविता ।  
 जिन नाटय रंगे कुशल मनिशं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥

इति पार्श्व स्तोत्रम्.

### १६ अथ शांतिधारा पाठः ॐ

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं अर्हं व म ह सं तं ववं मंम हह सस तत पपं  
 डंडं म्वीं म्वीं स्वीं स्वीं द्राद्रा द्रीं द्रीं द्रात्रय द्रावय नमोर्हते भगवते  
 श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खंडय २ हन २ दह २ पच २ पाचय २  
 श्रीर्षीं कुरु २ ॐ नमोर्हदम्बीक्ष्वी हं स ड व व्हः पः हः क्षां क्षीं  
 हूं क्षे क्षैं क्षो क्षौं क्षं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं हु हू ह्रै ह्रौं ह्रीं ह्र ह्रः असि  
 आजसाय नमः ॥ मम पूजकस्य ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ  
 नमोर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः ठः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु  
 पुष्टिरस्तु शातिरस्तु कातिरस्तु कल्याणं अस्तु मम कार्यं सिद्धयर्थं  
 सर्वं विघ्न निवारणार्थं श्रीगद्गवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नायार्चित  
 पाद्मदा अर्हत परमेष्ठि जिनेद्र देवाय देवाय नमो नम. मम श्री शांति

\* ८ स्तोत्र प्राप्तकार्त्तमें उक्तर मधिर हो कर २१ पढगा सर्व विघ्न  
 शांति होय

देव पादपद्म प्रसादात्सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु  
 स्वस्तिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु श्री शान्तिनाथोमां प्रति प्रसीदतु  
 श्री वीतराग देवोमां प्रति प्रसीदतु श्री जिनेन्द्र परम मांगल्य नामवेद्य  
 ममेहामुत्रच सिद्धि तनोतु ॥ ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते श्री चिता  
 मणि पार्श्वतीर्थ कराय रत्नत्रय रूपाय अनंत चतुष्टय सहिताय धर  
 णीद्र फणा मौलि मडिताय सम शरण लक्ष्मी शोभिताय उद्र धरणीद्र  
 चक्ररत्न्यादि पूजितपाद पद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभित जिनराज  
 महा देवाप्यादश दोष रहिताय यद् चत्वारिंशद्गुण सयुक्ताय परम  
 गुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाय सर्व  
 सत्वहित कराय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य  
 मोहनाय धरणीद्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय  
 अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र  
 नारद खेचर पूजिताय सर्व भव्य जनानन्द कराय सर्व रोग मृत्यु घो  
 रोपसर्ग विनाशनाय सर्व देश ग्राम पूर राजा प्रजा शान्ति कराय  
 सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्व देवाधि देवाय नमो स्तुते  
 श्री जिनराज पूजन प्रसादात्मम सेवकस्य सर्व दोष रोग सोग भय  
 पीडा विनाशन कुरु २ सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा । ॐ  
 नमो श्री शान्ति देवाय सर्वारिष्टशान्ति कराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः आसि  
 आउसा मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु २ अमुकस्य मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु २  
 स्वाहा श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात्मम अशुभान् पापान् छिधि  
 छिधि मम अशुभ कर्मोदय जनित दुःखान् छिधि छिधि मम परदुःख  
 जनोपकृत मत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्रादि दोषान् छिधि २ मम  
 अग्नि चोर जल सर्प व्याधिः छिधि २ मारी कृतो पद्रवान् छिधि २  
 डाकिनी गाफिनी भूत भैरवादि कृतो पद्रवान् छिधि २ सर्व भैरव  
 देव दानव वीर नव नारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिधि २ भुवन

वासि व्यतर ज्योतिषि देव देवी कृत दोषान् छिधि २ अग्नि कुमार  
 कृत विघ्नान् छिधि २ उदधिकुमार सनत्कुमार कृत विघ्नान् छिधि २  
 द्वीपकुमार भयान् छिधि २ भिधि २ वातकुमार मेघकुमार, कृत वि-  
 घ्नान् मिधि २ इद्रादि दश दिग्पाल देव कृत विघ्नान् छिधि २ जय  
 विजय अपराजित मान भद्र पूर्ण भद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिधि  
 २ राक्षस वेताल दैत्य दानव यक्षादि कृत दोषान् छिधि २ नव ग्रह  
 कृत ग्राम नगर पीडा छिधि २ सर्व अष्ट कुल नाग जनितविष भ-  
 यान् सर्व ग्राम नगर देश मारी रोगान् छिधि २ सर्व स्थावर जगम  
 वृथिकृ दृष्टि विष जाति सर्पादि कृत विष दोषान् छिधि २ सर्व  
 सिंहा अष्टापद व्याघ्र व्याल वनचर जीव भयान् छिधि २ पर शत्रु  
 कृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशीकरणदि दोषान् छिधि २  
 छिधि २ सर्व देशपूर मारीः छिधि २ सर्व गो वृषभादि तीर्थच मारीः  
 छिधि २ सर्व वृक्ष फल पुष्कल तामारी छिधि २ ॐ नमो भगवति  
 श्री चक्रेश्वरि ज्वाला मालिनि पद्मावति देवि अस्मिन् जिनेंद्र भुवने  
 आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ वलिं ग्रहण २ मम धन धान्य समृद्धि  
 कुरु २ सर्व भव्य जीवानंदन कुरु २ सर्व राजा प्रजा नदन कुरु २  
 सर्व देश ग्रामपूर मध्ये क्षुद्रोपद्रव सर्व दोषाय मृत्यु पीडा विनाशन  
 कुरु २ सर्व परचक्र भय निवारण कुरु २ सर्व देश ग्राम पूर मय सु-  
 भिक्ष कुरु २ सर्व विघ्न शांति कुरु २ स्वाहा । ॐ आं क्रों ह्रीं श्री  
 वृषभादि वर्द्धमानात् चतुर्विंशति तीर्थकर महादेवाधिदेवाः प्रीयता २  
 मम पापानि शाम्यंतु घोरपसर्गान्सर्व विघ्नान् शाम्यंतु । ॐ आंक्रों  
 ह्रीं श्री रोहिण्यादि महादेव अत्रागच्छ २ सर्व देवता प्रीयतां २ ॐ  
 आंक्रों ह्रीं श्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती महादेवी प्रीयता २ ॐ  
 आंक्रों ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयता २ सर्व जिनशा-  
 सन रक्षक देवाः प्रीयता २ श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति



शुक्र शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहाः प्रीयंतां २ प्रसीदतु देशस्य राष्ट्र-  
स्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेद्रः ॥ १ ॥ यत्सुखं त्रि-  
पुलोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं । अभयं क्षेम मारोग्यं स्वस्तिरस्तु-  
चमे सदा ॥ २ ॥ यस्यार्थं क्रियते कर्म सप्रितिः नित्यमुत्तम । शां-  
तिकं पैष्टिकं चैव सर्वं कार्येषुसिद्धिदाः ॥ ३ ॥ इति शांतिधारा  
पाठः ॥ ४६ ॥

इति शांतिधारा पाठः

### १७ अथ ग्रहशांति स्तोत्रम्.

जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषित ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि  
लोकानामुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेद्रैः खेचराः ज्ञेयाः पूजनीयाविधि क्र-  
मात् ॥ पूषैर्विलेपनैः धूपैः नैवेद्यै स्तुष्टि हेतवे ॥ २ ॥ पद्म प्रभस्य  
शर्तड चंद्रश्चद्र प्रभस्य च वासुपूज्ये भूमि पुत्रो बुधोप्यष्ट जिनेषुच  
॥ ३ ॥ विमलानत धर्माराः शांतिः कुयुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानस्तथै  
तेषा पादपद्मेबुधन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋपभाजित सुपार्श्वार्थाभिनदन शी-  
तलौ । सुमतिः सभवः स्वामी श्रेयासश्चैपुगीप्पतिः ॥ ५ ॥ सुविद्येः  
ऋथितः शुक्रः सुत्रतस्य शनैश्चरः ॥ नेमिनाये भवेद्राहुः केतुः श्री म-  
ल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाल्लग्नेच राशौच यदा पीडति खेचराः।  
तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनेान् ॥ ७ ॥ पद्मप्रभ जि-  
नेद्रस्य नामोच्चारण भास्कर ॥ शांतिं च तृष्टिं च पुष्टिं च रक्षां कुरु कुरु  
श्रेयम् ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभ जिनेद्रस्य नाम्ना तारागणाधिप ॥ प्रसन्नो-  
भव शांतिं च रक्षांकुरु जयं ध्रुव ॥ ९ ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य नाम्नः।  
शांतिं जयश्रियं ॥ रक्षां कुरुधरा सुनो अशुभोऽपि शुभो भव ॥ १० ॥  
वेमलानत धर्माराः शांतिः कुयुर्नमिस्तथा ॥ महावीरश्च तन्नाम्ना शु-  
भोभूयाः सदा बुधः ॥ ११ ॥ ऋपभाजित सुपार्श्वार्थाभिनंदन शी-

तलौ ॥ सुमतिः सभवः स्वामी श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥ १२ ॥ एत  
 चीर्थ कृता नाम्ना पूज्यो शुभः शुभोभव ॥ शान्तिं तुष्टिंच पुष्टिंच कुरु  
 देवगणार्चित ॥ १३ ॥ पुष्पदन्त जिनेन्द्रस्य नाम्ना दैत्य गणार्चित ॥  
 प्रसन्नो भव शान्तिंच रक्षा कुरु २ श्रिय ॥ १४ ॥ श्री सुव्रत जिनेन्द्र-  
 स्य नाम्ना सूर्यांगसंभव । प्रसन्नो भव शान्तिंच रक्षां कुरु २ श्रियं  
 ॥ १५ ॥ श्री नेमिनाथ तीर्थेश नामतः सिंहिका सुत । प्रसन्नो भव  
 शान्तिं च रक्षा कुरु २ श्रिय ॥ १६ ॥ राहो सप्तमराशिस्थ कारेण दृश्य  
 संवरे । श्री मल्लीपार्श्वयोर्नाम्ना केतो शान्तिं जय श्रिय ॥ १७ ॥ नव  
 कोष्टक मालेख्य मडल चतुरस्रक । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणक्र-  
 मेणतु ॥ १८ ॥ मयेहि भास्करः स्थाप्यः पूर्वदक्षिणत शशी । दक्षि-  
 णस्यां धराम्नुर्बुधः पूर्वोत्तरेणच ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः पूर्व-  
 स्या भृगुनदनः ॥ पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ २० ॥  
 पश्चिमोत्तरत केतुरिति म्थाप्या क्रमाद्ग्रहाः ॥ पट्टेस्थालेऽथ वाग्नेय्यां  
 ईशान्यातु सदा बुधैः ॥ २१ ॥ आदित्य सोम मंगल बुध गुरु शुक्राः  
 शनैश्वरो राहुः । केतु प्रमुखा खेटाः जिनपति परतोऽवतिष्ठतु ॥ २२ ॥  
 पुष्प गधादिभिर्द्रूपै नैवेद्यैः फल सयुतैः । वर्ण सदशदानैश्च वस्त्रैश्च  
 दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिन नाम कृतोच्चारण देश नक्षत्र वर्णकै ।  
 पूजिता सस्तुता भक्त्या ग्रहाः सतु मुखाम्बुदा ॥ २४ ॥ जिननामा-  
 अतः स्थित्वा ग्रहाणा शान्ति हेतवे । नमस्कार शत भक्त्या जपेदष्टो-  
 चरं शतम् ॥ २५ ॥ एव यथानामकृता भिषेकै अलिपनैर्द्रूपन पूज-  
 नैश्च ॥ फलैश्चनैवेद्य वरैजिनानां नाम्ना ग्रहेन्द्रावरदा भवतु ॥ २६ ॥  
 साधुभ्यो दीयते दान गहोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य सद्यस्य व-  
 द्भु मानेन पूजन ॥ २७ ॥ भद्रराहु स्वाचेद पचम श्रुतकेवली ॥  
 विद्याप्रभाततः पूर्वात् ग्रह शान्तिरुदीरिता ॥ २८ ॥

इति ग्रहशान्ति स्तोत्रम्.

यंत्रम्.

बुधः	शुक्रः	शशि
गुरुः	सूर्य	भौम
केतु	शनि	राहु.

## १८ अथ उवसग्गहर स्तोत्रम् ॐ

ॐ उवसग्गहरं पास पास वंढामि कम्म घण मुक्क विसहर  
 विसनिन्नासंमगल कल्लाण आवास ॥ १ ॥ विसहर फुल्लिग  
 मंत कठे वारड जो सयामणुवो तस्सग्गह रोग मारी दुह्व जरा जंति उव  
 स्साम ॥ २ ॥ चिठ्ठउदूरेमतो तुज्जपणा मोवि बहु फलो होइ नर ति-  
 रिण सुविजीवा पार्धति न दु ख दोहग्ग ॥ ३ ॥ ॐ तुवदंसणेण स्वा-  
 मीपणासेइ रोग सोग दोहग्ग कप्पतरु मेव जाई तुव दंसणेण सफल  
 हेऊ स्वाहा ॥ ४ ॥ तुह समत्ते लद्धे चिंतामणि कप्पपाय वभ्भ हिये  
 पावति अविचेग्ग जीवा अयरा मरठाणं ॥ ५ ॥ अमरतरु कामवेनु  
 चिंतामणि काम कुभ माईये श्री पार्धनाह सेवा गयाण सव्वेवि दि-  
 संतु ॥ ६ ॥ नमयेण पाणमसेईय मपावेण धग्गी नागेंदं सिरप उम-  
 राय कलिय पास जिणद नमसामि ॥ ७ ॥ हय सयुवो महायस्स  
 भत्तिभर निभ्भरेण हियेण ताव देव टिज्ज वोहिं भवे भवे पास जि-  
 णचद ॥ ८ ॥

इति उवसग्गहर स्तोत्रम्.

\* ए स्तोत्र मोते वस्त तीनवार पढकर शयन कीजे अशुभ शयन,  
 नहि आवे इत्यादि बहुत गुण है विशेष गुर आम्नायते जागिये

## १९ अथ जिनवानी अष्टक.

जिनदिश जाता जिनेंद्रा विख्याता । विशुद्धा प्रबुद्धा च त्रैलो-  
क्य माता ॥ दुराचार दुरिताहरा शकरानी । नमो देवि वागेश्वरि जैन  
वाणि ॥ १ ॥ मुधा धर्म ससाधिनी धर्मशाला । मुधा ताप निर्नाशि-  
नी मेघमाला ॥ महा मोह विन्वसिनी मोक्षदानी । नमो देवि० ॥ २ ॥  
अक्षय वृक्ष शाखा व्यतीताभिलाषा । कथा सस्कृता प्राकृता देश  
भाषा । चिदानंद भूपालकी राजधानी । नमो देवि० ॥ ३ ॥ समा-  
धान रूपा अनूपा अक्षुद्रा । अनेकान्तता स्यादवादांरु मुद्रा ॥ त्रिधा स-  
प्तधा द्वादशांगी वखानी । नमो देवि० ॥ ४ ॥ अक्रोपा अमाना अदं-  
भा अलोभा । श्रुत ज्ञानरूपा मति ज्ञानशोभा । महा पावना भावना  
भण्यमानी । नमो देवि० ॥ ५ ॥ अतीता अजीता सदा निर्विकारा ।  
विषय वाटिका खण्डनी खड्ग धारा । पुरा पाप विच्छेदिनी कर्तृ कृ-  
पाणी । नमो देवि० ॥ ६ ॥ अगाधा अवाधा निरघा निराशा । अ-  
नंता अनादीश्वरी कर्मनाशा निशका निरंका चिदका भवानी । नमो  
देवि० ॥ ७ ॥ अशोका मुदोका विवेका विधानी । जगज्जंतु मित्रा  
विचित्रा वसानी ॥ समस्तावलोकानिरस्ता निदानी । नमो देवि वा-  
गेश्वरि जैन वाणि ॥ ८ ॥

इति जिन वाण्यष्टकम्.

## २० अथ परमात्मा स्तोत्रम्

अपादस्य पाद कथ वे प्रणाम । अकर्णस्य कर्ण कथं गीत नृत्यं  
अकठस्य कठ कथं पुष्पमाल । विना नासिकायां कथ धूपगंध ॥१॥  
स्वय सिद्ध बुद्धं पर विश्वनाथ । न देव न बंधु न कर्म न कर्ता  
नभंग न सग न इच्छा न काम । चिदानंदरूप नमो वीतराग ॥२॥

नवधो न मोक्षं न रागादि लोकं । न जोगन भोग न व्याधि न शो-  
 कं । न क्रोध न मानं न माया न लोभं । चिदानन्द० ॥ ३ ॥ न ह-  
 स्तो न पादो न घ्राणं न जिह्वा न चक्षु न कर्ण न वक्त्रं न निद्रा ।  
 न स्वाद न खेद न वर्ण न मुद्रा । चिदानन्द० ॥ ४ ॥ न जन्मं न  
 मृत्युर्न मोड न चिंता । न क्षुद्राद् न भीत न कृप्य न तुदा । न स्वामी  
 न भृत्यं न देव न मर्त्य । चिदानन्द० ॥ ५ ॥ त्रिदंडे त्रिखण्डे हरे  
 विश्वव्याधी । हपी केश विद्वांस रुमार्जिजाले । न पुण्य न पाप न अ-  
 क्षादि प्राण । चिदानन्द० ॥ ६ ॥ न बाल्य न वृद्ध न विद्व न मूढा ।  
 न खेद्य न भेद्य न मूर्ति न मीहा । न कृष्ण न शुक्लं न मोहन तद्रा ।  
 चिदानन्द० ॥ ७ ॥ न आग्रं न मन्य न अन्त्यं न अन्या । न द्रव्यं  
 न क्षेत्रं न द्रष्टो न भावाः । न गुर्वी न शिष्य न आग्रं न दीन । चि-  
 दानन्द० ॥ ८ ॥ इद ज्ञानरूप स्वय तत्त्ववदी । न पूर्णं न शून्यं स  
 चेतन स्वरूपी । अन्योन्य भिन्न परमार्थमेक । चिदानन्द० ॥ ९ ॥  
 आत्माराम, गुणाकरं गुणनिधेः चैतन्य रत्नाकर । सर्वे भूत गतागते  
 सुख दु ख ज्ञातास्त्वया सर्वगो ॥ त्रैलोक्याधिपतिः स्वयं स्वमनसा  
 ध्यायति योगेश्वरा । वंदे त्वा हरिवश हर्षहृदये श्रीमानभ्युद-  
 र्चित ॥ १० ॥

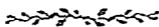
इति परमात्म स्तोत्रम्.

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे  
 स्तोत्राभिधं प्रथम प्रकरणम् ॥





## अथेदमारभ्यते द्वितीय प्रकरणम्—छन्दः.



२१ अथ पार्श्वनाथ छन्दम् दोहा.

सारद मात मया करी ॥ आपो अत्रिचल वाणि ॥ पुरीसादाणी.  
 सास जिण ॥ गाउ गुणमणि खाण ॥१॥ अद्भुत कौतिक कलियुगै ॥  
 दीसै एह अदभ ॥ परयी अधर रहै सदा ॥ अंतरीक थिर थभ ॥२॥  
 महिमा महिमडल सबल ॥ दिसै अनुपम आज ॥ अवर देव सूता सवे ॥  
 नागै तूं जिनराज ॥ ३ ॥ एक जीभ करि किम कहूं ॥ गुण अनत  
 भगवत ॥ कोड जीभ करि को कहै ॥ तोहि न पावे अंत ॥ ४ ॥ तूं  
 माता तूहिज पिता ॥ भ्राता तूहिज वधु ॥ मन धर मुज उपर करो  
 करुणासिंधु ॥ ५ ॥

॥ अथ अडिल छन्द ॥

करि करुणा करुणा रमसागर ॥ चरणकमल मणमै नित नागर ।  
 निरमल गुणमणि गुणवैरागर । मुग्गुरु अत्रिक अवै मति आगर  
 ॥ १ ॥ काम कुभ जिम कामितदायक । पदमणमै शुरवरनर नायक ।  
 मयित मुदुर्मथ मनमय सायक । अछ कर्म रिपुदल बल घायक ॥२॥  
 नवनिधि तुज नामै । मनवन्ति सुख संपति पामै । जे प्रभुपद परुज

शिरनामै । वकुलासुर सारै तसुकांमै ॥ ३ ॥ वकुल वसै विपहारी  
 त्रात ॥ वरसिरपुर वसुधा निख्यात ॥ जिहा राजै जिनवर जगत्रातै ॥  
 अंतरीक अनुपम अवदातं ॥ ४ ॥

छंद.

अवदात जेहनो जगत्र जाणै । गुण वखाणे सुर वणी । परसाद  
 प्रभुनै प्रगट परभव ॥ पामिये प्रभुपद फणी ॥ महिमा वधारै विघन  
 वारै करै सेवा अति घणी । तुम नाम लीनो रहै भीनो । अवर देव  
 है अवगुणी ॥ १ ॥ नरनाथ कोडी हात जोडी । मानमोडी इम कहै ।  
 प्रभुनाथ चरणे जिके सरणे रहै ते परमपद लहै । बलि जेह उतरुट  
 विकट संकट निरुट नोवे ते वली ॥ भय आठ मोटा निपट खोटा  
 दूरथी जायै टली ॥ २ ॥

॥ छंद चाल. ॥

जे रोग भयकर दुष्ट भगदर । कुष्ठ खयन खस खास हरिखा  
 अंतर्गल बलीमल ज्वर विषम ज्वर जायै नाश ॥ दिसै अति माठा  
 बलि । व्रण चाठा नाठा जायै तेह । तुम दर्शन स्वामी शिवगत गामी  
 चामीकर समदेह ॥ १ ॥ जलनिधि जलगज्जे प्रवहण भज्जे बज्जे  
 वायकवाय । थरहर तिहां ॥ २ ॥ पुज्जे कीजे बहुल उपाय ॥

वीहे जण जाता देखी राता लोयण तस विकराल ॥ कीपे गुणग्याने  
 प्रभुने ध्यानै अहिया डविसराल ॥ ४ ॥ पापे पग भरता हिंडे फिरता  
 करता अति उद्माद ॥ धोटिक जिम छेटे अति आकूटे लूटे निपट  
 निपाद ॥ वनमाजे पडिया चोरे नडियां अडवडियां आधार ॥ इस  
 अवसर राखे कुण प्रभु पाखे भाखे वचन उदार ॥ ५ ॥

छंद.

मयमत्त मयगल अतुल बल धरजा सदरसण भज्ज ए ॥ केस-  
 गिर्मिह अवीह अति है मेहमम वडगज्ज ए ॥ विकराल काल कराल  
 कोपे सिंहनाड विमुक्कए ॥ सुखधाम प्रभु तुम नाम लेता तेहसींह नदुक्क  
 ए ॥ १ ॥ गलजाट करतो मड अरतो कोप अरतो धावए ॥ भय रोश  
 रातो अधिक मातौ अति उजातौ आव ए ॥ घर हाट फोडै वध तोडै  
 मान मोडै नृपतणु । तुम नामै ते गज अजा थावै वसै आवै अति घणु  
 ॥ २ ॥ रिणमाहि मुरा भीडे पूरा लोह चूराचूर ए ॥ गजकुंभ भेदे  
 सीस छेदे वहे लोहित पूर ए ॥ दल देखि कपे दीन जपे करय प्रबल  
 पुकार ए ॥ तुमस्वामि नामै तिणै ठामै वरते जयजयकार ए ॥ ३ ॥  
 भय आठ मोटा दुष्ट खोटा जेम रोटा चूर ए ॥ अश्वसेन घोटा तुज  
 प्रसादे मनमनोरथ पूर ए ॥ महिमाहि महिमा वने दिनदिन  
 चंदने सूरिज समो जसजाप करता ध्यान धरतां पार्श्व जिनवर ते  
 नमो ॥ ४ ॥

उद्द चाल.

छाया पडल जाल सत्र कोपे ॥ आख्या तेज अधिक उलि  
 आपे ॥ पन्नगपति प्रभुने परतापे ॥ अविचल राजकाज धिर थापे ॥ १ ॥  
 पद्मावति परचो यहू पूरे प्रभु प्रशाद सकृद सवि चूरै ॥ अलवत अलगी



जावै दूरे लक्ष्मी घर आवै भरपूरे ॥ २ ॥ महिमंडल मोटो तूं देव  
 चोसट इद्र करै तुज सेव ॥ त्रिभुवन ताहरो तेज विराजे जस प्रताप  
 जगत्रमें गाजे ॥ ३ ॥ केता देश कहूं वलिनामैं प्रभुनी कीरत जिण  
 जिण ठामैं ॥ पुरपट्टण सवाहन गामैं सुणता नाम भविक सुख  
 पामैं ॥ ४ ॥

॥ छट्ठ देशांतरी ॥

अग वग कलिंग मरुधर मालवौ मरहट्टए । काश्मीर हूण हम्पीर  
 हव्यस सवालख सोरठ ए ॥ कामरु कुरुण टमण देसै जपे तेरो जाप  
 ए । इण देशे अविचल प्रवल प्रतपे पास प्रगट प्रतपे ए ॥ १ ॥  
 लाटने कर्णाट कन्नड मेट पाटमेवात ए । वलिनाट धाट वैराट वागड  
 वड कठ कुशात ए ॥ सतर्लिंग गग फिरग देशे जपे तेरो जाप ए ।  
 इण देश० ॥ २ ॥ बलि ओड त्रोट सगौड द्राविड चोट नट महाभोट  
 ए । पचालने वगाल देशे सन्नर वन्नर कोट ए ॥ मुलताण मागध  
 मगध देशे जपे तेरो जाप ए ॥ इण देश० ॥ ३ ॥ नमि आडलाड  
 कर्णाल कोशल बहुल जंगल जाणिए । खुरसाण रोम अइराक आरब  
 कुरु कर्नात वाखाणिए । कुरु अच्छ मच्छ विदेह देशैं, जपे तोरो जा-  
 प ए ॥ इणि ॥ ४ ॥ काशीए केरल अनेके कर्ट, मुरसेन सदिलए ।  
 गंधार गुज्जर गाजणो, वलियार गुड विटर्भए । कनविर नै सोवीर  
 देशैं, जपै तोरो जाप ए ॥ इणि ॥ ५ ॥ नैपाल नाहल, अम्मल कुं-  
 तल, अज्ज कज्जल देशैंए । प्रतिकाल चिल्लन मलय सिंहल, सिवु  
 देश विसेशए, खसरवाण चिन सिल्लौन देसैं, जपै तोरो जाप ए  
 ॥ इणि ॥ ६ ॥ कनवीर कानड कुलख कावल बुलख भग विभंगए ।  
 मलहार मधुहिलार हर्मज, पियगु हिंगुल वगए । बलि वसाणनै ट-  
 साण देशैं जपै तोरो जाप ए ॥ इणि० ॥ ७ ॥

॥ छंद छप्पय ॥

प्रतपै प्रचल पताप पाप सताप निवारण । दश दिश देशनिदेश ।  
भयता भयिजन मुखकारण । रोग सोग सबी टलै मिले मनवांछित  
भोगए । दुख दोहग दारीद, दुर सपि टलै वियोगए । स्वर्ग मृत्यु पाता-  
ल्में त्रीभुवनै षगटयो सदा, श्री पार्श्वनाथ प्रताप, आपै अविचल  
संपदा ॥ १ ॥

॥ छन्द चाल ॥

अविचल पद आपै थिर कर आपै । जग व्यापक जिनराज ।  
उपद्रव सब नाशै । सुरगुण गासै, बस आपै नरगज, दीपै परदीपै  
रिपुने जीपै, दीपै जिम दीनराज, पदपकज पुजै प्रभुने गिझया, सीझे  
वंछित काज ॥ १ ॥ तू छे मुज नायक, हु तुज पायक, लायक तुज  
समान, कुण छै जगमाहि, साहिया राखे आप समान, तुहिज ते दीसै  
विश्वावीसै हीयट्ट हीसै हेय, देखुह नयणें तुम हिज वयणें निरमल  
गुणमणि गेह ॥ २ ॥ सीदूर मुडाला षट मतवाला, दुडाला डरवार ।  
झुलै मन गमता रगे रमता, उच्छालता वार, तुरकी तेजाला आगल  
पाला, झुझाला तरवार, झालीनै दोडै होडा होडै, जोडै बहु परिवार  
॥ ३ ॥ हयवर पाखरीया, रथ जोतरीया, गूघरना घमकार, सोवन  
चित्तरीया, नेजा धरिया, परवरीया असवार, गज बैटा चाले, रिपु-  
मन सालै मालै लक्ष्मीनो सार, एहरी रिद्धी पामै प्रभुने नामे सफ-  
ल करै अवतार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अवतार सार ससार माहि, तेह जननो जाणिए, धन कमाई

धर्म स्थानक जिनै लक्ष्मी मानिए. ॥ १ ॥ सुंदर रूप सुहामणो, श्रवण सुणी नरनार ॥ कोडी करजोडी रहै, दरगननै दग्वार ॥२॥

॥ छन्द अर्ध नाराच ॥

प्रीयगुवन निलतन देखी मनमोहए सनूर सूरनुरतै, अधिक तेज सोहए, अमदचद वृद्धतै कलाकलाप दिप्पए सुरिद कोटी कोटी तै जिनद जोर जिप्पए ॥ १ ॥ अफूल फूल वाणकै, कवान तो न लगए, दुजोध क्रोध जोध वैरी मान छोडी भगए, अदीन तूसदीन वधू, देहि मुख मगए, शरण जाण स्वामीके, चरण कू विलगए ॥ २ ॥ सुजोति २ मोतितै, सुदत पत दिप्पए, गुलाल लाल उष्टतै, प्रवाल माल छिप्पए, सुवास वास वासतै कपूर पुर भजए, प्रलंब बाहु बाहुतै, मृणाल नाल लज्जए ॥ ३ ॥ अनुपरूप देखतै जिणंद चद पासए, पादारवृद्धवृद्धतै कुपापव्याप नासए, दारिद्र चुरचुरके प्रभु पुर मोरी आसए, अनाथनाथ देई हात कर सनाथ दासए ॥४॥ कमठ हठ गंजनो कुकर्म कर्म भजनो, जगति नाति रजनो, मदहुम प्रभंजनो कुमती मति मंजनो, नयन युग्म खजनो, जगत्रय अगजनो सो जयो पार्श्वनिरंजनो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पास एह निजदासनी, अवधारो अरदास, नयणे देखाडी दरस, पुरो पुरण आस ॥ १ ॥ चक्रा चाहे चितसू, दिनकर दरसण, देव, चतुर चकोरी चंद जिम, हु चाहु नितमेव ॥ २ ॥ निसभर सुतां निंदमै, दीठो दरसण आज, परतिख देखाडी दरसण, सफल करो मृज काज ॥ ३ ॥ तुम दर्शन सुख संपदा, तुम दर्शन नवनिद, तुम दर्शनथी पामिये, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ ४ ॥

॥ उद्द चाल अटयल पाधडी ॥

अतरिक प्रभु अतरजाभी दिजे दर्शन शिवगत ग्रामी, गुण केता  
कहिये तुम स्वामी, कहता सरस्वती पार न पायी. कियो छंद मद्गति  
सारु, हितकर चि मै वरजो गारु, गालक यटवा तदवा बोले, माता-  
नै मन अमृत तोले ॥ २ ॥ कियो कवित चित्त हुट्टासै, साभलता  
सब आपट नासै, सपट सधली आवै पासै, भाव विजय भगते उम  
भासै ॥ ३ ॥

॥ उद्द लप्पय ॥

कियो उद्द आनद वृद्ध मन माही आणि, साभलता सुखरुद,  
चंद जीम सीतल वाणी, श्री विजयदेव गुरुराज, आनतदा मनपर  
गाजै, श्री विजयप्रभ नाम काम समरुप निराजे, गंधर टोय प्रणमी  
करी शुणयो पास अजरुण गरुण, श्री भाव विजय वाचरु भणै जयो  
देव जयजय करुण ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ उद्दम्.

२२ अथ पार्श्वनाथ स्वामिनो शिलोको

प्रणमू परमात्म अचिचल अवतारु ॥ अरिहत सिवाना नाम  
लघारु, सिमरु आचारज मोटा उपाध्या ॥ साधू आतमरा कारुण सा-  
व्या ॥ १ ॥ नगरी अलकापुर वाणारसि-सोहै ॥ देवगा प्रणारा  
मत्तडाजी मोहै ॥ देश देशमै मागी उड देशो ॥ नरउड अरुमारो  
नहि लपलेशो ॥ २ ॥ राजै महाराज अखसेन राजा, सादीता वा-

गल वाजै नित वाजा, कासी राजा रोकैसूं परमाणो, देश सघलमै  
 वरते छे आणो ॥ ३ ॥ मणि माणिक मोती भरीया भण्डारो, अट्ट  
 सिद्ध नवनिधरो नही पावे पारो, अति घणी मुंटर ओपे ठकुराणी,  
 साऊ वामादे माता पटराणी ॥ ४ ॥ जिणरी कूंक्षे ते जगन्नाथ जायो,  
 पारस कुमर जगनामक हायो, तीन भवनरो नायक नाथो, मुगतर  
 मणीनें घाली छैं वाथो ॥ ५ ॥ चोसठ इंद्रानो पुजनीक देवो, निस-  
 दिन आगल तो सरैजी सेवो, दश भवारो वैरी गैरी सवायो, कमठ  
 सन्यासी तापस आयो ॥ ६ ॥ चिहुं दिश अगनि धुसती ज्वाला,  
 सिरपर तो सोहै सुग्ज बडाला, इसडी पचाग न तपस्या तपतो,  
 माला रुद्राक्षनि जाप जपंतो ॥ ७ ॥ गगातट ऊपर आसण कीनो ॥  
 जोगी जप तपमे अति घणो भीनो, सीस जटानें मुकुट संजुटी ॥ भांग  
 धत्तरा पिया अति बुटी ॥ ८ ॥ आसण पदमासण पूरण छायो ॥  
 लेप भस्मीसू धसमस कायो ॥ पठिरण पावडियां अगल पडीयां ॥  
 वज्र कसोटो कसियो छेकडियां ॥ ९ ॥ चक्षु चोला वेहू झलके जी-  
 डोला ॥ श्रृंगी सैली बभूतरा गोला ॥ तिखो त्रिमूलो एक अधिक  
 विराजै, भालचंद्र सरिवोभल छजै ॥ १० ॥ सोहै वाघंबर काष-  
 वर सोहै, देखया अधूतने घणा मन मोहै, अवधूतो इसडो कोड न  
 आयो, जस तपसीरो घणो सवायो ॥ ११ ॥ दोडी दुनीया सहूदर  
 सण आवै, जलज्यू तो जोगी ज्वालामै नावै, इसडी तो वाता अब  
 आइ दरवारो, कहै वामा सुण पारस कुमारो ॥ १२ ॥ जहा जोगीसर  
 जांप जपतो, दरसणरी मनमें घणी छै खतो, चढीया वामादे माता  
 चकडोलै, चाकर सहिल्या चामर डोले ॥ १३ ॥ हुकुम मातोरे पा-  
 रस कुमारो, गयवर ऊपर हुवा असवारो, शरणै आयारो साहकसा-  
 मी, जीव सारागो अंतरजामि ॥ १४ ॥ हस्ती हलकारै गंगातट आया,  
 कपटी कमठरी देखी सहुमाया, जितरे तो जिनवर ग्यान कर जोयो,

सुणही तपसि एक मांहीरी जीवायो ॥ १५ ॥ एकाग्र चित्तशू सां-  
 भलजे भायो, इसडो तपतो मांहीरी दायन आयो, इणविध पचांगनि  
 ती मततापो, जारोपिण इद्रि राखने आपो ॥ १६ ॥ उंडो माया-  
 म्द दयाचित धारो, सिद्ध समन्यामू होसी निसतारो, इतरो तो सु-  
 णने कमठज बोलै, आतुर तो ऊफणतो आखज खोले ॥ १७ ॥  
 गुस्से भरियोने धडहड धूज्यो, फिड फिड दानानै गिड गिड गूज्यो,  
 बोले वडवडने वके वदनूरो, कडकडतो आख्यादिसै कसूरो ॥ १८ ॥  
 राजकुवर तूं दिसे अवतारो, अब तो लेवेगा अत हमारो, खडा<sup>१</sup>  
 करते हो हमसे तुम सेखी, कैसी तपस्यामै हिंस्या तुम देखी ॥ १९ ॥  
 कुडी<sup>२</sup> तो कुमगारा<sup>३</sup> नहि कीजे, जगली जोग्यारी आळ न लीजे,  
 वरजे वामादे ऊभा परचावै, रखे तपसि कोइ हुन्नर<sup>४</sup> चलावै  
 ॥ २० ॥ इतरे लकडारां टुकडा कराया, बलता हुताशन नाग जला-  
 या, अतरमहुरतमें जीवन काया तिहा प्रभु पारस नाम सुणाया ॥ २१ ॥  
 वडफडता पडिया वाहिर फुनिंदो, पायो अमरापुर हुवा धरणींदो,  
 हिव तपसी तो हुवो छैहैराणो, पुरी परखदामै हुमो खीसाणो<sup>५</sup>  
 ॥ २२ ॥ धूखती धूणीले डेरी विखेरी, अबतो खवर है पारम तेरी,  
 जल जल तो बलतो आफलतो ऊठयो, प्रभुजी ऊपर तो घणोहि  
 रूठयो ॥ २३ ॥ हमारी तपस्यागे अज सथायो, पारसकुमर तू र्हो  
 सुखदायो, काया कसटरो पिंड परमाणो, चू तो नही हुमर सूंटाणो  
 ॥ २४ ॥ काळे मासे करीने काळो, उपज्यो कमठासुर मेघजमालो,  
 भूतो छे जिनवर भोटा उपगारी, लेसी दीक्षानें उतरसी भवपारी  
 ॥ २५ ॥ नाग नागणीनो कीयो नीसतारो, जस हुवो छै सघळे  
 संसारो, लोक नगरीरा मघला सुख पाया, हिव तो कुमरजी महलामें  
 आया ॥ २६ ॥ इम करतां उतन्यो वरस गुण तीरो, आप आलोचे

मनमे जगदीशो, पहिला तो वरसीदानज दीजे, पाछे तो अवसर  
 दीवाजी लीजे ॥ २७ ॥ सोलै मासे इरु कनक कहीजे, कनक सो-  
 लारो मोनगो लीजे, आठ लाख सोनइया एकज कोडो, नित प्रत  
 देवे इतरारी जोडो ॥ २८ ॥ इसडा छमठरी दानज दीया, जिनवर  
 ते विसमा सजम लीया ॥ तिनसो मुनिवर तो हुवा तिणवारो, लारै  
 जुरै छे सघलो परिवारो ॥ २९ ॥ इरु दिन तो प्रभुजी सिवद्रिग वनमे,  
 व्यान वरीयो छै अविचल मनमे ॥ अब तो कमठासुर ग्यान करजो-  
 यो, कट्टै हमारो दुसमण होयो ॥ ३० ॥ रूठो कमठासुर वादल  
 चलवै, अवर पहाडा सिखर उठावे, वादल इडियाने छायो आका-  
 सो, जाणै भाद्रवडो वरसै जीमासो ॥ ३१ ॥ वीजल वावलने अनि  
 घणु गाजै, पुणगा<sup>२</sup> पाण्ण<sup>३</sup> ज्यो पडती जीराजे, पडै पाणीना पापस  
 परनाला, वसममिया इंगर गारा उरु चाला ॥ ३२ ॥ काला अ-  
 काला मचीया वरसाला, वाला खालाने चलीया वयाला, जिनवर  
 तो जलमे नासा लग कलिया, व्याने अचला चल नहि जीमलिया  
 ॥ ३३ ॥ इतरै तो आतुर प्रणेंद्र आया, पाय लागीने अधर उठाया,  
 फुण तो हजारो ऊपर नीया, लुल लुल प्रभूना वारणा लीया ॥ ३४ ॥  
 अब तो मनमाहे दीयो आंगलो, ओ तो छै दुष्टी मेघ जमालो दश  
 भवारो वैरी कमठासुर दीसे, सिम सोलै वजर आणी अतरीसे ॥ ३५ ॥  
 ध्रुजा कमठासुर घगो पिउताया, मे तो जिनवरने यही सताया,  
 गनो छे प्रभुजी मुगतरा प्यारा, रागद्वेषसू होय वैठान्यारा ॥ ३६ ॥  
 इसडो जाणीने लागो छे पावो, प्रभुजी हमारो पाप खमावो, तत्र तो  
 कमठासुर उर देतो, सारै प्रभुजीनी वगीजी सेवो ॥ ३७ ॥ आपणे  
 थानर पुहता तिणपंगो, द्वियै तो जिनवर कियो विहारो, दीन तर्पा-  
 सी उद्वस्थ रीया, वापीस परिसह करडा नी सदिया ॥ ३८ ॥ ओहू

करमारो कीयो उँ नासो, पाँ उँ तो केवल हूँ परकासो, वाणी पै-  
 तीसेने अतीसे चउतीसो, इणपरतो विचरे ते वीसमा जगदीसो  
 ॥ ३९ ॥ ज्या ज्या जिनवरजी पगल्या पधगवे, ए वार्ता आगासूँ  
 नासी जी जावै, सोसो कोसामें न पढे दुकालो, मोटा रोगांगे नहि  
 हुवै चालौ ॥ ४० ॥ कोड हल्लुसुमी श्रावकरे पारणो पावे, देवन मोन-  
 इया कोडा वरसावै, सुरपत भगवन्तनी सारै नितसेवो, लाधै अण  
 हुतै सत लख देवो ॥ ४१ ॥ देव देवी मिल दरसन आवै, रत्न  
 कचनरो त्रिगडो रचावे, वाणी धुकारो उठे अति भारी, परखदा  
 वारेही समजे तिणवारी ॥ ४२ ॥ गावा नगरा पुरसो है विचरता,  
 भागे भव जीवा मालै भगवन्ता, गुणना आगरने सागर गपीरो,  
 लडिया करमासू भारी रणधीरो ॥ ४३ ॥ अनेक जीवारा काज  
 साच्या, भवसागरसू पार उताच्या, एरुसो वरसारी पाई हे उपर.  
 जाट तो चढीया समेतगिर शिखर ॥ ४४ ॥ तिथ आठमने श्रावण  
 शुद्ध माँसो, मधुजी सिद्धामें कीनो छे वासो, ऊणही सिद्धानो वेसू  
 वखाणो, वसुहीक मूननो मतपिण आणो ॥ ४५ ॥ सिद्ध गिलारो  
 इसठो उनमानो, उठै भगवन्तरो अविचल थानो, लयी पहुली रूप  
 ताजिस जोयण, कथियो गुणवता इसठो जीमोयण, विचम तो जाडी  
 घणीजी सवली, छे हडै माखीकी पाग्यवी पतली, सोहे सिद्धाका अ-  
 नंत श्रेणी, सन्या शिवपुग्नी नहि आवे केहगी ॥ ४७ ॥ पाणी प-  
 वनरो नहि लखलेशो, नहि अधारो नहि रवि प्रवेशो, नही उजाग्यो  
 नहि वरसालो, नहि सीयालो नहि वरसालो ॥ ४८ ॥ हासागराराणे  
 नहि उपवासा, रगट पट जीवाराजोवै तमासा, को नहि आवे कोड  
 किणरे नहि जावै, खावे पीवे नहि किणने नहि भावे ॥ ४९ ॥ चा-  
 कर ठाकुर तो नहि उण ठोडो, रूठो वटेरो नहि कोड लोडो, वरतें  
 मि द्वांना सवे समभाषें, जटै तो मधुजी आत्म मुक्क पावे ॥ ५० ॥



भणियो शिलोको भगवंतरो भलो, प्रणमै पंचोली जोरावर पलो,  
 पल पलमे होज्यो वनणा हमारी, मेहर राखी ज्यो मो पर धारी  
 ॥ ५१ ॥ संवत अठारे वरस इरूपनो, पोसवद दशमीनो मोटो के  
 दिन्नो, बांचे भणै ने सीखैसदाइ, तिणरे तो कु मणा नही रहै कांड ॥५२॥

इति पार्श्वनाथ ( शिलोको).

### २३ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद ( सायंकालका )

अर्चितर्चित चिंतामणी श्री पार्श्वनाथ जगमांहे भणिए ॥ जगरक्षण  
 जगसार्थवाह जगवधव युणिए ॥ जिनवर जगगुरुजगनाथ जिन त्रिभुवन  
 सामी ॥ काम कुंभ कलि काल हुवा प्रणमू सिर नामी ॥ त्रिभुवन  
 तारण वीनवूं हे ॥ श्री परमेसर पास ॥ चरण कमल प्रभु भेटतां  
 प्रभू मुज पुरोजी आस ॥ १ ॥ अनतग्यान अनत गुण जिनें सरभ-  
 णिए लक्ष जीव्हा पार पावे नही एकण किम युणिए ॥ सब वालूकण  
 ज्येव छंट ते अलिख अपारा ॥ तिणथी अधिक अनंतगुण ॥ किम  
 पावू पारा ॥ तारा गुणतो सुग्गम ए सब सायरको नीर ॥ श्री मुख  
 स्वरसती वर्णवे ॥ तोहि न पावेजी तीर ॥ २ ॥ ग्यान रहित हू  
 श्मानवी तुम गुण किम जाणू ॥ मति पाखे वरणवू ॥ संक्षेप वखाणूं ॥  
 क्लोयल सुरतरु अंगडाल अवा वहु सगते ॥ तिण दृष्टाते तुम प्रसाद  
 लुण वोल्सू भगते ॥ रोम रायतन हुलसियोए हिवडे हरप न माय ॥  
 अति आनंदे ऊचरूं तिरूं जिण तुज सुप साय ॥ ३ ॥ चमर सिधा-  
 क्षन छत्र तीन सिर ऊपर सोहै ॥ वाणी दुदुभी नाद सुणी सुरनर  
 क्षन मोह ॥ धूर्ते भामडल भलो जसकीरत कारण ॥ फलिमो फूल्यो  
 आशोक वृक्ष सब दुःख निवारण वाणी गुण पैतिस अरूप ॥ बलि  
 अतिशय चौतीस ॥ समोशरग कर शोभता ॥ ते प्रणमू जगदीश  
 ॥ ४ ॥ रूपे जीत्यो मदनराय, तेजें अदीतो, लक्ष्मी जीती कडि

दृष्टि जगमांठी वदी तो ॥ सोमपणामें चंद्र थकी प्रभू अधिक अपारा,  
 तिणधी अधिक अनंत गुण किम पावू पारा, सागरजिम गंभीर वरूप  
 श्री जोगेश्वरनाथ, कृपा करो सामी मुज भणी तारो त्रिभुवननाथ  
 ॥ ५ ॥ हस्ती समरे कुजवन कोयल सहकारा ॥ चकवी समरे दिव-  
 सनाथ सतिया भरतारा, सायर समरे चद्रमा पण्डया मेहा ॥ हस  
 सरोवर गऊ वड जिम अधिक सनेहा ॥ मधुकर समरे मालतिण  
 वालक समरे माय, तिमहूं सिमरु दीनानाथको दर्शन यो जिनराय  
 ॥ ६ ॥ आभाले कागद करे मेरु जिम लेखण क्षीर ममुद्र गाढी करे  
 लिखे ईन्द्र विचक्षण ॥ लिखतां पार पावे नही ॥ में गुण किम जाणू,  
 मति पाखें करि वर्ण व्याउनमान वखाणूं, मक्षेपे गुणमें युणि आप  
 श्री अर्हत भगवन्त देव, ऊरजोडी कवियण रुहै प्रभु मुजे आपोजी  
 सेव ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२४ अथ पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद (प्रातःकालका)

नरेंद्र फर्णाद्रि मुग्धेंद्र अधीशं । सतेंद्र सपूज्यभजेनायशीस मुनींद्र  
 गर्णाद्रि नमे जोर हाथ । नमो देव देव सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ गजेंद्र  
 म्मेन्द्र ग्रहो तू छुडावे । महा आगतेनागते तूचचावै । महारोगते वंध-  
 ते तू सुलावै । महारण ते जुद्धते तूं जीतावै ॥ २ ॥ दुःखी दुःख  
 हरता सुखी सुख करता । सवै सेवकोने सदानद भरता । हरे जस  
 राक्षस भूत पिशाचं । त्रिपन डाकनीके भय अवाच ॥ ३ ॥ दरिद्रन-  
 कूं द्रव्यके दान दीन्हे । अपुत्रनरू ते भले पुत्र कीने । ग्रहा सर्व  
 सेती निराले विधाता । सवै संपदा सर्वकूं देह दाता ॥ ४ ॥ महा  
 चोरको वक्रको भय निवारै । महा पवनके पुजसे तू उवारै । महा

क्रोशकी आगमें मेघ धारा । महा लोभसे लसही वज्रभारा ॥ ५ ॥  
 महा मोह अंधारकु ग्यान भानूं । महा कर्म कंतारकु देह प्रधानं ।  
 क्रिये नाग नागिणी अधो लोकरु सामी । हयो मानते दैत्यको भय  
 अकामी ॥ ६ ॥ तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनु । तुंही देव चिंतामणी  
 नाथ एनु । पशु नररुके दुःखसेती छुडावै ॥ महा स्वर्गमे मौक्षमें तूं  
 वसामें ॥ ७ ॥ करै लोह ते हेम पापांग नामी ॥ रटें नामसो क्यो  
 नही मोक्ष गामी ॥ करै सेनताकी करै देव सेवा ॥ सुने वै नसोही  
 लहै ग्यान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जापता कू रहा पाप लागै । वरै ध्यान  
 ताका सवी दुःख भागे । विना तोहि जाने धरे भव घनेरो । तुमारी  
 कृपासे सरै काज मेरो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ गणवर इद्र न करि सकें तुम  
 विनती भगवान ॥ दानत भीत निहारकें कीज्यो आप समान ॥ १ ॥

इति पार्श्वनाथ स्वामिनो छन्द.

## २५ अथ पार्श्वनाथ छन्द (सायंकालका)

प्रणमामी सदा प्रभु पार्श्व जिन । जिन नायक दायक सुख धनं ।  
 अन्न सार मनोहर देह धर । धरणी पति नित्यसु सेवकर ॥ १ ॥  
 ऋरुणारश रंजित भव्य फणी, कणी सप्त सुशोभित मौलि मणी,  
 मणी कांचन रूप त्रिकोट घटं । प्रदीतासुर कीचर पार्श्व तट ॥ २ ॥  
 लटनी पति घोस गभीर सूर । शरणागत विश्व असेस नर । नरनागी  
 न्मस्कृत्य नित्य पदा । पद्मावती गावती गीत सदा ॥ ३ ॥ सतते-  
 द्रियकोपयथा रुमठ । रुमठासुर वारण मुक्तहठ । इठ हेलित कर्म  
 कृतात बल । बल बलधामिदं गडलपंरुजलं ॥ ४ ॥ जलजलसत्पत्र  
 प्रभा नयनं । नयनदित भद्र तंरीगमन । मन मथे महीरुह वन्दि  
 स्वम । समेतामय गुण रत्न मयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार सदा  
 कुशल । कुशल कुरमे जिन नाथ अलं । अलनी नलिनी नल नील-

तन । तनुता प्रभु पार्श्वजिनम् सुगन ॥ ६ ॥ मूधन धान्यकर करु-  
णापर । परम सिद्धिकर दददाधर, वरतर अश्वसेन कुलोद्भव । भव  
श्रुता पार्श्व जिन शिव ॥ ७ ॥ छ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

२६ अथ छन्द भुजंग प्रयात. (प्रात.कालका)

सेवो पास सखेश्वरो मन सुद्धे । नमो नाथ निश्चे करी एक  
बुद्धे ॥ देवी देवला अन्यने सू नमो ओ । अहो भव्य लोको भुला  
सू भमो छो ॥ १ ॥ त्रिं लोकरुके नाथने सू तजो छो । पड्या पासमें  
भूतडोनें सू भजो छो ॥ सुरधेनु छडी अज्यानें अजो छो । महापंथ  
मूकीं कुपये चलो छो ॥ २ ॥ तजै कोण चिंतामणी काच माटै । ग्रहे  
कोण रासभने हस्ती साटै ॥ सुरद्रुम ऊपाडीने कोण आरु वावै ।  
महा मूढ सो आकडा अव चावै ॥ ३ ॥ किहां कारुरो नें किहां मेरु  
श्रृग । किहां केसरीनें किहां ते कुरग ॥ किहां विश्वनाथ नें किहां अ-  
न्य देवा । करो एक चित्ते प्रभू पास सेवा ॥ ४ ॥ भजो देव प्रभा-  
चती प्राणनाथ । सहू जीवनें जे करे विश्वनाथ ॥ महा तत्व जाणीं  
सदा देव ध्यावै । तेहना दुःख दारिद्रि दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुष  
जन्म हथा क्यू गमो छो । कुसीले करीं देहिनें सू रमो छो ॥ नही सुक्त  
वास विना वीतरागं । भजो भगवन्त तजो दुष्ट रागं ॥ ६ ॥ उदै  
रत्न भाख्या सदा हेत आंणी । हया भाव कीजे प्रभू दास जाणी ॥  
मारै आज मोतीनका मेह बुढा । प्रभू पास सखेश्वर आप तूठा ॥७॥

इति भुजंग प्रयात छन्द.

२७ अथ पार्श्वनाथ स्वामी छन्द. (प्रात.कालका)

क्षिति मडल मुकूट उर्मरुनिकट विश्वापगट चारु भट, नव रेणु

समीरं नील शरीरं सुर गुरु धीर गंभीर, जगती जग शरण दुर्मतिह-  
रणं दुद्धर चरणं सुख करण, श्री पार्श्वजिनेंद्रं नितनागेन्द्र नमत सुरेंद्र  
कृत भद्र ॥ १ ॥ देह द्युति सारं सुभगाकारं विश्वाचारं गुणधार,  
शिवरमणी रक्तं राग विरक्तं सकट मुक्तं गुण युक्त, कमठे सम दलन  
गजगति चलनं, केवल कमलं श्री विमल ॥ श्री० २ ॥ महिमा दिन-  
कारं भवनिस्तारं निर्जित सारं दातारं, प्रति भव नेतार गत वैभार  
जैनेतार त्रातारं, क्लुमुमे जल रदन दुर्मति दलनं, सप्रति मदन गुण  
सदनं ॥ श्री पार्श्व० ॥ ३ ॥ पास श्री जक्ष निर्मल पक्ष कृति जित  
रक्ष जिन मोक्षं, शिव ललना द्वार सफल विहारं मुगुट विहार सुख-  
कारं, धरणीधर रम्य जगत्यगम्य रम्या रम्य शह रम्य ॥ श्री  
पार्श्व० ॥ ४ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.

## २८ अथ सिद्धाष्टकम् ( सायंकालका )

अखण्डं चिदानन्द देवाग्नि देवं । फणीन्द्राद्रि रुद्राद्रि इन्द्रादि सेव ।  
मुनीन्द्रा कवीन्द्रादि चन्द्रादि मित्र । नमस्ते ३ पवित्र ॥ १ ॥ धराभज-  
लग निमरुस्त्वं नमस्त्व । घटत्व पटत्वं अणुत्वं महत्व । मनस्त्व वच-  
स्त्व द्विगत्वं दृस्त्व । नमस्ते. ३ समस्त्व ॥ २ ॥ अडोल अतोलं  
अमोल अमान । अटेह अठेहं अनेह निधानं । अजापं अथाप अताप  
अपापं । नमस्ते. ३ अमाय ॥ ३ ॥ न ग्राम न धाम न शीतं न उ-  
ष्णं । न रक्त न पीत न श्वेत न कृष्ण ॥ अशेषं अशेष नरेश न र्पा  
नमस्ते ३ अनूपं ॥ ४ ॥ न ज्ञाया न माया न देशो न कालो । न  
जाग्रं न सुप्तं न दृष्टो न चालो । न च्छम्ब न दीर्घं न रम्य अरम्य ।  
नमस्ते ३ अगम्य ॥ ५ ॥ न बंध न मुक्तं न मौन न वक्तं । न धुञ्ज

न तेजो न धामी न नक्त । न रक्तं विरक्तं न जुक्तं अजुक्तं । नमस्ते  
३ असक्तं ॥ ६ ॥ न रुष्टं न तुष्टं न इष्टं अनिष्ट । न ज्येष्टं फनिष्ट  
न मिष्टं अमिष्ट । न अत्र न पिष्टं न तुल्यं न गृष्ट । नमस्ते ३ अष्टं  
॥ ७ ॥ न वक्त्रं न ब्राह्मणं न कर्णं न अक्षं । न हस्तं न पादं न शीसं  
अलक्षं । कथं मृदरं मृदरं नापयेय । नमस्ते ३ अशेषं ॥ ८ ॥

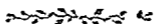
इति सिद्धाष्टकम्.



## २९ अथ शांतिनाथाष्टकम् ( सायंकालका ).

नाना विचित्रं बहु दुःखं राशी, नाना प्रारभमोहान् फाशी, पा-  
पानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शांतिनाथ ॥१॥ संसार-  
मये मिथ्यात्वं चिन्ता, मिथ्यात्वं मये क्रमाणि वधं, ते वधं छेदन्ति  
देवाग्निदेवः ॥१॥ इह ॥ २ ॥ कामस्य क्रौर्यं मायाति लोभं । चतुर्भूपायां इह  
जीववधं ॥ ते वधं छेदं ॥ इह ॥ ३ ॥ जातस्य मरणं ध्रुवतस्य  
वचनं ॥ बहुतीजीयं बहु जन्मं दुःखं ॥ ते ॥ इह ॥ ४ ॥ चारि-  
त्रं हीनो नरजन्म वधो । सम्यक्त्वं रक्त्वं प्रतिपालयन्ति । ते जीव सि-  
द्धन्ति देवाग्निदेवं ॥ इह ॥ ५ ॥ मृदु वाक्यहीनो कठिनस्य चित्तो ।  
परजीयं निर्दा मनसाच वधं ॥ ते ॥ इह ॥ ६ ॥ परद्रव्यचोरी पर-  
दारसेवा ॥ हिंसाधिकारी अनुवृत्ति वधं ॥ ते ॥ इह ॥ ७ ॥ पु-  
त्राणि मित्राणि कलत्रं वधु ॥ बहु वधं मध्ये इह जीव वधं ॥ ते ॥ इह ॥ ८ ॥

इति शांतिनाथाष्टकम्.



## ३० अथ ऋषभदेवनो छन्द. ( सायंकालका )

परम अलक्षहि त्रिजग चक्षुहि । सद्य मुपस्रहि अक्षवते । प्रभु  
 अवियोगी आदि वियोगी ॥ स्वयमुपयोगी सद्य कृते ॥ ऋषभ निर-  
 जन सब दुख भंजन ॥ हे मनरंजन सुप्रचित्ते ॥ जय जय हो अम-  
 राधिप वदन कर्म निरुदन नाभि सुते ॥ १ ॥ मरुदेवी नदन अनिद-  
 हिकदेनि । है ढिग चद्रहि मद्र दुते । तन कनकाचल चंपकली कल  
 दीप सिखा दल स्मच्छ वते । निरखत हर्ष प्रकृष्य ववै । दुर जात  
 वितरु तमारु वते ॥ जय० ॥ २ ॥ पद अरविदहि वृद वनदित वं-  
 दत वृद सुगद निते । जुत सुभ लउन वञ्जित दछन स्वच्छ प्रतच्छ  
 स्वच्छद चिते । लहि अपवर्गहि दीर्घ सुख न लहे समवर्ग हि स्वर्ग-  
 पते ॥ जय० ॥ ३ ॥ दरसण केवल केवल ग्याननि केवल राग  
 विराग विरोधरते, अतिशय लायक व्यक्त साहायक । मुक्ति प्रदाय-  
 क मुक्ति पते । भव भ्रम जाल कराल दलिततकाल मृणाल दताल  
 वते ॥ जय० ॥ ४ ॥ निरजर कोट पलोटत पाप । निरतर औट  
 अखुट वते । सिरतिय छत्र त्रिचित्र रहै । अकरत्त पवित्र नक्षत्र पते ।  
 इम महिमा रूप अनूपसू । प्रतिहारज जयो जिनराज जुते ॥ जय० ॥  
 ॥५ ॥ सब जगजीवन जीवन मूर । श्रवो धर्म जीवन दांबुवते । यह  
 भवसागर नागर ते गहि । सारद नावमु पारहुते । तुम सिधे रूपक-  
 पाल अनूप । शरणागत सिद्ध सरूप कृते ॥ जय० ॥ ६ ॥ प्रभु गु-  
 ण सागर पारनवारिति, रभुज धारन पारगते । तिम पदहीन अप-  
 ग निरत्र, चढै गिरि अग उतगनते । इमहिजहो बुद्धिहीन अधीन ।  
 यष्टमत कीन क्षमा कुरुते ॥ जय० ॥ ७ ॥

इति ऋषभदेव छन्द.



३१ अथ पार्श्वनाथ स्तुती-( सायंकालका )

सकल सार सुरतरु जग जाण । जस जस वास जगत परमाण ।  
 सकल देव सिर मुकुट सुगंग । नमो नमो जिनपति मनरग ॥ १ ॥  
 जे जन मनरग अकल अभग । तेज तुरग नीलग । सब सोभासग ।  
 दग्ध अनंग शीश भुजग चतुरग ॥ २ ॥ बहु पुण्य प्रसग, नित उ-  
 छरग नव नव रग मर्दग । कीरत जलगग देश दुरग सुरनर सग  
 सारग ॥ ३ ॥ सारगा चक्र । परम पवित्र रुचिर चरित्र जीवित्र, जे  
 जोन मत्र पकज पत्र निर्मल नेत्र सावित्र ॥४॥ जगजीवन मत्र द्वासत  
 सत्र । मंत्रामत्र महा मत्र, विसवत्रेवेत्र चामर उत्र सीस धरित्र पवित्रं  
 ॥ ५ ॥ पावित्राधरणं मुकुटा वरण त्रिभुवन शरण आचरण, सुर चरि-  
 घतचरण दारिद्र हरणं सित्र सुख करण मात्ररण ॥ ६ ॥ गो अमृत  
 करणजनमनमरण ॥ भवजल तरण उद्धरण, भव सपत करण अग सहरणं  
 वरणा वरण आदरणं ७ ॥ आदरणा पाल, शक्रजमाल नित भूपाल  
 उजियाल, अष्टम शशि भाल, देव दयाल, चेतनचाल सुखमाल ॥८॥  
 त्रिभुवन रखवाल, काल दुकाल, महाविफ्राल भयटाल, सणगार  
 रसाल मय कमाल, रति विशाल भूपाल ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सकलरूप  
 उदार सार । सपत सुखदायक । रोग सोग सताप पाप । दुख दुर  
 निवारक ॥ १० ॥ चिहु दिश आण अखड । तेज जिम तपै दिण दै,  
 नमै अपछरा कोऊ, देवसजन मै नरिंटे ॥ ११ ॥ तेविसमो जिणवर  
 भलो, अधिक अधिक मगल निलो । मुनि मेघराज इम वीनवै सवण्यो  
 तवन त्रिभुवन तिलो ॥ १२ ॥ छ ॥

इति पार्श्वनाथ स्तुती.



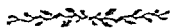
## श्री पार्श्वनाथ स्वामिनो छंद (तोटक वृत्तम्-प्रातःकाल)

जय जय जग नायक पार्श्वजिनं। प्रणताऽखिल मानव देवगण ॥  
 जिन शासननायक स्वामि जयो । तुम दरशन देख आनद भयो  
 ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलांबर भानु निर्भं । नवहस्त शरीर हरित प्रतिभ ॥  
 धरणेंद्र सुसेवित पाद युग । भर भासुर काति सदा सुभग ॥ २ ॥  
 निजरूपविनिर्जित रभपति । वदनो घृति शारद शोभतति । नयना  
 चुज दीप्त विशालतरा । तिल कुसुम सन्निभ नासा प्रलरा ॥ ३ ॥  
 रसनामृत कंद समान सदा । दशनावलि अनार कुली सुखदा ।  
 अधगरुण चिद्रुप रगघन । जय पुरुषादाणी पार्श्वजिन ॥ ४ ॥ अति  
 चारु मुकुट मस्तक दीपे । काने कुंडल रवि शशि जीपे ॥ तुज महिमा  
 महिमडल गाजे । नित पच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर  
 विद्याधर आवे । नरनारी तोरा गुण गावे ॥ तुजने सेवे चौसठ  
 इद्र सदा । तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने भाव  
 घणे । नव निधि थाय घर तेह तणे ॥ अडवडिआ तूं आधार कसो।  
 समरथ साहिब में आज लहो ॥ ७ ॥ दुखियाने सुखदायक तू दाखे।  
 अशरणने शरणे तू राखे ॥ तुज नामे सकट विकट टले । विछडिया  
 बहाला आवि मिले ॥ ८ ॥ नट विट लंपट दूरे नासे । तुज नामे  
 चोर चुगल त्रासे ॥ रण राउल जय तुज नाम थकी । सघले आ-  
 गल तुज सेव थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा । फरी  
 केसरी टावानल विहगा ॥ वय ग्रंथन भय सघला जावे । जे एकपने  
 तुजने व्यावे ॥ १० ॥ भुत भेत पिशाच उली न शके । जगदीम  
 तवाभिध जाप थके ॥ मोटा जोटिंग रहे दूरे । दैत्यादिकना तू मर  
 चरे ॥ ११ ॥ डाकिणि शाकिनी भय हटकी । भगवत थाय तुज  
 भजन थकी ॥ कपटी तुज नाम लिया कपे । दुर्जन मुखयी जीनी  
 जवे ॥ १२ ॥ मानी मठगाला मुठ मोठे । ते पण आगळयी कर-

जोडे ॥ दुर्मुख दुष्टादिक तूहि दमे । तुज नामे मोटापलेउ नमे ॥१३॥  
 तुज नामे माने नृप सवला । तुज जश उज्वल जिम चद्र कला ॥  
 तुज नामे पामे ऋद्धि घणी । जयजय जगदिश्वर त्रिजगधणी ॥१४॥  
 चिंतामणि काम सवी पामे । हयगय रथ पायक तुज नामे ॥ जनपद  
 ठकुराई तू आपे दुर्जन जननो दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तू  
 धनवत करे । तू तूठो कोठार भडार भरे ॥ घर पुत्र कलय परिवार  
 घणो । ते सहु मढिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणिक मोती  
 रत्न जड्यां । सोवन भूषण बहु सुघड घड्या ॥ बली पहेरण नन-  
 रग वेप घणां । तुम नामे नवि रहे काई भणा ॥ १७ ॥ वैरीवि-  
 रूओ नवि ताकि शके । बलि चोर चुगल मनथी चमके ॥ डल  
 छिद्र कदा केहनो न लगे । जिनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥ १८ ॥  
 ठग ठाकुर सवि थर हर कपे । पाखडी पणको नवि फरके ॥ छुटा-  
 दिक सह नासी जाये । मारग तुज जपता जय थाये ॥ १९ ॥  
 जड मुख जे मति हीन बली । अज्ञान तिमीर तस जाय टली । तुज  
 समरणथी डाह्या थाए । पडितपद पामी पूजाए ॥ २० ॥ खंस खासी  
 खयन पीडा नासे । दुर्बल मुख दीनपणूं त्रासै ॥ गड गुंजड बुष्ट  
 जिंके सवला ॥ तुज जापे रोग सभे सवला ॥ २१ ॥ गहिला गुगा  
 बहिराय जिंके । तुज ध्याने गत दुःख थायतिके ॥ तनु काति कला  
 सुविशेष बधे । तुज समरणशू नवनिधि सवे ॥ २२ ॥ करि क्लेशगी  
 अहिरण उधसया । जल जलण जलोदर अष्ट भया ॥ रागण पमुहा  
 सवि जाय टली । तुज नामे पामे रगरली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्ह श्री  
 पार्श्व नमो । नमिउण जपता दुष्ट दमो । चिंतामणि मत्र जिंके ध्याये ।  
 तिणधर दोलत दिन दिन थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धे जे आराधे ।  
 तस जस कीर्ती जगमा चाये ॥ बली कामित काम सवे साधे । समि-  
 ढिन चिंतामणि तुज लाये ॥ २५ ॥ मद्र मच्छर मनथी दूर तजे ।

भगवतं भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर कमला कल्लोल करे । वलि  
 रोज्यरमणि बहु लीलवरे ॥ २६ ॥ भयवारक तारक तू त्राता ।  
 संजनजनगति मुक्तिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तू स्वामी । शिव-  
 दायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तू मेरो । नि  
 शिवासर नाम जपूं तेरो ॥ सेवक शूं परम कृपा कीज्यो । बालेशर  
 वलित फल दीज्यो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा तूं जयकारी । वृज  
 मूर्ति अति मोहन कारी । मुगत मेहेल मांही तूंही विराजे । त्रिभुवन  
 ठकुराइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जिनवर गायो । वामा  
 सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि शशि मुनि सवच्छर रगे । जयदेव  
 सुरीमां सुख सगे ॥ ३० ॥ जय पुरुपादाणी पार्श्व प्रभो । सकलार्थ  
 समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्ष रुचि विजयाय मुदा । तप रुचि  
 रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति छन्द. ॥



३३ अथ श्री पार्श्वनाथ स्वामिनो छन्द (प्रातःकालका).

आपण घर वेठा लील करो । निज पुत्र कलत्र शु प्रेम धरो ।  
 चम देश देशातर काई दोडो ॥ नित्य पास जपो जिनश्री हडो  
 ॥ १ ॥ मनवलित सधला काज सरे । शिर उपर छत्र चामर धरे । क-  
 लमल आगल चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत भेत पिशाच व-  
 ली । सायणि ने डायणि जाय टली । छल छिद्र न कोई लागे जोडो  
 ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकान्तर ताव सियो टाह । औपध विण जाय क्षण-  
 माह । नवि दु.खे मायुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कठमाल गड  
 गुवड सधला, तस उदर रोग टले सधला । पीडा न करे फुन गल  
 फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तीर्थकर पास पह । एम जाणे सधलो

जगत सहू । तत्क्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वा-  
णारशिपुरी नगरी । तिहा उदयो जिनवर उदय करी । समय सुंदर  
कहे कर जोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



३४ अथ शांतिनाथ स्वामिनो छन्द (प्रातःकालका)

शारद माय नमू शिरनामी । हू गुण गाउ त्रिभुवनके स्वामी ।  
शाति शाति जपे सब कोई । ते घर शाति सदा सुख होइ ॥ १ ॥  
शांति जपी नें कीजे कामा, सोहि काम होवे अभिरामा । शाति जपी  
परदेश सिधावे । ते कुशले कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ यकी  
प्रभु मारि निवारी । शातिज नाम दियो हितकारी । जे नर शाति  
तणा गुण गावे । ऋद्धि अर्चिती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकू प्रभु  
शांति सहाई । ते नरकुं क्या आरति भाई । जे कछु बछे सोहि पुरे ।  
दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरजन ज्योत प्रकाशी ।  
घट घटके अतर प्रभु वासी । स्वामी स्वरूप कछु नवि जावे । क-  
हेता गुन मन अचरीज थावे ॥ ५ ॥ डार दिये सबही हथियारा ।  
जीत्या मोह तणा दल सारा । नारी तजि शिवशू रग राच्यो । राज  
तजीयो पण साहिव साचो ॥ ६ ॥ महा बलवत कही जे देना ।  
कुजर कुयुन एक हणेवा । ऋद्धि सगही प्रभु पास लहीजे । भीक्षा  
आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजकरू सम भायक । पण से-  
वकहीरू सुरदायक । तजि परिग्रह हुवा जगनायक । नाम अतिथि  
सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे । नाम देव  
अरिहन्त भणी जे सकल जीव हितवन्त कहीजे । सेवक जाणी म-  
हापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गभीरा । दूषण एक न माहे

शरीरा । मेरु अचल जिम अतरजामी । पण न रहे प्रभु एरुण ठामी  
 ॥ १० ॥ ठोरु कहे जिनजी सत्र देखे । पण सुपने प्रभु कवहु न  
 देखे । गीस जिना बादीय परीणा । सेना जीती तूं जगदीशा ॥११॥  
 मान जिना जग आण मनाइ । माया जिना शिव शूं लय लाइ । लोभ  
 जिना गुग राजि ग्रीजे । भिक्षु भावे त्रियजे सेविजे ॥ १२ ॥ नि-  
 र्ग्रथपणे शिरउत्र वरावे । नाम यती पण चामर दुठावे । अभयदान  
 दाता सुख कारण । आगल चक्रु चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जि-  
 नराज दयाल भगीजे । कर्म सर्वको मूल खणीजे । चउविह सय  
 तीरथ थापे । लब्धी घगी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भग-  
 वंत कहावे । नाहि किसीकू शीस नमावें । अकचन को विरुद् धरावे ।  
 पण सोवन पद पकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नही पण सेवक तारे ।  
 द्वेष नही निशुणा सगवारे तजि आरभ निज आतम व्यावे । शिव  
 रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिए । तेरा  
 गुणको पार न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहेव मेरा । हुं मन मोहन  
 सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूरे त्रिलोक तणो प्रतिपाल । हूरे अनाथ ने  
 तूरे दयाल । तू शरणागत राखन धीरा ॥ तूं प्रभु तारक छे वड वीरा  
 ॥ १८ ॥ तूहि समो वड भागज पायो । तो मेरो काज अडयोरे स-  
 वायो करजोडि प्रभु विनवूं तुमशूं । करो कृपा जिनवरजी अमशू  
 ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय नित्रारो । भव सागरथी पार उत्तारो ।  
 श्री हत्थिणापुर मडण सोहै । या श्री शाति सदा मन मोहै ॥ २० ॥  
 पद्मसागर गुरुराय पसाया । श्री गुण सागर कहे मन भाया । जे  
 नरनारि एरु चित गावे । ते मनवाडित निश्चे पावे ॥ २१ ॥

इति शांतिनाथ छन्द.



३५ अथ गौतम स्वामिनो छन्द. (प्रातःकालका)

गीर जिणेशर केरो शिष्य । गौतम नाम जपो निरादिश । जो  
 कीजे गौतमनू ध्यान । तो घर धिलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम  
 नामे गिरिवर चढे । मनवञ्जित हियेढे सपजै । गौतम नामे नावे  
 रोग । गौतम नामे सर्व सभोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरुआ वकडा ।  
 तस नामे नावे डुकडा । भूत भेत न विभंढे प्राण । ते गौतमना करुं  
 वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय । गौतम नामे वाचे आय ।  
 गौतम जिन शासन शणगार । गौतम नामे जय जयकार ॥४॥ शाली  
 ढाल सुरहा घृत गोल । मनवञ्जित कापडे तबोल । घर सुघरणी  
 निर्मल चित्त । गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अवि-  
 चल भाण । गौतम नाम जपो जगजाण । मोटा मदिर मेरु समान ।  
 गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयग घोडानी जोड । वारु  
 पहुचे वञ्जित कोड । महियल माने मोटा राय । जो तूठे गौतमना  
 पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक टले । उत्तम नरनी संगत मिले ॥  
 गौतम नामे निर्मल ज्ञान । गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त  
 अवधारो सह । गुरु गौतमना गुण छे बहु । कहे सभय सुदर कर  
 जोड । गौतम तूठा सपति कोड ॥ ९ ॥

इति गौतमनो छन्दः.



३६ अथ चितामणीनो छन्द. (प्रातःकालका)

सुगुरु चिंतामणी देव सदा । मुज सकल मनोरथ मुदा कमला-  
 गर दुर न होय कदा । जपता प्रभु पार्श्वय नाम यदा ॥ १ ॥ जल  
 अनल मतगज भय जावे । अरि चोर निकट पण नहि आवे । सिंहा

सर्प रोग न संतावे । धन्य धन्य प्रभु पार्श्वत्र जिन ध्यावे ॥ २ ॥  
 मण्ड कण्ड मगर जलमांही भयें । उडवानल नीर अथाह गमै । प्रव-  
 हण बैठा नर पार पमै नित्य जे प्रभु पार्श्व जिनद नमै ॥ ३ ॥ दिक्-  
 राल दावानल विश्व दहै । दह वस्ती आकाश धन ग्रास ग्रहै । तुम  
 नाम लिया उपजाति लहे । वन नीर सरोवर जेम दहै ॥ ४ ॥ झरतो  
 मदलोल कपोल झरे । भ्रमरा गुजारव भर रोस भरै । करि दुष्ट  
 भयंकर दूर करे । श्री पार्श्वनाथजीके समरे ॥ ५ ॥ छाना छल  
 उिद्र गिनाय छलै । यज्ञ वाश सुजी मनमांहीं जलै । ते पिशुन पडे  
 नित्य पाय तलें । जपतां प्रभु वैरी जाय टलें ॥ ६ ॥ धन देख नि-  
 शाचर बहुत तके । मुज मडिर पैस कदे न सके । अति उठव तास  
 आवास अखे । परमेसर पारस जास पखे ॥ ७ ॥ असराल विदारण  
 हाथ हटे । गजलोल जिहा गज कुंभ घटै । मृगराज गहा भयभीत मिटे ।  
 रसना जगनायक जेह रटे ॥ ८ ॥ फिरतो चिहु फेग फुकार फणी ।  
 धरणींद्र धसै धर रीस घणी भय ग्रास न व्यापै तेह भणी । धरता  
 चित पारसनाथ घणी ॥ ९ ॥ कफ कुष्ठ जलोदर रोग कसै । गड  
 गुण्ड देह अनेक वसै । विन भेषज व्याधि सवे विनसे । वामा सुत  
 पावस जेय वसे ॥ १० ॥ धरणींद्र धराविप सुर ध्यायो । प्रभु  
 पारस पारस कर पायो । छवि रूप अनूपम जग डायो । जननी धन  
 नामा सुत जायो ॥ ११ ॥ करतां जिनजाप सनाप कटै । धन दारिद्र  
 दोहग सोग मिटे हट छोड जिहा रिपु जोर हटे । पद्मावती पारस  
 जहां प्रगटे ॥ १२ ॥ मनाक्षर गाथा गुप्त मढ्यो, चिंतामणि जाणे  
 हाथ चढ्यो बलि मान महात पतेजे बढ्यो, पारस स्तवन मुख जे न  
 पढ्यो ॥ १३ ॥ तीरथ पति पारस नाथ तिलो । भणतां जस वास  
 निवास भलो । मन मंत्र सक्रोमठ होय मिलो । अमची प्रभु पारस  
 ॥ १४ ॥ लूकागळ नायक लाज लीये । हित क्षेम करण

गुरु नाम हिये । दिन दिन गछ नायक सुख दिये । कीरत मभु पा-  
रस नाथ किये ॥ १५ ॥

इति पार्श्वनाथ छन्द.



### ३७ अथ शांतिनाथ प्रभूनो छन्द ( प्रात कालका )

शांतिनाथ जीरो कीजे जाप । कोड भयाना काटे पाप ॥ सत-  
जीनेसर मोटा देव । सुरनर सारे ज्यारी सेव ॥ १ ॥ दुख दालिद्र  
जावे दूर । सुख सपति पाये भरपूर । ठगपासीधर जावे भाग । बलती  
होवे शीतल आग ॥ २ ॥ राज लोकमे महिमा घणी । संत जीने-  
सर माये धणी । जो ध्यावें प्रभुजीनो यान । राजा देवे इधको मान  
॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पीडा टल जाय । दुष्मन दोषी लागे पाय ।  
सगळो भागो मनको भ्रम । राखो समकित काटो क्रम ॥ ४ ॥ सुनो  
प्रभुजी म्हारी अरदाश । हूं सेवक तुमपूरो आश । मारा मनराचित्या  
कारज करो । चिंता आराति विघन हरो ॥ ५ ॥ भेटो प्रभुजी आल  
जजाल । प्रभुजी गुजने नयन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम ।  
प्रभुजि सुधारो मारो कांम ॥ ६ ॥ जे नर नित प्रभुने रटे । मोत्या  
बंधन फुला कटे । चोवां लायण दोनू झड जाय । विना ओषध कट  
जावे छाय ॥ ७ ॥ प्रभु नामथी आख्या निर्मल थाय । घुंद पडळ  
जाला कट जाय । कवळ्यो पील्यो झर झर पडे । शांत जिनेसर साता  
करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग । सेण मित्रनो मिळे सजोग ।  
इसडो देष न दिसे ओर । नहि चाले दुस्मणको जोर ॥ ९ ॥ लूटे  
रास वजावे नास । दुर्जन मिट होवे निज दास । शांति प्रभुनी महिमा  
घणी । कृपा करो त्रिभुवनका धणी ॥ १० ॥ अरज करूछू जोटी



हाथ । तूम छानी नहि दूजी वात । देख रया छो पोते आप । प्रभुजी  
 काटो मारा पाप ॥ ११ ॥ मारा मनका चिंत्या कीजे काज । राखो  
 प्रभुजी मारी लाज । थां समान नहि जगमे कोय । था समन्या नुख  
 संपत होय ॥ १२ ॥ तुम आगे नहि चाळे मृगीरो जोर ॥ तात्र तेजरो  
 नाखो तोड । तुम मरी मिटावो कर देवो संत । तुम गुगरो नहि आवे  
 अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे जोगि जती । तुमने समरे साधु सती  
 सकट काटो राखो मान । अत्रिचल पदरी आपो ठांग ॥ १४ ॥ संमत  
 अठरावे चौगनने जाण । देश मालयो इयको वखाण । गाम रेजाव  
 धैत्र मास । हू आयो चरणारो दास ॥ १५ ॥ ऋषि रघुनाथजी कीधो  
 छन्द । काटो प्रभुजी करमारा वृद । हूं जोऊछूं आपरि वाट । चिंता  
 मारी सगली काट ॥ १६ ॥

इति शक्तिनाथ छन्द.

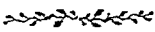
इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ प्रथम खण्डे छन्दाभिव्यं  
 द्वितीय प्रकरणम्.





॥ स्वर्गीय श्रीमत्गच्छाधिपति किर्त्तिमान् पूज्यजी  
 महाराज श्री श्री १००८ श्री श्री रेखराजजी  
 महाराज प्रणीत. ॥

( प्रकरण तीसरा-पद. )



३८ अथ चौथीसी ( राग सायंकालकी-सांमकल्याण )

भवि तुम साज्ञ सवेरे जिनवदो.॥टेरे॥ ऋषभ अजत सभव अभिनदन,  
 म्रमत पदम जिणदो ॥ १ ॥ भवि तुम०  
 श्री मृपारस चंदा प्रभु ध्यावो आणी भाव अमदो ॥ २ ॥ भवि तुम०  
 सुनुय शीतल श्रेयांस वासपुज द्विपत जेम दिणदो ॥ ३ ॥ भवि तुम०  
 विमल अनत घर्मनाथ शाति जिन वरताया आनदो ॥ ४ ॥ भवि तुम०  
 कुयु अरह मछि मुनिमुत्रतजी शिवरमणीना कतो ॥ ५ ॥ भवि तुम०  
 नमि नेम पार्श्व महाप्रीरजी ताच्या जीव अत्ततो ॥ ६ ॥ भवि तुम०  
 रेखराज प्रभु अरज करतहे मेटो भवदुख फदो ॥ ७ ॥ भवि तुम०



## ३९ [ राग सायंकालकी-सांमकल्याण ]

माया मतवाळी निज ज्ञान भुलावेरे ॥ टेर. ॥ माया०

जांके नसामे जगतके प्रांणी, अंधांध होजावेरे. ॥ १ ॥ माया०

मान महागिर चढके उपर, जगतको तुच्छ वतावेरे. ॥ २ ॥ माया०

कर्म चपेट लगे जत्र उनके, तत्र हिरदे शुध आवेरे ॥ ३ ॥ माया०

रेखराज उनके मननांही । सोही धन्य कहावेरे ॥ ४ ॥ माया०

## ४० [ राग सायंकालकी-आसावरी ]

कैसें कर ए बहेरे अज्ञानी ॥ कैसें ॥ टेर ॥

आनन दीन वसे काननमें । कायर भाव रहेरे ॥ अ. ॥ १ ॥

कंचन वसन तजत एक तनकी । प्रान पूंजी निवहेरे ॥ अ. ॥ २ ॥

न धरे रोष पोषका हूको । दोष न फोई कहेरे ॥ अ. ॥ ३ ॥

तृण ग्राहीऊ क्षत्रि न मारे । अहो निस तृणही ग्रहेरे ॥ अ. ॥ ४ ॥

नयनोपम तो लहे जगदीश्वर । चर्मकूं योगी लहेरे ॥ अ. ॥ ५ ॥

कहा अपराध मारीये इनकूं । सो तो प्रथम कहेरे ॥ अ. ॥ ६ ॥

एक स्वाद कै कारण मूरख । देवल एह दहेरे ॥ अ. ॥ ७ ॥

या बध तें लहे परम अधोगत, वेदवचन ए कहेरे ॥ अ. ॥ ८ ॥

शशि सूरज अरु जबलग पृथवी तव लगतांही रहेरे ॥ अ. ॥ ९ ॥

रेखराज भवि हिंसक प्राणी । नरकके दुःख सहेरे ॥ अ. ॥ १० ॥

## ४१ [ राग सायंकालकी-आसावरी ]

पृथवी पति अरज हमारी । सुनहु महर विचारी ॥ पृ. ॥ टेर. ॥

दीनानाथ प्राणेक रक्षक, कहत हैं तुम ससारी ॥

जगत पिता होय प्रान गमावो, या तुम कैसी विचारी ॥ पृ. ॥ १ ॥

विन अपराध, विना भये सनमुख । हतें न प्रतिज्ञा तिहारी ॥  
 कहा अपराध, भागतही मोपर, कैसे करहु सवारी ॥पृ.॥  
 विजया दशमी नाम है याको, मंगल करे नर नारी ॥  
 मेरे प्रानका नास करत हो । या तुम कैसी धारी ॥पृ ॥  
 सीता हरन अपराधतें रावन, हनकें लक विदारी ॥  
 कहा अपराध मारत हो हमकूं । सो कहो दोष निकारी ॥पृ.॥  
 मातही होय प्रानकी हरता । है शाकिन अवतारी ॥  
 सिंघ सबल तज ग्रहत निबल कू । काहेकी शक्ति विचारी ॥पृ.॥  
 मेरे चर्म बाजित्र वजे हे । नृप देव गृह वारी ॥  
 ताही गुनतें राख अब मोकूं । मैं हू सरण तिहारी ॥पृ.॥  
 पुत्री हमारी पयकी दाता, पुत्र भार वहे भारी ॥  
 मति मारहु जगदीस दुहाई । कहत हु एह पुकारी ॥पृ ॥  
 रेखराज साहपुरामे । कहतहै वारवारी ॥  
 ईम निमुणीने त्यागो प्राणी बध । नृप आदि सकल नर नारी ॥८ ॥

४२ ( राग-चलित )

सत गुरु साचे सिपाई, मैं तो ऐसे देखें हो ॥ स. ॥ देग.  
 सवर कवच दह है उनकें । विनय वगत सुखदाई ॥  
 करुणा भाव कीये केसरीया, ध्यान टोपल हकाई ॥ स ॥ १  
 समगस अमल गालवा पीके । दिल हुसीयारी आई ॥  
 क्षमा खड्ग क्रियाकी कटारी । सील सेल सुखदाई ॥ स. ॥ २  
 चाग्नि चक्र अनुप गीगज को, वान विवेक दिखाई ॥  
 संजम शक्ति शक्ति रूप है, मुद्रर मून्य दिखाई ॥ स ॥ ३  
 गाख त्याग गदावर कर्में । त्रिगुप्त त्रिशूल सुदाई ॥  
 गम गोफग, अरु-गुनके गोत्री । देत हे रिपुक उदाई ॥ स ॥ ४ ॥

येसें भये नर गरज न सरें, लख्यो न निज पदनूर ॥  
नैन हृदय खोलीये तो, रेख देख हजर ॥ वंदा ॥ स. ॥ ४ ॥

### ४७ [ राग—मारू ]

जिउं जागो जिउं याग नाथजी जिउ जाणो जिउं थारा हा ॥  
कामी क्रोधी अति अपराधी लोधी अवगुन गारां हा ॥ना.॥१॥  
था विन दूजो दाय न आवे ध्यान सदा उर गारां हा ॥  
रुप मिल है निजताय कृपाकर, निस दिन वाट निहारां हा ॥ना.॥२॥  
ऊठत बेठत जागत मोवत, निमत न ध्यान मिसारा हा,  
एक आस मिसवास नावडा, दूजी दिस न चितारां हा ॥ना.॥३॥  
तन मन प्रान क्रियो निठराप्रल, केवल नाम उचारा हां;  
रखियो लाज सरन आयेकी, खाना जादा तिहारां हां ॥ना.॥४॥  
असरन सरन चरन भव भंजन, गारम्बार संभारां हां;  
जनम जनम आगे अरु अगही, नही कदमा तें न्यारा हां ॥ना.॥५॥  
कोऊ सिर जैपालै कोऊ इन है, येां उरमात्र विचारां हा,  
चारक ब्रह्म विना कुण तारे, नाथही नाथ पुकारा हां ॥ ना. ॥ ६ ॥  
चात्रकज्युं लिवनाथ जपे उर, विरह अगनननें जारां हा;  
सीचत नाम सुधारसतापर, सास उसास उतारा हा ॥ ना. ॥ ७ ॥  
करहो कृपा जान जिन अपनो नखन कीसीके सारां हां;  
दास मान पद पकज सेवे, में लग्या राजके लारां हां ॥ ना. ॥ ८ ॥

### ४८ [ राग—आसारी ]

साधो अपना रूप जब देखा, करता कोन फुनि करनी  
कैसी कोन मागे गोलेखा ॥ सा. ॥ १ ॥

साधु सगति अरु गुरूकी कृपाते, मिट गई कुलकी रेखा ॥  
आनंदघन प्रभु परचो पायो, उतर गयो दिल भेषा ॥ सा. ॥ २ ॥

### ४९ [ राग—आमावरी ]

ओधु राम राम जग गावे, विरला अलख लम्बावे ॥ ओ. ॥ टेर ॥  
मतवाला तो मतमें माता, मठ वाला मठ राता,  
जटा जटाधर पटा पटाधर, उता छतापर ताता ॥ ओ. ॥ १ ॥  
आगम पठि आगमपर याके, माया धारी जके,  
दुनीया दार दुनीसे लागे, दासा सब आमाके ॥ ओ. ॥ २ ॥  
बहिरातम मृदा जग जेता, मायाके फंद रेता,  
घट भीतर परमातम भावे, दुर्लभ प्राणी तेता ॥ ओ. ॥ ३ ॥  
खग पद गगन मीन पद जलमे, जो ग्वोजे सो वोग,  
चित परज ग्वोजे सो चिन्हें, रमता आनद भौरा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

### ५० ( राग—आसावरी )

आसा ओरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे ॥ टेर ॥  
भटके द्वार द्वार लोरुनके, कूरर आसा वारी ॥  
आतम अनुभव रसके रसिया, उतरे क्यु न खुमारी ॥ आ. ॥ १ ॥  
आसा दासीके जाये, ते जन जगके दासा ॥  
आसा दासी करे जे नायक, लायक अनुभो पीयासा ॥ आ. ॥ २ ॥  
मनसा प्याला भेम मसाला, ब्रह्म अगनि परजाली ॥  
तन भाटी उटाय पीये, रस जागे अनुभोलाली ॥ आ. ॥ ३ ॥  
आगम पियाला पिवे मतवाला, चीन्ही अ यातम वासा ॥  
आनदघन चेतन न्हे, खेले देखे लोरु तमासा ॥ आ. ॥ ४ ॥

## ५१ ( राग-आसावरी )

ओधूं नाम हमारा राखे, सोही परम रस चाखे ॥ ओ. ॥ टेर ॥

नही हम पुरखा, नही हम नारी, वरण न भांत हमारी ॥

जाति न भाति मसाटक नाही, नही हलका नही भारी ॥ ओ. ॥१॥

नही हम ताते नही हम सीरे, नही दीरघ नही छोट ॥

नही हम भगनी नही हम भाई, नही हम बाप ने धोटा ॥ ओ. ॥२॥

नही हम मनसा नही हम सग्रा, नही हम तरनकी वरणी ॥

नही हम भेख भेष धर नाही, नही हम करता करणी ॥ ओ. ॥३॥

नही हम दरसन नही हम परसन, रसन गर ऋद्ध नाही ॥

आनदवन चेतनमय मूर्ति, सेरक जन बलि जाई ॥ ओ. ॥४॥

## ५२ ( राग-आभावरी )

ओधू क्या मांगू गुनहीना, वे गुन गमन प्रमीना ॥

गाय न जानूं वजाय न जानू, न जानू मुग्देवा ॥

रीज न जानु रीझाय न जानू, ना जानू पद सेवा ॥ ओ. ॥ १ ॥

ब्रेड न जानू किताय न जानू, जानु न लक्षण उदा ॥

हरत वाड विवाद न जानू, न जानू कवि फदा ॥ ओ. ॥ २ ॥

गाप न जानू जयाव न जानू, न जानू कवि वाता ॥

गाय न जानू भक्ति न जानूं, जानूं न सीरा ताता ॥ ओ. ॥ ३ ॥

गान न जानू विज्ञान न जानूं, न जानू भज नामा ॥

आनदवन प्रभुके घर द्वारे, गटन करू गुण धामा ॥ ओ. ॥ ४ ॥

५३ ( राग-आसावरी )

अब हम अमर भये न मरेगे या कारन मिथ्यात दीयो तज ब्यू  
 कर देह धरेगे ॥अ॥ १ ॥  
 मन्यो अनत वार कालतें प्राणी सोहम काल हरेगे ॥अ॥ २ ॥  
 देह विनासी हू अविनासी अपनी गति पकरेगे ॥अ॥ ३ ॥  
 नासी जासी हमथिर वासी चोपे हे न्हे निखरेगे ॥अ॥ ४ ॥  
 मन्यो अनत वार विनासी विन समजो अब सुख दुख विसरेगे ॥अ॥ ५ ॥  
 आनंदप्रन निपट निकट अक्षर दे नही समरे सो मरेगे ॥अ॥ ६ ॥



५४ [ राग-नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ]

नाथ तेरी माया जाल विछाया जामे सब जग फिरत बुलाया ॥टेरा॥  
 कर निवास नव मास गर्भमें फिर भूतलमें आया ॥  
 खानपान विषया रस भोगन मात पिता सिखलाया ॥ नाथ. ॥१॥  
 घरमें सुंदर नारि मनोहर देख देख ललचाया ॥  
 सुन सुन पीठी जाते मृतनकी मोह पाशमें फसाया ॥ नाथ. ॥२॥  
 गृह काजनमें निसदिन फिरते सवही जनम पिताया ॥  
 आगा प्रपल भई मन भीतर निर्बळ हो गइ काया ॥ नाथ. ॥३॥  
 पाप पुण्य सचय कर पुन पुन स्वर्ग नरक भटकाया ॥  
 ब्रह्मानंद कृपा विन तुमरी मुक्ति न हो जग राया ॥ नाथ. ॥४॥





## ५५ ( राग—पूर्ववत् )

अये प्रभु सुनिये अरज अब म्हारी में तो आया हूं सरण तुमारी ॥ टेरी ॥  
 बाला पण सब खेल गमायो तरुण कियो बस नारी ॥  
 गृह कुटुंबके पोषण कारण पर घर होयो भिखारी ॥ अये ॥ १ ॥  
 में जानत ये बांधव मेरे स्वारथजी सब यारी ॥  
 धनसे हीन भयो में जयही सबको लाग्यो खारी ॥ अये ॥ २ ॥  
 आयाथा जिस काम करणको उसकी याद विसारी ॥  
 ओरही माया जालमें फस्या निकलनकी नहीं वारी ॥ अये ॥ ३ ॥  
 भवसागरमें डूबत हूं अब लिजिये बेगडवारी ॥  
 ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु तुम बिनको हितकारी ॥ अये ॥ ४ ॥

## ५६ ( राग—पूर्ववत् )

नाथ तेरे चरणनकी में दासी मेरी काटो जन्मकेरी फांसी ॥ टेरे ॥  
 ना जाऊ मयुरा गोकूल न जाऊ ना जाऊं में कासी ॥  
 मोहे भरोसो एक तुमारो दीन बंधु अविनाशी ॥ नाथ ॥ १ ॥  
 कोई बरत कोई नेम करत है कोई रहे बनवासी ॥  
 मे चरणनको ध्यान लगावूं संजसे होय उदासी ॥ नाथ ॥ २ ॥  
 नहि पिद्या बल रूप न मेरे नहि सचय मन राशी ॥  
 शरणांगत मोहे जान दया निग्री गखीये चरणन पासी ॥ नाथ ॥ ३ ॥  
 नहि मे राज पाट कटु मांसु नहि नुग्व भोग विलासी ॥  
 ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी केवल उग्य पियासी ॥ नाथ ॥ ४ ॥

५७ ( राग—वनजारा )

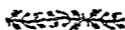
जगदीश जगतपति प्यारा कर भय दुख नाश हमारा ॥ टेर. ॥  
 तुम सब जीवनके स्वामी घट घटके अतरयामीजी ॥  
 नहि जान लोऊ गँवारा ॥ जग. ॥ १ ॥  
 भूली जल अवर भारी सब रचना विश्व कर्मारीजी ॥  
 अचरज यह खेल पसारा ॥ जग. ॥ २ ॥  
 ईन्द्रादिक मुनि देवा नित करत तुमारी सेवाजी ॥  
 सका तुम पालनहारा ॥ जग. ॥ ३ ॥  
 करुणानिधि दीन दयाला शरणागत जन प्रतिपालाजी ॥  
 ब्रह्मानन्द है दास तुमारा ॥ जग. ॥ ४ ॥

५८ ( राग—वनजारा )

जगदीसमें शरण तुमारी प्रभु मुनिये विनति हमारी ॥ टेर. ॥  
 यह पाच विषयकी धारा सब बया जात ससाराजी ॥  
 करुणाकर पार उत्तारी ॥ जग. ॥ १ ॥  
 पंठी जिम जाल अधीना तिम जिव कर्म वस कीनाजी ॥  
 मोहे लिजिये वेग उवारी ॥ जग. ॥ २ ॥  
 तन धन सुत बाधव नारी सब झूठ जगतकी यारीजी ॥  
 तुमविन नहि को हितकारी ॥ जग. ॥ ३ ॥  
 यह प्रल कर्मकी माया जामे जीव फिरे भरमायाजी ॥  
 ब्रह्मानन्द करो प्रभु न्यारी ॥ जग. ॥ ४ ॥

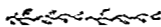
## ५९ ( राग—वनजारा )

सुन सत्य वचन नर मेरा मिटे जनम मरण दुख तेरा ॥ टेर. ॥  
 कर परमेश्वरसे प्रीति नहि हेतनकी परतीतीजी ॥  
 पल छिनमें कूंच होय डेरा ॥ सुन. ॥ १ ॥  
 मनसे तज विषय विकारा करले सत संगत विचाराजी ॥  
 विन ज्ञान मिटे न अघेरा ॥ सुन. ॥ २ ॥  
 नित बैठ एकांत सदनमें धर ध्यान ईश्वरका मनमेजी ॥  
 मत दूर जानहे नैरा ॥ सुन. ॥ ३ ॥  
 सब जग मिथ्या कर जानो ब्रह्मानन्द स्वरूप पहचानोजी ॥  
 छुटे लख चौरासी फेरा ॥ सुन. ॥ ४ ॥



## ६० ( राग—वनजारा )

सुननाथ अरज अब मेरी में शरण पडा प्रभु तेरीजी ॥ टेर. ॥  
 तुम मानुष तन मांहे दीना नहि भजन तुमारो कीनाजी ॥  
 विषयोंने लई मति घेरी ॥ सुन. ॥ १ ॥  
 सुत दारादिक परिवारा सब स्वारथका संसाराजी ॥  
 जिन हेत पापकीये डेरी ॥ सुन. ॥ २ ॥  
 मायामे जीव भुलाना नहि रूप तुमारो जानाजी ॥  
 पडा जन्म मरणकी फेरी ॥ सुन. ॥ ३ ॥  
 भवसागर नीर अपारा कर कृपा करो प्रभु पाराजी ॥  
 ब्रह्मानन्द करो नहि देरी ॥ सुन. ॥ ४ ॥



६१ [ राग—गजल ताल दादरा ]

विना प्रभुके भजन मुफ्त जनम गमाया, दुनीयाकी मौजमें फिर सदाही  
भुलाया ॥ टेर. ॥

यइवारवार देह मनुजका न मिलेगा, डालासैंटूटागुलनगुलस्तामेखिलेगा ॥

दिन च्यार पाचके लिये क्या ढंढग जमाया ॥ विना प्रभुके० ॥१॥

जिनकोतु मानताहैं मेरे पियारें, वोओडकर तुझे जगलमे घरको सिधारे।  
परलोकमे न तेरे कोइ होत सहाया ॥ विना प्रभुके० ॥ २॥

मोहकीमदिराको पीकेमरण भूलया, चूसचूस विपया रसकु फिरत फूलया ।  
जवतक नचूहे को वीळीनें सुखमें ऊठाया ॥ विना प्रभुके० ॥३॥

कहता हे ब्रह्मानद ब्रह्मानद लीजीये, सदा प्रभुको भजन दिल  
ओर जानसैं कीजीये० करनेसैं फिर जिसके कोई लौटके न आया  
॥ विना प्रभुके० ॥ ४ ॥

६२ ( राग—गजल ताल दादरा )

अये दीन बधु आज मेरी अरज सुन जरी, दया निधान जान आंन  
शरणमेपडी ॥ टेर ॥

काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरें, तेरे विना दयाल कौन पालना करें ॥  
बढे हैं जोरदार हार खाय में डरी, अये दीन बंधु० ॥ १ ॥

अज्ञानका पढदा मेरे दिलसे उठाईये, विपयोके जालसे प्रभु मृजको वचाईये  
भवमिधुको तिरासोई जिस्पें दया करी ॥ अये दीन बधु० ॥ २ ॥

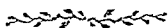
जन्म मरणाका रोग मेरा नास कीजीये, चरण कमलकी भक्ति जान दास  
दीजीये, मिटेगेंदुर बसवीअवी ॥

गुणहीन जानकर मुझे दिखसे न टारीये, जनम जन्मका दास जानकर  
सभारीये ॥

ब्रह्मानंद तेरे नामकी में टेक गन धरी अये दीन बधु० ॥ ३ ॥

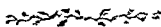
## ६३ [ राग—गजल ताल दादरा ]

मान मान मान कक्षा मानते मेरा, जान जान जानरूप जानले तेरा।।टेरा  
जाने विना स्वरूपके मिते न गम कवी, कहता हे शास्त्र बारवार वात यह  
सगी, हुंसीधार हो निहार बार डारमे मेरा । मान मान० ॥ १ ॥  
जाता हे देखनेसे जिसे काशी दुवारला, मुकामहै वदनमें तेरे उसहियारका।।  
लेकिन विना विचारके किसीने नही हेरा मान मान० ॥ २ ॥  
जो नैनकाभी नैन वैनका भी वैन है जिसके विना शरीरमें न पलक चैनहै।।  
पिठामले ब खूरसो स्वरूप हे तेरा मान मान० ॥ ३ ॥  
कहताहे ब्रह्मानन्द ब्रह्मानन्द तु सही, वात यह पुरांग वेद ग्रंथमें कही।।  
विचार देख मिते जन्म मरणका फेरा मानमान० ॥ ४ ॥



## ६४ [ राग—गजल ताल दादरा ]

जाग जागजागयोह नीदले जरा। भाग भाग भाग भोग जालसे परा।।टेरा।।  
विषयोंके जालमें फसा छुटे नही कपी, जनम जनममें विषयसंग होत हेसगी  
विना वैरागके न थवस्तिधु कोन तिरा जाग जाग० ॥ १ ॥  
वर्ष गया मास गया दिन गई बढी। दुनियाके कार बारमें खबर नही पडी।।  
नजदीक काल आ गया मनमे नहि डरा ॥ जाग जाग० ॥ २ ॥  
सगतसे देहके स्वरूपको विसारीया। जगतको सत्यमानके मन्को पसारिया  
दिन रात करे सोच रागद्वेषसे भरा ॥ जाग जाग० ॥ ३ ॥  
अपने स्वरूपको विचार देखले सही। ईश्वरहे तेरे पास वो तुझसे जुदा नही।।  
ब्रह्मानन्द येहि सुनले वचन खरा ॥ जाग जाग० ॥ ४ ॥



## ६५ [ राग—गजल ताल दादरा ]

गाफिल तूं जाग देख क्या तेरा स्वरूप हैं । किस चासतें पडा जन्म  
मरण के रूप है ॥ टेर ॥

यह देह गेह नाशवान है नही तेरा, वृथाभिमान जालमें फिरे कहा घेरा ॥

तू तो विनाशसे परे सदा अनूप है ॥ गा. ॥ १ ॥

भेट दृष्टिकीन जवी दीन हो गया, स्वभाव अपनेसे आप हीन हो गया ॥

विचार देख एक तूं भूपनका भूप है ॥ गा. ॥ २ ॥

तेरे प्रकाशसे शरीर चित्त चेतता, तू देह तीन दृश्यकू सदा हे देखता ॥

द्रष्टा नहि होता है कवी दृश्य रूप है ॥ गा. ॥ ३ ॥

कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाईये, इस बातको विचार सदा दिलमे लाईये ॥

तू देख जुदा करके जैसा छाय धूप है ॥ गा. ॥ ४ ॥

## ६६ [ राग—गजल ताल दादरा ]

अपनेको आप भूलके हैरान हो गया, मायाके जालमे फसा विरान  
हो गया ॥ टेर ॥

जड देहको अपना स्वरूप मान मन लिया, दिन रात खानपान

कामकाज दिल दिया ॥ पानीमे दूध मिलके एरु जान हो गया ॥ अ. ॥ १ ॥

विषयोंको देख देखके लालचये आ रहा, दीपरुमे ज्यो पतग जायके

समा रहा ॥ विना विचारके सदा नादान हो गया ॥ अप. ॥ २ ॥

कर पुण्य पाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे तृष्णाकि डोरसें क्या सदा

जनम धरे ॥ पीरकरके मोहकि धूरा वेभान हो गया ॥ अप. ॥ ३ ॥

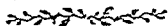
सतसगमे जाकर दिलमें विचारले बदनमे अपने आप रूपको निहार ले ॥

ब्रह्मानंद मिले मोक्ष जयी ज्ञान हो गया ॥ अप. ॥ ४ ॥



## ७१ रागगजल रेखता ॥

करो प्रभुका भजन प्यारे, ऊमर सब बीत जाती है ॥ टेरे ॥  
 पूर्व शुभ कर्म कर जाया, मानुष तन धरणमें पाया ॥  
 फिरें विषयोंमें भरमाया, मौत नही याद आती है ॥ करो. ॥ १ ॥  
 बालापन खेलमें खोया, जोवनमें काम बश होया ॥  
 बूढ़ापें खाटपर लोया । आशा मनको सताती है ॥ करो. ॥ २ ॥  
 कुटुम्ब परिवार सुत दारा, स्वपन सम देख जग सारा ॥  
 माया ने जाल विस्तारा, नहि यह सग जाती है ॥ करो. ॥ ३ ॥  
 जो प्रभु चरण चित लवें, सो भवसागरकां तर जावे ॥  
 ब्रह्मानन्द मोक्ष पद पावे, शान्ति वाणी सुनाती है ॥ करो. ॥ ४ ॥


 ७२ राग—गजल ॥ वोलो चाहे नवोलो दिल  
 जानसे फिदाहूं ॥

प्रभुको समर पियारे, ऊमरां विहा रही है ॥  
 दिन दिन घडी घडीमें छिन छिनमे जा रही हैं ॥ टेरे ॥  
 दीपकीकी जोत जावे, नदीयोंका नीर धावे ॥  
 जाती नजर न आवे, चंचल समा रही है ॥ प्रभुको. ॥ १ ॥  
 पिठली भली कमाई, मानुषकी दे हवाई ॥  
 प्रभु हेत ना लगाई, विख्या गमा रही है ॥ प्रभुको. ॥ २ ॥  
 घर माल मित्र नारी, दुनीयाकी मौज भारी ॥  
 होवे पलकमें न्यारी, दिलको फसा रही है ॥ प्रभुको. ॥ ३ ॥  
 क्या नीदमें पडा है, सिगकाल आ खडा है ॥  
 ब्रह्मानन्द दिन चढा है, रजनी बीता रही हैं ॥ प्रभुको. ॥ ४ ॥

७३ [ राग-गजल पूर्ववत् ]

क्या भूलीया दिवानें दूनीयायें सार नांही, दिनच्यारका तमासा  
 आखिर करार नांही ॥ टेर ॥ क्या भूलीया०  
 राजा वजीर रांनी, पडित सुरवीर ज्ञानी, सप्त हो गये हैं फानी,  
 जिनका सुमार नाही ॥ क्या भूलीया० ॥ १ ॥  
 सूरज वा चांद तारे, सागर पहाड भारे, होवेगा नाशा सारें,  
 तनका आधार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ २ ॥  
 दुनीयासे हो न्यारा, सतसग कर पियारा, सुन ज्ञानका विचारा,  
 नर जन्म हार नांही ॥ क्या भूलीया० ॥ ३ ॥  
 भवमिधु नीरभारी, प्रभु नाम पार उतारी, ब्रह्मानंद मोक्षकारी,  
 दिलसैं विसार नाही ॥ क्या भूलीया० ॥ ४ ॥

७४ [ राग गजल-पूर्ववत् ]

गाफिल तुं सोच मनमें, प्रभु नाम क्यों विसारा, सुनता नही वजैहे,  
 सिर कालकान गारा ॥ टेर ॥ गाफिल०  
 जोवन भरी हे नारी, दिलको लगे पियारी, जब मौतकी तियारी,  
 तुझसे करे किनारा ॥ गाफिल० ॥ १ ॥  
 घरमाल वा खजाना, सगमे कोई न जाना, क्यों देखके लुभाना,  
 सप्त झट है पसारा ॥ गाफिल० ॥ २ ॥  
 सुद रहै देह तेरी, होवे भस्मकी देरी, पलकी लगे न देरी,  
 विरथा करे पिचारा ॥ गाफिल० ॥ ३ ॥  
 मायाके जाल मांही, मूर्ख ग्हा फसाई, ब्रह्मानंद मोक्ष पाई,  
 प्रभु चरणकोसहारा ॥ गाफिल० ॥ ४ ॥



## ७५ ( राग गजल-पूर्ववत्. )

ईश्वर में दास तेरो, मुझको नहि विसारो, भवसिधुमें पडाहुं,  
 प्रभु वेगे पार तारो ॥ टेर ॥ ईश्वरमें  
 जगकी अपार माया जिन खेल यह रचाया, मनको मेरे मुलाया,  
 नही खयाल है तुमारो ॥ ईश्वरमें० ॥ १ ॥  
 मद लोभ मोह यारी, दुस्मन बटे है भारी, करते है मार मारी,  
 प्रभु दीजीये सहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ २ ॥  
 अजलीका नीर जावें, ऊमरा सवि विहावें, फिर के गई न आवे,  
 पलका नही आधारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ३ ॥  
 सुत मात तात चेंरा, कोई नहि है मेरा, ब्रह्मानंद वाल तेरा,  
 करके दया निहारो ॥ ईश्वरमें० ॥ ४ ॥

## ७६ राग-खमाच ताल ३ ॥

चंचल मन निशदिन भटकत है, एजी भटकत है भटाकावत है ॥टेर॥  
 जिम मर्कट तरु उपर चढ़कर, डार डार पर लटकत है ॥ चंचल. ॥ १ ॥  
 रुकत जतनसे क्षण विषयनैत, फिरति नहीमें अटकत है ॥ चंचल. ॥ २ ॥  
 काचके हेत लोभकर मूर्ख, चिन्तामजिको पटकत है ॥ चंचल. ॥ ३ ॥  
 ब्रह्मानंद समीप छोडकर, तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ चंचल. ॥ ४ ॥

## ७७ राग-खमाच ताल ३ ॥

अनहद धुनि सिरप खाज रही, एजी वाज गही अरु गाज रही ॥ टेर ॥  
 वाजत शख मृदग वसरी, घन गर्जन अति छाज रही ॥ अनहद. ॥ १ ॥  
 सुनकर मस्त भया मन मेरा, चंचलता सब भाज गई ॥ अनहद. ॥ २ ॥  
 के धर्म कर्म सब छूटे, लोक बदेकी लाज गई ॥ अनहद. ॥ ३ ॥  
 गिरा गम नाही, शुन्य समाधि निगाज रही ॥ अनहद. ॥ ४ ॥

७८ राग-खमाच ताल ३ ॥

मेरी सुरत गगनमें जाय रही, एयी जाय रही अह वाय रही ॥ टेरा ॥ मेरी.  
 चिहुटी महलमें चढकर देखा, जगमग जोत जगाय रही ॥ मेरी. ॥ १ ॥  
 अमृत परसे, वादल गरजै, विजली चमक मन भाय रही ॥ मेरी. ॥ २ ॥  
 दशावें महलमें सेज पियाजी, चुनचुन फूल विडाय ग्ही ॥ मेरी. ॥ ३ ॥  
 ब्रह्मानद देह सुध वीसरी, सहज स्वरूप समाय रही ॥ मेरी. ॥ ४ ॥

७९ राग-जिला ठुमरी, चाल, गोविंद भजनकी  
 येही विरिया ॥

दे दर्शन मोहे आज सावरीया, पिनदर्श नगन धीर न धरियाह ॥ टेरा ॥  
 सावरी सुरत मेरे दिलमेंद समाई, खान पान तन सुध विसराई ॥  
 कलन पडत निशदिन पल घडीया ॥ दे दर्शन ० ॥ १ ॥  
 विन चातक चर्पा पिन बोई, नेमके मिलन पिन मपगति सोई ॥  
 तडप रही पिन नीर मडरिया ॥ दे दर्शन ० ॥ २ ॥  
 मेरे अवगुण नाथ विसारो करकृपा मम धाम पवारो ॥  
 जनम जनमकी में दास तुमरीया ॥ दे दर्शन ० ॥ ३ ॥  
 ब्रह्मानद दर्शकी पियासी, करुणा करो जान निज दासी ॥  
 धारवार येहि मागे हमरीया ॥ दे दर्शन ० ॥ ४ ॥

८० राग जिला ठुमरी ॥

अउ तो तजो नर रति निपयनकी, करले फिकर परलोक गमनकी ॥ टेरा ॥  
 चालपणा जिम गई जगानी, सुदर काया गई पुराणी ॥  
 तदपि मिटे नही लालच मनकी ॥ अउ तो तजौ ० ॥ १ ॥

जरा दूत लेव यमराज पठाया, रोग फोज संग लेकर आया ॥  
 मूर्ख आश करे क्या तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ २ ॥  
 स्वारथ हेत करे सब प्रीती, सकल जगतकी यह हे रीती ॥  
 छोड ममत धन धांसु तनकी ॥ अब तो तजो. ॥ ३ ॥  
 ब्रह्मानंद वचन सुण लीजे निरादिन प्रभु चरण न चित दीजे ॥  
 पास कटे तेरी जन्म मरणकी ॥ अब तो तजो ॥ ४ ॥



८१ गजल--चाल--जोके हम तुमसे करार था ॥

जोके गर्भका ईकरार था तुमे याद होके न याद हो ॥ टेरे ॥  
 उलटे वदनसे वो लटकना, अरु लख चौरासी भटकना ॥  
 फिर सौचकर शिर पटकना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ १ ॥  
 पिडले जन्मका वो संभारना, सब कर्मका वो विचारना ॥  
 फिर ईसईस पुकारना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ २ ॥  
 विषयोसे दिल को हटावना, प्रभुके चरणमें लगावना ॥  
 किसी जीवको न सतावना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ३ ॥  
 ऊस बातका विसरावना, दुनीयाकी मौज ऊडावना ॥  
 ब्रह्मानंद फिर दुख पावना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके गर्भ० ॥ ४ ॥

८२ गजल ताल ३--चाल पूर्ववत् ॥

जोके ईसका उपकार था, तुमे याद होके न याद हो ॥ टेरे ॥  
 करी गर्भमें तेरी पालना, फिर सुखसे बाहिर निकालना ॥  
 कुचीयोमे दूधका डालना, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके ईसका० ॥ १ ॥  
 सूरज वा चाद सितार है, जल पवन भोग अपार है ॥  
 तेरे वासते यह बहार है, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके ईसका ॥ २ ॥

नर जन्म यह वह कामका, तुजको दियाहै धेड़ामका ॥  
 अब भजन उसके नामका, तुमे याद हो के न याद हो ॥जोके ईसका. ॥ ३ ॥  
 प्रभुके भजनविन वेवफा, तुजको मिले न कयी नफा ॥  
 ब्रह्मानंदका कहना सफा, तुमे याद हो के न याद हो ॥जोके ईसका. ॥४॥



### ८३ गजल ताल ३-चाल पूर्ववत् ॥

जोके मोतकादि न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेरे. ॥  
 दुनीयामे दिलको मिला दिया, प्रभुके भजनको भुला दिया ।  
 मनुषा जनमको रला दिया, तुमे याद हो के न याद हो ॥जोके.॥१॥  
 जन रोग आय सतायगा, खटियामे तुजको लिटायगा ॥  
 कोईकार काम न आयगा, तुमे याद हो के न याद हो ॥ जोके.॥२॥  
 सुतमित बांधव नारीया, धन माल महाल अटारीया ॥  
 तेरी छूट जायगी सारीया, तुमे याद हो के न याद हो, ॥जोके. ॥३॥  
 यमदूत लेकर जायगा, तुझे नर विच गीरायगा ॥  
 ब्रह्मानंद फिर पछतायगा, तुमे याद होके न याद हो ॥ जोके. ॥४॥



### ८४ राग-बतादो सखी कौन गली गये शाम. ॥

भजन विन विरथा जन्म गयो ॥ टेरे ॥  
 बालपणो सब खेल गमायो, यौवन काम बहो ॥ भजन. ॥ १ ॥  
 बूढे रोगग्रसी सब काया, परवश आप भयो ॥ भजन. ॥ २ ॥  
 जप तप सुकृत कलु न कीनो, नही प्रभु नाम लहो ॥ भजन. ॥ ३ ॥  
 ब्रह्मानंद विना प्रभु समरण, जाकर नरक पयो ॥ भजन. ॥ ४ ॥

## ८५ राग-पूर्ववत् ॥

भजन विन भव जल कोन तरे ॥ टेरे ॥	
काम क्रोध-मद ग्राह वसतहै मारगमे पकरे	॥ भजन. ॥ १ ॥
कुच कंचन दोऊ घेर पडत है सब जग इव मरे	॥ भजन. ॥ २ ॥
दान पुण्य तप निर्मल नौका अधविच दूट पडे	॥ भजन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद करो प्रभु सुमरन, सब दुख दूर टरे	॥ भजन. ॥ ४ ॥

## ८६ राग-पूर्ववत् ॥

मुसाफर क्या सोवे अत्र जाग ॥ टेरे ॥	
इन विर छनकी थिर नहि छाया, देख भुलाया वाग	॥ मुसा. ॥ १ ॥
इस सरायमे रहना नाही, काहे करत हे राग	॥ मुसा. ॥ २ ॥
यह सब चोर लगे संग तेरे, इनसे वच कर भाग	॥ मुसा. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद देर मत कीजे, अपने मारग लाग	॥ मुसा. ॥ ४ ॥

## ८७ राग-पूर्ववत् ॥

सुन मेरे मना अब तो समज कर चाल ॥ टेरे ॥	
वालय गयो योवन पुनि आयो, श्वेत भये सब बाल	॥ सुन. ॥ १ ॥
जो न तजे तूं इन विषयनको, आन जुडासी काल	॥ सुन. ॥ २ ॥
जाना दूर मुसाफर तुजको, पास नही कहु माल	॥ सुन. ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद मिलनके कारण, छोड जगत जजाल	॥ सुन. ॥ ४ ॥



८८ राग-पूर्ववत् ॥

- करोरे नर प्रभु चरनसे हेत ॥ टेर ॥  
 वालपणो सग खेल गमायो, यौवन तरुणी तन लपटायो ॥  
 वाल भये अग श्वेत ॥ करोरे. ॥ १ ॥  
 जिनके कारण पाप कमावे, सग तेरे कोर्ड नहि जावे ॥  
 मरकर होवत प्रेत ॥ करोरे. ॥ २ ॥  
 श्रवण सुने नहि नैन निहारे, मात पिता परलोक सिधारे ॥  
 अवहु तो मूरख चैत ॥ करोरे. ॥ ३ ॥  
 जो जन प्रभुसे हेत लगावे, सगे ब्रह्मानंद निश्चय पावे ॥  
 जन्म सुफल कर छेत ॥ करोरे. ॥ ४ ॥

८९ राग-मंगल प्रभाती ॥

- घटहिमे उजियारा सावो, घटहिमे उजियारारे ॥ टेर ॥  
 पास वसे अरु नजर न आणे, वाढिर फिरत गवारारे ॥  
 मिनसत गुरुके भेद न जाने, कोटि जतन कर हारारे ॥ घट. ॥ १ ॥  
 आसन पद्म नाचरु रेटो, उलट नैनका तारारे ॥  
 त्रिहुटी महलमे ध्यान लगावो, देखो खेल अपरारे ॥ घट. ॥ २ ॥  
 नहि मूरज नहि चाढ चाटनी, नही पिजली चमकारारे ॥  
 जगमग जोत जगे निस वासर, पार ब्रम विस्तारारे ॥ घट. ॥ ३ ॥  
 जो जोगी जन दर्शन पावे, उग्रदे मोक्ष दुजारारे ॥  
 ब्रह्मानंद सुनोरे अग्रू, वोहे देश हमारारे ॥ घट. ॥ ४ ॥

## ९० राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

घटहीमे अविनासी साधो ॥ घट. ॥ टेर ॥  
 काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशीरे ॥  
 तेरे तनमे व्रसे निरजन जो बैकुण्ठ\* विलासीरे ॥ घट. ॥ १ ॥  
 नहि पताल नहि स्वर्गलोकमें, नही सागर जल राशीरे ॥  
 जो जन सुमरन करत निरंतर, सदा रहे तिन पासी ॥ घट. ॥ २ ॥  
 जो तूं उस्को देखा चाहे, सवसे होय उदासीरे ॥  
 बैठ एकांत व्यान नित कीजे, होय जोत परकासीरे ॥ घट. ॥ ३ ॥  
 हिरदेमे सब दर्शन होवे, सकल मोह तम नाशीरे ॥  
 ब्रह्मानंद मोक्ष पद पावे, कटे जनमकी फासीरे ॥ घट. ॥ ४ ॥



## ९१ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

जाग जुगत हम पाई साधो ॥ जोग. ॥ टेर ॥  
 मूल द्वारमे बंध लगायो, उलटी पवन चलाईरे ॥  
 पट चक्रका मारग सोधा, नागन जाइ उठाईरे ॥ जोग. ॥ १ ॥  
 नाभिसे पश्चिमके मारग, मेरु डढ चढाईरे ॥  
 ग्रंथी खोल गगनपर चढीया, दसवे द्वार समाईरे ॥ जोग. ॥ २ ॥  
 भवर गुफामें आश 'न माच्यो, काया सुष विसराईरे ॥  
 चंदा विन सूरज निशदिन, जगमग जोत जगाईरे ॥ जोग. ॥ ३ ॥  
 परमात्मको मेल भयो जव, सुंनमे सेज विजाईरे ॥  
 ब्रह्मानंद सत गुरु कृपासे आजागमन मिटाईरे ॥ जोग. ॥ ४ ॥

९२ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

अनहदकी धुन प्यारी साधो ॥ अन. ॥ टेर ॥  
 आसन पद्म लगाकर करसे, मुद्र कानकी वारीरे ॥  
 जीनी धुनमे सुरत लगायो, होत नाद झनकारीरे ॥ अनहद० ॥ १ ॥  
 पहले पहले रिलमिल वाजै, पीठै न्यारी न्यारीरे ॥  
 घटा शख वंसरी वीणा, ताल मृदग नगारीरे ॥ अनहद० ॥ २ ॥  
 दिन दिन सुनत नाद जय निकसे, काया कंपत सारीरे ॥  
 अमृत बुद झरे मुखमाही जोगीजन सुखकारीरे ॥ अनहद० ॥ ३ ॥  
 तनकी सय सुध भूल जात है, षटमें होय उजारीरे ॥  
 ब्रह्मानन्द लीन मन होवे देखी घात हमारीरे ॥ अनहद० ॥ ४ ॥



९३ राग-मंगल ताल प्रभाती ॥

सोह शब्द विचारो साधो ॥ सोहं० ॥ टेर ॥  
 माला करसें फिरत नही है, जीभ न वरण उचारोरे ॥  
 अजपा जाप होत घटमांही, ताकी और निहारोरे ॥ सोहं० ॥ १ ॥  
 ह अक्षरसे स्वास उठावो, सोसे जाय विठारोरे ॥  
 हंसो उलट होत है सोह, जोगी जन निरधारोरे ॥ सोहं० ॥ २ ॥  
 सय ईकीस हजार मिलाकर, छेसो होत मुमारोरे ॥  
 अष्ट पहरमे जागत सोवत, मनमे जपो सुरकारोरे ॥ सोहं० ॥ ३ ॥  
 जो जन चिंतन करत निरतर, ओड जगत व्यवहारोरे ॥  
 ब्रह्मानन्द परम पद पावे, मिटे जनम ससागोरे ॥ सोहं० ॥ ४ ॥





## ९४ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

नाम निरंजन गावो साधो ॥ नाम निरंजन गावोरे ॥ टेर ॥  
 नाम जहाज बैठकर दुस्तर, भवसागर तर जावोरे ॥  
 मानुष देह मिली यह दुर्लभ, काहे वृथा गमावोरे ॥ नाम० ॥ १ ॥  
 घरकी जीभ नांम विन दामा, फिर क्यों देर लगावोरे ॥  
 उठत वेठत सोवत जागत, मनसें नहि विसरावोरे ॥ नाम० ॥ २ ॥  
 कलि कैवल इक नाम अधारा, दुजा भरम भुलावोरे ॥  
 ब्रह्मानंद नाम विन प्रभुके कवहु मोक्ष नहि पावोरे ॥ नाम० ॥ ३ ॥

## ९५ राग-मंगल ताल ३ प्रभाती ॥

सत संगत जग सार साधो सत संगत जग साररे ॥ टेर ॥  
 काशी नाये मथुरा नाये नाये हरि द्वाररे ॥  
 चार धाम तिरथ फिर आये मनका नहि सुधाररे ॥ सतसंगत ॥ १ ॥  
 वनमे जाय कीयो तप भारी, काया कष्ट अपाररे ॥  
 इंद्रीजीत करी वश अपने, हीरदे नहि विचाररे ॥ सत० ॥ २ ॥  
 मंदिर जाय करे नित पूजा, राखे वडो आचाररे ॥  
 साधु जनकी कदर न जाने, मिले न 'सर्जनहाररे ॥ सत० ॥ ३ ॥  
 विन सत संगत ज्ञान नहि उपजे, करले जतन हजाररे ॥  
 ब्रह्मानंद खोज गुरु पूरा, उतरो भवजल पाररे ॥ सत० ॥ ४ ॥

## ९६ (राग-मंगल ताल ३ प्रभाती)

गुरु विन कोन मिटावे भव दुख, गुरु विन कोन मिटावेरे ॥ टेर ॥  
 गहरी न दियां वेग वडो हे, वहत जीव सब जावेरे ॥  
 कर कीरपा गुरु पकड भुजासे, ग्वच तीर पर लावेरे ॥ गुरु विन० ॥ १ ॥

काम क्रोध मद लोभ चोर मिल, लूट लूट कर खावेरे ॥  
 ज्ञान खड्ग दे करकरमाही, सबको मार भगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ २ ॥  
 जाना दूर रात अंधियारी, गैला नजर न आवेरे ॥  
 सीत्रे मारग पर पग धर कर, सुरवसे घाम पुगावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ३ ॥  
 तन मन धन सब अर्पण करके, जो गुरुदेव रिझावेरे ॥  
 ब्रह्मानंद भवसागर दुस्तर सो सहजे तर जावेरे ॥ गुरु विन० ॥ ४ ॥

### ९७ ( राग-मंगल ताल ३ प्रभाती )

यह जग सुपना हे रजनीका, क्या कहे मेरा मेरारे ॥ टेरे ॥  
 मात तात सुत दार मनोहार, भाई बध अरु चेरारे ॥  
 अपने अपने स्वारथके सब, कोई नहि है तेरारे ॥ यह० ॥ १ ॥  
 जिनके हेत करत धन संचय, करकर पाप घनेरारे ॥  
 जब यमराज पकड लेजावे, कोई न सग चलेरारे ॥ यह० ॥ २ ॥  
 उचे उचे महल बनाये, देश दिगतर घेरारे ॥  
 सवहि ठाठ पडा रह जावे, होत जंगलमें डेरारे ॥ यह० ॥ ३ ॥  
 अत्तर फुछेल मिले जिस तनको, अत भस्मकी डेरारे ॥  
 ब्रह्मानंद रूप विन जानें फिरत चौरासी फेरारे ॥ यह. ॥ ४ ॥

### ९८ [ राग-प्रभाती ]

जाग मुसाफिर क्या सुख सोवे, आखिर तुजको जाना है ॥ टेरे ॥  
 इस सरायमे रहण न पावे, क्यारा जा क्या राणा है ॥  
 काहे पैर फेलावे मूरख, घडी पलरु ठैराना है ॥ जाग० ॥ १ ॥  
 इक आवत दूजा चल जावे, कायम नही ठिकाणा है ॥  
 ये विप भरिया सुंदर परिया, काहे देख लुभाना है ॥ जाग० ॥ २ ॥  
 इस मकानमे चोर बसतहै, अपना माल बचाना है ॥  
 आ परदेश खरच मत कीजे, यहाँ तो तुझे कमाना है ॥ जाग० ॥ ३ ॥

दूर देशमें जाना तुजको, पास न कछु समाना है ॥

ब्रह्मानन्द मुकृत कर माणी, जो आगे सुख पाना है ॥ जाग० ॥ ४ ॥

### ९९ राग-प्रभाती ॥

रे चेतन पोते तू परना छिद्र चितारे तू ॥ निर्मल होत कर्मका दमसू ॥

निजगुण अबु नितारे तू ॥ रे चेतन० ॥ १ ॥

सम्यक् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तू ॥

नरक निगोद धकी क्यू छूटे, जो पर हियो न ठारे तू ॥ रे चेतन० ॥ २ ॥

ज्यू त्यूं करने सोभा अपनी, या जगमांही दिखावे तू ॥

मगट कहावे धर्मको धोरी, अतर छलन निवारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ३ ॥

परमेश्वर घटघटको साखी, जांकी सरम न धारे तू ॥

कुंभीपाक नरकमें पचशी, अंतश भरियो विकारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ४ ॥

पर निंदा अघ पिड भरीजे, आगम साखन संभारे तू ॥

विनयचंद कर आत्म निंदा, भवभव दुष्कृत टारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ५ ॥

### १०० राग-प्रभाती ॥

चिंता वेग हरो चिंतामण, पारशनाथ हमारी ॥ टेरे ॥

धरणींद्र पद्मावती तेरे, सेवकहू हितकारी ॥ चिंता० ॥ १ ॥

चिंतामणि पायां सुख मगटे, पूरे इच्छा सारी ॥

तू आनंद कद वाया सुत, महिमा विदित निहारी ॥ चिंता० ॥ २ ॥

वो चिंतामणि जड पुद्गल है, तिनहीके गुण भारी ॥

तू चेतन चिंतामणि पारश परतिख पर उपकारी ॥ चिंता० ॥ ३ ॥

तू चिंतामणकू मिय न राखे आपे रिद्ध अपारी ॥

तू ठाकुर त्रिभुवनको स्वामी अशा पूरवनीरी ॥ चिंता० ॥ ४ ॥

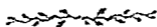
इति श्री सिद्धांत शिरोमणी प्रथम खण्डे पद्याभिधम्-

तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥



(श्रीमत् पूज्यजी महाराज श्री नथमलजी महाराज कृत)

## ॥ प्रकरण चौथा ॥ स्तवन ॥



१०१ राग-मत विलमावै ए मत भरमावै ए ॥

प्यारा लागैजी, रूडा लागैजी, जिनजी तीन भवन मनमोहन  
गाराजी, पारस प्यारा लागैजी, ॥ टेर ॥

काशी देश बनारसी नगरी जो, जठे सोभा छै सारा जगरी  
जी ॥ पारश. ॥ अश्वसेन नृपतम धुरी वाणीजी, ज्यारे वामादेजी  
पटराणीजी ॥ पारश. ॥ १ ॥ ज्यांरी कंखे प्रभू चव आयजी, एतो  
स्वप्ना चवटे दिखायाजी ॥ पारश. पोस असित दशमी जायाजी,  
ज्यांरा इद्र इद्राणी मगल गायाजी ॥ पारश. ॥ २ ॥ जोवन वय दिक्षा  
धारीजी, प्रभू छाडी प्रभावती प्यारीजी ॥ पारश. ॥ प्रभू वनमें काउ-  
स्सग करीयोजी, जरा कमठासुर कोपै भगीयोजी ॥ पारश. ॥ ३ ॥  
जगत जीवन जिहां आवेजी, यो तो दशभव वैर जितावेजी ॥ पारश. ॥  
काली काठल आभो छावैजी, कोई आभामे वीजनमावेजी  
॥ पारश. ॥ ४ ॥ सजल सघन घन वरपेजी, कोई गाजै गगन अति  
कडकैजी ॥ पारश. ॥ पडै मूसलगारा पाणीजी, एतो सरिता अति  
पूराणीजी ॥ पारश. ॥ ५ ॥ जलकर देही ढकार्डीजी, प्रभुरैना सातरु

दूर देशमें जाना तुजको, पास न'कलु समाना है ॥

ब्रह्मानन्द सुकृत कर प्राणी, जो आगे सुख पाना है ॥ जाग० ॥ ४ ॥

### ९९ राग-प्रभाती ॥

रे चेतन पोते तू परना छिद्र चितारे तू ॥ निर्मल होत कर्मका दमसू ॥

निजगुण अंबु नितारे तू ॥ रे चेतन० ॥ १ ॥

सम्यक् दृष्टी नाम धरावे, सेवे पाप अठारें तू ॥

नरक निगोद थकी क्यू छूंटे, जो पर हियो न ठारे तू ॥ रे चेतन० ॥ २ ॥

ज्यूं त्यू करनै सोभा अपनी, या जगमांडी दिखावे तू ॥

प्रगट कहावै धर्मको धोरी, अतग छलन निवारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ३ ॥

परमेश्वर घटघटको साखी, जाकी सरम न धारे तू ॥

कुंभीपाक नरकमें पचशी, अंतश भरियो विकारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ४ ॥

पर निंदा अघ पिंड भरीजे, आगम साखन संभारे तू ॥

विनयचंद कर आत्म निंदा, भवभव दुष्कृत टारे तू ॥ रे चेतन० ॥ ५ ॥

### १०० राग-प्रभाती ॥

चिंता वेग हरो चिंतामण, पारशनाथ हमारी ॥ टेर ॥

धरणींद्र पद्मावती तेरे, सेवककूं हितकारी ॥ चिंता० ॥ १ ॥

चिंतामणि पायां सुख प्रगटे, पूरे इच्छा सारी ॥

तू आनद कंद वामा सुत, महिमा विदित निहारी ॥ चिंता० ॥ २ ॥

वो चिंतामणि जड पुद्गल है, तिनहीके गुण भारी ॥

तू चेतन चिंतामणि पारश परतिख पर उपकारी ॥ चिंता० ॥ ३ ॥

तू चिंतामणकू मिय न राखे आपे रिद्ध अपारी ॥

तू ठाकुर त्रिभुवनको स्वामी अशा पूरवनारी ॥ चिंता० ॥ ४ ॥

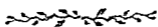
इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे पद्याभिधम्

तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ॥



(श्रीमत् पूज्यजी महाराज श्री नथमलजी महाराज कृत)

## ॥ प्रकरण चौथा ॥ स्तवन ॥



१०१ राग-मत विलमावै ए मत भरमावै ए ॥

प्यारा लागैजी, रूडा लागैजी, जिनजी तीन भजन मनमोहन गाराजी, पारस प्यारा लागैजी, ॥ टेर ॥

काशी देश बनारसी नगरी जो, जठे सोभा ॐ सारा जगरी जी ॥ पारश. ॥ अश्वसेन नृपतम धुरी वाणीजी, ज्यारे वामादेजी पटराणीजी ॥ पारश. ॥ १ ॥ ज्यांरी कूंखे प्रभू चव आयाजी, एतो स्नपना चवदे दिखायाजी ॥ पारश. पोस असित दशमी जायाजी, ज्यांरा इद्र इद्राणी मगल गायाजी ॥ पारश. ॥ २ ॥ जोवन वय टिक्षा धारीजी, प्रभू छाडी प्रभावती प्यारीजी ॥ पारश. ॥ प्रभू वनमें काउ-स्सग करीयोजी, जरा कमठासुर कोपें भगीयोजी ॥ पारश. ॥ ३ ॥ जगत जीवन जिहां आवेजी, यो तो दशभव वैर जितावेजी ॥ पारश. ॥ काली कांठल आभो छात्रैजी, कोई आभामे वीजनमावेजी ॥ पारश. ॥ ४ ॥ सजल सघन घन वरपेजी, कोई गाजै गगन अति कडकैजी ॥ पारश. ॥ पडैं मूसलधारा पाणीजी, एतो सरिता अति पूराणीजी ॥ पारश. ॥ ५ ॥ जलकर देही ढकाईजी, प्रभुरैना सातक

नदीयां आईजी ॥ पारश. ॥ प्रभू घोर परिसह मांहीजी, जिनजी ऊभा  
 अचल गिरराईजी ॥ पारश. ॥ ६ ॥ धरणेंद्र पद्मावती आयाजी,  
 जरा जिनजीनें सीस चढायाजी ॥ पारश. ॥ नृत्य करती इद्राणी हर-  
 पेजी, अनमिपनेन जिनंद मुख निरपैजी ॥ पारश. ॥ ७ ॥ इरतों  
 कमठ मद भागोजी, ओतो जिनजीरै चरणा लगोजी ॥ पारश. ॥ वार  
 वार अपराध खमावैजी, यो तो देव परिसह पिठतावैजी ॥ पारश. ॥  
 ॥ ८ ॥ करै कंचन जे लोहानैजी, तेतो पासर जड पापानैजी  
 ॥ पारश. ॥ आप पारस गुण खानैजी, तूठाकर देवो आप समानैजी  
 ॥ पारश. ॥ ९ ॥ जिनजी केवल पायाजी, च्यारुं घातिक कर्म  
 खपायाजी ॥ पारश. ॥ पांपां पद अविकारैजी, जिनजी लोकालोक  
 निहारैजी ॥ पारश. ॥ १० ॥ पांच तीसकी शाल चोमासोजी, कोई  
 साहे पुरै लीनो वासोजी ॥ पारश. ॥ नथमल कै प्रभू माहाराजी, एतो  
 जगत जीवन आधारानी ॥ पारश. ॥ ११ ॥ इति. ॥



१०२ राग-सावण आयो हो मारा कमधजीया

उमराव भमरजी सा० ॥

अरज सुणीजे हो, मारा नव भवरा भरतार, प्रभुजी, अरज सुणीजे  
 हो, दरशन दीजे हो, सामू सेवा देजीरानंद, सागरिया, दरशन.  
 ॥टेरा॥ ॥ जान बनाई हो, प्रभु, आये वजाय नितान, नेसीसर अर्ज. ॥  
 हरि हलधर साहो, साये बडा बडा राजान ॥ सांवरी. ॥ १॥ ॥ त्रिभु-  
 वन मांही हो, प्रभु, प्रगटयो हर्ष अपार, नेमी० ॥ नेम सरिखा हो,  
 प्रभु, वींदराज लसीनार, ॥ साव. ॥ २ ॥ ॥ तोरण आया हो, जद  
 पसूंयां करीरे पुकार, नेमी० ॥ तेल चढीनै हो प्रभु त्याग चेल्या

गिरनार, सांव० ॥३॥ ॥ यानहि जाणी हो, प्रभु, जासोमोय छिट्काय,  
 नेमी. ॥ गूथ्या मनोरथ हो, मारा रद्या मनरा मनमांय, साव, सांव०  
 ॥ ४ ॥ विण अवलापर हो, प्रभु, क्यू करो इतनो रोस, नेमी. ॥  
 जोतजणी विचारी हो, प्रभु, तोरे काढयो हु तो दोस, साव० ॥ ५ ॥  
 नवभव न्यारी हो, प्रभु, नकरी रापी पास, नेमी. ॥ दशमा भवमे हो,  
 प्रभु, कांइरे करोडो निरास, साव० ॥ ६ ॥ अत्र पाडा पधारो हो,  
 प्रभु, मतिरे हसावो लोग, नेमी. ॥ इम घरत जीयां हो, प्रभु, न मिलै  
 सिव वधु योग, नेमी. ॥ ७ ॥ पुरुष पनोता हो, प्रभु, तुम जादवकुल  
 भाण, नेमी. ॥ इम हठ ताण्या हो, प्रभु, जन हासी घरहाण, साव०  
 ॥ ८ ॥ अत्रला दुपणी हो, प्रभु, चीव पढयो जजाल, नेमी. ॥ दया  
 दिल नाणो हो, प्रभु, वाजो दीन दयाल, सांव० ॥ ९ ॥ इम जूरणा  
 कीधा हो, सती, ए जल भर भर नैण, नेमी. ॥ फिरमन समजायो  
 हो, सती, भेटी भव दुखद हैण, सांव. ॥ १० ॥ पिव पहली हो,  
 सिवपहुंती कर्म खपाय, नेमी. ॥ शाल छतीसै हो, मुनि नथमलगुण  
 गाय, साव० ॥ ११ ॥ भाद्रव मासे हो, कोई वडीतीस सुविलास ॥  
 मेदनिपुरमें हो, कोई सुषे रद्या चउमास ॥ सांव० ॥ १२ ॥ इति ॥



### १०३ राग- ( नाथ कैसें गजको फद छुडायो. )

जिणद मोरी करणी नाहि निहारो, धारो विरुद विचारी नै तारो  
 ॥ जि० ॥ टेर ॥ हिंसा झूट अदत्त मियुनमें, राच रद्यो मन मारो,  
 पाप अठारामें एक न ठूटो, छू अवगुन आगारो ॥ जि० ॥ १ ॥  
 तपजप लेश वनै नहि मोक्ष, नयनै पर उपगारो, करत करत परतात  
 गतदिन, वीतत मोहिज मारो ॥ जि० ॥ २ ॥ विकथा चात कुशाख  
 तनी रुच, आगम लगत न प्यारो, हिंसा धर्म अमृत सम लागै, दया



धर्म लागै पारो ॥ जि० ॥ ३ ॥- इंद्री पांचू प्रबल होय रही अपने  
 अपने विकारो, एकही इंद्रिवस नहि मोरै, सो दीसै बहुल संसारो ॥ जि.  
 ॥ ४ ॥ पुदगलके रंग रातो मातो वांध्यो पापको भारो, ग्यान  
 क्रियाकी रुच नहि मनमें, सो कैसें न्हैगो निस्तारो ॥ जि. ॥ ५ ॥  
 मिउ मिउ शब्द रटै ज्यू पपइयो, नाम रटू तिम थारो, अवरतो साज  
 सकल इवणको, एकयोही आधारो ॥ जि० ॥ ६ ॥ वेकर जोरी  
 नथमल विनवै भक्तवछल अवधारो, पतित उगारन विरुद तुमारो,  
 तो मो सम पतित उधारो ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥



### १०४ [ राग—टोडी ]

वागुर कोउर ध्यान हमारै सो भव सायर पार उतारै ॥ वा.  
 ॥ टेर ॥ तिनतिय हार अहिमणि किंकर, शत्रु मित्र सकल इक सारै,  
 समित गुपत युत, इष्ट सवनकू, मीष्ट वचन मित सहित उचारै ॥ वा.  
 ॥ १ ॥ रक्तरहत नितमन सजममें लहु दीर्घ दूषण सब टारै, न करै  
 अजन नैन मजन तन, भव दुख भजन सो अन गारै ॥ वा. ॥ २ ॥  
 भरमत महरन विरुद भानको, खाडो हाथ ग्यानको धारै, विक्रम रस  
 वैराग्य आन उर कर्म सबल दल मारच छारै ॥ वा. ॥ ३ ॥ सीत  
 घाम पावस ऋतु केसव, सहै परिस हन सोच लिगारै, प्रासुक भोगी  
 साचा जोगी तपो घनी तन ममत्व निवारै ॥ वा. ॥ ४ ॥ गुणसत  
 वीस सहित दीपत नित भक्तवछल करुणा भंडारै नथमल नमत जास  
 पद पकज भव दुग्व फास पलकमे टारै ॥ वा. ॥ इति ॥ ५ ॥

१०५ ( राग—टोडी )

सुगरुकि सीख सुनो चतुरारे तोड ढांरो मोहदा पिंजरारे ॥ सु.  
 ॥ टेर. ॥ ए ससार असार दुखालय, जानत नहि जीवरा, अघरा रे,  
 हो रहे वे हाल कुटुंबनी संगतें, वा जीगरकायूं बंदरारे ॥ सु. ॥ १ ॥  
 तन धन जोवन अथिर पतग रग, व्योम माहि जैसे बंदरारे, विख-  
 रंत वैर कलु नही लागत, क्यू सूतो माफल निदरारे ॥ सु. ॥ २ ॥  
 विषय व्यामोह होय व्यामको, मानत सुरज मनमे मधुरारे, फल किं  
 पाक समान विषय घन, नरुं निगोद तणी जदुरारे ॥ सु. ॥ ३ ॥  
 जिन चक्री हरि हलधर सुरपत स्वर्ग निवासी सहु अमगरे, सकल  
 जगत ग्रासी जय आया नहि पलपत ऐसे नमरारे ॥ सु. ॥ ४ ॥  
 एह जान भयो वोवजा सहिय दीये उड सकल लफरारे, करसिर  
 धार नमत नथमल जिन सोव लीया मारग अपरारे ॥ सु. ॥ ५ ॥ २३॥

१०६ ( राग—चलत )

अब तू चेतरे भाई, हारे तोनें सत गुरु वाट बताइ ॥ अ. ॥  
 टेर ॥ काल अनत कर्म वस भटकयो, लक्ष चौरासी माही, नाना  
 भय करता मूसकलसू मानव देह या पाई ॥ अ. ॥ १ ॥ नरभवर न  
 मिल्यो पर्नीको, खोवै क्यू पिरथाइ, काच साटे नर पाच नमावै,  
 कांकीये निहुराई ॥ अ. ॥ २ ॥ लडक पनै खेल्यो अरु दोढयो  
 भोलपणामें भाई, आपापरही समज न मनमें का जान प्रमं वाई ॥  
 अ. ॥ ३ ॥ जो वन जोरै द्रव्य बहु जोरे, घर घरके कपटाई, कै  
 विषयाय होय अवरहीयो, ललना रग लपटाई ॥ अ. ॥ ४ ॥ जो

वन चटको छै दोय दिनको, खटको राख पहलाई, आई जरा जोवन  
जव विगडयो, दूर गई वैलाई ॥ अ. ॥ ५ ॥ सिर आये धोला  
तन थया खोला, दशनर हे मुंहनाई, परणी नार प्यार नहि पेखत,  
पातग्ला नमन माई ॥ अ. ॥ ६ ॥ ऐसी जान समज मन जीवडा  
काल लगाई धाइ, पलक एकमें लेत उटक कै, वगम छरीकी दाई  
॥ अ. ॥ ७ ॥ इकतीसै वैशाख वनेहै वारु ढाल बनाइ, कै नथमल  
धर्म आराध्या, जन्म मरण मिट जाइ ॥ अ. ॥ ८ ॥ इति ॥



### १०७ ( राग-कटाय डालूंनीवूवा )

समज मन जीवडा ४, हारे गुरु उपदेश ॥ स. ॥ टेर ॥ या  
जग अपनो को नहि रे ४, स्वार्थीयो परिवार ॥ स. ॥ सुखमें सब  
सीरी हुवे रे, दुखमे दगा दार ॥ स. ॥ १ ॥ तन वन जोवन कार  
भोरे, जैसो रग पतग ॥ स. ॥ दोय दिनमें देखतां, पर तरगमें भग  
॥ स. ॥ ३ ॥ कायाका गर्भ कहा करै रे, जो वो सनतकुमार ॥ स. ॥  
सुरपति रूप प्रसंसीयोरे, देवायेकर नदिदार ॥ स. ॥ ३ ॥ चक्रीमान  
कीयो घणो रे, विगर गयो सबरूप ॥ स. ॥ कृमिकुल पूरित तन  
थयोरे, भये बैरागी जव भूप ॥ स. ॥ ४ ॥ धनका गर्भ कहा धरै  
रे, जो वो कृष्ण ने राम ॥ स. ॥ प्रभुता तो त्रिहुं खंडनी रे, कम-  
लापत जाको नाम ॥ स. ॥ ५ ॥ जिनकूही जिनने छेह दयो, कम-  
लागनिका नार ॥ स. ॥ कौसंबी वनमें पगारीया, सही विपत अ-  
पार ॥ स. ॥ ६ ॥ जोवन गर्भ कहा करै रे, चटको दिन दोय  
॥ स. ॥ जरा आयां तन जोसरोरे, जल करता होय ॥ स. ॥ ७ ॥  
काला काहू वाउजलारे ऊजले गये भाज ॥ स. ॥ साठी बुध नाठी

कहैरे । जरा गमाई लाज ॥ स. ॥ ८ ॥ एहवी जाणी भव्य प्राणी-  
यारे । आराहो जिनधर्म ॥ स. ॥ दुख दोहम दूरे टलै रे । पावो  
सिवसर्म ॥ स. ॥ ९ ॥ पालीमे पूजय धागीयारे । तीसा केरी साल  
॥ स. ॥ होली चउमासी करी रे । नथमरु जोडी ढाल ॥ स. १० ॥

१०८ [ राग—हीडैकी. ]

लख चउरासीमाहे रुलातां काल अगत गमायोरे ॥ पूर्व पुण्य  
करीनें प्राणी, रुडो नरभव पायोरे ॥ चेतन चेतोरे चेतन चेतोरे ॥  
थारे काल भवातर झटके लेसीरे ॥ चेतन. ॥ १ ॥ आरजखेत्र उत्तम  
कुरु जनम्यो, देह निरोगी पाईरे ॥ श्रुत आचारी सतगुरु मिलीया,  
गुण्यमें कसरन काईरे ॥ चेतन. ॥ २ ॥ मानव भय चिताभणि  
सनिखो, जो कीजे सो होवेरे ॥ मूरख विषया रसके माही, अहल  
जमारो खोवेरे ॥ चेतन. ॥ ३ ॥ बालपणो लडकाके साये व्यर्था  
खेल गमायोरे ॥ भरजोवनमें आधो हृवो, तरणी संग लपटायोरे  
॥ चेतन. ॥ ४ ॥ जोवन मटके झुले गर्भमें, मनमे बहु मगरूरीरे ॥  
देह तणे खेलागण नहि दे, राखे फिटक सिंदूरीरे ॥ चेतन ॥ ५ ॥  
जोवन बीता जराज व्यापी, सिरपर धोळा आयारे ॥ नैगज टोनुं  
अरवा लाग्ता, कपन लागी कायारे ॥ चेतन ॥ ६ ॥ न्याती गोती  
सार न पूढे, सय मतलबके गरजीरे ॥ दोसरीयो अन्न मरयो वान्दे,  
करे रायस अग्जीरे ॥ चेतन. ॥ ७ ॥ काल बलि केटने नहि छोडे,  
वयो राजां क्या राजारे ॥ पंरुमें पकडी लेगावे, चीडी भणिसीचा-  
गारे ॥ चेतन ॥ ८ ॥ एहरी जाणीनें भव्य प्राणी, धर्मन्यान जो  
वर्धयोरे ॥ परध्वमाही सुजीरा होईरे, किन्तुमगीनें उगस्योरे ।

## १११ राग-जाडानी. ॥

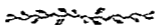
गूफामें ध्यान वच्यो रहनेम, देख राजल जाग्यो प्रेम ॥ दूषण  
 लागेलो ॥ कहे रहनेम तजी कुल लाज, मेल मिल्यो भल आज ॥ दू.  
 ॥ १ ॥ ए तुज रूप अनूपम गात, सची सम साक्षात ॥ दू. ॥ हू हरि  
 सम भोगव भोग, सारीखो संयोग ॥ दू. ॥ २ ॥ सती डरी जाणी  
 गुरुष कुपात्र, बैठी संकोची गात्र ॥ दू. ॥ समुद्र बीजे सुत रहनेम,  
 मा डर धर मन प्रेम ॥ दू. ॥ ३ ॥ दुर्लभ मानवको अवतार, सुख विलसो  
 सुजलार ॥ दू. ॥ भर जोवन विलसीने भोग, पाछे ले साजोग  
 ॥ दू. ॥ ४ ॥ जाणि रहनेम सति चित्ते चीत, भय नहि  
 छे या भीत ॥ दू. ॥ जातवत ये अश्व समान, जानव देइमवान  
 ॥ दू. ॥ ५ ॥ सुण सुण हो मोटा मुनिराय, महाव्रत भागेलो,  
 महाव्रत थांरो भागेलोजी, मुनि मन राखो इक ठाम ॥ दू. ॥ स्व-  
 पनामें न धरूं मन पाप, आवे सुरपत आप ॥ दू. ॥ अगंधन कुल  
 हिजारे देह, वमियो विष न लेह ॥ दू. ॥ ६ ॥ अजसजीवी तुजने  
 धिःकार, वाठे बमीयो विकार ॥ दू. ॥ मर्न सिरे नहि या श्रेय वात,  
 देख देवर कुल जात ॥ दू. ॥ ७ ॥ भो जग नृप पौत्रीमें जोय, अं-  
 धक पौत्र तुं होय ॥ दू. ॥ गंधन कुलका सर्प समान, मत होय स-  
 मता आन ॥ दू. ॥ ८ ॥ घरघर जासो लेन अहार, देख सो मुदर  
 नार ॥ दू. ॥ रूप देख धर सोउन माद, तो कुण कहसी साव ॥  
 दू. ॥ ९ ॥ हडना माया टपपर जोय, अथिर आतम तुज होय ॥ दू. ॥  
 इन कारन वहुं में धर राग, मन वचन महा भाग ॥ दू. ॥ १० ॥  
 अचास रभा सरखी नार, तजलीयो सजम भ्रार ॥ दू. ॥ रमणी रूप  
 देखी मत भूल, नारी दुखारो छे मूल ॥ दू. ॥ ११ ॥ नरुनी दीरी  
 कही जिनराज, पाप सरोवर पाज ॥ दू. ॥ सर्वापदनों है, सकेत,  
 कलह दालिद्रनो खेत ॥ दू. ॥ १२ ॥ अमुच अग मलभूत्रनी खान,

हींगा देवी समान ॥ दू. ॥ नारी नहि या विपकी बेल, देवै नरकां-  
मेल ॥ दू. ॥ १३ ॥ एह वचन सुन सती तणां ताम, कप कीया दढ  
परिणाम ॥ दू. ॥ अकुश कर करि आवै ठाम, तिम आयो संजम  
धाम ॥ दू. ॥ १४ ॥ दोनूं मुगत गये कर्म तोड, नयमल नमे कर-  
जोड ॥ दू. ॥ महा उद वीज मेडता माय, प्रणम्या पातिक जाय ॥ दू. ॥  
॥ १५ ॥ इति. ॥



### ११२ राग—चलित ॥

स्टीये नाम नीरजनकोरे ॥ र. ॥ टेर ॥ कर्म काष्ठ जारन हुत  
भुगसम, मृगपति मृग अध गजनको ॥ असनि समान नाम जिनव-  
रनो, सकल दुखा चल भजनको ॥ र. ॥ १ ॥ कुमति रमाकी केलको  
बाधक, साधक सिव मग साधनको ॥ भवोदधि तारन मनमथ मारन,  
कारन पतित ऊधारनको ॥ र. ॥ २ ॥ मिथ्या मयल मलिन हृदय  
चरव, अजन सम जस मजनको ॥ कै कर जाडो नयमलमधुकर, मधु-  
षट रूपी कजनको ॥ र. ॥ ३ ॥ इति ॥



### ११३ राग—चलित ॥

वृथा जन्म गमायो जिनेसर ॥ दृ. ॥ टेर ॥ क्रोध मान माया  
महि उलज्यो, लालचमें ललचायो हो ॥ दान शील तप भाव, इत्या-  
दिक कछु शुक्रतवन नायो हो ॥ दृ. ॥ १ ॥ पर वचनकी धर उर  
आसा, धर्मी नाम धरायो हो ॥ बुगला भगत जगतमें मनकर, पूज्य  
कहि पूजायो हो ॥ दृ. ॥ २ ॥ निजगुन पर अवगुन सुन मुज मन,

## १२२ राग-गीतनी ॥

हांजी प्रभुजी लख चोरासी मांही जिणंदमे बहु दुख पायो हांजी  
 हां जगतपति बहु दुख पायो हांजी हां कृपानिधी बहु दुख पायोनी  
 दिलरा प्यारा त्रिभुवन साहिवाजी ॥ टेर ॥ हा. ॥ प्र. ॥ नव २  
 कीना भेख ॥ जि. ॥ अब सरणे आयो ॥ हांजी हां कृपानिधि अब  
 सरणे आयो ॥ जी. दि ॥ १ ॥ हां. ॥ अपनो विरुद विचार ॥ जि. ॥  
 ओहिताच्यो चहीये ॥ हाजी हां कृपानिधि ताच्यो. ॥ हाजी प्र ॥  
 तुमसा समरथ छोड अवरने किणने कहीये ॥ हांजी हां कृपा. ॥  
 जी दिल. ॥ २ ॥ हाजी प्र. ॥ हू सेवक तुमसांम अवरसु काम न  
 कोई ॥ हाजी हां कृपा. ॥ चातक जलधर जेम ॥ जि. ॥ मांरी मनसा  
 ओही ॥ हांजी हां कृपा. ॥ जी दिल. ॥ ३ ॥ हाजी प्र. ॥ थारा सेवक  
 बाज ॥ जि. ॥ फिर दुःखित रहीये ॥ हांजी हा कृपा. ॥ दु. ॥  
 हांजी प्र. ॥ नीकी नहिया वात नाथदिल सोची चहिये ॥ हांजी हा कृपा  
 सोची. ॥ जी दिल. ॥ ४ ॥ हाजी प्र. ॥ अम सरखाने देख  
 लाज जो दिलमें लावो ॥ हा जी हा कृपा. दिल. ॥ हा जी प्र. ॥  
 निज गुनकी बगसीस करो किन कृपन रुहावो हाजी हा कृपा. ॥ जी  
 दिल. ॥ ५ ॥ हांजी प्र. ॥ नरम गरम सुन वचन वडा तो कवह  
 न ग्वीजे ॥ हाजी हा कृपा. कर. ॥ हाजी प्र. ॥ बालक मुखनी वात  
 लात तो सुनकर रीजे ॥ हाजी हा कृपा. सुन. ॥ जी दिल. ॥ ६ ॥  
 हां जी प्र. ॥ कै नथमल जिनराज काज मुज पेस करीजे ॥ हांजी  
 हां कृपा. पेस. ॥ हां जी प्र. ॥ नवके उपर दोय जिणद किरपा कर  
 टीजे ॥ हाजी हां कृपा. फिर. ॥ जी दिल. ॥ ७ ॥ इति ॥

१२३ ( राग—चांदा धांरी चानणी-यासी रातरे )

समवसन्त्या कोसंबी श्री जिनराज रे कोई प्रभुजी रेक प्रभुजी  
 जंगम सुरतरु उदायन नृप वदन केरे काजरे कोई आयो रेक जेसे  
 कोणिक नरवरु ॥ १ ॥ वीरागम सुन जयवती गुन गेहरे कोई दुल  
 सी रेक २ रोमांचित थई प्रभुजी सेती अधिको धर्म सने हरे कोई  
 दोडीरे कढोमभोजाड पेंगड ॥ २ ॥ प्रभायती सू भापे वचन रसा-  
 लरे कोई आव्या रेक २ प्रभुजी वागमे पर बेठाही गगा आवी चा-  
 लरे कोई कसर न रेक कसरन अपना भागमे ॥ ३ ॥ काने  
 सुणतां गोत्र अने अभिधानरे तिणफल रेक तिणफलो रुढिणो कीसू  
 ॥ ४ ॥ सुण भोजाई पाठी भापे एमरे वाइजी होरु कीमी तुम किरपा  
 घणी जाण्यो थारो आज ए पूरण प्रेम हो कोई दीमी हो कदीमी  
 भली वधामणी ॥ ५ ॥ स्नानाटिक कर हो गई शीघ्र तयार रे कोई  
 घरना रेक घरना कारज वीसरी रथ वेठीने टास्याने परिवाररे कोइ  
 नणदलरे भोजाड उदन नीसरी ॥ ६ ॥ अभिगमनाटिक साचव स-  
 यली रीतरे कोइ आवी रेक समवसरण आनद भरी तीन प्रकारे प्राणी  
 अधिकी प्रीतरे नृप आगल रेक करने सेवरु रे खरी ॥ ७ ॥ मोहन  
 गारा चोवीसमा जिण चदरे कोइ त्रिभुवन रेक त्रिभुवनमें बीजूं नही  
 सकल जगतना शुभ पुद्गलना खदरे कोइ जिनतन रेक जिनतन लागा  
 छे सही ॥ ८ ॥ शाति सुधारम अमृतमड अनूपरे कोइ मूरत रेक मूरत  
 भव दुःख सोधनी अनमिख नयणे निरखे प्रभुनो रूपरे कोइ विकसी  
 रेक शशिनं देख कमोदनी ॥ ९ ॥ धर्म कथा प्रभु भापे चार प्रकार  
 रे कोइ राजा रेक नणद भोजाड सांभले अमृत धुन जिनानी को वि-  
 स्ताररे कोइ सुणतां रेक सुणता सब ससय टले ॥ १० ॥ राजा  
 राणो आव्या जिण दिश जायरे जयवती रेक पूछा पश्च ए भगयती  
 शतकवारमे द्वितीय देश कमायरे कोइ उत्तर रेक भिन्न मेल भाप्या-



जगपती ॥ ११ ॥ धन्य जयवती लीधो संजम भार रे कोइ अनुक्रम  
 रेक कर्म क्षय कर शिव वसी नथमल कहे विक्रम, पुरमे झाररे मधुमास  
 ज रेक शुरु पक्ष तिथि द्वादशी ॥ १२ ॥ इति ॥



### १२४ ( राग--कर्म समो नहि कोइ )

निदक सम पापी नही जगमें नीत शास्त्रमें गाई सर्व चडालामें  
 वो मुखियो ओर ओपम दे काईरे ॥ १ ॥ निंदा कर पराई रे भाई  
 तू निंदा ॥ टेर ॥ सामाइक पोसा पडिकमणा तपस्या कर देह तई  
 एक निदा कोष डगयो चालो डूवी सर्व कमाइ रे ॥ भाई तू ॥ २ ॥  
 साच झूठको राख हिये डर दुरगत है दुखदाई उहां पोल चाले नही  
 सुगगा लेखो राई राई रे ॥ भा. ॥ ३ ॥ समज दिल अतर स्याणा  
 स्वतगुरु सीख सुनाई कै नथमल जो निदाही करणी तो करो अपनी  
 भलाई रे ॥ भाई तू ॥ ४ ॥ इति ॥



### १२५ राग-- गुजराती गीरवो ॥

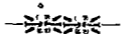
में तने वरजू रे स्याना परनारी सग मति जानां ॥ में ॥ टेर ॥  
 भरनारी सगेरे जाता कोई सुगते ओजकारातां जंस कीरत खोवेरे  
 झाथा ज्यांरी लोकर करे मुख वाता ॥ में ॥ १ ॥ परनारीसुहि बडोरे  
 झीसे जिन पर जन दांतज पीसे कोई दिन भेडोरे दीसे जद पडे  
 भजारां सीसे ॥ में ॥ २ ॥ राज सिपाईरे आवे द्वाद मुसक्या बांध  
 खे जावे पग खोडामेरे फावे परनारी सग या थावे ॥ में ॥ ३ ॥  
 अनरो पापजरे फुटे ऊधो टेर कोरडास कूटे लोडीकी सेडारे फुटे

बलिघन घरको सय लूटे ॥ में. ॥ ४ ॥ लागतीका दुखियारे होवे  
 कर ऊंचो मुख नही जोवे जीवत पति नारीरे रोवे लपट सय वात  
 विगोवे ॥ में ॥ ५ ॥ परभव दुर गतिरे जावे जमदेव जहा स्वाद  
 चखावे अग्निमठ पुतलीरे करावे लपटने वाथ भरावे ॥ में. ॥ ६ ॥  
 परनारी दुखनोरे खेत है सर्वापद संकेत शिवपुर द्वार जरे देत  
 जिके क्रियो परनारीसू हेते ॥ में ॥ ७ ॥ कौडीनो पुरखजरे वाजे  
 ऊमावे पर त्रिय काजे द्रग्यचतन खोपेरे लाजे कौडीनी कीमत भाजे  
 ॥ में. ॥ ८ ॥ परनारीके चालेरे लागन या त्रिची बुरी च्यु वापन  
 त्रिपभरी कालीरे नागन नथमल वन्य करे जे त्यागन ॥ में ॥ ९ ॥ इति. ॥



### १२६ राग-यारांसे प्रीत लगाय सती ॥

मानव भव निष्फल हार मती सेत गुरकी नीख तिसार मती  
 ॥ मा. ॥ टेर ॥ मुसकल लाधा नरभव नदी वाया कादामे देसर  
 हार मती ॥ मा. ॥ १ ॥ तन धन शोपन त्रि नही सजन दिन जनसे  
 नग्न खार मती ॥ मा. ॥ २ ॥ सतगुराी सेवा कर नित मेवा दुगुरु  
 कुदेवा धार मती ॥ मा ॥ ३ ॥ नारी सग मोचे द्रगभर जोवे खोवे  
 ख्युं वापी पैठ उती ॥ मा ॥ ४ ॥ भापे नथमल ज्ञान क्रिया बल  
 मुनो सकल जन नही मुगती ॥ मा. ॥ ५ ॥ इति. ॥



### १२७ अथ पूज्यगुणाष्टक ॥

पूज कनीरामजीरो जाप करो, दुख टोहग सोगने दूर हरो, धन  
 वाप्य राणा भहार भरो, घर प्यार हिय भवी ध्यान धरो ॥ १ ॥ जस

राक्षस भूत अलग जावे, डांकनी सांफनी नही संतावे, तावते जरो  
 नही आवे, पूज नाम लीया सता पावे ॥ २ ॥ राज काजमे जाय  
 रूपे, दील व्यान क्य्या अरी होत दफे, तेजे करी सवमे तेह तपे,  
 जो पुज तणो मन जाप जपे ॥ ३ ॥ लक्ष्मी बहु वीण जे लाभ लहे,  
 दालिद पापनो मूल दहे, रस रग सदासुजरहे, वेठा गृहमाहि गंग  
 वहे ॥ ४ ॥ टामण दुमण अहि दूर टले, गड गुवड द्वेसी तुरत  
 गले, चोर चूगल बलि नाह छले, पुज नाम मनोरथ माल फले ॥ ५ ॥  
 कपटी धुत्तारा कपट करे, पेखे छलछिट्ट चोफेर फीरे, उण विरियां  
 चाट करे हिवडे, डग भरीने सङ्गे पलमाहि डरे ॥ ६ ॥ अन्य मंत्र  
 सुवा कुण आराधे, सट नाम पुजनो जे साधे, लीलायुत पुत्र कलत्र  
 लाधे, वसुधा जसवाण घणो वाधे ॥ ७ ॥ गड नायक गुणगण  
 स्तवन गुणो, श्रोताजन चीत्त लगाय सुणो, दुरीत घटे पुन्य वां  
 घणो, नयमलके नहचो पुज नाम तणो ॥ ८ ॥ इति ॥

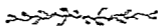


## १२८ अथ पुन्हा पूज्यगुणाष्टक ॥

पुज नाम तणी महिमा भारी, नीत व्यान धरो तुम नग्नारी, दुख  
 मिट जावे तनमनगे, पुज कनीराम जीशे जाप करो. ॥ १ ॥ पुज  
 नाम रते जो शुध भावे, जिण घरमे टोटो नही आवे ॥ विन जे  
 चहू लाभ लेहे धनगे ॥ पु. २ ॥ अष्ट भय नेडा न आवे वली  
 उपजे ॥ भय विनसी जावे, मन इच्छत काज सरे सधलो ॥ पुज ० ॥  
 ॥ ३ ॥ कृष्ण अष्टमी दिन जायां, बलि ऊणही दिन मुरपद पाया, इण कारण  
 अष्टमी-दिन, सर्वगो ॥ पुज ॥ ४ ॥ उपवास आंघिल एक भक्त करो,  
 अथवा विगज सप्त दूरहरो, निशि भोजन चालो शील खरो ॥ पुज ॥

॥ ५ ॥ इमया क्रिमयानेक्रिमहेरो पुज नामतणी माला फेरो, पारनरहे  
युग भवमुखरो ॥ पुज ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, पुज नाम  
सजीवन जाण पको, धकोन उपजे तिलजितरो ॥ पुज ॥ ७ ॥ स्वामी-  
दास गच्छ नायको, स्वशिष्यने सदा सहायको, नथमलजी ध्यान धरे  
नितरो ॥ पुज ॥ ८ ॥

॥ अथ मूर्खखट् तीसी. ॥



१२९ ( राग-श्रावक धर्म करो सुखदाई )

वालरूमूतो<sup>१</sup> भीतकरे<sup>१</sup> पिन, कारज<sup>२</sup> परपर जावेजी, गुरु<sup>३</sup> माय<sup>४</sup> तने<sup>५</sup>  
नीच कहि वोलै<sup>५</sup> व्यर्था पाप कमावेजी ॥ १ ॥ या लक्षणामु मूर्ख<sup>५</sup>  
जाणो ॥ टेर ॥

विना प्रयोजन<sup>६</sup> करे लडाई, दान देतानै पाळेजी परने दुग्व दे,  
वडा नरवैठा आडो<sup>६</sup> अवलो सवलो हालेजी ॥ या ॥ २ ॥ धर्म रुया  
विच वाता मोडे<sup>१०</sup> नेह नीचमू<sup>११</sup> राखेजी वडाको अपिनय करे तियसू<sup>१२</sup>  
छानी वात जे दाखेजी ॥ यां ॥ ३ ॥ वृक्षतले<sup>१४</sup> जगल जे जावे,  
वडांसूं सामो जे बोलेजी झूठ वटे दरनारमें<sup>१६</sup> परतियसेतीकरतकितोलैजी<sup>१७</sup>  
॥ यां ॥ ४ ॥ चारुमू जे करे दुसमणता, वेढ करता वात करावेजी<sup>१८</sup>  
गुरु राजा आगे पदमासण नीच<sup>२० २१</sup> तिया घर जावेजी ॥ या ॥ ५ ॥

जान सोनारसूं<sup>२३</sup> प्रीत करे बलि, जाण कुकर्मनें ठानेजी,<sup>२४</sup> वाद करे पंडितसुं<sup>२५</sup>  
 रामतमें,<sup>२६</sup> गुरुनो कथन<sup>२७</sup> नही मानेजी ॥ यां ॥ ६ ॥ नृप निश्वास करे<sup>२८</sup>  
 मार्गमें,<sup>२९</sup> जातीतियवत लावेजी ॥ वे ग्रने पहली रोगनी पूत्रै, डर  
 फिर मारग जावेजी ॥ या ॥ ७ ॥ एरु घणासूं वाढ करे वात कहता<sup>३०</sup>  
 हुंकारो न देवेजी. आप वात रुद्धि आप हसै अरु भगता प्रमादनें सेवेजी<sup>३१</sup>  
 ॥ या ॥ ८ ॥ उकडु पेसें जे बहुवारे,<sup>३२</sup> अणजाणया साय सिखावेजी<sup>३३</sup>  
 ॥ निर्बुद्धिमृ मिसलत बाधे,<sup>३४</sup> ऊरुडु वेसीने खावेजी ॥ यां ॥ ९ ॥  
 राजपथमे पेठ करे,<sup>३५</sup> खाता ऊठे नें वेठेजी ॥ लाजरहित करे मुखवाता,<sup>३६</sup>  
 वर्म करता जालसमें पेठेजी ॥ या ॥ १० ॥ दाढी समारता जे मुख<sup>३७</sup>  
 चोले,<sup>३८</sup> शकुन पालता चालेजी ॥ विन अराधे गाली काढे, दीपथी  
 अग्न प्रजालेजी ॥ यां ॥ ११ ॥ लडतां पहली चोट जे गाले,<sup>३९</sup> अण  
 भातो जे खावेजी ॥ घडता खाती पासे वेसें, उडे पाणी तेरुविन<sup>४०</sup>  
 जावेजी ॥ यां ॥ १२ ॥ जीमतां भणतां रोस करे, जाता साप सिंघनें<sup>४१</sup>  
 छेडेजी, असवार विना तनारी करे,<sup>४२</sup> परवर जावे विन तेडेजी ॥<sup>४३</sup>  
 ॥ या ॥ १३ ॥ आपणा गुणनो गर्भ करे नर, मंत्रीनें अपमानेजी दांन<sup>४४</sup>  
 देईनें मान करे,<sup>४५</sup> पखवालासूं वाद जे तानेजी ॥ यां ॥ १४ ॥ छती स-

<sup>६२</sup> गत नर धर्म करे नही, <sup>६३</sup> धर्म करताने पालेजी ॥ <sup>६४</sup> गुह्यकी वात कहे घणा आगे  
<sup>६५</sup> धन कारण चोरी विचारेजी ॥ यां ॥ १५ ॥ <sup>६६</sup> तुरत पांणी पीवे जीमीनें,  
<sup>६७</sup> राह चालता खावेजी ॥ <sup>६८</sup> पारकी निंदा करे मुत्तसेती, <sup>६९</sup> <sup>७०</sup> शिष्य वेदानें  
<sup>७१</sup> घणो लडावेजी ॥ यां ॥ १६ ॥ <sup>७२</sup> घेठा मनुषने शिवा देवें, परने झ-  
<sup>७३</sup> गडो करावेजी ॥ <sup>७४</sup> रूपवती तियसू करे परचो, <sup>७५</sup> लायलागा सारुडो  
<sup>७६</sup> जावेजी ॥ या ॥ १७ ॥ <sup>७७</sup> वेप त्रिना जे वेधपणो करे, <sup>७८</sup> <sup>७९</sup> <sup>८०</sup> रूप वापी कठे  
<sup>८१</sup> हासैजी ॥ <sup>८२</sup> वे जणा वात करे जिहा जावे, निज तिय मर्म <sup>८३</sup> प्रकासेजी  
<sup>८४</sup> ॥ या ॥ १८ ॥ <sup>८५</sup> गजा गेंड देतानटे, <sup>८६</sup> करे पेश्यामु प्रीत अथागैजी ॥  
<sup>८७</sup> राजा गुरु मायतना अरगुण, <sup>८८</sup> सोले जे किण आगेजी ॥ यां ॥ १९ ॥  
<sup>८९</sup> लौकिकनो व्यवहार ऊडावे, <sup>९०</sup> हितकी <sup>९१</sup> कथाम् कोपेजी ॥  
<sup>९२</sup> आलसी गुणवतकी व्याचर्चमें, <sup>९३</sup> उपगारकीया ने लोपे जी ॥ या ॥ २० ॥  
<sup>९४</sup> पाप करी हर्ष पामे, <sup>९५</sup> चालता करे प्रमाद ऊजारेजी ॥ <sup>९६</sup> त्रिगर सोडाया स-  
<sup>९७</sup> भामे बोले बलि नृपने दरजारेजी ॥ यां ॥ २१ ॥ <sup>९८</sup> दपति <sup>९९</sup> वेडा छाने  
<sup>१००</sup> जाये, <sup>१०१</sup> अत्रतो आल शिर लेवेजी ॥ <sup>१०२</sup> सगत विना जो करे तपस्या, पर-  
<sup>१०३</sup> नागीन् मैथुन सेवेजी ॥ या ॥ २२ ॥ <sup>१०४</sup> अपनी किर्ति आपही बोभै,  
<sup>१०५</sup> मंत्री तु करे <sup>१०६</sup> रुलेसेजी ॥ <sup>१०७</sup> जातो साथ छोडी रहे पाछौ, <sup>१०८</sup> करे अजाण्यो

भ्रमेसेजी ॥ या ॥ २३ ॥ <sup>१०१</sup>पंचा माहे <sup>१०२ १०३</sup>श्रुत वदे देवगुरुकी निंदा ठानेजी  
 ॥ <sup>१०४</sup>धनके अर्थ <sup>१०५</sup>जुवा जे खेले, <sup>१०६</sup>चोरीकी वस्तु आनेजी ॥ यां ॥ २४ ॥  
<sup>१०९</sup>मानके कारण <sup>१०९</sup>धन जे खरचे, <sup>११०</sup>व्यर्था क्लेश करे घरमेंजी ॥ दुःख आ-  
<sup>१०८</sup>व्या बहु <sup>१०८</sup>दीनपणो करे, <sup>११०</sup>फूले आया <sup>११०</sup>सर्मेजी ॥ यां ॥ २५ ॥ <sup>११०</sup>धन उप-  
<sup>१११</sup>शांत करे <sup>१११</sup>आडंबर, <sup>११२</sup>ग्रामेसरने <sup>११२</sup>रीसावेजी, <sup>११२</sup>अप्रतीत <sup>११२</sup>कारण्यासु <sup>११२</sup>व्योहार  
<sup>११३</sup>करे, <sup>११३</sup>आप आपनो <sup>११३</sup>वैर <sup>११३</sup>जितावेजी ॥ यां ॥ २६ ॥ <sup>११४</sup>पाणी <sup>११४</sup>पीकर <sup>११४</sup>काम  
<sup>११५</sup>करे जे, <sup>११५</sup>पूर्व <sup>११५</sup>क्लेश <sup>११५</sup>उदीरेजी ॥ <sup>११५</sup>नृपसूं <sup>११५</sup>बहु <sup>११५</sup>मत्रीपणो <sup>११५</sup>मांडे, <sup>११५</sup>सोवे जे <sup>११५</sup>अग्नि  
<sup>११६</sup>त्तीरेजी ॥ २७ ॥ <sup>११६</sup>वडां <sup>११६</sup>तणो <sup>११६</sup>कथन <sup>११६</sup>नहि <sup>११६</sup>मानें <sup>११६</sup>रेसाणने <sup>११६</sup>धन <sup>११६</sup>खरचेजी,  
<sup>१२०</sup>विश्वासघात <sup>१२०</sup>अरु <sup>१२०</sup>अपघात <sup>१२०</sup>करें, <sup>१२०</sup>कुगुरु <sup>१२०</sup>कुदवने <sup>१२०</sup>अरचेजी ॥ यां ॥ २८ ॥  
<sup>१२४</sup>घरने <sup>१२४</sup>खोटी <sup>१२४</sup>सला <sup>१२४</sup>देवे, <sup>१२४</sup>धर्म <sup>१२४</sup>अर्थे <sup>१२४</sup>जीव <sup>१२४</sup>हणावेजी ॥ <sup>१२४</sup>हि <sup>१२४</sup>स्यामांही <sup>१२४</sup>धर्म <sup>१२४</sup>परुपें,  
<sup>१२७</sup>लपस्या <sup>१२७</sup>कर <sup>१२७</sup>पठतावेजी ॥ या ॥ २९ ॥ <sup>१२८</sup>अरि <sup>१२८</sup>विश्वास <sup>१२८</sup>वनवंतसुं <sup>१२८</sup>लं-  
<sup>१३०</sup>डाई, <sup>१३०</sup>करे <sup>१३०</sup>करणी <sup>१३०</sup>करनें <sup>१३०</sup>निहाणोजी, <sup>१३०</sup>गुरु <sup>१३०</sup>मायतसु <sup>१३०</sup>अतर <sup>१३०</sup>राखें, <sup>१३०</sup>चारु  
<sup>१३४</sup>को <sup>१३४</sup>बधावे <sup>१३४</sup>मानोजी ॥ यां ॥ ३० ॥ <sup>१३४</sup>साकडी <sup>१३४</sup>गलियांमाही <sup>१३४</sup>दोढे, <sup>१३४</sup>सीख  
<sup>१३५</sup>कुगुरुकी <sup>१३५</sup>मानेजी, <sup>१३५</sup>राजा <sup>१३५</sup>सेती <sup>१३५</sup>करे <sup>१३५</sup>साटशता, <sup>१३५</sup>लीधा <sup>१३५</sup>सोगन <sup>१३५</sup>भानेजी  
 ॥ या ॥ ३१ ॥ <sup>१३६</sup>छती <sup>१३६</sup>जोगनाई <sup>१३६</sup>दान <sup>१३६</sup>न <sup>१३६</sup>देवे, <sup>१३६</sup>दान <sup>१३६</sup>देई  
<sup>१३६</sup>प्यछतावेजी ॥ <sup>१३६</sup>ओछां <sup>१३६</sup>राजके <sup>१३६</sup>वास <sup>१३६</sup>वसे <sup>१३६</sup>तो, <sup>१३६</sup>ते <sup>१३६</sup>निश्च <sup>१३६</sup>दुख <sup>१३६</sup>पावेजी

॥ या ॥ ३२ ॥ <sup>१४१</sup>टेख्याविन जो सगपण कीजै, <sup>१४२</sup>रूपटी विश्वास धरी  
<sup>१४३</sup>जेजी ॥ <sup>१४४</sup>तपसीगडाऊ अवगुण जोत्रै, <sup>१४५</sup>ओजो जोरो करीजेजी ॥ या ॥ ३३ ॥  
<sup>१४६</sup>क्रोधी राकचु वाढ करे, <sup>१४७</sup>होडा होडे द्रव्य गमावेजी, <sup>१४८</sup>अरथ विना वैरीने  
छेडे, <sup>१४९</sup>काम त्रिगडया पीछे पडतावेजी ॥ या ३४ ॥ एव टेढसों  
वोल मूर्खना, ग्रथमें नटि देख्या चाल्याजी ॥ पत्रमाही लिखी थोडा  
वाच्या, एक ढालमाही घाल्याजी ॥ यां ॥ ३५ ॥ सत्रत् उगणीसे  
पेंतीसें, सादपुरे चोमासेजी ॥ <sup>१५०</sup>सूर्ग खड्कीसी चतुर सुणीजो, नथमल  
इम भासैजी ॥ या ॥ ३६ ॥ इति ॥

### १३० [ राग-नाजकडी व्याहण आवे ]

ऋषभ अजित संभव अभिनदन, सुमत पदम मुखरागी ॥ नृपा-  
रसजीने चदा प्रभुजी, जामन मरण नीवारीरे ॥ १ ॥ में जिन चौवीसे  
वदु, भव भव पाप निरुदुरे, ॥ में ॥ टेरे ॥  
सुत्रुद्धि शीतल श्रेयाश वासपुज, विमल विमलमतिदाता ॥ अनत  
वर्म श्रीशातिजिनेश्वर, वरताई मुखदाता ॥ में ॥ २ ॥ कुथु अरह  
मट्टि मुनिमुत्रतजी, भवोदधि तारणहारो ॥ नमि नेम पार्श्वमहावीरजी,  
सासणना सिग्दारो ॥ में ॥ ३ ॥ ए चौवीसे जिनवर मोटा, अजरा-  
भर पद पाया, लोकरु शिखर प्रभु जाय विराज्या, ञठे कर्म नहीं  
कायारे ॥ में ॥ ४ ॥ ए चौवीसे जे नर समरे, मन वच तन सुध  
करने ॥ ते नर निश्चे स्त्रिपद पायें, महा भवोदधि तरनेरे ॥ में ॥  
॥ ५ ॥ ईण भव दुख दोहग नटि आवे, भ्याने जो शुध भावे ॥ कर्मका  
केल करे तसु घरमें, सुख सपत बहु पायै ॥ में ॥ ६ ॥ सरपख  
निवि भूशालमें विचरतें, महेर क्रश्रगढ आया ॥ माघ कृष्ण एरुम  
दिन जिनना, नथमल पंगुण गोंया ॥ में ॥ ७ ॥ इति ॥



## १३३ ( राग—लावणी. )

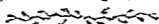
भला गुरु सोहीहे जगमे. २ तृष्णा लोभ त्याग परिग्रह तज,  
खडा मुक्त मगमे. ॥ भला. ॥ टेर ॥

ध्यान मस्त अवधूत भेषमें, सत्य वचन बोलें,  
संसय ग्रंथ जगत जीवनके—अंतरको खोले ॥ भला गुरु. ॥ १ ॥  
तेजवंत अति शांत क्रांत युत, करुणा अधिकारी,  
भन्यजीव तारनको मिथ्या, पकर पटक मारी ॥ भला गुरु. ॥ २ ॥  
कर्म बंधन काटनको अतिशय, सुध मारग ज्यांसा,  
चंपा राम सरणे लेयाकी, जनम सफल ताका ॥ भला गुरु. ॥ ३ ॥

## १३४ ( राग—पूर्ववत्—लावणी )

श्रावक सवही हे सचा, इष्ट कष्ट लखि नष्ट होत नही,  
श्री जिनका कचा ॥ टेर ॥

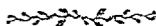
विना शक्ति सजमते न्यारे, भक्ति मुग्ध पीवे,  
स्वल्प नेम व्रत धारे केते, शुभ ऊद्यम जीवे ॥ श्रावक० ॥ १ ॥  
द्वादश व्रत धरे गुरु मुखतें, क्रि ते करे ध्यान,  
सिद्धान्त के शरने केते, सुने केते पुरान ॥ श्रावक० ॥ २ ॥  
निजगुरु चरण शरण समहीने, गहिसे वारा ते,  
पच परमपद चउवीसे जिन, या समज्ञत गाते ॥ श्रावक० ॥ ३ ॥  
मिथ्यामत जो मिले जगतमें, सो माने नही एरु,  
यथा ज्ञान समकित दश सुचमे लहि पकरेऽटेक ॥ श्रावक० ॥ ४ ॥  
कालपाय शुभ पहुचें शिवपद, जितने ए भाड,  
चपा राम प्यार समसे, करनीकी चतुराड ॥ श्रावक. ॥ ५ ॥



१३५ [ राग-पूर्ववत्-लावणी ]

वडा गुण शीलतणा जगमे, २ जेसा सोभितपूर्ण चन्द्रमा,  
नभ गामी खगमे. ॥ टेर ॥

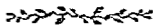
इन्द्र नरिंद्र शेष सब पूजे, पग वाही जनके,  
जोत्रिय भोगत्याग फुन त्यागे, भवत्रिकार मनके ॥ वडा गुण शील. ॥ १ ॥  
अगनि नीर पौन विष आयुग, ना लगे कोई,  
चपाराम शील धारी सम, वडा नहि कोई ॥ वडा गुण शील. ॥ २ ॥



१३६ ( राग-पूर्ववत्-लावणी )

भलाहे दान सदा दैना २, देश क्षेत्र अरु काल पात्र लखि,  
सेवा फल लैना ॥ टेर ॥

जैसा पुरुष मिले तैसी विध, उचित्त भक्ति लीजे,  
असनवसन औपधि अरु गहिमा, यथा शक्ति कीजे ॥ भलाहे दान. ॥ १ ॥  
दुःखित भुक्ति दीन हीनपे, करुणां चित दीजे,  
चपाराम सुजस सुख परभव, सुगपान पीजे ॥ भलाहे दान. ॥ २ ॥



१३७ ( राग-पूर्ववत्-लावणी )

सजन तप निहचें कर तपनां, २ देह नेहकू त्याग देत किन,  
ए नाहि अपना ॥ सजन. ॥ १ ॥  
गढ मढ कोट महल जल शलकी, जेती ए धपनां,  
काल पाय नासत खिनमें, जैसे निशि सपना ॥ सजन. ॥ २ ॥

कर वैराग देख समतातै, अंत समें खपना,  
चंपारांम कालसैं डर नित, ईष्ट नांम जपनां ॥ सजन० ॥ ३ ॥

### १३८ ( राग-पूर्ववत्-लावणी )

सुझानी जबलग मन गंधा, तबलग कोड उपाय करे. किन,  
सब झूठा धंधा ॥ १ ॥ टेरे ॥  
क्रोध मान लोभ मायातें, चित तेरा मैला,  
एक लाख शुरू करे क्यो न तू नहि मिले गैला ॥ सुझानी ॥ २ ॥  
याते मोह महा भ्रमतजके, भाव शुध करना,  
चंपारांम वनेतां केवल, भवसागर तिरना ॥ सुझानी० ॥ ३ ॥

### १३९: [ राग-पूर्ववत्-लावणी ]

सजन सुन क्रोध नहि करनां २, क्रोधपाय राजनकों जुधकर,  
परया नरक परना ॥ टेरे ॥ १ ॥  
जाके काज क्रोध तिन कीना, सोसवरी छोडी,  
जमी जायगां धन सतति त्रिय, कर ममता जोडी ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥  
सरना जोर नहि काउका, जमदेवे मारे,  
चंपारांम क्रोध शूली भोगे, ना कोड टारे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

### १४० ( राग-पूर्ववत्-लावणी )

सजन सुन मान बैंग त्यागो, मान क्रियो रावण निज वलको,  
सीस चक्र लागो ॥ टेरे ॥ १ ॥  
मान ठान सब घरकूं खोया, दुर्योधन मानी,  
सोर अपने भाईनकों, टेककु मन ठानी ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥

मांनविपाक नीच कुल उपजे, भव भव दुख पावे,  
चपारांम सीख आगम, सुन सबको समझावै ॥सजन सुन० ॥ ३ ॥

### १४१ [ राग-पूर्ववत्-लावणी ]

सजन सुन माया दुखदाता, २ मायाके परसग पलकमें,  
प्यार दूट जाता ॥ टेरे ॥ १ ॥

मात तात भ्रात सुत घरकें, अरु जेते प्यारे,  
माया कपट कूड छल बल लखि, सब होते न्यारे ॥सजन सुन० ॥ २ ॥

माया देख मित्र ममता तज, तुरत शत्रु होवे,  
माया विमाया सबसू कर, वृथा जन्म खोवे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

यहतो जानतहे सब कोई, ज्ञानी इम बोले,  
चंपारांम पाय षष्ठ्यगति, जनम जनम डोले ॥सजन सुन० ॥ ४ ॥

### १४२ [ राग-पूर्ववत्-लावणी ]

सजन सुन लोभ दुष्ट भारी, आठों पहर पिंड नहि छोडे,  
अतिही दुखकारी ॥ टेरे ॥ १ ॥

ईन्द्र चन्द्र धरणेंद्र सुरासुर, याहि नांहि छोडे,  
याहिके परसग जगतमें, पढयो जीव खोडें ॥ सजन सुन० ॥ २ ॥

कौडी मात्र परिग्रह नांही, आत्म रस पांगे,  
चपारांम पूज्य सबहीको, जो यांकू त्यागे ॥ सजन सुन० ॥ ३ ॥

### १४३ [ राग-पूर्ववत्-लावणी ]

फकीरी या विधि ते साची ॥ फ० ॥ दुनिया हवस त्यागके रसनां,  
फलमां पदिनाची ॥ फकीरी० ॥ १ ॥

जरब मारके दिलको खोले, समजी करे फाका,  
 करे पोर परतीत रीतते, ध्यान करे ताका ॥ फकीरी. ॥ २ ॥  
 खुदी छांड खुद खुदा पिछाने, अरु कुरान कहणा,  
 सीखे सीखवेन दुनियाको, सगरहित रहना ॥ फकीरी० ॥ ३ ॥  
 रंग जंगमे फिरर खुसी नही, साफ चित्त रहनां,  
 डुकडा भिले तव कल सेती, जो अपना लहना ॥ फकीरी० ॥ ४ ॥  
 ताको खाय सुरत अल्लामें, लगा रूह धोवे,  
 बैठ एकंत शाति समताते, ध्यान जोत जोवे ॥ फकीरी० ॥ ५ ॥  
 चंपारांम परम मो डिलका, मुसलमान पावे,  
 दरजा पाय पीर कात्रलमें, ला मकान जावे ॥ फकीरी० ॥ ६ ॥



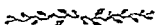
### १४४ ( राग पूर्ववत्-लावणी )

सजन तू गाफल किस बलतेरे ॥ सजन० ॥  
 धन संपति उपजे विनसें सत्र ज्योल हरे जलते ॥ सजन० ॥ १ ॥  
 छिन्ही जिन तेरी आयु जातहै, ज्यो प्रवाह जलका,  
 जोवन जोर जरा नहि ठहरे, ज्यो विजली भलका ॥ सजन० ॥ २ ॥  
 मंत्र तत्र देव याते, कलु नही विचार होवे,  
 काल तीन लोकेकां जालिम, समे समे खोवे ॥ सजन० ॥ ३ ॥  
 चंपाराम प्रमाद पलकहू, करे नाही ज्ञानी,  
 तेही धन्य सुध सतगुरुकी, आज्ञा पहचानी ॥ सजन० ॥ ४ ॥

### १४५ ( राग चलत-लावणी )

जै शिव कामि निकंत वीर भगवत, अनत सुखाकरहै,  
 बिधिगिर गंजन वृध मनरजन, भ्रम तम भंजन भास्करहै ॥ डेर० ॥

जेन उपदेशौ द्विविध धर्मजो, सो सुर सिद्धि रमाकरहै,  
 मवि उर कुमुद नमोदन भव तप, हरण अनूप निशाकरहै ॥ जै शिव० ॥ १ ॥  
 जासो अनत सुगुणगणको नित, गणति गणी गण थाकरहै,  
 इंद्र फणींद्र खगेंद्र चंद्र जग, ठाकुर जांके चाकरहै ॥ जै शिव० ॥ २ ॥  
 परम विराग रहें जगते पै, जग जतु रक्षा करहै,  
 जा भुके पदनव केवल लिब्धसू, है कमला कमलाकरहै ॥ जै शिव० ॥ ३ ॥  
 जांके ध्यान कृपा न राग रूव फासी हरण समता करहै,  
 दोलनमे पदकू हरण भय, बाधा शिव राधाकरहै ॥ जै शिव० ॥ ४ ॥



१४६ [ राग मरहटी-लावणी ]

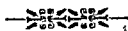
खी जिनचड छवी थारी, भर्म बुधि आज गई म्हारी ॥ टेर. ॥  
 सिका अग्र दृष्टि जोहे, नेत्र चंचलता अप रोहै,  
 म समरमी भावसोहै, भविक नर सुर मुनि मन मोहै,  
 म वैराग्य भावकारी ॥ भर्म. ॥ १ ॥  
 न आवरणी विधि नास्यो, लोक अरु अलोक परगास्यो,  
 व्य गुण परज भाव भास्यो, नित्य निज आतममें वास्यो,  
 ताति रस उठरत हितकारी ॥ भर्म ॥ २ ॥  
 रस कळ कीर्ष अजुळ धारे, अक्यतर सुण लसुद्र धारे,  
 मल्पमति कवि किम उचारे, शेषगण पति कथ कथ धारे,  
 म्ही कमला अचिरज कारी ॥ भर्म. ॥ ३ ॥  
 मभू तनपर काति छाजे, कोटि रवि मदन ठवी लाजे,  
 छत्र त्रय मस्तकपर राजे, लख ततखिण्डी अप भाजे,  
 समव शरणादि लच्छि न्यारी ॥ भर्म. ॥ ४ ॥  
 वल्ल शम्भादी सब धारे, सकल रागादि भाव धारे,

ध्यान वरकर कृपा न धारे, महा भठ मोह राय मारे,  
भयो निर आकुल सुख भारी ॥ भर्म. ॥ ५ ॥

नही कोइ तुम समान देवा, इद्र शहु करत चरण सेवा,  
भवार्णव पोत परम खेवा, रत्न त्रय निधि निधीश देवा,  
परम जस कीरति विस्तारी ॥ भर्म ॥ ६ ॥

कर्म वश भव भय भटकार्द, तुम्ही सब जानत जिनराई,  
आजि मम समय लब्धि आई, लहो जिन दर्शन सुखदाई,  
काज सब सरे सुहितकागी ॥ भर्म. ॥ ७ ॥

तुंही जिनराज पतित पावन्, तुंही सिव मारग दरसावन्,  
तुंही विधि पर्वत केढावन्, तुंही जर भरण हरण जामन्,  
वसत मान क्मन छविथारी ॥ भर्म. ॥ ८ ॥



### १४७ [ राग--चलित--लावणी ]

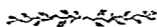
जात वत शिक्ष हुवे मुपातर सबइक सरखे मत जानोरे  
भाई सब इक सरखे मत जानो ॥ विनय वत गुरु इगित ग्याता  
के एसे शिष्य गुन खानो ॥ टेर ॥

ग्यानी ध्यानी वढे वयरागी, नीची दृष्ट करी चाले,  
गुरु बहु वेर काज फरमावे, नाकमा यसल नही घाले,  
तहत कहिनें करे अंगी कृत्य, आप वचन है परिमानो ॥ जात. ॥ १ ॥

पदपद यत्न करे श्री गुरुके, दर्श देख दिलमें फूले २  
खान पान अरु सयनासनमें, गुरु भक्ति कू नहि भूले,  
सबकार जत जयासे तिष्टे, जब गुरु बांचे ब्याक्षपानो ॥ जात. ॥ २ ॥

गुरु अवनीत शिष्य जो होवे, ताहुं मुख नहि वतलावे २  
वाकी सग कीये तें आपही संगत जैसा फल पावे,  
बिगरै पय काजी विंदूतें एह जात उरमें आनो ॥ जात० ॥ ३ ॥

रात दिवस गुरु पासे तिष्ठे, विन यासन कर मृदुनाई,  
 सभा मांही गुरु विच नहि शोले, चितमें जाके चतुराई,  
 जो होय व्यग वातमें, सोतो गुरुसे नहि रखे ठानो ॥ जात० ॥ ४ ॥  
 गुरु असभद वात रुहे जो सोही सीस चढालेवे,  
 गुरु वचनकी रखे आसता, पीडा उत्तर नहि देवे,  
 सर्प माप शिष्य हुवो, निरुजतन, ए निश्चय करके मानो ॥ जात. ॥ ५ ॥  
 ऐसे विनयगत शिष्य गुरुके, सो जिन मारग दीपावे,  
 सूत्रगिनाता ध्येन पचमे, पथककी ऊपम यावे,  
 नयमल युगभव भलाजो चाहो, तो गुरुका विनय ठानो ॥ जात. ॥ ६ ॥



१४८ [ राग-चलित-लावणी )

अव अवनीत शिष्य भयज ऐसे, कथन गुरुका नहि करता,  
 महा मद मस्त बडे अविवेकी, लोफ लाजसे नहि डगता ॥ टेर ॥  
 माहो माही गुरु भाईमें, अतस हेत नहि धरता,  
 जिच में राजी घूटेज वाता, लजा तज जिचमें लगता ॥ अ२० ॥ १ ॥  
 रस इद्रीके भये लोलपी, महिप जेम शशिदिन चरता,  
 गुरु देवनकी सार करे कुन, पेडले पेट अपना भरता ॥ अ३० ॥ २ ॥  
 थानक सेती गुरु देवनसू, विन पूछयाही नीसरता,  
 घरघरमें गलियार तणी परे, विना प्रयोजन वे फिरता ॥ अ४ ॥ ३ ॥  
 सीपनकी बुधसिरे शासकी, तो पिण्य उग्रम नहि करता,  
 मृता रहना वातां करना, रात दिवस एमे गरता ॥ अ५ ॥ ४ ॥  
 हित शिक्षाकी वात करे गुरु, श्वान जेम भुस भुस करता,  
 क्रीच पीच पाथर डागेंते, मुख वस्त्र अपना भगता ॥ अ६ ॥ ५ ॥



गुरु व्यावचके डरके भारे, न करे गुरु पासे स्थिरता,  
 अदृष्ट होय दृष्टके तिष्ठे, कहो गुरुके दिल किम उरता ॥ अव. ॥६॥  
 अकृत्य देख गुरु देत शिक्षामन, कदुक वचन पीछा झरता,  
 गुरु भाईके सगे म समझो, जो जन गुरुसे नही टरता ॥ अव. ॥७॥  
 उत्तरा ध्येन अध्येन प्रथममें, ऐसे कुशिष्य नही तिरता,  
 नथमल वा शिष्यकी बलिहारी, गुरु आंग सिर पर धरता ॥ अव. ८॥



### १४९ [ राग-चलित-लावणी ]

करामात कलजुगमें थोड़ी भोले खाते गोता है,  
 निज पुर स्वारथ कौतज कातर, जन जन आगल रोता है ॥ टे. ॥  
 भेख देख मत भूले भोला, हिरदे क्यों नही जोता है,  
 असन वसनको फिरे झीकते, उनसे कहो क्या होता है ॥करामात॥१॥  
 परकू यंत्र मंत्र लिख टेवे, आय सिद्धाई जोता है,  
 इतनो सोचो क्यू नही दिलमे, नागा कहा निचोता है ॥करामात॥२॥  
 लागवता कर सिद्ध बने फिर, भोले जनको मोता है,  
 मिले उस्ताद भेद जब पावे, बधी पैठ डवोता है ॥करामात. ॥३॥  
 साचा सिद्ध प्रगट नहि होता, उग वाजीगर वोता है,  
 थोथा हुग बधा कर मूरख, बीज दुर्गतका वोता है ॥ करामात ॥४॥  
 हिमिया किमिया फिरे हेरते, हाथे रात विगोना है,  
 जो इस चाले लागे जगतमें, तन धन अपना खोता है ॥करामात ॥५॥  
 आसा वृसना जीते सो सिद्ध, और सिद्ध सत्र थोथा है,  
 नथमल साचा उलमी मनुँरु, निजपर आग धोता है ॥करामात.॥६॥



१५० [ राग मुसलमानी-लावणी ]

अरे वागुवा गुलमत करे गुलसँ गुलको हसने दे,  
 में गरीब बुल बुल मेराई, इस गुलचेमे घर बसने दे ॥ टेर ॥  
 झुल्लाके बोलीयु बुल बुल, नया एक तू है माली,  
 एह बोही वागहै यांपर, कितनेही करुन गये रखवाली,  
 जिन कलीयोऊ तू फाटेया, उडी दुखासुं है पाली,  
 लोसल देखिये सुलेंगे फूल, झुकेगी सब डाली,  
 मान रुधाले बिल्लाबू टावन, आव जोलसके फसने दे ॥ में गरीब. ॥ १ ॥  
 आपही अपनी फसल पेसाखी, सब दरखतकी फूटेंगी,  
 बोहोत सीकलियां खीलेंगी जब, खुदवा खुद यह टूटेंगी,  
 जब ए क्यारा भरेगा जलसे, नहरे जिस वक्त छूटेंगी,  
 इसी चिमनका हमेसां मजा बुल बुल लूटेंगी,  
 वैरी नागन इसे है तनक, मती मनेकर इसने दे ॥ में गरीब. ॥ २ ॥  
 टूटेंगे जब होद फुंवारे, च्यारो तरफसे व्है जारी ॥  
 छूटेंगी चदर बोलेंगे, मोर सोर न्हैगे भारी ॥  
 अनेक तरेंके बोले ज्यानवर, हूक लगे उनकी प्यारी ॥  
 सुनकर यहां पर, आवेंगे सब नर नारी ॥  
 दे दरवाजा खोल वागका, सारी खलकको धसने दे ॥ में गरीब. ॥ ३ ॥  
 रसाल गिरजी कहेंके इरुदिन, यह बुल बुल उडजावेगा ॥  
 इसी चिमन पे निजर भर, फेर निजर नहीं आवेंगा ॥  
 जसु सिंध कहे कोई मालकसँ ध्यान लगावेगा ॥  
 तुम सुनो जगनजी अपनी आवा गमन मिटावेगा ॥  
 कसता है वो अपने भक्तको, मती मनेकर कसने दे ॥ में गरीब. ॥ ४ ॥



## १५१ [ राग-लावणी ]

नाम प्रभुका दिलसैं प्यारे कवी भूलाना ना चाहिये,  
पाकर नरका वदन रतनको, खाकभिलाना ना चाहिये ॥ टेर ॥  
मुदर नारी देख पियारी मनको लुभाना ना चाहिये,  
जलती अगनमें जान पतंग समान जलाना ना चाहिये,  
बिन जाने परिणाम कामको हाथ लगाना ना चाहिये,  
कोई दिनका ख्याल कपटका जाल विठाना ना चाहिये

॥ नाम प्रभुका. ॥ १ ॥

यह माया विजलीका चमका मनको जमाना ना चाहिये,  
विठडेगा सजोग भोगका रोग लगाना ना चाहिये,  
लगे हमेशा रंग संग दुर्जनके जाना ना चाहिये,  
नदी नावकी रीत किसीसैं भीत लगाना ना चाहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ २ ॥

बोधव जनके हेत पापका खेत जमाना ना चाहिये,  
अपने पैरपर अपने कर कर चोट लगाना ना चाहिये,  
अपना करना भरना दोष किसीपर लाना ना चाहिये,  
अपनी आंख हे मद चंद्रको दोष बतलाना ना चाहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ३ ॥

करना जो शुभ काज आजकर देर लगाना ना चाहिये,  
कल जाने क्या हाल कालको दूर पिछाना ना चाहिये,  
दुर्लभ तनको पाय जाय विषयोमें गमाना ना चाहिये,  
भवसागरमें नाव पाय चक्रमें डुवाना ना चाहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ४ ॥

दारादिक सबगेर फेर तिनमें अटकाना ना चाहिये,  
करि वमनके उपर फिरकर दिल ललचाना ना चाहिये,  
जान आपनौ रूप कूप गृहमें लटकाना ना चाहिये,  
गुरुको खोज मझवका बोझ उठाना ना चाहिये ॥ नाम प्रभुका. ॥ ५ ॥

वचा चाहे पापनसे मनसे मौत भुलाना ना चाहिये,  
 जो हे सुखकी लागतो कर सब त्याग फिराना ना चाहिये,  
 जो चाहेतु ज्ञान विषय के वाण विद्या ना चाहिये,  
 जो है मोक्ष आश सगकी पाश फसाना ना चाहिये ॥ नामप्रभुका. ॥ ६ ॥  
 परमेश्वर हेतनमे वनमें, खोज न जाना ना चाहिये,  
 कस्तूरी है पास पिरगको, घास सुगाना ना चाहिये,  
 कर सतसग विचार निहार, कमी विसराना ना चाहिये,  
 विनसत जनसे कोटि जतनसें, पर पर पद पाना ना चाहिये ॥ ७ ॥  
 ॥ नाम प्रभुका. ॥

आतम सुखको भोग, भोगमें फिर भटकाना ना चाहिये,  
 पाई जिसको खाड, छाड तिस्को खल खाना ना चाहिये,  
 यह जग स्वपना जान न्यानसें, मनको डुलाना ना चाहिये,  
 ब्रह्मानदको हेर फेर भवमें भरमाना ना चाहिये ॥ नामप्रभुका. ॥ ८ ॥



### १५२ ( लावणी-लंगडी )

सुन दिल प्यारे भज करले जिनवरका वारपारा ॥ टेर. ॥

इस दुनियांमे एक बगीचा रग रगके फूल खिले,  
 कोई सावत कोई मुरजे कोई आजकेहे निकले,  
 आगे पीछे खिर जावेंगे वारी वारीमें सगले,  
 कोइ किसिका सग न साथी आवत जावत हे ईकले,  
 उनसे प्रीत करे क्या मूरख ईकदिन हो जासी न्यारा ॥ सुनदिल. ॥ १ ॥  
 इस दुनियांमे एक रतन है, मिलता वारवार नही,  
 जैसे फूल गिराडा लीसे, फिर होता गुलजार नही,  
 चस्की किमत हैवढी भारी, जानत लोग गँवार नहि,

परमेश्वरके मिलनेका, फिर उसके पिन दुवार नही,  
काच खरीद करे बदले में देकर उसकु मति मारा ॥ मुनदिल. ॥ २ ॥

इस दुनियामे ईक पूतलीने एसा भारी जाल रचा,  
स्वर्ग लोक पाताल जमीपर, कोई न उसके हात बचा,  
क्या जोगी क्या पीर पंगवर, सबकों उसने दीया नचा,  
फसा नहि जो उस बधनमें, सोइ है गुरुदेव सचा,  
मोक्ष मारगके जानेमें, सो ठग जानो लुटनहारा ॥ मुनदिल. ॥ ३ ॥

इस दुनियामे एरु अचत्रा, हमने देखा है जो बडा,  
एक छोडकर चला जमीकु दुजा करता है जगडा,  
वो नहि मनमें समजे मूर्ख, मे भी जावन हार खडा,  
घडी पलकका नही ठिकाना, किसके भरोसे भूल पडा,  
आगे जाना समान करले, तियार नहि करवारा ॥ मुन दिल. ॥ ४ ॥

ईस दुनियामें एक रूप है, जिसका पार कोई नहि पावे,  
तिसके भरने कारन प्राणी, देश दिगंतर कौ जावे,  
ध्यान भजन चिंतन ईश्वरका, उसके कारण विसरावे,  
दीन भया पर घरमें जाकर, सेवा कर कर मर जावे,  
जिसने बनाया सोई भरेगा शोच फिर तज देशारा.

॥ मुन दिल. ॥ ५ ॥

इस दुनियामे एक वृक्षपर पछी करत वसे राहे,  
सांज पडे जब सब मिल जावे, विदुरे होत सबे राहे,  
चार घडीके रहने कारण, फरते मेरा मेरा हे,  
एसी बात न मनमें लावे, वस वस गया बडेराहे,  
क्याले आ क्या ले जासी, वृथा करत हे अंकारा ॥ मुनदिल ॥ ६ ॥  
इस दुनियाके बीच निरंतर, एरु नदी चलती भारी,  
दिन दिन पल पल छिन छिन उसका वेग पडा हे बलकारी,

पसु पक्षी नरदेव मनुज, उसमें दुनिया बहती सारी,  
जमे न उसमे पैर कीसीका, करके जतन सब पचहारी,  
विना ईश्वरके सुमरन तेरा, कमी न होगा निस्तारा ॥ सुनदिल ॥ ७ ॥  
ईस दुनियामें एक अधारा सबीकी आखो मे उाया,  
जिस्के कारन सुझ पडे नही, कोन हु मे कासे आया,  
कोन दिसामें जाना मुझकु, जिस्कु देखकर ललचाया,  
कोन मालिक हे इस दुनियाका, किसने रची है या माया,  
ब्रह्मानन्द ज्ञान विनकरहु मीटे नहि यह ससारा ॥ सुनदिल. ॥ ८ ॥



### १५३ [ राग-लावणी-सरल )

करो प्रभुका भजन जन्म यह, बार बार फिर नहि आता,  
दिनदिन पलपल छिनछिन नलिनी दल जल लवचचळ जाता ॥ तेर ॥  
बालपणे केली ग्स रसियो, योवन तरुणी मद माता,  
वृद्ध भयो तव चिंता जलयो, पलयो ढलयो सत्र माता,  
माला छेकर चले भजनको, जले भवन जलखो दाता,  
मणीका पेरे मन चउ फेरे, हेरे मरकटके भ्राता ॥ करो प्रभुका. ॥ १ ॥  
कोटी पाप करकर धन सचय, मरणसे नही डर पाता,  
जिनके कारण करत दुरित नर, सग तेरे कोई नही आता,  
यह सत्र पथ समागम जानो, भ्रात तात काता माता,  
जगमे जीवन जान मुजान समान, पाणिजल चल आता ॥ रगो प्रभुका ॥ २ ॥  
पुनरपि जनन पुनरपि मरण पुनरपि जननी जठराता,  
विना हरिके भजन कुजन, नरकानल जल विन जल जाता,  
गेर रतन बहु काम तमाम, निकाम काचपर ललचाता,  
गया दात्र नहि आवे पुनरत्तर मरकर मूर्ख पडताता ॥ करो प्रभुका. ॥ ३ ॥  
गर्भाशसका काल सभाल, हवाल गाल क्यो विसगता,

भोग जोगकी आश, पाश, मायाके मूर्ख फस जाता,  
ब्रह्मानंदके वाक मनाक चलाक जवी दिलमें लाता,  
पाश पायाकी तोर मरोर सजोर गगन तल चल जाता ॥ करो प्रभुका ॥४॥



### १५४ ( राग-लावणी )

गर्भवासमे कौल किया था, मेने प्रभुके गुन गानेकी ॥  
में भूला तुजको, प्रभुजी मेने देखी मौज जमानेकी ॥ टेर ॥  
बालपनेकी कहूं हकीकत, बडी मौजमें सूतेथें,  
कईपर हस्ते कईपर खडे खडे हम रोते थे,  
उदम धूम मचाते थे, पांनीमे लगाते गोते थे,  
चकरी भँवरा गोलिया खेल खेल दिन खोते थे,  
नित लडाईं लाते थे, तक्रमारी चोट निसानेकी ॥ में भूला ॥ १ ॥  
बालपना गया गुजर प्रभुजी, अब ज्वानीका नूर चढा,  
मे बिलकुल भूला जैसे काम क्रोधका पूर चढा,  
जाहातहां गली कुचामे, पर स्त्रीया संग घूर खडा,  
संग खडा में अलग जिनराज भजनसे दूर खडा;  
सारी बात विसर गया प्रभुजी, फिर बसरई कमाने खानेकी  
॥ में भूला ॥ २ ॥

बुढापनकी कहू हकीकत, सब दुरबल हो गया शरीर;  
गई जवानी जैसे ढलक गया नदियोंका नीर,  
हात पांच इंद्री धरित भई, अब चलती नहीं है ततवीर,  
अब तो भरोसा आसरा तेरा मुजे है महावीर,  
अब दिलमे लगन लगी है तेरे चरन लिब लानेकी ॥ में भूला ॥ ३ ॥  
बडी फजरका भूला भटका एजी काई हो जावे शाम,  
भूला मुझे मिलता नहीं है कई आंगम,

रामचंद्र कहे अरे तुम रटा करो जिनवरका नाम,  
जिननाम रटेसे सकल हो वाञ्छित, पूरण काम,  
हर्षचंद्र प्रभु राखो लाज पत यहि जैन वेवनेरी ॥ में भूला ॥ ४ ॥

१५५ [ राग—लावगी ]

श्री जिन नाम निज सार मत्र है, जिनको बिसरना ना चाहिये,  
प्रभु नाम छोडके, ओरके गुनकू गाना ना चाहिये ॥ १ ॥  
गंगा जमुना जोड नदी नालोमें, न्हाना ना चहिये,  
जंगलके कुपेपर देर लगाना ना चहिये,  
घरकि खियाकू छोड माल बेश्याकू खिलाना ना चाहिये,  
ओर रूसोतो रूसो भलाई भगवत रटा ना चाहिये ॥ प्रभु नाम ॥ १ ॥  
हात शस्त्र नहोय शेरभूतेको जगाना ना चहिये,  
दान पुण्य कर पीछे पस्ताना ना चहिये,  
शूरवीर हो लडे कैदमें पीछे हटाना ना चहिये,  
बिना साथके देश प्रदेशकू जाना ना चहिये ॥ प्रभु नाम ॥ २ ॥  
अपने घरकी बियाकू दिलका भेद पताना ना चहिये,  
अपने घरके पास बैरीकू बसाना ना चहिये,  
होवे काला सर्प जिनोकू गोघ खिलाना ना चहिये,  
सर्पके हलकूमें अगुली डालना ना चहिये,  
अपने करके नीचे डरु पिचुका दवाना ना चाहिये, ॥ प्रभु नाम ॥ ३ ॥  
क्षत्रीके घर जन्म पायके रणमें भगना ना चहिये,  
ब्राह्मण होके उसीको वेद ओडना ना चहिये,  
चनियाको व्यापार शूद्रको खेति ओडना ना चहिये,



धर्मकूं बढ़ाकर धर्म घटाना ना चाहिये,  
 रस्ते चलते सुनो कबही खाना पीना ना चाहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ४ ॥  
 चाहे जैसा अमीर होय के गरीबकूं सताना ना चाहिये,  
 अपने दिलका दर्द मित्रसे छुपाना ना चाहिये,  
 देवद्वार अरु राजद्वारमें झूट बोलना ना चाहिये,  
 और गुरुकी सेवा कपटसे करना ना चाहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ५ ॥  
 दानासूं दुष्मनता प्रीतना दानसू करना ना चाहिये,  
 बेश्याके जाय कभी उसके बश होना ना चाहिये,  
 साधु संत अरु जती सती राजासे अडना ना चाहिये,  
 अपने हातसूं सर्पकूं दूध पिलाना ना चाहिये,  
 कहे सद्गुरु भविक जन प्रभु नाम भूलना ना चाहिये ॥ प्रभु नाम ॥ ६ ॥

### १५६ [ राग-लावणी-सरल ]

त्रिया सात घरोसे निकली, जल भरण, कुवेपर सुझानी,  
 नसेवाज मातेांके पिया दुख, रोती जाय भरे पानी ॥ टेर ॥  
 पहली सखीयों कहे सखीरी, मेरा पिया भंग पियां करे,  
 पीकर भंग जंग हम सेती, नाटक किस्सा कियां करे,  
 ओर रहे भर चुल्लुंमे उल्लु वे लोटे लियां करे,  
 ना जानू क्या मजा उन्हे सब घरके ताने दियां करे,  
 अन्हे घरमें लाडला, कैसी कीनीहकताला,  
 यो भग पिये रहे मतवाला, एसेसैं पडा मेरा पाला, २  
 पाला योंही चली ज्वानी ॥ नगेवा. ॥ १ ॥  
 सखी दुसरी कहे सखीरी भंग पियानि चग्ग पिया,  
 ३ फजरसे पिया चग्ग पीपीके कळेजा फुक गिया.

जे पीना दो छोड पिया कुठ चद रोज तुम धाहो जिया,  
कफ खांसी खुरा उनको दई मारे चरसनें जोर किया,  
वे पिये चरस जिठानी, नहीं कही हमारी मानी,  
लाचार हई खिसयानी, गई इसी फिकरमे ज्वानी,  
ज्वानी सखीरी बोधत उनकी नहि जानी ॥ नशेवा. ॥ २ ॥

सखी तीसरी कहे पियानें अफीमका सीखा खाना,  
सुका दिया तन वदन जिस्मका, गया खून फिर नहीं आना,  
बहु तेरा समझाया पियाकों कथा हमारा नहि माना,  
बहुत बुराहे सोक अफीमका नहि छूटेजी सग जाना,  
सुंदरकी किसमत फूटी, टूटीको नहि लगे बूटी,  
ना अफीम उनसे छुटी, ज्वानी योही बीती,  
सखीरी योही लिखि मेरे खवानी ॥ नशेवा. ॥ ३ ॥

सखी चोथी यों कहे सखीरी बहुत बुरा गांजा पीना,  
मेरे पियानें बहुत पिया रग जरद गांजेनें करदीना,  
यही वस्फ गाजेका सखीरी फुंका जिगर जल गया सीना,  
नहि ताकत कुठ रही वदनमें थका जोर मुश्कल जीना,  
गांजेकी उन्हे धत भारी, भर भरके पीये हरवारी,  
उनका या जला दई सारी, है उमर हमारी वारी,  
है उमर हमारी सखीरी यही मुशिवत पडी उठानी ॥ नशेवा. ॥ ४ ॥

सखी पांचमी कहे पिया मेरा सराबका पीनेवाला,  
भर प्याली बोटल कर खाली, घरका पट परकर डाला,  
हो गाफिल रहे पढा मुझे दुःख बडा और कहे भरवाला,  
रहे नशेमें चूर सखीरी दिनभर वो तो मतयाला,  
पीपी सराबकी प्याली, करडाली बोटले खाली

काया हुड जल भुन काली, कृति कहिके उनसें में हारी,  
 कहि कहि सखीरी ए नोत्रत सुन कहानी ॥ नशेवा. ॥ ५ ॥  
 छठी सखी येां कहे पिया मेरा, छान पोस्त पिये बडी फजर,  
 कहे सो करना पडे सखीरी हमें हुकमसे क्या है उजर,  
 लगे पिंग वेहोस नशेमें, चुर जो देखे भरके नजर,  
 इसी फिकरमें सुनो सखीरी, जल भुन काया हो गइ पिंजर,  
 उन पोस्त पिया मन भाया, सुख जरा न हमने पाया,  
 कौसो जिन्होंने पिलवाया, सब जनम योही गमाया,  
 गमाया पियाने सार हमारी नहि जानी ॥ नशेवा. ॥ ६ ॥  
 सखी सातमी कहे पिया मायाके नशेमे चूर रहे,  
 वोही नसा अकसीरक जिसे दुख दालिदर दूर रहे,  
 लखो करे खुशागद उनकी खिदमतगारीमें हजूस रहे,  
 रामचन्द्रजी महाराज हमारे सदा ज्ञान भरपूर रहे,  
 हर्षचंद्र मुनियो फुरमाते, उद्येष्ट शुक्ल पक्ष साते,  
 तजो नशा भविक प्राणी ॥ नशेवा. ॥ ७ ॥



### १५७ ( राग-लावणी )

वे वे कर्मके हात अंट लिखनेका  
 कइ राइ घटेना तिछ नहि बधनेका ॥ टेर ॥  
 कइ रथ पालनकी वगी बैठ फिरता है,  
 कइ सिरपर बोजा लियां लियां फिरता है ॥ वे वे. ॥ १ ॥  
 कइ धिरमा शाल दुशाल ओढ फिरता है,  
 कइ गरीब गुरवा ठंडि छेर मरता है ॥ वे वे. ॥ २ ॥  
 एक लखि सेठ लखेका विनज करता है,  
 अब पड जावे टोटा, इधर उधर फिरता है ॥ वे वे. ॥ ३ ॥

एक राजहंस समुद्रोंके बीच रहता है,	
पूरबले पुण्यसे मोक्षि चृग खाता है	॥ वे वे ॥ ४ ॥
एक अजन शेर गुलजार अयो या भारी,	
दशरथके घरमे रामचंद्र अवतारी	॥ वे वे ॥ ५ ॥
एक पिता वचनसे वन खंड लिया है धारी,	
एक लारे लक्ष्मण रामके सीता नारी	॥ वे वे. ॥ ६ ॥
एक सूर्य चंद्रमा दोनू ज्योति जगता है,	
जग पडजावे फीका ग्रहण आय लगता है	॥ वे वे. ॥ ७ ॥
कीडीकू कण हस्तीकू मण मिलता है,	
पूरबले पुण्यणे अपना पेट भरता है	॥ वे वे. ॥ ८ ॥
एक तुरुन गिरी उस्ताद यो कहता है,	
सायबको हिरदे धार वहिस्त जाता है	॥ वे वे. ॥ ९ ॥

इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ प्रथम खण्डे  
 लावण्याभिधं पंचमं प्रकरणं  
 समाप्तम् ॥





## प्रकरण-छट्टा-होरी

१५८ ॥ दोहा ॥

प्रथम पुरुष राजा प्रथम प्रथम तीर्थंकर देव ।	
श्री नाभेय अमेय गुण चरण कमल प्रणमेव	॥ १ ॥
सस मुख बांणी भारती नमी सरस्वती मात ।	
चतुर मासिक होलिका कथा कहू अवदात	॥ २ ॥
मांहे तो माता सुणे बाहिर सुणे ते बाप ।	
होली कलहेको मूल है बोले उघाढा पाप	॥ ३ ॥
होली कलहनो मूल है अकलहीन नर थाय ।	
बालक तो जिहा तिहा रहो अकल बुढाकी जाय	॥ ४ ॥
आतम निंदा होलिये कीधी वारंवार ।	
तेह कथा हिवे वर्णऊ, लिखित कथा अनुसार	॥ ५ ॥

( ढाल १ राग-तुमे तो भले विराजोजी )

आतम निंदा करिये प्राणी जैसे कीधी होली ।	
गुण नही ग्रहो अवगुण आदरीपो ऐसी दुनिया भोली	॥ १ ॥
तुम तो आऊ लागोजी आतम निंदा करके परनी निंदा त्यागोजी	॥ देर ॥

- बसतपुर पत्तननो स्वामी, जितशत्रु महीपाल  
 राणी गोमती पुत्र गनेवो, अरीयण कद कुंडाल ॥ तुम. ॥ २ ॥  
 देवश्रम ब्राह्मणनी नारी, देवानदा नामे ।
- पांच पुत्रों परि उठी पुत्री, होली नाम निकामे ॥ तुम. ॥ ३ ॥  
 रूपलावण्य सोभाग मृदरी, चतुराई गुण जाण ।
- ओर नारीसुं उणहीज नगरे, इयनी इयकि उखाण ॥ तुम. ॥ ४ ॥  
 स्त्री कला चोष्ट सविजाणे, गीत नृत्य बहु राग ।
- विनय भावसु सव लोगनणे, तेहनो है सौभाग ॥ तुम. ॥ ५ ॥  
 पिण कुमारी सील वर्जाता, एहीज मोठी खोड ।
- कोई न करीये केहनो हासो, कर्म तणो एनिचोड ॥ तुम. ॥ ६ ॥  
 मात पिता भाई ने मामा, लोक करे मुख मोड ।
- करि वालागाए परणावो, जिम तिम जोडो जोड ॥ तुम. ॥ ७ ॥  
 मालव देश उजेणी नगरी, गोविंदने परणावी,
- घणो दत्तदाय जो लेकर, होली सासरे आवी ॥ तुम. ॥ ८ ॥  
 साधु मुसरो जेठ देवरियो, नणदी नें जेठांणी ॥
- भक्ति भाव भोजन सतोपे, पाछे पीवे पाणी ॥ तुम. ॥ ९ ॥  
 सविने मृता पाउे निशनी, द्वार खोल उठ जावे ।
- उच नीच पुरुपायी राचे, कर्मए नाच नचावे ॥ तुम. ॥ १० ॥  
 न्यात जात भाई ने वधव, गोविंदने समजावे ।
- आपना कुलने एह विडवे, रात्रनि बाहिर जावे ॥ तुम. ॥ ११ ॥  
 गोविंदरी सकरीने वरजे, दांते कडकडी बांटी ।
- होली हांस करीने हसती, रहिरे मोल्या माटी ॥ तुम. ॥ १२ ॥  
 गोविंद जाणी नही घर लायक, पीहरडे पुहचावी ।
- सय कोई छयल हूवा मन राजी, होली पिहर आवी ॥ तुम. ॥ १३ ॥  
 उच नीच सबहीसु राजी, लोक करे उहु कथनी ॥
- यातो मनमे काइ न आणे, फिरे घुमनी हणी ॥ तुम. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

पिता परम दुख पावही, माता राखे मोह ।  
 घर बाहिर काढी परी, एहनो स्यु अंदेह ॥ १ ॥  
 पिण माता मोही धरि, चाली तेहनी लार ।  
 होली करे कुटीरका, नगर तणे हिवे वार ॥ २ ॥

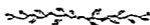
## [ ढाल २ राग-यतनीकी ]

रहे राग तणे रग राती, होली निज फागनें गाती ॥  
 माता पिण रहती न्यारी, करी पाचसे छयलसु यारी ॥ १ ॥  
 गावे दुकडा मृदग वजावे, प्याला भर भर भांगा पावे ॥  
 मदमाती रहे निसदीस, नित बेसे उघाडे सीस ॥ २ ॥  
 कोटवाल सुणी प वात, देखो होलीरा अवदांत ॥  
 राजासु अरजी मीधी, राजा वालवानी आजा दीधी ॥ ३ ॥  
 पहली डोकरडीने जाली ज्यो, पछे होलीने वालीज्यो ॥  
 एह आदेश दीधो राय, क्रोधधी इम कर्म वधाय ॥ ४ ॥  
 पांचसे पुरुष छे तेहनें सघाते, यातो सूती सुखभर राते ॥  
 तिन समे कोट्यालज आई, मातानी कुटील गाई ॥ ५ ॥  
 सह हा हा करनें जाग्या, होलीनें फुरुण लाग्या ॥  
 कोई नीसरया नही पाया, पाचसे द्योय मनुष्य जलाया ॥ ६ ॥  
 आर्तभ्यान करीने मृया, राक्षस राक्षसणी हूवा ॥  
 पूर्व भवनो वैर जणावे, वेक्रय करी रूप वणावे ॥ ७ ॥  
 कटेला सरीग्वो मायो, भोगल सारीग्वो हायो ॥  
 छाजले सरीखा कान, ज्यारो मुहडो गुफा समान ॥ ८ ॥

कुदाला सरीखा दात, उडो अति पेट अत्यत ॥	
आख ऊंडी आतुर हूवा, जाणे साठीका कृवा	॥ ९ ॥
ज्यारे लूकडी पूंछसी मूळे, भूहरा तालोडीरी पूउ ॥	
पग जेहवा पथरना लोट, जिगरा ऊठ सरीखा होट	॥ १० ॥
राजा वसंत ग्मवाने आयो, राक्षराने बूराठ उठायो ॥	
राजा जिम करेने गाढो, सच सहे जनरो लाठो	॥ ११ ॥
लोक सगही दिसोदिस भागा, राक्षस चोडे रमवा लाग्गा ॥	
हासी हस सट्टेने पिहावे, तेहने सामो रोड न आवे	॥ १२ ॥
राजा मन्वादीने बुलाया, राक्षस ते हाथ न आया ॥	
मत्र यंत्र न लागे दूणो, वैर मागे राक्षस दूणो	॥ १३ ॥
मनुपाने भक्षीया जावे, राजाने उदासी आवे ॥	
हिचेस्यो होवे पिछताणे, हमने वाल्या क्रिसेगनाहणे	॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर तिहा आवीया, पाचसे मुनी परमार ॥	
श्री गुणाकरसूरजी, करता पर उपमार	॥ १ ॥
तिण वन आवी ऊतच्या, कहे नगरना लोक ॥	
स्वामी इहा न रहीजिए, राक्षस तणे सजोग	॥ २ ॥
साधु कहे भय एहनो, अम ऊपर नवीथाय ॥	
राक्षस राक्षसणी सुलभ, ते देस्या समझाय	॥ ३ ॥



[ दाल ३ मारो प्रिउ ब्रह्मचारी ]

राक्षस राक्षसणी तव आया, गत्रमे ते याया हो ॥ साधूजी गुणगारी ॥  
अदृष्टहास करवा लाग्गा, खांडा जेहने हाये नागाहो ॥ साधुजी. ॥१॥



ध्यान धरीनें मुनिवर वैठा, राक्षसडा चितमे पैठा हो ॥  
 वीतरागवा धर्म प्रसादे, सहू थभ्या चित उन्मादे हो ॥साधुजी॥२॥  
 होली पूछे तुम कुण होई, धर्म दया बतावो सोई हो ॥ साधु. ॥  
 समज समज मनमा हेस घाणी, ए आपणोही अवगुण जाणीहो ॥साधुजी॥३॥  
 कर अव तू आतम निंघ्या, होलीये सदगुरु बंध्या ॥ साधु. ॥  
 नगर राय लोक सब बोलावी, कहे मुज घट समकित आवीहो ॥साधुजी॥४॥  
 हाथ जोडी पूछयो सब लोके, एह उपद्रव्य केहवे थोकेहो ॥ साधु. ॥  
 पहली तुममें अमे अवगुण जाण्यो गुरु वचनें आपो पिछाण्यो हो ॥सा.॥५॥

॥ दोहा ॥

अमचो अवगुण ए लह्यो, तुमचो दोस न कोय ॥  
 हिब एकार्य तुम करो, जिम मन राजी होय ॥ १ ॥  
 में पापणी विखीयावसे, कीधा पाप अघोर ॥  
 ते तुम सहूने सुणावजो, मुहसे करी बकोर ॥ २ ॥  
 फागण सुद पूर्णिमा दिने, होलीए हवे नाम ॥  
 मोठी करी कुटीरका, मिलजो सारो गाम ॥ ३ ॥  
 छोटी कुटीरका मातनी, तेहनें प्रथम जलाय ॥  
 गाल राड करनें घणी, दीजो होली लगाय ॥ ४ ॥

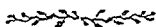


( ढाल ४ गिरनारके पहाडीपरे )

सहुको राक्षसरूप धरनें, राक्षस रग पहरी चोरी ॥ १ ॥  
 आपणो अव पाप प्रकाशे होरी ॥ टेर ॥  
 अव निर्दारी एह जगतमें, फेरा फिग्ज्यो मुज टोरी ॥ अपणो. अव.॥२॥  
 चैत्र वद एकमनें दिवसे, धूल उडावज्यो भरजोरी ॥अपणो.अव.॥३॥

अनाचार एहवो आदरसे, तेहनें सिग्पर ए ढोरी ॥अपणो.अव.॥४॥  
 चावल दाल लापसी लाइ, तुम जीमी ज्यो मिल टोरी ॥अपणो.अव.॥५॥  
 केहनो सोग संतापन राखो पापण इसी गई कोरी ॥अपणो.अव.॥६॥  
 घरसां बरस एही तुम करज्यो, आतम नित्रा है मोरी ॥अपणो.अव.॥७॥  
 भला वस्त्र पहरी तिण वासर, सहनें नमज्यो मद छोडी ॥अपणो.अव.॥८॥  
 देव गुरु अने धर्म आराधो, सुणीयो पुरुष अने गोरी ॥अपणो.अव.॥९॥  
 जो नही समजा एहमे, तो तेहनें भवयितहे बहुरी ॥अपणो.अव.॥१०॥  
 आतम निंदा एहवी कीयी, होरीनें भवयित करी थोरी ॥ अ.अ.॥११॥  
 महाविदेहमे मुक्ते जासी, आठुई कर्मके दुख तोरी ॥अ. अ.॥१२॥  
 अजर अमर पदवी पापसे, अनंत सुखाकी लगी ढोरी ॥अ.अ.॥१३॥  
 अविनासी अविहार निरजन विनयचंद्र कहे करजोरी ॥ अ.अ.॥१४॥

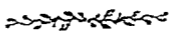
॥ इति होलीनो चौठालियो ॥



१५९ [ होरी-राग-नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ]

राक्षस रूप वनें सत्र दुनिया लाज रहे नहि थोरी ॥  
 विकलबके जिम कूकर नाई, लाज रहे नहि थोरी ॥  
 हमारे कुण खेले ऐसी होरी ॥जामे आवागमनकी ढोरी ॥ हमारे.॥१॥  
 तात मात अरुगुरु लोकनकी, मर्यादा सब तोरी,  
 विन मद पानकि येही मूरख, करतो फिरत बकोरी ॥ हमारे. ॥ २ ॥  
 रासभ वाहन स्याम मुख करके, चमर बुहारी ढोरी,  
 धारत छत्र छाजको सिरपर, आगे वजे ढफ ढोरी ॥ हमारे. ॥ ३ ॥  
 गलीये गलीये फिरत उडावत, घूरनकी भर शोरी  
 मानत मोज माननी मनमे, मलमूत्रन जल ढोरी ॥ हमारे. ॥ ४ ॥

त्रिनुही हेर धन सांग चोरको, वनत पापको धोरी,  
 जमके चोर कंत हे मेरो, ऐसे चित्तत गोरी ॥ हमारे. ॥ ५ ॥  
 रमत गेहूर जिम नरक निवासी, मार मची घन घोरी,  
 कोई डडल छुट पाहनते, नाखत पर सिर फोरी ॥ हमारे. ॥ ६ ॥  
 ऐसे कामपे कहत वडो दिन, ऐसी दुनिया भोगी,  
 रेखराज कहे या होरीते, दूर सदा विचरोरी ॥ हमारे. ॥ ७ ॥



### १६० ( होरी राग-पूर्ववत् )

हमारे एसी होरी मन भावें, जातें आवागमन मिट जावे ॥ टेर ॥  
 अपूर्व करन आगए दर्जन, सप्त कर्म जरावे  
 चेतन भूलकी भस्म ऊडाई, शुध मन मंदिर आवे ॥ हमारे. ॥ १ ॥  
 संवर अंवर भलपन भूपन शुध शृगार सजावे,  
 क्रिम तमो क्रिया कुशम छरी लेकरमें रमन स्वसहज रमावे ॥ हमारे. ॥ २ ॥  
 निरमम नीर चरन गुन चंदन, करन कपुर मिलावे,  
 करुणा केशर अवीर अध्यातम, अद्भुत रग रचावे ॥ हमारे. ॥ ३ ॥  
 वानक वसंत वीराग वनवारु अनुभो आवास सुहावे,  
 सुमती सखी संग समरस पीरें, चेतन फागवनावें ॥ हमारे. ॥ ४ ॥  
 पर अवगुण त्याग पकर पिचकारो, भरभर रग चलावें,  
 सुबुध सखी सग रीदियो चेतन, ग्यांन गुलाल ऊडावे ॥ हमारे. ॥ ५ ॥  
 सुम चित्त चंग मृदग मार्दव, भेरी भावना भावे,  
 सुरत शरणाई जयाणा ज्ञाज्ञा, प्रभु गुन पडह वजावें ॥ हमारे. ॥ ६ ॥  
 धर्म कथादि धमाल रागनी, गहिरेस्वर कर गावें,  
 निकट भव्य ख्याली सुनश्रवणे, रोम रोम विकसावे ॥ हमारे. ॥ ७ ॥

अनुक्रम जोगनीरुधी लेश्या, सयलेशी पद ठावे,  
रेखराज एसी होरी तें, अजर अमर पद पावे ॥ हमारे० ॥ ८ ॥  
रस परव निधि भूशालनगीनें, फागुन मास सुहारें,  
शुद्ध चतुर्दशी यें पद क्षीयो, सुन श्रोता विकसावें ॥ हमारे० ॥ ९ ॥



### १६१ [ होरी-राग-मति ताको नार वीरांगी ]

या विधि होरी मचावे, जव जियरा सुख पावे, ॥ टेर ॥  
तत्वारथ चरचा चर चोवा, मलि मलि अंग लगावे,  
शाति सुधारस रग राचकर, राग गुलाल उडावे ॥ जव जियरा. ॥१॥  
श्री जिन आगम धुनि सुपान कर, मन वच तन छरू जावे,  
सुमति नार जुत हर्ष हर्षके, श्री जिनके गुण गावे ॥ जव जियरा. ॥२॥  
जिनवर गुण वा निज स्वरूपको, एक रूप दरसावे,  
निरमल सरधा धर्म दिढाई, ग्रह तन नेक अधावे ॥ जव जियरा. ॥३॥  
परतें त्याग दान करतें जव, निजमें निज विरमावे,  
मानकयो बड भाग खेल कर, आवागमन मिटावे ॥ जव जियरा. ॥४॥

### १६२ ( होरी-राग-पूर्ववत् )

सुमति गृहे होरी मचाई, चतुर चित चेतन राई ॥ टेर ॥  
ईतमें सुमति राधिका ठाडी चित चिदरायकनाई,  
काल लब्धि यह ऋतु वसतमें दपती मिल जिहसाई,  
हरव अग अंगन समाई ॥ सुमति० ॥ १ ॥  
ज्ञान सलीलहग केशररग छिरकत मानु घन वरपाई,  
राग गुलाल अरीर उडावत मुख मड छरुनिछकाई,  
बहुत भ्रमतपन बुझाई ॥ सुमति० ॥ २ ॥

नय वृज नृत्य कारणी नाचत, स्यात्पद् मुर जब जाई,  
 गुरु उपदेश ताल मधुरि धुनि, होत श्रवण सुखदाई,  
 भलि विधि नीज गुणगाई, ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

यह विधि होरी रचावत दपत, सोभा परणी न जाई,  
 विलखत कर कृमति हेसो मूढनके चित भाई,  
 बहुत दुरगति दुखदाई, ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

आज सुमति गृह आनंद मंगल बहु विधि होत बनाई,  
 मानक धन्य चतुर चेतन तिन, सुमति सुनी अपनाई,  
 भयो त्रिभुवनकोराई ॥ सुमति० ॥ ५ ॥



### १६३ [ होरी-राग-पूर्ववत् ]

या कहा आदत पिय तोरी, नित खेळे कुमति सग होरी ॥ टेर ॥  
 कुमति क्रूर कुवला सग राच्यो, लाज सरम सब छोरी ॥ नित. ॥ १ ॥  
 राग द्वेष मय धूलि लगावें, नाचे ज्यौं चरुहोरी,  
 मोह महा मद छारु छारुके, पायो दुख करोरी ॥ नित. ॥ २ ॥  
 तुच्छ विषय रंसगभर पिचकागी, कुमति कुतिय संग होरी,  
 जा प्रसंग दखि भये फिर, प्रीति करत वर श्योरी ॥ नित. ॥ ३ ॥

१६४ [ होरी आत्मापर-राग पूर्ववत् ]

शाम कैसी खेलत होरी, अचरज खुब बनोरी, कोई जन भेद लहोरी ॥टेर॥

तनरग भूमिवनी अति सुदर, बालन वाग लगोरी,

नाही जहा अनेक गली शोभत, खेले तहां सांवरोरी,

सग वृषभान किशोरी ॥ शाम कैसी० ॥ १ ॥

गच सखी मिल, पाच रगभर देतवहोर बहोरी, राधिका लेकर डारे सामपर,

सब तन दियो भिगोरी, कृष्ण मन मोद भयोरी ॥ शाम कैसी० ॥ २ ॥

होरीमे मोद मान कर शामने राधिका भेष धरोरी, मिल सखियन सग  
फाग मचायो,

खेलत मगन भयोरी आप सूधी भूल गयोरी ॥ शाम कैसे० ॥ ३ ॥

खेलत खेलत जान न पायो, दीर्घ काल गयोरी, वनवन फिरत मिले  
जब सतगुरु सखियन सग विटरोरी शाम ब्रह्मानद मिलोरी ॥ शाम कैसी० ॥ ४ ॥

१६५ (होरी आत्मापर-राग पूर्ववत्)

आयो वसत सखीरी, मिल खेलीये होरी ॥ टेर ॥ आयो वसत. ॥

परके भूल गई गृह काजन मनमे तापरयोरी,

जिन जिन खेली होरी शामसग तिन बढ भाग लयोरी, ॥ आयो वसत. ॥ १ ॥

नज सन काज आज घरकेरें लाजको दूर धरोरी,

फागुनके दिन वितेजातहें फिर पीछे पछतोरी ॥ आयो वसत. ॥ २ ॥

सतसगति वृदावन जाकर, शामको खोज करोरी,

मकर विचार जुगति वेरो जानन पावे बहोरी. ॥ आयो वसत. ॥ ३ ॥

मन पचकारी पकड कर सुदर ध्यानको रग भरोरी,

प्रेम गुलाल मलो मुख उपर ब्रह्मानद रसलोरी ॥ आयो वसत. ॥ ४ ॥

(दाल १ ली. राग-सुपनारी तथा उमादे भट्याणीकी.)

पहलडै सुपनैजी कांइ देख्यो वृषभ धडकतो, गाजतो गजराज, तीजे तो सुपनेजी खंधालो दीठो केहरी, श्री देवी सुभ साज ॥ १ ॥  
 आदीश्वर जयकारी हो, सुखकारी स्वप्न दिखाइया ॥ टेर ॥ पाचमे मालाहो सुविशाला कुसुम तणी भली, रसमें पूरण चन्द. सातमे दिनकर हो तम हरतो निर्मल उगतो, आठमे ध्रुज महेंद ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नवमे तो निरख्यो मन हरख्यो, कुंभ सुहामणो, पद्म सरोवर सार, एकादशमे उदधि हो जल पूरण बहु परिमारसं, देवयान मुखकार ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 पौडश जातीहोवहुं भांती राशज रत्नी, अग्नि शिखादी पत, निरखी हरखे राणी हो चतुर्दश स्वप्न सुणावीया, फल दाखो मुज कंत ॥ आ० ४ ॥  
 सुखदायक जगनायक हो, मन भायक सुत तुम जनमस्यो, होसी मगल माल, सुण राणी सुख पाईहो, हिव करती गर्भनी पालना, पूरण पदली ढाल ॥ आ० ५ ॥

दूहा.

असित चतुर्थि आसाढकी, चवीया आदि जिनट ।  
 चैत असित अष्टमी दिने, जन्म्या त्रिजगानट ॥ १ ॥  
 आवी छप्पन कुमारिका, शक्र आदि अधिकार ।  
 जषुद्रीप पन्नतीये, उच्छवनो विस्तार ॥ २ ॥

दाल २ ( राग-दलालीकी देशी )

जिन जननीको आनद निरखन, आवे शचिनको साथ  
 करजोरी कहै धन्य हो माता, तें जायो जगनाथ ॥  
 आज आनद भयो भगत खेत्रमे धर्म दिवाकर प्रगट भयो ॥ टेर ॥ १ ॥

सीस नमावे जिनगुण गावे, भावे नृत्य करत,  
 अनमिग्वने न भया जिन निरखन, तन मन धन विकसत ॥ आ० ॥ २ ॥  
 सुरपति जगपति जननी प्रणमी, फहे धन्य हो तुम मात,  
 रतन कुक्ष धारणी धोरणी, महिमा रुद्वियन जात ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 धरणेंद्र प्रसाये कचन, रत्न अखडित धार,  
 तिहू लोक आनंद भयो है, मुख मुख जयजयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥

( ढाल ३ राग—सिवाके नंदना. )

नाभजूके नदन, जाऊ वलिहारी ॥ मरुदेव्या नदन ॥ जा० ॥  
 तुम सिव सुखके दातार ॥ ना० ॥ टेर ॥  
 सुपन तणे अणुसारथी, ऋषभ दियो जिन नाम,  
 चद्र कला जिम बाधतो, रूप महा अभिराम ॥ ना० ॥ १ ॥  
 सुरनारी कर कमलमे, मधुकर ज्यु विचरत,  
 रमण हसन चलने करी, माता मन मोहत ॥ ना० ॥ २ ॥  
 घम घम वाजे घूगरा, ठम ठम ठुमके चाल  
 मेरे छगन मगना, राच रयो अति ख्याल ॥ ना० ॥ ३ ॥  
 कवहू आख अजावतो, परहो छिटकी जाय,  
 ल्यायोही फिर नावही, माता परुडे धाय ॥ ना० ॥ ४ ॥  
 तव रहै प्रभु रीसायके, तव कल कलिकुराय,  
 युगलिक सुरनर मानवी, सबही रहे रिंजाय ॥ ना० ॥ ५ ॥  
 द्वा.

क्रीडा करण पाणी ग्रहण, पुरि निवसन परिवार ॥  
 कला रचन आदिक सरुल, आड चरित्र अधिकार ॥ १ ॥



## राग—छप्पय.

प्रभू परण्या पद्म निदोय, सुमंगला ने सुनदा,  
 सुनंदानेनंदे हुवानि नाणु अमंदा, सुमंगलाने एक टेक  
 अविचल वाह्वल, ब्राह्मी सुंदरि धीय सती,  
 सत्यवती निरमल, पाटोधर श्री भर्तजी,  
 सो पुत्रांके माय, शालि वृक्ष परिवार त्यूं महिमा कहिय न जाय ॥१॥

## चौपाई

बीस लाख पुरव परिमाण, कुमर पट्टै रहिया भगवान,  
 तरेसठ लाख पुरव रही राज, पाछे साच्या आतम काज ॥ १ ॥

## दाल ४ राग-ब्रजाकी

हांजी, प्रभु लोकांतिक सुर आवीया ॥ हां ॥ दे जिनने उपदेश ॥ हां ॥  
 अठारे कोडा कोडिनो ॥ हां ॥ मेढो अग्यान कलेश ॥ १ ॥ आद-  
 नाथजीनी शिविकावनी अति सोहति ॥ टेर ॥ हां ॥ रत्नजडित र-  
 लियामणी ॥ हां ॥ चिहुं दिश लटके लंब ॥ हां ॥ रत्नजडित आसन  
 विचे ॥ हां ॥ सिरपर लटके शंब ॥ आ. २ ॥ हां ॥ सुदर्शन  
 नामे सिविका ॥ हां ॥ बैठा आद जिणद ॥ हां ॥ भूषण सहु जिन  
 तन धन्या ॥ हां ॥ साये सुरनर बूद ॥ आ० ३ ॥ हां ॥ इंद्र घरी  
 प्रभु पालखी ॥ हां ॥ गीत नृत्य नहि अंत ॥ हां ॥ सिधारथ उग्रानमे  
 ॥ हां ॥ आव्या श्री भगवंत ॥ आ० ४ ॥ हां ॥ चतुसुष्टी लोचन  
 करी ॥ हां ॥ अशोक तरु तल साम ॥ हां ॥ चार सहस नृप संगसू  
 ॥ हां ॥ संजम लीनो स्वाम ॥ आ० ५ ॥

## दहा.

चेत बद् अष्टमी दिने, बेलानो पचखाण ।

सुभ ध्यान मन भ्यावतां, उपनो चौथो ग्यान. - ॥ १ ॥

कीयो विहार विनिता थकी, लारे बहु परिवार ॥  
प्रभु वदी घर आवीया, सालै विरह अपार ॥ २ ॥

सोरठा.

मौन्य धरी महाराज, विचरे पुर बहु गाममे,  
तोडन कर्म इलाज, सहै परिसह नाथजी ॥ ३ ॥

[ ढाल ५ शुक्रत कर ले रे मूंजी. ]

भिक्षा कारण श्री जग तारण घर घर गोचरि जावे, भोला जन मन  
भेद न समजे, ओर वस्तु ले आवे ॥ १ ॥ काइ कल्योजी ३ आदी-  
श्वर स्वामीकां ॥ टेर ॥ जुगलिक नरनो वारो नेडो, किणहीन मांगी  
भिक्षा, केम मुनीनें दानज दीजे, किणहीन देखी दिक्षा ॥ कां० ॥२॥  
न्या कवारी अति सिणगारी भूपण सोहै भारी, ए प्रभु लीजे ढील  
कीजे, मानो अरज हमारी ॥ कां० ३ ॥ गज सिणगारी हो दो  
गरी, गल रतननकी माला, ए प्रभु लीजे आप चढीजे ॥ कांई  
केरो ये पाला ॥ कां० ४ ॥ हयवर मातो चालै तातो, रगमे रातो  
लीको, रत्न जडित पलान सुहातो, लीजे मुज मन तीखो ॥ कां० ॥  
५ ॥ रथ वाहनी सिक्का पीनस, जे चाहे ते लीजे जग नायक  
म अतरजामी, पाला नही फिरीजे ॥ कां० ६ ॥ मुक्ताफल भर  
गल विशालहि, प्रभुके सन्मुख आवे, कचन रतन भाजन मन गमता,  
ज्यो तो मन सुख पावे ॥ कां० ७ ॥ भुजप्रथ कठी एह अंगुठी, कण-  
शेरो ने माला हार अर्द्धहार ए रुडा ल्यो, थिरमा ने दुसाला ॥ कां ॥  
८ ॥ फूल गुलाब केवडा ने चपा, गूथ २ ने ल्यावे पिण प्रभुजी  
मनमें नही वांछे, तव मनमें अकुलावे ॥ कां० ९ ॥ चारोली विदा-  
म ने पिसता, श्रीफल ओर मुपारी, वरक लगावै बहु विध ल्यावै ॥

अरु वीडी पानारी ॥ का० १० ॥ सचित अचितनो भेद न समजे  
 न मिल्यो शुद्ध अन पाणी ॥ न्यार हजार चेला चित चिते वा  
 करडी ताणी ॥ कां० ॥ ११ ॥ न्यार हजार चेला प्रभु गोडै, क  
 वाला कृका ॥ ये मुख नवि वोलो मून न खोलो ॥ म्हे मरांग  
 भूखा ॥ का ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

कठ महा कठ आद दे, लिंग अनेरो धार ॥  
 भूखा मरता भागीया, साधु चार हजार ॥ १ ॥  
 पूरवली अंतरायथी, वीता वारै मास ॥  
 हिवै पधाच्या गजपुरे, काज करण श्रेयाश ॥ २ ॥  
 बाहूवलनो मृत सुखद, सोमप्रभ राजान ॥  
 तस सुत श्री श्रेयाश ए, युवराजा गुण खान ॥ ३ ॥

( ढाल ६-राग पणिहारी )

श्री श्रेयांश सुपनो लहो ॥ जग नायकजी ॥ लागो मुदर्शन  
 काटहो ॥ सुख दायकजी ॥ मे निज हाथथी धोइयो ॥ ज० ॥ दू  
 कियो निर्घाट हो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ सोम प्रभ पुरपति लहो  
 ॥ ज० ॥ सुभट करत सग्राम ॥ हो ॥ वेच्यो मिल शत्रु घणा  
 ॥ ज० ॥ कुमर सहाज दियो ताम ॥ हो ॥ २ ॥ सुबुधि सेठ रवि  
 कीरणने ॥ ज० ॥ भूमि पतन करत ॥ हो ॥ श्रेयाशे भुज बल करी  
 ॥ ज० ॥ मडल मांदि धरत ॥ हो ॥ ३ ॥ तीनु मिल नृपनी सभा  
 ॥ ज० ॥ कीयो एह निदान ॥ हो ॥ कुमरजी श्रेयांशजी ॥ ज० ॥  
 लहिसैं लाभ महान ॥ हो ॥ ४ ॥ उत्तरै भमता गोचरी ॥ ज० ॥  
 आय गया जिनराय ॥ हो ॥ श्रेयाश देख गवाक्षथी ॥ ज० ॥ चित  
 आनदित थाय ॥ हो ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥

जाती समरण ग्यान तद, उपजीयो मुखकार ॥  
नव भवना सप्रधनो, जाण त्रीयो अत्रिकार ॥ १ ॥

[ द्वाल ७-राग जीलानी ]

स्वामी ललितांगज देव हुवारिध भारीजी ॥ सुखकारी जिनराज  
॥ स्वा. ॥ स्वयमभा मेंहूती प्रभुनी प्यारिजी ॥ जि० ॥ स्वामी वज्र  
जिघ भूपमें श्रीमति राणीजी ॥ सु. २ ॥ तीजे भवमें युगल युगल नि-  
जाणीजी ॥ जि० ॥ १ ॥ सुर्म म्वर्गमे मित्र तणो पद पाया हो  
॥ सु० २ ॥ पचम भय प्रभु आनद वैत्र कहायाजी ॥ जि० ॥ सेठ  
पुत्रमें केशव नाम धरायोजी ॥ सु० २ ॥ रसमें भव अच्युत मित्र-  
पणो मन भायोजी ॥ जि० ॥ २ ॥ सामी साम भवमे वज्रनाभ नर  
देवाजी ॥ सु. २ ॥ भूप तणो सुत सारथी व्है करि सेवाजी ॥ जि० ॥  
अष्टम भवमें परम अनूत्तर वासीजी ॥ सु. २ ॥ नवमे भवमे हुवा  
ऋपभ सुविलासीजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ में पिण प्रभुको पर पोतो कडि-  
वायोजी ॥ सु. २ ॥ नाम श्रेयाशण देख दर्श मुख पायोजी ॥ जि० ॥  
गोखथी उतरी चरणे सीस नमायोजी ॥ सु. २ ॥ फली मनोरथ  
समल, समल, दिन आयोजी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥

गोख थकी उतर तदा, प्रणमें प्रभुना पाय ।  
तीन प्रदक्षणा देयनें, आण्या निज घर माय ॥ १ ॥  
डखु रस घट भेट नृप, आण्या जन तिण चार ।  
करै विनती स्तवन युता, श्री श्रेयाशकुमार ॥ २ ॥

## (दाल ८—राग मरहटी लावणी)

तू पुरुषोत्तम त्रिजग उत्तम तूँहि विधाता मुखदाता । सव जग  
 ज्ञाता सबको ग्याता ॥ तव गुण पार नही पाता ॥ टेर ॥ तूही बुध  
 तूँही सृष निरंजन तूँ शंकर ईश्वर धाता, तूँहिज विष्णु तूँ जग जि-  
 ष्णुं, तूँ चतुरानन विधाता ॥ तूँ० ॥ १ ॥ तूँ मुख करता सब दुख  
 हरता, तूँ शिव भर्ता शिवगामी ॥ तूँ अविकारी महिमा भारी, जग  
 वच्छल अंतरजामी ॥ तूँ० ॥ २ ॥ तूँ मन मोहन तूँ जग सोहन ।  
 कोहन मोहन नवि माया, नहि तुज लोहन सव जग थोहन द्रोहन  
 रंचन शिव राया ॥ तूँ० ॥ ३ ॥ करुणा कीजे मेहर धरीजे । इक्षुरस  
 हमपें लीजे । लाभ ए दीजे हम मन रीझे । जगजीवन पावन कीजे  
 ॥ तूँ० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ कवि चतुराई.

दाहिन कर बोल्योतिसै । करुणा निधि अवधार ॥

मुज कर भोजन लीजीए । मै तुम आग्याकार ॥ १ ॥

॥ कवत ॥ सबइया २३

बालपनेही तें सेव धरो चित्त । अंगुष्ठ तें अमी पान करायो ॥  
 इक्षु ग्रहे हीतें वश चलयो । तुम तिलक कीयो जब राज दिरायो ॥  
 भरतादि निज नंदनकं । अरुमे रेही शुभ लंडन मुखदायो ॥  
 भोजन पूजन सघ्न दानन । लोचनमें फिर आडोही आयो ॥ १ ॥

॥ वामकर उक्तः दोहा ॥

रेरे नीच निठुर निलज । वृथा धरै अभिमान ॥

आपदि आग्ये मर्यादा । दोहन नही महान

॥ १ ॥

आद थकी भेला वस्या । छानो नही गिमार ॥

मापें गुन मोसालको । करतन लजत लिगार ॥ २ ॥

॥ सवडया २३ ॥

ढालकू राख वचावत स्वामीकू चाप धरुं अरु वीर तापाऊं ।

अकनको गिनवो हमतें अरु वामेही गर्दभ काज कराऊ ॥

वामेही पास सोये सुख पावत । भोजन करत मे माखी उडाऊं ।

व्याहन भोजन रहत अकेलो चोर जुवारी कितें गृण गाऊं ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥

करत विवादहि करवींठू । निज २ गुरुना मान, ॥

माळूं याते वर्ष लग । भूख मरे भगवान ॥ १ ॥

कहे श्रेयाश कृपा करो । घो अवद्रोह मिटाय ॥

होय भले अवलीजीए । मुज मन वंछित थाय ॥ २ ॥



[ ढाल ९—ख्यालकी ]

ऋषभ जिनेसर कीयो पारणो । मारी रस सेलडी ॥ प्र. टेर ॥ घडा

एकसो आठ सेलडी । रस भरीषा छैनीका ॥ दान दीषो श्रेयाश

कुमरजी । माडलीषा मभुनु काजी ॥ मा० ॥ १ ॥ देव वजावे दुदुभी

सने । सोनड्यानी विरपा । कीयो पारणो आद जिनेसर । मिटी भूख नें

तिरखाजी ॥ मा० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर २

मगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा ॥ मारै आखातीज तिवारेजी

॥ मा० ॥ ३ ॥ सकट काटो । पिपत विडारो । राखो हमारी लाज ।

नानुंगम फगजोडी कर्ता । ऋषभदेव मद्भागजजी ॥ मा० ॥ ४ ॥

## ( दाल ८-राग मरहटी लावणी )

तू पुरुषोत्तम त्रिजग उत्तम तूँहि विधाता सुखदाता । सब जग  
 ज्ञाता सबको ग्याता ॥ तव गुण पार नही पाता ॥ टेर ॥ तूही बुध  
 तूही मृध निरंजन तू शंकर ईश्वर धाता, तूहिज विष्णु तूं जग जि-  
 ष्णूं, तूं चतुरानन विधाता ॥ तूं० ॥ १ ॥ तूं सुख करता सब दुख  
 हरता, तूं शिव भर्ता शिवगामी ॥ तूं अविकारी महिमा भारी, जग  
 वञ्चल अंतरजामी ॥ तूं० ॥ २ ॥ तू मन मोहन तूं जग सोहन ।  
 कोहन मोहन नवि माया, नहि तुज लोहन सब जग थोहन द्रोहन  
 रंचन शिव राया ॥ तूं० ॥ ३ ॥ करुणा कीजे मेहर धरीजे । इक्षुरस  
 हमपें लीजे । लाभ ए दीजे हम मन रीझे । जगजीवन पार्वन कीजे  
 ॥ तूं० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ कवि चतुराई.

दाहिन कर बोल्योतिसै । करुणा निधि अवधार ॥

मुज कर भोजन लीजीए । मै तुम आग्याकार ॥ १ ॥

॥ कवत ॥ सबइया २३

बालपनेही तें सेव धरो चित्त । अशुष्ट तें अमी पान करायो ॥

इक्षु ग्रहे हीतें वश चलयो । तुम तिलक कीयो जब राज दिरायो ॥

भरतादि निज नंदनकू । अरुमे रेही शुभ लंडन सुखदायो ॥

भोजन पूजन सम्रन दानन । लोचनमें फिर आडोही आयो ॥ १ ॥

॥ वामकर उक्तः दोहा ॥

रेरे नीच निदर निलज । वृथा धरै अभिमान ॥

आद धकी भेला वस्या । छानो नही गिमार ॥

माणे गुन मोसालको । करतन लजत लिगार

॥ २ ॥

॥ सवइया २३ ॥

ढालरूं राख वचावत स्वामीरू चाप धरू अरू वीर तापाऊ ।

अरूनको गिनयो हप्तें अरू वामेही गर्दभ काज कराऊ ॥

वामेही पास सोये मुख पावत । भोजन करत मे माखी उढाऊं ।

व्याहन भोजन रहत अकेलो चोर जुवारी कितें गुण गाऊ ॥ २ ॥

॥ दहा ॥

करत विवादहि करवीहू । निज २ गुरुता मान ॥

माळूं याते वर्ष लग । भूख मरे भगवान

॥ १ ॥

कहे श्रेयांश कृपा करो । धो अवद्रोह मिटाय ॥

होय भळे अवलीजीए । मुज मन वलित थाय

॥ २ ॥

[ ढाल ९—ख्यालकी ]

ऋषभ जिनेसर कीयो पारणो । मारी रस सेलडी ॥ प्र. टेर ॥ घडा

एकसो आठ सेलडी । रस भरीया छैनीका ॥ ढान दीयो श्रेयाण

बुपरजी । माडलीया प्रभूनु काजी ॥ मा० ॥ १ ॥ देव वजावे दुदुभी

सने । सोनइयानी विरपा । कीयो पारणो आठ जिनेसर । मिटी भूख नें

तिरखाजी ॥ मा० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर २

मगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा ॥ मारै आखातीज तिवारेजी

॥ मा० ॥ ३ ॥ सकट काटो विपत विडारो । राखो हमारी लाज ।

नानुराम ऊरजोडी कृता । ऋषभदेव मडागजजी ॥ मा० ॥ ४ ॥



॥ छप्पय ॥

वरस सहस्र छदमस्थ । रत्ना जिन त्रिभुवन भूषण । मास फाल्गुन  
असित पक्ष ग्यारस निरदूपन । प्रात समय महाराज सकड मुख नाम  
उग्रानही । निगोध वृक्ष तल नाथ धन्यो जय तूरिय व्यानहि । अष्ट  
भक्त तपने विपै उपनो पंचम ग्यान । अग्र परिवार वखान हू । सूनो  
मन निश्चल आन ॥ १ ॥ चऊरासी गणसार चउरासी गणधर  
कहिये । मुनि चउरासि हजार । लाख तिहूं समणी लहिये । श्रेयांश  
प्रमुख तीन लाख अरु पांच हजारदि । श्रावक उत्तम जान व्रत  
द्वादश शुध धारही । सुभद्रा आदे करी श्रावकणी परिवार । पांच  
लाख अरु उपरै कही चोपन हजार ॥ २ ॥ सहस चार शत सात  
पचास मुनि पुरवधारी । अवधिग्यानी नव सहस्र केवली बीस  
हजारी । वैक्यी बीस हजार शतही पट उपर जानो । विपुल मति-  
वारे हजार सार्द्ध शत पटहि प्रमाणो । एताही वादी मुनिए अनुत्तरो  
पपाती जान । सहस्र बाबीस पट सत भला प्रणमूं गुण मणि खान ॥ ३ ॥

चंद्रायणो

माघ मास पक्ष असित तिथी तेरस दिने । गिर अष्टापद शिखर  
स्वाम पद्मासने ॥ पट उपवास संथार प्रातःसमय सही ॥ अरिहा ॥  
दश सहस्र मुनी साथ नाथ शिव गति लही ॥ ४ ॥

॥ अथ धनकी चाल ॥

जपो तुम नाभिनंद भगवान । नाम तें होय जावें कल्याण । प्रभूकी  
महिमा है असमान ॥ धरो तुम उजल चित्तसे ध्यान । जिनुसे खुलेगी  
सुखकी खान । वचन एक रलीजे परमाण । प्रभूकू एक चित्तध्यावें ।  
आपदा जडहीतें जायैजी ॥ १ ॥ जपो तुम प्ररुदेव्याके नद । जिनुसे

होय जावे आनद । जाय दरे कर्मनके सब फद । मगट होय जावे  
मुखके फद । छोरघो जूठा ए जग धब । खुलेगी निज गुणकी मकरंठ  
सीख ए मेरी मृन लीजे । जिनेदका जाप सदा कीजेजी ॥ २ ॥  
नगीने नगर बीच आया । वसै जिहां जिन धर्मो भायां ॥ अक्षय वृत्ती-  
भाका दिन पाया । जवि ए जिनके गुण गाया । सुनतही हान हुल-  
साया । मंदमती मनमें मुर जाया । चरित्र ए रेखराजजी गावे । प्रभु  
गुण भव्यने मन भावैजी ॥ ३ ॥

इति अक्षय तृतीया व्याख्यान.

॥ २ छन्द ॥

श्री ऋषभ जिणेसर जगत सिरे । मुरनर सम भर तू एण । अरे  
दित सागर नागर विघ्न हरे । इम दास सदा तुज आस धरे ॥ १ ॥  
अही अपि उदक भय हेल हटे । अरि करि हरि रोग निरोग मिटे ।  
जिण जाप किया सताप कटे । तिण ऋषभ २ सहु लोक रटे ॥ २ ॥  
विकराल अकाल जिम काल धसे । जणवीहै मुखदोई जीहलसे ।  
विपहर आसी विपके मढसे । तुज चरण कमल चित जासबसे ॥ ३ ॥  
गिरि गहन संघन वन जन न मिले । बहु सायज साच पिसाच छले ।  
घस बस दावानल मखल बले । प्रभु सपरण सकुट तेह दले ॥ ४ ॥  
दरियो भरियो जन देखि दरे । फिर गिर सम मगर अनेक फिरे ।  
उछले जल जोर जिहाज भरे । तो विनकुण तेहथी सहाय करे ॥ ५ ॥  
सूरा पूरा खग हाथ गहै । कायर चायु जिम धूज रहै ॥ धडके  
धड सधिर मवाद वहै ॥ प्रभु पउतिहांजइलउल है ॥ ६ ॥  
परतख गिरिपर इ उचपणे । ए रावण जिम घर इद्र तणै । कुजर  
मद हर बहु लोक हणै । तुज सेवक गज अज जेप गिणे ॥ ७ ॥  
जाहर नाहर जे निज जपे । आपड चापड गयगड कपे । नख-

॥ छप्पय ॥

वरस सहस्र छदमस्थ । रत्ना जिन त्रिभुवन भूषण । मास फाल्गुन  
असित पक्ष ग्यारस निरदूपन । प्रात समय महाराज सकद मुख नाम  
उद्यानही । निगोध वृक्ष तल नाथ धन्यो जय तूरिय व्यानहि । अष्ट  
भक्त तपने विपै उपनो पचम ग्यान । अय परिवार वखान हू । सुनो  
मन निश्चल आन ॥ १ ॥ चऊरासी गणसार चउरासी गणधर  
कहिये । मुनि चउरासि हजार । लाख तिहूं समणी लहिये । श्रेयांश  
प्रमुख तीन लाख अरु पाच हजारदि । श्रावक उत्तम जान व्रत  
द्वादश शुध धारही । सुभद्रा आदे करी श्रावकणी परिवार । पांच  
लाख अरु उपरै कही चोपन हजार ॥ २ ॥ संहस चार शत सात  
पचास मुनि पुरवधारी । अवधिग्यानी नव सहस्र केवली वीस  
हजारी । वैक्रयी वीस हजार शतही पट उपर जानो । विपुल मति-  
वारे हजार सार्द्ध शत पटहि प्रमाणो । एताही वादी मुनिए अनुत्तरो  
पपाती जान । संहस बावीस पट सत भला प्रणमूं गुण मणि खांण ॥ ३ ॥

चंद्रायणो

माघ मास पक्ष असित तिथी तेरस दिने । गिर अष्टापद शिखर  
स्वाम पद्मासने ॥ पट उपवास सथार प्रातःसमय सही ॥ अरिहां ॥  
दश सहस्र मुनी साथ नाथ शिव गति लही ॥ ४ ॥

॥ अथ घनकी चाल ॥

जपो तुम नाभिनद भगवान । नाम ते होय जावें कल्याण । प्रभूकी  
महिमा है असमान ॥ धरो तुम उजल चित्तसे ध्यान । जिनुसे खुलेगी  
सुखकी खान । वचन एक रलीजे परमाण । प्रभूकू एक चित्तध्यानें ।  
आपदा जडहीनें जावैनी ॥ १ ॥ जपो तुम मरुटेन्याके नद । जिनुमें

होय जावे आनंद । जाय टरे कर्मनके सव फंद । मगट होय जावे  
 मुखके कद । छोरयो जूठ ए जग धंध । खुलेगी निज गुणकी मकरद  
 सीख ए मेरी मुन लीजे । जिनेदका जाप सदा कीजेजी ॥ २ ॥  
 नगीनें नगर बीच आया । वसै जिहां जिन धर्यां भायां ॥ अक्षय वृत्ती-  
 थाका दिन पाया । जवि ए जिनके गुण गाया । सुनतही ज्ञान हुल-  
 साया । मंदमती मनमें मुर जाया । चरित्र ए रेखराजजी गावे । प्रभु  
 गुण भव्यने मन भावैजी ॥ ३ ॥

इति अक्षय तृतीया व्याख्यान.

॥ २ छन्द ॥

श्री ऋषभ जिणेसर जगत सिरे । सुरनर सम भर तू एण अरे  
 हित सागर नागर विघ्न हरे । इम दास सदा तुज आस धरै ॥ १ ॥  
 अही अग्नि उदक भय हेल हटे । अरि करि हरि रोग निरोग मिटे ।  
 जिण जाप किया संताप कटे । तिण ऋषभ २ संहु लोक रटे ॥ २ ॥  
 पिकराल अकाल जिम काल धसे । जणवीहै मुखदोई जीहलसे ।  
 विपहर आसी विपके मडसे । तुज चरण कमल धित जासबसे ॥ ३ ॥  
 गिरि गहन संघन वन जन न मिले । बहु सायज साच पिसाच छले ।  
 घस वस दावानल प्रबल बले । प्रभु समरण सकट तेह टले ॥ ४ ॥  
 दरियो भरियो जन देखि हरे । फिर गिर सम मगर अनेक फिरे ।  
 उठले जल जोर जिहाज भरे । तो बिनकुण तेहथी सहाय करे ॥ ५ ॥  
 सूरु पूरा खग हाथ गहै । कायर वायु जिम धूज रहै ॥ घडके  
 घड रुधिर मवाह वहै ॥ प्रभु पछतिहाजिहलछल है ॥ ६ ॥  
 परतख गिरिपर इं उचपणे । ए रावण जिम घर इंद्र तणै । कुंजर  
 मड झर बहु लोक हणै । तुज सेवक गज अज जेय गिणे ॥ ७ ॥  
 जाहर नाहर जे निज जपे । आपड चापड गयगड कंपे । नख-

भर.मोती घर.२ भंजे । जनते जिमते मृगपति गंजे ॥ ८ ॥ वध  
 पढीयो रोह रूढीयो छूटे । वेडी पिण घण नेडी तूटे । हय कडियां  
 पाय जडीयां छूटे । प्रभु नाम लीया लीला छूटे ॥ ९ ॥ जसु अंगज  
 लोदर सगनमे । प्रतिकूल सदा सिर शूल खमे । अति कुष्ट गती अति  
 दुष्ट समे । प्रभु व्याधि उपाधि असाधि गमे ॥ १० ॥ धन धान्य  
 निधान घणी संपे । चतुरंग चमू घर २ चंपे । केविमुणधाकहीये  
 कंपे । जो नेह धरी निज जन जपे ॥ ११ ॥ बहु चाकर वृंद चलै  
 केडै । नरपति पिण अति हित कर तेडै । जिणरै समरथ साद्वि-  
 नेडै । तीन भवनमें तस कुण छेडै ॥ १२ ॥ गज गामिनी भामिनी  
 भाग भरी । अति रूप निरूपम जानपरी । जिण देव खरी मुज सेव-  
 करी । तिणरै घर घरणी सतीसखरी ॥ १३ ॥ बिलसे, जग भोग  
 जिसा भावे । मुखकट, दोगंधक सुरदावे । परभव पिण अति शुकुं  
 गति पावे । धन नाभ नृपत सुत जे ध्यावे ॥ १४ ॥ तुज, मुजस  
 करी त्रिभुवन छायो । तूं आगम निगम आगम गायो । पट् दरसन  
 पिण तूंहिज ध्यायो । इम जान सृजान शरण आयो ॥ १५ ॥ अति  
 दीन, दयाल, कृपाल इसो नहि नायक लायक राज, जिसो । जिनराज  
 अवरसूं, काज किसो । निरखो मुनि जर भर दास दीसो ॥ १६ ॥  
 जिणसे सतणे फण सहस्र सही । फण २ बलि दोय २ जीहलही ।  
 गुण छेहन, पावै तेह अही मुख एक सक्र मे केम कही ॥ १७ ॥ गु-  
 छराती लूका गळ घणी । सिधपोट दिपे सिधराजे गणी । तसु सीस  
 कृपाल ये हित भणी । किर्ति ए इम मुनि कृष्ण भणी ॥ १८ ॥

३ [अथ खंदक पद्मविशो-राग चंद्रगुप्त राजा सुनो.]

सावत्थी नगरी वसे । कात्यायनी खंदक नामरे । परिव्राजक  
 पंडित महा । हाता मृदु परिणामरे ॥ १ ॥ मन वसीयोजी महावीरमें  
 ॥ टेरे ॥ वेसालिक श्रावक भलो, वसे पिंगल निर्ग्रथरे, पूछे आय  
 खंदक भणी । लोक सात अनतरे ॥ म० ॥ २ ॥ जीव सिद्धि अरु  
 सिद्धजी, सांत अनत वतायरे, हानि वृद्धि संसारनी, कवन मरनथी  
 धायरे ॥ म० ॥ ३ ॥ पाचही प्रश्न पूछता, शक्ति वखितहोयरे, पुनः  
 पुनः पिंगल पूछीयो । नादै उत्तर कोयरे ॥ म० ॥ ४ ॥ मून करी  
 जब मुनी गयो । खंदक मन दिलगीररे, इतरे निसुणि पधारीया क-  
 यगलाये वीररे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाता जन देखी हर्षीयो । फलिया  
 वडित आजरे । भ्रमर तिमिर हरवारवी । पूछूं जई जिनराजरे  
 ॥ म० ॥ ६ ॥ वदन नमन विधी करी । प्रश्न अर्थ सहेतुरे चितवी  
 आश्रम जई लीया उपकर्ण चवदै समेतुरे ॥ म० ॥ ७ ॥ आवै अति  
 उमंगसू । जिन गोयमनें भाखेरे । पूर्व सगति ताहरो । मिलसीधर  
 अवि लाखेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ पूछें कुण किन कारणे । मिलमी किति  
 यक वाररे । जिन कहे खंदक आवीयो । दारयो सर्व विचाररे ॥ म० ॥  
 ॥ ९ ॥ अत्रैव मिलसी जिन कहै । पूछै बलीगणधाररे । प्रभु सजम  
 ग्रहि वाके नही । हताहुसी अणगाररे ॥ म० ॥ १० ॥ इतरे निकटज  
 आवीर्यो । गोतम सनमुख जायरे । द्रव्य निक्षेपस रागथी । वाजिन  
 ज्ञान दिपायरे ॥ म० ॥ ११ ॥ खंदक भलाही तू आवियो । वचन  
 सराग प्रकाशरे । पिंगल प्रसन पूछियां । नाया आयो निमासरे ॥ म० ॥  
 ॥ १२ ॥ साची छैकए वारता हता सत्य निसदेहरे । किम जाणी  
 मुज मन तणी । कहै वीर वचनथी ए हरे ॥ म० ॥ १३ ॥ धरमा  
 धारज माहरा, सववेता जगनाथरे । कहै खंदकतभू वदवा । चालू तां-

हरी सांधरे ॥ म० ॥ १४ ॥ जथा मुख जेजकरोमती । आवै गो-  
 तम संगरे । देख्यो द्विदारज वीरनो उपज्यो उत्कृष्ट उमंगरे ॥ म० ॥  
 ॥ १५ ॥ वियटभोजी वीरजी । अविभूषित सोभायरे शुभ पुदगल  
 सहु लोकनां । लाग्ना जिनतन आयरे ॥ म० ॥ १६ ॥ दोष रहित  
 सब गुण भन्या । समता सिंधु जिनेंदरे दोषसिंधु अन्य  
 देव है । कहां खप्तोत विनेंदरे ॥ म० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक  
 धदन करी । कथी जिन गोयम जेमरे । मनगत भाव बतावीयो । उप-  
 ज्यो पूरण पेमरे ॥ म० ॥ १८ ॥ अमृत ध्वनि जिन दारबवै । मभो-  
 त्तर विस्ताररे । लोक जीव सिद्धि सिद्धजी । द्रव्यादि चतुः प्रकाररे  
 ॥ म० ॥ १९ ॥ द्रव्य क्षेत्रधी सांत है काल भावधी है अनंतरे ।  
 बाल पंडित द्विभेदधी । मरण कहै भगवंतरे ॥ म० ॥ २० ॥ चलि-  
 तादि द्वादश बालना । मरनधी भ्रमण संसाररे । पंडित द्विभेदे करी ।  
 जीव लहे भव पाररे ॥ म० ॥ २१ ॥ एम सुणी प्रतिबुद्धियो । कहै दा-  
 खो जिन धर्मरे । निमृणी मन वयरगीयो । मिट गयो मिथ्या भ्रमरे  
 ॥ म० ॥ २२ ॥ संजम ग्रही शुद्ध भावसूं । भणिया अंग इग्याररे ।  
 प्रतिमा गुणरत्न संवडरे । तप कीयो विविध प्रकाररे ॥ म० ॥ २३ ॥  
 थांकी शक्ती शरीरनी । धना जेम शरीररे । आज्ञा लही अनसन की-  
 यो । वैभारगिर परधीररे ॥ म० ॥ २४ ॥ दीक्षा द्वादश वर्षकी ।  
 अनसन मास प्रमाणरे । उत्कृष्टायु स्वर्ग वारमे चवि विदेहै निरवा-  
 नरे ॥ म० ॥ २५ ॥ पचमांग दूजा शतकमे । आदि उद्देशानुसाररे ।  
 ढाल करी खाचरो दमें । खदकनो अधिकाररे ॥ म० ॥ २६ ॥ क-  
 लज्ञ ॥ पूज्यश्री कनीरामजीको चरणकज सेवक सदा । कहै कीर्तन  
 खंदक मुनिकी । सुनतही लहे सपदा ॥ वेद भू अंक शिवही सबत् असित  
 नबमी असाढमें वार भगल करन भंगल सुनत श्रोता मन गमे ॥ १ ॥  
 इति खदक पहविंशी.

४ (अथ फाटका निषेध.)

॥ दोहा ॥

अहो एह कलियुग विपै, तज्या सकल व्यापार ॥  
 मेहलीला मरु फाटको, इनहीको अधिकार ॥ १ ॥  
 सयन थकी निरधन हुवे, स्ववस पर आधीन ॥  
 सन्नीपात किसी दशा, भये दीन परवीन ॥ २ ॥

( ढाल एक )

सुणियोरे वाजू० ए टेशी ॥ सुणियो नरस्याणा मतिय करो तुम  
 फाटका, घरकार होय न घाटका । देवे छे सतगुरु चाटका ॥ सु० ॥  
 मत पिबै जहेर भर वाटका, रयाल बनाहै जाटका ॥ सु० ॥ टेर. ॥  
 आरत भ्यान रहै नित मनये, धर्म ध्यान नहि सूजे, जोको मिलै अ-  
 लिया गलियामे, प्रथम भावकी बूजेरे ॥ सु० १ ॥ अब कै भैया  
 तेजी भारी सुण जीत होय गयो राजी, घरमे आय कहै सुन प्यारी ।  
 फरो रसोई ताजीरे ॥ सु० २ ॥ कचनमई करायू वाजू करघू  
 पीरी जर्द, भूषण सर्व भातका भारी । तो जाणी ज्यो मर्दरे ॥ सु. ॥  
 ॥ ३ ॥ भागा घोटे तार जमावे, बाजारा चिच जावे, इतराहीमे म-  
 दीहाली, छाने दुसक्या खावेरे ॥ सु० ४ ॥ देख कामिनी बोले  
 कता । दीसै वदन उदासी । बोल्यो सटक खोलदे गेणा, नही तो  
 खाऊ फासीरे ॥ सु. ५ ॥ बोली त्रिया पहला मे वरज्या, चगो नहि  
 ए चालो, गहणो सर्व सामूका कर को, डणकी वाट न नालोरे ॥ सु०  
 ॥ ६ ॥ नैन लाल कर बोल्यो ब्रडकी, खोले छे के नाई, थारा  
 बापको नही छे गहणो, तूजकठामू ल्याइरे ॥ सु० ७ ॥ जो मुजसे  
 तू कर जिंदगी, तो त्रै पड जाऊ. शत्रु जोड बोल्यो सुण प्यारी,



हरी सांधरे ॥ म० ॥ १४ ॥ जया सुख जेजकरोमती । आवै गो-  
 तम संगरे । देख्यो दिदारज वीरनो उपज्यो उत्कृष्ट उमंगरे ॥ म० ॥  
 ॥ १५ ॥ वियटभोजी वीरजी । अविभूषित सोभायरे शुभ पुदगल  
 सह्यु लोकना । लागा जिनतन आयरे ॥ म० ॥ १६ ॥ दोष रहित  
 सब गुण भन्या । समता सिंधु जिनंदरे दोषसिंधु अन्य  
 देव है । फहां खत्रोत दिनेदरे ॥ म० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक  
 धदन करी । कथी जिन गोयम जेमरे । मनगत भाव बताबीयो । उप-  
 ज्यो पूरण पेमरे ॥ म० ॥ १८ ॥ अमृत ध्वनि जिन दाखवै । प्रभो-  
 त्तर विस्ताररे । लोक जीव सिद्धि सिद्धजी । द्रव्यादि चतुः प्रकाररे  
 ॥ म० ॥ १९ ॥ द्रव्य क्षेत्रथी सात है काल भावथी है अनंतरे ।  
 बाल पंडित द्विभेदथी । मरण कहै भगवंतरे ॥ म० ॥ २० ॥ चलि-  
 तादि द्वादश बालना । मरनथी भ्रमण संसाररे । पंडित द्विभेदे करी  
 जीव लहे भव पाररे ॥ म० ॥ २१ ॥ एम सुणी प्रतिबुद्धियो ।  
 खौ जिन धर्मरे । निमुणी मन वयरगीयो । मिट गयो मिथ्या  
 ॥ म० ॥ २२ ॥ संजम ग्रही शुद्ध भावसू । भणिया अग  
 प्रतिमा गुणरत्न संवळरे । तप कीयो विविध प्रकाररे ॥ म० ॥  
 थांकी शक्ती शरीरनी । धन्ना जेम शरीररे । आज्ञा लही  
 यो । पैभारगिर परधीररे ॥ म० ॥ २४ ॥ दीक्षा  
 अनसन मास  
 नरे ॥ म० ॥ २५ ॥  
 ढाल करी खाचरो  
 लक्ष ॥ पूज्य श्री कर्म  
 खंदक मुनिकी ।  
 नवमी असाढमें वार

स्वर्ग वारमे चवि  
 शतकमे । आदि  
 अधिकाररे ॥ म० ॥  
 न सेवक सदा ।  
 भू अंक शिवही  
 श्रोता मन

छपन दिसा, कुमारिका, नमी मात उमंग ।  
वृत्य गीत करवा भणी, आणि हिये उमंग ॥२॥

## ॥ दाल १ ली-राग चलत. ॥

ताल मृदंग रग चंग वाजै, मादल भेरीनै वंसरी, वीणा त  
ढील वाजे, धऊ ३ करत धऊसरि ॥१॥ ढकण ताल कसाल तली  
काख वाजित्र कीररी ॥ संख घटा वश वाजे ॥ खुरमुहीनें पुरपुर  
॥ २ ॥ रणसिंधो रणतूर वाजे ॥ मेरु कड उडवरी ॥ सुरणाड सु  
नाद वाजे ॥ मजरीनें खजरी ॥ ३ ॥ आरवी अरवाण वाजे ॥ रण  
वाजा झळरी ॥ सतारो ने तूंज वीणा ॥ तदुरो हुलहाळरी ॥ ४  
झारगी खाव वाजे ॥ खभायवोनें रणहुरी ॥ नोवत राजा घोर वाजे  
वाजानो अति सुर करी ॥ ५ ॥ जणथी झणकार हुवे ॥ तण  
वीणा ततरी ॥ वाजानें झणकार माहे ॥ मधूर मधुर सुर वसरी ॥६

### टोहा

गीत विनोद करे घणा, रूप अनूपम सार ॥  
अचरिज पामें देखतां, नाटिकना जिणकार ॥१॥

## ॥ दाल-तेहिज ॥

कनैक सकत, स्वखैख मक्ति गगै घूंमर देतगी ॥ घयै वा  
घोर वाजै, फिर २ पेरी लेतरी ॥१॥ नने नाचत कुमर कुमरी, चं  
अति चू पेकरी ॥ जजे अतिही जोत दीपै, सोंमे अति रूपे क  
॥२॥ जजे अति जणकार करती, नने नाटिक सुदरी, टट्टे टप  
रिम्क क्षिपके, ठठे ठाव पुरदरी ॥३॥ ढढे ढंवर अति भारी, ढ  
ढणकत झामरी, रणणा टरणकार करनी, तता थइ २ कररी ॥४॥

वेगो एह छोडाऊंरे ॥ सु० ८ ॥ ज्यू त्यूं छली चालियो छानै, अव  
 वोहरापे आवे, दूणो द्रव्य व्याज अरु दूणो, काटो लार लगावेरे  
 ॥ सु० ९ ॥ इते मुणी वन आव्यो अवधु, नेन पत्रक नही खोले,  
 फरक अंक उनसे नहि छाना, जो कुछ वचन ज बोलेरे ॥ सु० ॥  
 ॥ १० ॥ लटका कर कर करे डहोता, जो कुछ बात बतावै, जावै  
 वजारुं पेडा ले आवे, गांजा चडस पिलावेरे ॥ सु० ११ ॥ पलक  
 खोल कहै सुनरे वच्चा । माई शक्ति हुकुम सुनाया, इतना फरक धर  
 कमती रखे. फिरतो अलख जगायारे ॥ सु० १२ ॥ जाजा कही  
 सिख जव दीनी, किनकूं नही सुनादो, आय सदन धन सब चूचायो,  
 वावो कर गयो वावोरे ॥ सु० १३ ॥ मुल्ला फकीर ज्योतिषी जिंदा,  
 भाव भैरुंका गावे, अरुलवध सबहीरू धोखे, फिर द्रुलिद्र जोग नहि  
 जावैरे ॥ सु० १४ ॥ इनभव एह फजीति होवे, परभवमें दुख पावे,  
 तो पिण भोले नर नहि समजे, अंदर ज्ञान न आवेरे ॥ सु० १५ ॥  
 साल बयाल उगणीसेकाती, चवदश चोमासि चारु, नवेनगर  
 हलरुमि हितकूं, बडी ढाल एवारूरे ॥ सु० १६ ॥ रेखराजजी कहै  
 सदा सुख चावो, तो इणनें छिटकावो, लाभ हान करमा अनुसारै,  
 धर्म व्यान लय ल्यावोरे ॥ सु० १७ ॥

इति फाटका निषेध.



५ (अथ दीपमालिकापर महावीर स्वामिनो जन्म कल्याण.)

दोहा.

कुंडनपुरवर अवतर्या, सिद्धारथ महाराय ॥

रन्नकूब तसलासती, भगट हूवा जिन आय ॥ १ ॥

छपन दिसा कुमारिका, नमी मात उमग ।

नृत्य गीत करवा भणी, आणि हिचे उमंग ॥२॥

## ॥ ढाल १ ली-राग चलत. ॥

ताल मृदंग रग चग वाजै, मादल भेरीनै वसरी, वीणा तूणा  
ढोल वाजे, धऊ ३ करत धऊसरि ॥१॥ ढकण ताल कसाल तलीया,  
क्राख वाजित्र कीकरी ॥ संख घटा वश वाजे ॥ खुरमुहीनें पुरपुररी  
॥ २ ॥ रणसिंधो रणतूर वाजे ॥ मेरु कड उडवरी ॥ सुरणाड सुर-  
नाड वाजे ॥ मजरीनें खजरी ॥ ३ ॥ आरखी अरवाण वाजे ॥ रणरू  
वाजा झळरी ॥ सतारो ने तूय वीणा ॥ तडुरो हुलहाळरी ॥ ४ ॥  
झारगी रवात्र वाजे ॥ खभायरोनें रणहरी ॥ नोत्रत वाजा घोर वाजे ॥  
वाजानो अति सुर करी ॥ ५ ॥ झणणथी झणकार हुवे ॥ तणण  
वीणा ततरी ॥ वाजानें झणकार माहे ॥ मधूर मधुर सुर वसरी ॥६॥

टोहा.

गीत विनोद करे घणा, रूप अनूपम सार ॥

अचरिज पामें देखतां, नाटिकना झिणकार ॥१॥

## ॥ ढाल-तेहिज. ॥

कनैक सरुत, खखैख मकित गगै घुमर देऊगी ॥ घघै वाजा  
घोर वाजै, फिर २ पेरी छेतरी ॥१॥ नने नाचत कुमर कुमरी, चचे  
अति चूं पेकरी ॥ जजे अतिही जोत दीपै, सोमे अति रूपे करी  
॥२॥ जजे अति जणकार करवी, नने नाटिक सुदरी, टट्टै टपके  
रिपक झिमके, ठठे ठात्र पुरदरी ॥३॥ ढडे ढंवर अति भारी, ढडे  
ढणकत झामरी, रणणा टरणकार करनी, तता थड २ करी ॥४॥

येधिरम् नाच कातां, टदे ताली देकरी ॥ धवे धरती हेतवम्, नने  
 ली लेतरी ॥ ५ ॥ पवे पल २ फके फीर, चवे वाहस वारती ममे  
 मोठी राग कर २, कोयल शब्द सुगावती ॥ ६ ॥ जजे जपती नाम  
 भुको, ररे रामतपैरमे ॥ लले ल्यावे रूप नव २ देख मन सहके  
 मे ॥ ७ ॥

### ॥ ढाल २ जी ॥

वन तसलादे तो ॥ भगी हे, वन कुळ धन अवतारो ॥ धन  
 रुप तुमारी ॥ देवंगणा मिल इम कहे हैं ॥ गावे मंगल दो चारो  
 धन० ॥ १ ॥ पूर्य पुण्यकीया घणा है ॥ तें जायो तिलोकीरो नाथ  
 व० ॥ रतन क्खतें ऊर धर्यो है ॥ जग तारग जगनाथ ॥ ध० ॥  
 २ ॥ देइ प्रदक्षिणा भावसुं हे ॥ देव्यां वैठी आगणमायो ॥ ध० ॥ मधुर  
 स्वर गावती है ॥ वले ढोले सीतल वायो ॥ ध० ॥ ३ ॥ महा  
 पुण्यत तूं सठी है ॥ धनकंठ रतारी सांग ॥ व० ॥ दरसग दीठो  
 ताहरो हे ॥ थाये कोड कल्याण हे ॥ व० ॥ ४ ॥ वन माता मोठी  
 गती है ॥ पुत्रस्यार्थ एह ॥ ध० ॥ एक सहस्र आठ लक्षण धणो  
 ॥ बालक सोवन वरणी देठ ॥ व० ॥ ५ ॥

### ॥ ढाल ३ री-राग अंबलारी वाडी वनडी ॥

कीरत वगारी हे माता जगतमें झारी ॥ मुरत थारी हे वारी मै  
 लिहारी हे माता ॥ तूं पुण्यवंत मोठी ॥ १ ॥ पुत्र रतन जायो जग  
 मस पायो ॥ देव इंद्राणी मिल मंगल गायो हे माता ॥ तु० ॥ २ ॥  
 माताने भावे जेहवा मंगल गावे ॥ ठप वधावे इद्र तुम गुग गावे हे  
 गा ॥ तु० ॥ ३ ॥ मधुरीतो २ देव्या बोले छे वाणी ॥ गजा  
 स्यस्यार्थ घर, तिसलादे राणी हे माता ॥ तु० ॥ ४ ॥ प्रभुजीनी  
 माता हे, रयण कुल धारिणी ॥ वैकुण्ठ वासो ताहरी मोठी करणी हे  
 माता ॥ तु० ॥ ५ ॥

## ॥ दाल ४ थी-राग तेल चढी मृगानेणी हो. ॥

दान-मुपात्र दीघो हे ॥ तिसलाडे राणी ॥ सेव्या केइसा  
 घरसाल जीवटया दिल आणी हे ॥ ति० ॥ तो घर मंगल माल ॥ १ ॥  
 सील सदा ते समगत धारी हो ॥ ति० ॥ कीधा केइ व्रत रसाल ॥  
 नृपतप्पा केइरूढा हे ॥ ति० ॥ तोडया केइ कर्मना जाल ॥ २ ॥ भाव  
 भगत सतगुरनी हे ॥ ति० ॥ मुणिया केइ ज्ञान रसाल ॥ व्रत वारे ते  
 पाल्या हे ॥ गति० ॥ अतिचार सहु टाल ॥ ३ ॥ इद्र आवीने गुण गावे  
 हे ॥ ति० ॥ जोडी वळे टोन्ही हाय ॥ रतन कूस घर मोटी हे ॥ ति० ॥  
 जन्म्या श्री जगनाथ ॥ ४ ॥

## ॥ दाल ५ वी-राग वाडी तो खुली ल० ॥

हिवै माता तो पोढे पारंग महिल मैहे ॥ सेज्या तो अति मुख  
 माल हे माता ॥ पुण्यवत जस जग ताहिरौ ॥ माता जायो ते पुण्य-  
 वंत वाल हे माता ॥ पुत्र रतन ते जनमियो ॥ १ ॥ सुख करता त्रिहु  
 लोकमे, पुण्य पोर सौ जाण हे माता ॥ सर्व लक्षण कर सोभतो,  
 छपनो गर्भमे आण हे ॥ माता पु० २ ॥ माता अपर नाही काड तो  
 निसी ॥ र्ण स्वर्ग मृत्यु पाताल हे माता ॥ इंद्र नरेद्र सहयी बडो ॥  
 ए छे नाथ त्रिलोकी वाल हे माता ॥ पु० ३ ॥ मुक्ति पारंग दे-  
 खाडसी ॥ दुग्नियाने मुख आधार हे माता ॥ रोग ने सोग निवा-  
 रिसी ॥ भद्र देसी पार उतार हे ॥ माता ॥ पु० ४ ॥ माता धीरज  
 मोटी ताहरी ॥ आयो धीरज पुरुष अवतार हे ॥ प्रभुजी तूठा आप  
 समा करे ॥ मोटा सिवपुरना दातार हे ॥ पु० ५ ॥

## ॥ ढाल ६-राग काफ़ी ॥

सोहमसुरपतमन इम चित्तवै ॥ हिरण गमेखी चुलाऊरे ॥ प्र-  
भुजीरो जन्म भयो हे ॥ जिन मुख निरखण ३ ऊंरे ॥ १ ॥ जाणकि  
माण वणाय मनोहर ॥ घंट मुघंट बनावुरे ॥ प्र० २ ॥ संपत स-  
हित निरखण माता मुख ॥ चरणे सीस नमाउरे ॥ प्र० ३ ॥ अपठर  
सर्व लगी एक ओले ॥ निरख हरल मुख पाऊं रे ॥ प्र० ४ ॥ छ

## ॥ ढाल ७-राग दाइना गीतनीः ॥

पढि वधो घर पास ॥ माता अंकथी लियैरेहां ॥ पंच रूप कर  
संच ॥ सिखर पर आविया हां ॥ १ ॥ मिलिया चोसट इंद ॥ अति  
उछव करे हा ॥ अठ सहस चोसट कलस जलसूं ॥ भरेरेहां ॥ २ ॥  
ढाले श्री जिन सीस, नाटक नव २ रमेरेहां ॥ कर २ राग छतिस ॥  
सहनै मन गमेरेहा ॥ ३ ॥ शक्र वृषभ कर रूप ॥ उछव करै मन  
रलीरेहां ॥ लाया जननी पास ॥ आस पूगी भलीरेहां ॥ ४ ॥

## ॥ दूहा ॥

वस जोडो कुंडल जुगल । कोड वत्तिस सोवन ॥

हुकम थकी उसके अमर । भरै मंडार रतन ॥ १ ॥

नंदीश्वर सगला अमर । मोडव करै अपार ॥

दीदी वधाइ नृप भणी । घर २ मगलाचार ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ८-राग हिरणी जव चरे ॥

घन सिद्धारथ राजवी ॥ ललना ॥ ललाहो घन तसलादेजी  
नार ॥ जिनवर जनमिया ॥ ललना ॥ ओडव मोडव करे घणा ॥  
॥ ललना ॥ बोलाव्यो सह परिवार ॥ जिन ॥ १ ॥ करे दसोदण  
भावसू ॥ ललना ॥ भोजन विविध प्रकारे ॥ जिनवर

अथ दसोदण भाषा.

मांडयो उत्तंग तोरण माडवो ॥ तेतो नीपजाव्यो तुरत नवौ ॥ वली  
 बैसिवानौ आंगणो ॥ तेतो नील रतन तणौ ॥ सगासणीजा घट्टे  
 आया ॥ सिद्धार्थराजानें मन भाया ॥ सखरा मांड्या आसण ॥  
 बैसता किसी विमासण ॥ आगे मूकी सोनानी आडणी ॥ ते किम  
 जायै छाडणी ॥ ऊपरि सोनाना थाल ॥ अत्यंत घणुं विसाल ॥  
 बिचमे चडसटि वाटकी । लिंगार नही जाति काटकी ॥ गंगोदक  
 दोधा ॥ थालक चोलाने हाथ पवित्र कीधा ॥ सगली पांती बैठी ॥  
 तितरै परसण हारी पैठी ॥ ते केहवी छे ॥ सोले श्रृंगार सज्या ॥  
 बीजा काम तज्या ॥ हाथनी रूडी ॥ विहुं वाहे खलके चूडी ॥ लघु  
 लाघवी कला ॥ मन कीया मोकला ॥ चित्तनी उदार ॥ अति घणुं  
 दातार ॥ दौलतनी हाथ ॥ परमेसर देजे तेहनो साय ॥ घसमसती  
 आवी ॥ सगलानें मन भावी ॥ पहिली फलहली परूसें ॥ सगला नाही  
 याहींसे ॥ पाका आवानी कातली ॥ ते बुरा खांडसुं भरीवली पातली ॥  
 पाका केला ॥ ते वली खाडसु कीधा भेला ॥ सरवरा करणा ॥  
 ते वली पीला वरणा ॥ नीला नारंगा ॥ रगै दीसता सुरगा ॥ नी  
 कोयली रायण ॥ परूसी भायणि ॥ दाडिम कुली ॥ खांतां पूजैरली ॥  
 निमजानें अखोड ॥ खाता पूजै कोड ॥ दाख नें विदाम ॥ केई  
 कागटी अनेकेईस्याम ॥ सीलेमी खारक ने खिजूर ॥ ते पिण परू-  
 स्या भरपूर ॥ नालेरनी गरी ॥ ते मालबी गुलम्रु भरी ॥ नीबु खाटा नें  
 मीठा ॥ एहवा कद्रे न दीठा ॥ चारोली नें पिसता लोक जीमें हसता ॥  
 वली सेलहडीने सदाफल ॥ ते पिण परूस्या परिघल । हिवै पकवान  
 आणै ॥ ते केहवा वखाणै ॥ सतपुडा खाजा ॥ तुरत ना कीधा  
 ताजा ॥ सदलानें साज्या ॥ मोटा जाणे प्रातादना छाजा ॥ पडै



## ॥ ढाल ६-राग काफी ॥

सोहमसुरपतमन इम चित्तवै ॥ हिरण गमेखी चुलाऊरे ॥ प्र-  
भुजीरो जन्म भयो हे ॥ जिन मुख निरखग ज ऊंरे ॥ १ ॥ जाणंदि  
माण वणाय मनोहर ॥ घंट सुघंट बजाऊंरे ॥ प्र० २ ॥ संपत स-  
हित निरखण माता मुख ॥ चरणे सीस नमाऊंरे ॥ प्र० ३ ॥ अपठर  
सर्व लगी एरु ओले ॥ निरख हरस्त मुख पाऊं रे ॥ प्र० ४ ॥ छ

## ॥ ढाल ७-राग दाइना गीतनीः ॥

पडि वधो धर पास ॥ माता अंकयी लियैरेहां ॥ पच रूप कर  
संच ॥ सिखर पर आविया हा ॥ १ ॥ मिलिया चोसट इंद्र ॥ अति  
उल्लव करे हां ॥ अठ सहस चोसट कलस जलसूं ॥ भरेरेहां ॥ २ ॥  
ढाले श्री जिन सीस, नाटक नव २ रमेरेहां ॥ कर २ राग छतिस ॥  
सहनै मन गमेरेहां ॥ ३ ॥ शक्र वृषभ कर रूप ॥ उल्लव करै मन  
रलीरेहां ॥ लाया जननी पास ॥ आस पूगी भलीरेहा ॥ ४ ॥

## ॥ दहा ॥

वह्व जोडो कुंडल जुगल । कोड वचिस सोवन ॥  
हुकम थकी उसके अमर । भरै भंडार रतन ॥ १ ॥  
नंदीश्वर सगला अमर । मोडव करै अपार ॥  
दीदी वधाइ नृप भणी । घर २ मंगलाचार ॥ २ ॥

## ॥ ढाल ८-राग हिरणी जव चरे ॥

धन सिद्धारथ राजवी ॥ ललना ॥ ललाहो धन तसलादेजी  
चार ॥ जिनवर जनमिया ॥ ललना ॥ ओडव मोडव करे घणा ॥  
॥ ललना ॥ घोलाव्यो सडु परिवार ॥ जिन ॥ १ ॥ करे देसोडण  
भावसू ॥ ललना ॥ भोजन चिविध प्रकारे ॥ जिनवर

अथ दसोटण भाषा.

मांडयो उत्तग तोरण मांडवो ॥ तेतो नीपजाव्यो तुरत नवौ ॥ वली  
 बैसिवानौ आंगणो ॥ तेतो नील रतन तणौ ॥ सगासणीजा घटे  
 आया ॥ सिद्धार्थराजानें मन भाया ॥ सखरा मांड्या आसण ॥  
 बैसता किसी वियासण ॥ आगे मूकी सोनानी आडणी ॥ ते किम  
 जायै छांडणी ॥ ऊपरि सोनाना थाल ॥ अत्यंत घणुं विसाल ॥  
 बिचमे चरसटि वाटकी । लिगार नही जाति काटकी ॥ गगोदक  
 दीया ॥ थालक चोलाने हाथ पवित्र कीया ॥ सगली पाती बैठी ॥  
 तितरै परसण हारी पैठी ॥ ते केहवी छे ॥ सोले श्रृंगार सज्या ॥  
 चीजां काम तज्या ॥ हाथनी रुडी ॥ विहुं बांहे खलके चूडी ॥ लघु  
 लाघवी कला ॥ मन कीरा मोरुला ॥ चित्तनी उदार ॥ अति घणुं  
 दातार ॥ दौलतनी हाथ ॥ परमेसर देजे तेहनो साय ॥ धसमसती  
 आरी ॥ सगलानें मन भावी ॥ पहिली फलहली परूसें ॥ सगला नाही  
 याहींसे ॥ पाका आवानी कातली ॥ ते बुरा खाडमूं भरी वली पातली ॥  
 पाका केला ॥ ते वली खाडसु कींधा भेला ॥ सरवरा करणा ॥  
 ते वली पीला वरणा ॥ नीला नारंगा ॥ रगै दीसता सुरगा ॥ नी  
 कोयली गयण ॥ परूसी भायणि ॥ दाडिम कुली ॥ खांतां पूजैरली ॥  
 निमजानें अखोड ॥ खाता पूजै फोड ॥ दाख नें विदाम ॥ केड  
 कागदी अनेकेईस्याम ॥ सीलेमी खारक ने खिजूर ॥ ते पिण परु-  
 स्या भरपूर ॥ नाळेरनी गरी ॥ ते मालवी गुलमूं भरी ॥ नीचु खाटा ने  
 मीठा ॥ एहवा फदे न दीठा ॥ चारोलीने पिसता लोक जीमें हसता ॥  
 वली सेल्हडीने सदाफल ॥ ते पिण परूस्या परिघल । द्विवै पकवान  
 आपै ॥ ते केहवा वखाणै ॥ सतपुडा खाजा ॥ तुरत ना कीया  
 ताजा ॥ सदलानें साज्या ॥ मोटा जाणे मातादना छाजा ॥ पडै

परुस्या लाइ ॥ जाणे नान्हा गाइ ॥ कुण २ ते नाम ॥ जीमता म  
 रहे ठाम ॥ मोतिया लाइ ॥ दालिया लाइ ॥ सेविया लाइ ॥ कीटी  
 लाइ ॥ नांदोलिया लाइ ॥ तिलना लाइ ॥ मगरीया लाइ ॥ जग  
 रिया लाइ ॥ सिद्ध केसरीया लाइ ॥ वली बीज्या आण्या पकवान  
 जीमतां वाइइ मुखनोवान ॥ कुण २ जाति ॥ नवी २ भांति ॥ दधि  
 बडा ॥ गूदवडा ॥ फीणा ॥ अति घणु जीणा ॥ सखरा सोट ॥ मा  
 नही खोट ॥ पातली सेव ॥ परुसी रुडी टेव ॥ तरताऊ घेवर ॥ कीथा  
 तेवर ॥ तल्या गूद ॥ श्वेत जाणे मुचकुद ॥ कुडलाकृत जिलेवी ॥ ते  
 पिण सहुंलेवी ॥ सीरां नें पूरी ॥ हूस न रह अधूरी ॥ मीठो मगद ॥  
 आठो माल नगद ॥ वले परुसी मुरकी ॥ जीम डिखांवांनं फुरकी  
 ॥ वले खांडनो चूरमो ॥ साकरनो चूरमो ॥ पडै आंणी लापसी ॥  
 नान्हा मोटा सहुको धापसी ॥ पडै परुसी साली ॥ ते जिमीये विचाल ॥  
 ते कुण २ भेद ॥ सांभलता उपजै उमेद ॥ सुगधशाली ॥ सुवर्ण-  
 शाली ॥ धवलीशाली ॥ रातीशाधी ॥ पिलीशाली ॥ शुद्ध  
 शाली ॥ कौमुदीशाली ॥ कमलशाली ॥ कुंरुणिशाली ॥ देवजीर-  
 शाली ॥ राय भोग शाली ॥ वले साठी खोखा ॥ अग्वड  
 खोखा ॥ निवली स्त्री खांड्या ॥ सगली स्त्री उड्या ॥ हलवे हाथ  
 खोखा ॥ नखवती स्त्री वीण्या ॥ उत्तम स्त्री उण्या ॥ सुघड स्त्री ओ-  
 न्याया ॥ सुजाण स्त्री उतांच्या ॥ एहवा अणियाला ॥ सुगध सरस  
 फुरहरा कूर परुस्या ॥ वले परुसी दाली ॥ ते पिण घणु रसाल ॥  
 कुण २ अने केहवी ॥ मडोपरा मुंगानी दाली ॥ कावली चिणानी  
 दाली ॥ गुजराथी तूरनी दाली ॥ आलरनीदाली ॥ मटरनी दाली ॥  
 वरण पीली ॥ परिणामे सीली ॥ वले परुस्या धिरतपरिघल ॥  
 जे ग्वांघा होइ अतिमल ॥ पिण ते केहवा ॥ आजना ताव्या घी ॥  
 असना घी ॥ मजीठ वरणा घी ॥ केसर वरणा घी ॥ सुरहा घी ॥

नाकपेय घी ॥ सदां आदेय घी ॥ द्विवै पोली परूसी पिण ते के-  
ह्वी २ ॥ आळी पोली ॥ घीपांहे झवोली ॥ फंकरा मारी फलसे  
जाय ॥ इकस पोलिनो एक कवलीयो थाय ॥ द्विवै सालणा परूस्यो  
पिण ते केहा २ ॥ नीली छमकाई डोडीना सालणा ॥ टीडोरीना  
सालणा ॥ टीडसीना सालणा ॥ चीभडाना सा० ॥ कोहलाना सा-  
लणा ॥ करेलाना सालणा ॥ कंभोडाना सालणा ॥ करमदाना सा-  
लणा ॥ फालिमडाना सालणा ॥ केलाना सालणा ॥ आयरियाना  
सालणा ॥ तोरियाना सालणा ॥ मुठ कचराना सालणा ॥ खरवुजा  
सालणा ॥ मतिराना सालणा ॥ मोगरीना सालणा ॥ नीवुना  
सालणा ॥ आमोलना सालणा ॥ वाल्होलना सालणा ॥ वळे चवलांनी  
फलीना सालणा ॥ सरधूनी फलीना सालणा ॥ सांगरीना सालणा ॥  
आंमलाना सालणा ॥ कैरना सालणा ॥ फूलना सालणा ॥ फोगना  
सालणा ॥ नीली मिरिचाना सालणा ॥ नीली पीपरना सालणा ॥  
वळे रायता सालणा ॥ खाटा सालणा ॥ खारा सालणा ॥ मीठा  
सालणा ॥ गल्या सालणा ॥ तल्या सालणा ॥ चत्राच्या सालणा ॥  
धुगाच्या सालणा ॥ उमकाया सालणा ॥ वळे परूसी भाजी ॥ ते उपरि  
सहु कोराजी ॥ ते कुण २ ॥ सरसपनी भाजी ॥ सोवानी भाजी ॥  
मूळानी भाजी ॥ वयुवानी भाजी ॥ चिणानी भाजी ॥ चिल्लनी  
भाजी ॥ चदलेवानी भाजी ॥ मेथीनी भाजी ॥ द्विवै वडा आवै ॥ ते  
सहने भावे ॥ ते केहवा २ ॥ मिरिचाला वडा ॥ तल्या वडा ॥  
कोरा वडा ॥ काजीना वडा ॥ घोल वडा ॥ मूंगाली दालीना  
वडा ॥ मोठानी दालीना वडा ॥ उडदाना दालीना वडा ॥ घणे घोळे-  
ना भीना ॥ घणै तैले सीना ॥ मरीचाना घणा चपतकार ॥  
अत्यंत सुकुमार ॥ हाथि लीपां ऊछलै ॥ मुहद्वै घाल्या तुरत  
गळे ॥ घणु सु ॥ स्वर्गना ॥ देवता देवी पिण खावाने ॥ मन टले

खलै ॥ हिवै पलेव आवे ॥ पिण ते केहवी ॥ चोखानी पलेव ॥ जवा-  
 रनी पलेव ॥ वाजारीनी पलेव ॥ हलदीया पलेव ॥ पीपरिया पलेव ॥  
 मूठिया पलेव ॥ सपडकीया पलेव ॥ हिवै भोजन विचे पीवाना पाणी  
 आवे ॥ ते केहवा ॥ साकरना पाणी ॥ दाखना पाणी ॥ गगाना  
 पाणी ॥ पालर पाणी ॥ कपूर वासत पाणी ॥ एलची वासत पाणी ॥  
 ताढा हिमवत पाणी ॥ हिवे दही अने दहीना घोल आवे ॥ ते के-  
 हवा ॥ गायना दही ॥ भैसना दही ॥ काढा जाम्या दही ॥ मधुरा  
 दही ॥ वले सखरा सजीराला ॥ सलवणा ॥ जाडा घोल ॥ तेहना  
 श्र्या कचोल ॥ चावलासू जिमता थया रगरोल ॥ वले सखरा  
 करवा ॥ भरी आप्या झरवा ॥ माहे घगी राई ॥ जीपता ढील नही  
 काई ॥ उपरि जीरालूणनो प्रतिवास ॥ करणहारी पिण खास ॥  
 हिवै चल्ना पाणी आवे ते केहवा २ ॥ केवडाना पाणी ॥ काथाना  
 पाणी ॥ कपूर वास्या पाणी ॥ पाडल वास्या पाणी ॥ चदन वास्या  
 पाणी ॥ एलची वास्या पाणी ॥ सुगध पाणी ॥ गगोदक  
 पाणी ॥ पालर पाणी ॥ तिणसू चळू कीरा ॥ हिवै मूठण दीजे ॥ ते  
 केहवा ॥ वांकडी सोपारीनी फल ॥ चिकल सोपारीनी फल ॥ ते  
 पिण केंसर कपूर वासित ॥ वली तीखा लवग ॥ जावत्री नें जायफल ॥  
 श्रौट्य ढोडा ॥ पाका नागरवेलना पान ॥ घणा आदर ने मान ॥ घणा  
 श्रौतमें गान ॥ घणा तान नें मान ॥ पळें भळ वख पहिराया ॥ ते  
 लुण २ ॥ देव दुस्य वख ॥ रत्न जडित वख ॥ पाभडी वख ॥ क्षी-  
 त्तोदक वख ॥ अटाण वख ॥ खासा वख ॥ महमंती वख ॥ अधोतर  
 वख ॥ नरमा वख ॥ सेल्हा वख ॥ कपूरधूली वख ॥ मलमल वख ॥  
 असवी वख ॥ जरवाफ वख ॥ मुखमल वख ॥ चीणी वख ॥ बुलबुल  
 वख ॥ मसंजर वख ॥ कथीपा वख ॥ पाट्टवख ॥ टसरिया वख ॥  
 सिणिया वख ॥ भैरववख ॥ नारीकुंजर वख ॥ श्री साप वख ॥ पीतांबर वख

वह्न दीया ॥ पचरगा वागा पहिराया ॥ वलि काशमीरी केसरना  
छांटणा कीधा, वलि भला विलेपन सुगध लगाया ॥ वळे वावना  
चदनना विलेपन कीधा ॥ अरगजा लगाया ॥ वली सखराचोवा ॥  
चंपेल । केवडेल । मौगरेल । जवादिपोईसडा लगाडया ॥ वळे जाई ।  
जुई । कुद । मचकुद । केवडो । चपो । मरुवो । मोगरो । दमणो । के-  
तकी । मालती । प्रमुखना फूल पहिरागा, पडै वली मुगट । तिलरू ।  
कुंडल । हारदोर । वीरवलय । अगट बहिरखा । नवग्रही । मूढडी ।  
कदोरा । हाथना सांकला । पगना सांकला प्रमुख पहिराया । इत्यादि ॥

## ॥ अथाग्रे ढाल तेहिज. ॥

जीम्पा सहु जन रगसूं ॥ ललना ॥ ललाहो असणादिक आहार  
कें ॥ जिन० २ ॥ वह्नभूपन सत्रने देई ॥ ललना ॥ ललाहो दीधी  
सीख जीवारके ॥ जिन० ॥ चिरजीव रहो नाथजी ॥ ललना ॥  
ललाहो दे आसीसनरनारके ॥ जिन० ॥ ३ ॥ जोवन वय जुगतसूं  
॥ ललना ॥ ललाहो ॥ परण्या पदम्पण नार ॥ जिन० ॥ मुख विलस्या  
ससारना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ सर्व पुण्य प्रकार ॥ जिन० ॥ ४ ॥  
कर अणसण आराधना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ मातापिता कीयो  
काल ॥ जिन० ॥ वारयें कल्पै ऊपना ॥ ललना ॥ ललाहो ॥ वरत्या  
मगलमाला । जिन० ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल ९ मी-राग जोगणीकी जोगमाया० ॥

हांजी प्रभु लोकांतकसुर आवीयौ ॥ हाजी प्र० ॥ एम करै  
उपदेश ॥ महावीरजीकी सीवकावणी अति शोभती ॥ हां० ॥ समगत  
जोग प्रकासीये ॥ हां० ॥ येदो अग्यानकलेस ॥ मा० ॥ १ ॥ हा० ॥  
रत्न जडित रत्नियामणी ॥ हा० ॥ चिदुत्तिस लडके लु० ॥ मा० ॥ हा० ॥

तयासी ॥ स्याइरा ढीगला कीजेजी ॥ हाथी अवावाढी वरोपर तरै  
चवढै पूर्व लिखीजेजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥

॥ दाहा. ॥

जगपति जगमे विचरिया । करता पर उपगार ॥  
समणी संहस छतीसजी । मुनिवर चवदे हजार ॥ १ ॥

॥ ढाल १३ वी-राग तीरथ ते नमूरे ॥

पावापुरिय पधारिया भवतारियारे ॥ जगपति ढीन दयालके  
वीर सासण धणीरे ॥ चर्म चोमासो कीजीयै ॥ ग्यान ढीजीयेरे ॥  
अरज करै महिपालके ॥ वी० ॥ १ ॥ सिंघासण आसणठवै सुर  
चिंतवैरे ॥ मिलिया चोसट इंदके ॥ सिर आसोक ॥ सुहामणो ॥  
रलियांमणोरे ॥ तिण तलै वीर जिणंदके ॥ वी० ॥ २ ॥ सयला मिल  
सेवा करे ॥ सिव सुख वरैरे कर २ आतमकाम ॥ वी० ॥ देवश्रमण  
प्रति बोधवा ॥ कर्म रुंधवारे ॥ मुकिया गोतम स्वांमके ॥ वी० ॥ ३ ॥

॥ ढाल १४ वी-राग मेदिना गीतनीः ॥

नवमली नवलडीराय ॥ देस अठारे राजीया ॥ श्री वीर  
समीपे आय पखी पोसा ठावीया ॥ १ ॥ गोतमने मेल दीया महा-  
वीर देव समण प्रति बोधवा ॥ उशध्येन अध्येन छतीस ॥ काती  
वद अमावस कहा ॥ एकसो नें दश अध्येन ॥ सूत्र विपाक तणा  
लहा ॥ गो० ॥ २ ॥ छेलो चर्म जोग निरोध ॥ मुगत नगरमे स-  
घरे ॥ ओतो मिट गयो भाव उद्योत ॥ द्रव्य उद्योत राजा करै ॥  
॥ गो० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

विलख वदन सुरवर मिला । दीठा गोतम साम ॥  
वीर पट्टां मुगतमें । चिंतातुर थयो तांम ॥ १ ॥

॥ ढाल १५ वी--राग धन्यासरी ॥

जाण्यो थारो भावहो प्रभुजी ॥ जां ॥ गोतम अरज करे प्रभु  
सेती ॥ मेल्यो इण प्रस्तावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ १ ॥ शिव नगरी  
कायमकीं बेला ॥ मौसू कर गया डाव ॥ प्र० ॥ जा० ॥ २ ॥ बा-  
लरु भाव करी तुमसेती ॥ करतो नही अटकाव हो ॥ प्र० ॥ जा० ॥  
॥ ३ ॥ एक रूखी प्रिति करे क्रिम चेतन ॥ इण मेलानसावहो  
॥ प्र० ॥ जा० ॥ ४ ॥ लही केवल निजरूप रतन निज ॥ मेट च-  
पल चित भावहो ॥ प्र० ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ इति महावीर जन्म कल्याण समाप्ति ॥



७ ( अथ मृषावाद पर सत्यघोष चरित्रं )

॥ दोहा. ॥

॥ गुरु गौतम वादू सदा । कदा न उपजे क्लेश ॥  
पदपकज प्रणम्यां लहै । मारु बुद्धि विशेष ॥ १ ॥  
महाव्रत पावूं कठिन । पालेवा नही सेज ॥  
दूजो अति दुकर माहा । पालता सबमेज ॥ २ ॥  
सत्यवत नर बाजकें । झूठ वचन बोलंत ॥  
सत्यघोष विप्रनी परै । पामें दुःख अनन ॥ ३ ॥  
सत्यघोष तें क्रिम हुवो । बोल्यो केम अलीक ॥  
तेह कथा द्विव भविजना । सुणज्यो दिल धरपीक ॥ ४ ॥



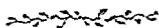
॥ ढाढ १ ली. नित करुं ए साधुजीने वंदना ॥ ए देशी.

सकट देश रलियामणो ॥ सिधपुर नगर उदारो ए ॥ महल  
मदिर कर सोभतो ॥ भू भामनि गलहारो ए ॥ भाव धरी भवियण  
सुणो ॥ १ ॥ सिंहसेन नृप दीपतो ॥ रामदत्ता पटराणी ए ॥ रूप-  
शील सत्य बुध भली ॥ वारु जेहनी वाणी ए ॥ भा० ॥ २ ॥ धाय  
माय मानी जती ॥ निपुण मति अभिधानो रे ॥ यथा नाम तथा  
शुणा ॥ राणीने प्रांग समानोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥ श्रीभूत प्रोहित  
भलो ॥ श्रीदत्ता प्रोहीताणीरे ॥ इक दिन आव्या विचरता ॥ मुनि-  
वर निरमल नाणीरे ॥ भा. ॥ ४ ॥ मृपावाढने निंदीयो ॥ पातक  
जगमें मोटारे ॥ झट सरीखो को नही ॥ इण देखतां सवही छोटोरे  
॥ भा. ॥ ५ ॥ प्रोहित निज मुखयी कीया ॥ त्याग गुरुजन सारवीरे ॥  
अंतःकरणतो सुध नही ॥ माया मनमें राखीरे ॥ भा. ॥ ६ ॥ लोक  
दीयो सत्यघोषजी ॥ नाम झठ कहे नाही ए ॥ राखै कतरणी जने  
उमे ॥ जनमें ठगाई जमाई ए ॥ भा. ॥ ७ ॥ लोकवोक समुझे  
नही ॥ धन २ करीये वरवानै ए ॥ महिमा सारा सहरमें ॥ पूरी  
प्रतीत राजाने ए ॥ भा. ॥ ८ ॥ पद्म खंड पुरवासीयो ॥ सुमित्र  
सेठ उदारो ए ॥ परटोटो आव्यो जरां ॥ कीयो प्रदेश विचारो ए  
॥ भा. ॥ ९ ॥ रत्न पाच तिणरै कनै ॥ रस्तामें सिधपुर आयो ए ॥  
रत्न मेलूं कोई साहपै ॥ इम चिंतव्यो मनभायोए ॥ भा. ॥ १० ॥

॥ दोहा. ॥

मध्य वजारें आयनें । पूछे जनजे कोरु ॥  
सत्यवादी कुण नगरमें । लोक कहे सत्यघोष ॥ १ ॥  
पग्धन समझे धूल सम । प्रवा नही तिलमात ॥

प्राण तजै झूठ न वदे । वमुधा माही विख्यात ॥ २ ॥  
 मृणी वात पुरजनतणी । पाम्यो हर्ष अपार ॥  
 सत्यघोष घर आयीयो । बोलै वचन विचार ॥ ३ ॥



## ॥ ढाळ २ री-राग मीरीयानी. ॥

सेठ कहे मृणो देवजी ॥ पांच रतन मुझ पास ॥ प्रोहितजी ॥  
 राखी जे ए तुम कने ॥ ए माहरी अरदास ॥ प्रोहि० से० ॥ १ ॥ मैं  
 जाऊ प्रदेअमें ॥ कमावणनें काज ॥ प्रो० ॥ पाछो आय लेजावसू ॥  
 जितरे राखो महाराज ॥ प्रो० ॥ से० ॥ २ ॥ इम मृणनें सत्यघोष-  
 नें ॥ ऊठी लोभनी ज्वाल ॥ प्रो० ॥ एतो रतन पचावणा ॥ अछै अ-  
 मामो माल ॥ प्रो० से० ॥ ३ ॥ कपटी कपट करी कहे ॥ परधन  
 राखा नाय ॥ सेठजी ॥ निद्रा बेची ओजको ॥ कुण घाले घरमाहि  
 ॥ से० ॥ प्रोहित कहै मृणो सेठजी ॥ ४ ॥ सिर भूषण धर चर-  
 णमें ॥ धोख्यो दीन वचन ॥ प्रो० ॥ मयाकरो मोऊपरै ॥ राखो एह  
 रतन ॥ प्रोहि० ॥ से० ॥ ५ ॥ थारा हाथसू जायनै ॥ घरजावों  
 ढापामाय ॥ सेठजी ॥ पाऊ धारा हाथसू ॥ लेई ज्याजो आय  
 ॥ से० ॥ प्रो० ॥ ६ ॥ पिण किणनें कहीज्यो मती ॥ रतन राखणकी  
 वात ॥ से० ॥ आज तलक राखी नही ॥ मैं किणहीरी आथ  
 ॥ से० ॥ प्रो० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

रतन धर्या प्रोहित कनें । मनमें हर्ष अपार ॥  
 ज्याझ मात्र तय बैसने । चाल्यो समुद्र मंझार ॥



हित देखीनें ओलख्यो ॥ रत्न पचावन काजरे ॥ लाला ॥ लोकानें  
कहै रातनें ॥ में सुपनो दीगें आजरे ॥ लाला. भा. १२ ॥ इक पांच  
रतन मोषें मांगीया ॥ इक नर इसो सहिनानरे ॥ पहली वांकवधानें  
करू ॥ सहू कहै धन धारो ज्ञानरे ॥ लाला. भा. १३ ॥

॥ दूहा ॥

इते सेठ कहे आयनें । आपो पांच रतन ॥  
इवी जिहाज समुद्रमें । इबो सघलो धन ॥ १ ॥  
सुम प्रसादथी ए धच्या । नांतर जाता एह ॥  
ए उपगार भूलू नही । जब लग धिर रहे देह ॥ २ ॥  
सत्यघोष कहै नागडा । हमको देत कलरू ॥  
पहिरण फांटा चीधरा । रत्न कहांतेरक ॥ ३ ॥  
लोका मिल धुरकारियो । पहली कही महाराज ॥  
कै धुरत कै वावलो । नागो दिल नही लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४ थी-राग निहालदीमै ॥

सुमित्र मनमें चितवैजी ॥ काई ॥ अब कहो कुण आधार ॥  
जाण्यो विम सत्यवादीयोजी ॥ जां. ॥ निकल्यो धूरत चडाल ॥  
भवि जन तजवो मुसरुल लोभनोजी ॥ १ ॥ आयज इवी उदधिमें  
॥ कां० ॥ ते दुख हुतो अपार ॥ रत्न पाच इण दावीयाजी ॥ दाघां  
ऊपर खार ॥ भ० २ ॥ जाय पुकारू रायनैजी ॥ का० ॥ और न  
काइ उपाय ॥ इम चितव गयो राव लैजी ॥ काई ॥ अरज सुणो  
महाराय ॥ भ० ३ ॥ रत्न धच्या सत्यप्रोषैजी ॥ काई ॥ जाणी  
नै परतीत ॥ अब मांगू आपे नहिजी ॥ काई निपट विगारी नीत

॥ भ० ४ ॥ नृप दापै सत्यघोषनैजी ॥ काई ॥ पर धन धूल स-  
 मान ॥ मन करनै बांछे नही ॥ काई ॥ अरज करो कोई आन ॥  
 ॥ भ० ५ ॥ सुमित्र चित चिंता वढीजी ॥ काई ॥ नृपना सुणी पु-  
 कार ॥ आस निरास अत्र ए हूत्रोजी ॥ काई ॥ फिरतां नगरमेंझार  
 ॥ भ० ६ ॥ दयावन्त नर इक मिलयो ॥ काई ॥ पूज्यो सत्र कही  
 बात ॥ तेह कहे राणी विनाजी ॥ काई ॥ रत्न न लागै हाथ ॥ भ० ॥  
 ॥ ७ ॥ राणी महिल पीछे धडैजी ॥ काई ॥ अंब वृक्ष सुविलास ॥  
 प्रातकाल चढै तिण परैजी ॥ काई ॥ नित करीये अरदास ॥ भ० ॥  
 ॥ ८ ॥ (यतः) पांच रतन मुझ दायीया ॥ सत्यघोष चंडार ॥ कोद दि-  
 रावो करमया ॥ ए मोटो उपगार ॥ (दालः) नितप्रत इमरू  
 कारैजी ॥ काई ॥ इक दिन राणी ताम ॥ वातायन वैठी धरिजी ॥  
 सुण तेज्यो निज स्वाम ॥ भ० ९ ॥ कर जोडी राणी कहैजी  
 ॥ काई ॥ न्याव करीजे साच ॥ सत्यघोष दाव्या अडैजी ॥ काई ॥  
 एहना रत्न ए पाच ॥ भ० १० ॥ राय कहै छे बाबरोजी ॥ काई ॥  
 झूठो छेतसु नाम ॥ सत्यवादी सत्यघोषलोजी ॥ काई ॥ दूजो नहि  
 इण गाम ॥ भ० ११ ॥ राणी सुण गइ बरोजी ॥ यो नित्य करै पु-  
 कार ॥ फिर राणी सुण चितवैजी ॥ हैया बात विचार ॥ भ० १२ ॥

॥ दोहा ॥

धाय भणी कहे जायने । वणिक भणी इणवार  
 रत्न दिरासी ताहरा । मत कर सोच लिगार ॥ १ ॥  
 राणी फिर नृपसूं कहै । निसुणो नाह सुजान ॥  
 वणिक न्याव प्रभु कीजीये । एह नही कफ खान ॥ २ ॥  
 राजा राणीसूं कहे । एह करो तुम न्याय ॥  
 रत्नदिरावो एहना । देखा गुद्धिमभाय ॥ ३ ॥

राणी कहै सत्यघोष संग । रमसूं पासा सार ॥  
 रत्न रिटाऊ एहना । नही सदेह लिगार ॥ ४ ॥  
 धाय भणी राणी घणी । समजावी ससनेह ॥  
 करणो कारज इणपरै । कठै नाम नवि छेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ वी-राग सासू कहै रीसाइजी ॥ एदेशी ॥

राणी धाय पठाईजी ॥ ऊहै जा विप्र पासै ॥ ल्याजे हूँ बोल-  
 ईजी ॥ ऊंचो आवासै ॥ १ ॥ धायजी चाळी आईजी ॥ तव सत्य-  
 घोष घरे ॥ वारू वात उपाईजी ॥ राणी याद करै ॥ २ ॥ सत्य-  
 घोष थयो राजीजी ॥ राणी बोलायो ॥ एह वात तो ताजोनी ॥ तव  
 खिण उमायो ॥ ३ ॥ ऊंचो महलमें आयोजी ॥ हर्ष भयो हीयो ॥  
 आसनपर बैठायोजी ॥ आडरमान दीयो ॥ ४ ॥ राणी कहे तुम  
 भेलूंजी ॥ पासा मारसही ॥ हर्ष धरीनें खेलूंजी ॥ ए मुझ हूस धई  
 ॥ ५ ॥ सत्यघोष कहै ठीरुजी ॥ रमिये वेग सही ॥ मारे मन पिण  
 पीरुजी ॥ तिल भर ढील नही ॥ ६ ॥ एकज सका आवैजी ॥ मोमन  
 असमानै ॥ भीर दोरूं राजावैजी ॥ राजा जो जाने ॥ ७ ॥ तव  
 बलती कहै राणीजी ॥ नृपनें पूछ लीयो ॥ बोली मधुरी वाणीजी ॥  
 कुसराखो हीयो ॥ ८ ॥ बाजी प्रथम लगाईजी ॥ मुदरीजीपलई ॥  
 ए सहि नापि दिखाईजी ॥ आपो रत्न सही ॥ ९ ॥ धाय मुद्रिले  
 आवैजी ॥ तव सत्यघोष घरै ॥ निप्रजी रत्न मगावैजी ॥ मुद्री आगे  
 घरे ॥ १० ॥ वैही आय लेजासीजी ॥ मोनै खर नही ॥ फिर गइ  
 धाय विमासीजी ॥ राणीनै जाय कही ॥ ११ ॥ रामतमें बढो सवा-  
 दोजी ॥ जोसरग्वा जरमें ॥ राणी भेद ए लाघोजी ॥ रत्न अठै  
 घमें ॥ १२ ॥ धीजीवार कै माही जी ॥ कंतरणी बाजी ॥ जीतीनें फेर  
 पठाईजी ॥ धाय आई भाजी ॥ १३ ॥ कैची ताम दिखाईजी ॥ कष्ट

॥ भ० ४ ॥ नृप दापै सत्यघोपनैजी ॥ काई ॥ पर धन धूल स-  
मान ॥ मन करनै वांछे नही ॥ काई ॥ अरज ऊरो कोई आन ॥  
॥ भ० ५ ॥ सुमित्र चित चिंता बढीजी ॥ काई ॥ नृपनां सुणी पु-  
कार ॥ आस निरास अत्र ए हूत्रोजी ॥ काई ॥ फिरतां नगरमेंझार  
॥ भ० ६ ॥ दयाइन्त नर इरु मिलयो ॥ काई ॥ पूज्यो सन कही  
वात ॥ तेह कहे राणी विनाजी ॥ काई ॥ रत्न न लागै हाथ ॥ भ० ॥  
॥ ७ ॥ राणी महिल पीछे कहैजी ॥ काई ॥ अंब वृक्ष सुविलास ॥  
प्रातकाल चढै तिण परैजी ॥ काई ॥ नित करीये अरदास ॥ भ० ॥  
॥ ८ ॥ (यतः) पांच रतन मुझ दावीया ॥ सत्यघोप चंडार ॥ कोइ दि-  
रावो करमया ॥ ए मोटो उपगार ॥ (दालः) नितप्रत इमरू  
काकरैजी ॥ काई ॥ इक दिन राणी ताम ॥ वातायन बैठी धकीजी ॥  
सुण तेड्यो निज स्वाम ॥ भ० ९ ॥ कर जोडी राणी कहैजी  
॥ काई ॥ न्याव करीजे साच ॥ सत्यघोप दाव्या अछैजी ॥ काई ॥  
एहना रत्न ए पांच ॥ भ० १० ॥ राय कहै छे वावरोजी ॥ काई ॥  
झूठो छेतसु नाम ॥ सत्यवादी सत्यघोपस्तोजी ॥ काई ॥ दूजो नहि  
इण गाम ॥ भ० ११ ॥ राणी सुण गड करौजी ॥ यो नित्य करै पु-  
कार ॥ फिर राणी सुण चितवैजी ॥ हैयां नात विचार ॥ भ० १२ ॥

॥ दोहा ॥

धाय भणी कहे जायने । वणिक भणी इणवार  
रत्न दिरांसी ताहरा । मत कर सोच लिगार ॥ १ ॥  
राणी फिर नृपसूं कहै । निमुणो नाह सुजान ॥  
वणिक न्याव प्रभु कीजीये । एह नही कफ खान ॥ २ ॥  
राजा राणीसूं कहे । एह करो तुम न्याव ॥  
रत्नदिरावो एहना । देखा बुद्धिमभाव ॥ ३ ॥

- राणी कहै सत्यघोष संग । रमसू पासा सार ॥ १ ॥  
 रत्न रिदाऊ एहना । नही संदेह लिगार ॥ ४ ॥  
 धाय भणी राणी घणी । समजावी ससनेह ॥  
 करणो कारज इणपरै । कहै नाम नवि छेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ बी-राग सासू कहै रीसाइजी ॥ एदेशी ॥

राणी धाय पठाईजी ॥ कहै जा विम पासै ॥ ल्याजे इहा बोला-  
 ईजी ॥ ऊचो आवासै ॥ १ ॥ धायजी चाली आईजी ॥ तव सत्य-  
 घोष घरे ॥ वारू वात लाईजी ॥ राणी याद करै ॥ २ ॥ सत्य-  
 घोष थयो राजीजी ॥ राजी बोलायो ॥ एह वात तो ताजीजी ॥ तव  
 खिण उमायो ॥ ३ ॥ ऊचो महलमें आयोजी ॥ हर्ष भयो हीयो ॥  
 आत्तनपर बैठायोजी ॥ आदरमान दीयो ॥ ४ ॥ राणी कहे तुम  
 मेलंजी ॥ पासा सारसही ॥ हर्ष धरीनें खेळंजी ॥ ए मुझ हूस थई  
 ॥ ५ ॥ सत्यघोष कहै ठीरुजी ॥ रमिये वेग सही ॥ मारि मन पिण  
 पीरुजी ॥ तिल भर ढील नही ॥ ६ ॥ एकज सका आवैजी ॥ मोमन  
 असमानै ॥ जीन दोनू राजावैजी ॥ राजा जो जाने ॥ ७ ॥ तव  
 बलती कहै राणीजी ॥ नृपनें पूछ लीयो ॥ बोली मधुरी वाणीजी ॥  
 कुसगाखो हीयो ॥ ८ ॥ वाजी प्रथम लगाईजी ॥ मुदरीजीपलई ॥  
 ए सहि नाणि दिखाईजी ॥ आणो रत्न सही ॥ ९ ॥ धाय मुद्रिछे  
 आवैजी ॥ तव सत्यघोष घरे ॥ विमजी रत्न मगावैजी ॥ मुद्री आगे  
 घरे ॥ १० ॥ वैही आय लेजासीजी ॥ मोनै खबर नही ॥ फिर गइ  
 धाय विमासीजी ॥ राणीनै जाय कही ॥ ११ ॥ रागतमें बढो सवा-  
 दोजी ॥ जोसरखा जरमें ॥ राणी भेद ए लाधोजी ॥ रत्न अछै  
 घरमें ॥ १२ ॥ बीजीवार कैमाही जी ॥ कंतरणी वाजी ॥ जीतीनें फेर  
 पठाईजी ॥ धाय आई भाजी ॥ १३ ॥ कैची ताम दिखाईकी ॥ कट



मांही अउँ ॥ आणी आवै नाईजी ॥ पिउतासी पउँ ॥ १४ ॥ एक  
 वार फिर जावोजी ॥ जितरे हू हेरुं ॥ तीजी सहनाणी ल्यावोजी ॥  
 पाछे नही फेरुं ॥ १५ ॥ फिर आया तव धाजीजी ॥ कहै अरज  
 मांरी ॥ अवके तो रमल्यो बाजीजी ॥ फिर मरजी थारी ॥ १६ ॥  
 तीजी वारकै मांहीजी ॥ जनेऊल्याई ॥ धाय धावती आईजी ॥ वि-  
 प्रणी धवराई ॥ १७ ॥ रत्न काढ तिय सूप्याजी ॥ धायकै करमाई ॥  
 आय राणीने आप्याजी ॥ कारज सिध थाई ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

सीख समापी विप्रने । राणी कर सतकार ॥  
 हारीतेसूं पीति हू । राणी महर भंडार ॥ १ ॥  
 राणी नृपने तेडने । भाखे करि जतन ॥  
 सत्यघोपके पासथी । आप्या एह रतन ॥ २ ॥  
 नृप नारीने इम कहे । तुमहो मति भंडार ॥  
 न्याव भलो नींको कीयो । विरली थां सम नार ॥ ३ ॥

॥ सोरठो ॥

फिर षोल्यो महिपाल ॥ वचन तुमारो राखवा ॥  
 घरसू रत्न निकाल ॥ सांचो कीधो वणिकने ॥ १ ॥  
 राणी कहै महाराय ॥ रत्नथालमे रत्न ए ॥  
 भेली सेठ बोलाय ॥ ओलखावो रूवरुं ॥ २ ॥

॥ ढाल ६ वी.-राग यतनीनी ॥

नृप वारु सभा बनाई ॥ सहू जवरीनै लीधा बोलाई ॥ पांचू  
 रत्न देखाया ॥ सहि नाण करी ओलखाया ॥ १ ॥ उमराबांने कीना

सार्वी ॥ जोचो राणीकी मति पाकी ॥ बांकी न रही कांइ मांसारू ॥  
 राणी न्याव कीयो छै वारू ॥ २ ॥ भद्वार सू रत्न कढाया ॥ पाचू  
 ते माहि मिलाया ॥ सुमित्र भणी वो लाई ॥ नृप भाखै निमृणो भाई  
 ॥ ३ ॥ रत्न थालथी रत्न ॥ थारा टालीलै करि जत्न ॥ सुण सेठ  
 हुवो कुस्याली ॥ निज रतनाने लीधा टाली ॥ ४ ॥ सहूको मन अ-  
 चीरज पाई ॥ राणीकी बुध सराई ॥ रत्न लेई करी परणाम ॥  
 सुमित्र गयो निज ठाम ॥ ५ ॥ नृप दाखे दातज पीसी ॥ अब आ-  
 णो विमने घीसी ॥ दुष्ट नगरी कै माही ॥ इण अैसी ठगाई जमाई  
 ॥ ६ ॥ जन जमसा होयनै ध्याया ॥ सत्यघोष सदनपे आया ॥  
 कहै किहां गयो सत्य बोलो ॥ लाग्या पैजारां सिरहोसीपोलो  
 ॥ ७ ॥ सुणी बात धूझवाने लाग्यो ॥ मनमें भय रतनारो जाग्यो ॥  
 नारी पै मांगे आई ॥ जब धाय आइसो सुनाई ॥ ८ ॥ विप्र चितै  
 राणी मत्र मतन्या ॥ छानै २ कानज फतन्या ॥ अवै कांई होवै  
 पिछताया ॥ एतो पाप उदै मारे आया ॥ ९ ॥ सेठी करने विपनी  
 काया ॥ चोटी पकडी नृपपे ल्याया ॥ नृप देख क्रोधमें जलियो ॥  
 मानूं पावकमें घृत मिलियो ॥ १० ॥ राय भाखै सत्यव्रती वनने ॥  
 तै ठगिया घणारा धनने ॥ घणा दिन तो पाप छिपाया ॥ पिण  
 आज भेद मे पाया ॥ ११ ॥ है तो एहवो प्राण गमाऊ ॥ पिण विप्र  
 हत्या भय पावूं ॥ नृप तीन दढ फुरमावै ॥ लीजे दिल दायजो आवै  
 ॥ १२ ॥ कै तो घरको धन सब दीजे ॥ कैमल मुठी तीन खाईजै ॥  
 कै भैस गोवर तीन थारे ॥ खाई जे विप्र विचारे ॥ १३ ॥ धन गया  
 भूत्रां समाने ॥ मल मुठीथी जावै प्रानै ॥ गोवर खायो यो चोखो ॥  
 मिट जासी सगलोही धोखो ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विप्र कहे स्वामी सुणो । मंगायो भर थाल ॥  
 गोवर खाऊ जन सहू । हसन लग्यो महिपाल ॥ १ ॥  
 भैंस तणो गोवर नृपत । मंगायो भर थाल ॥  
 अत्र वेगो आरोगीये । गर्म २ ततकाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ७ वी.--राग देवकीनंदन जगत सिरोमण ॥ ए देशी ॥

एरू थाल तो दोरो सोरो ॥ विप्र वापडै खायो ॥ अव तो कठा  
 पतरे नाही ॥ खातो २ अघायो ॥ १ ॥ झूठ न वोलो ॥ झूठ महा  
 दुखदाई ॥ समझोरे सब भाई ॥ पहिलां तोलो ॥ टेर ॥ हाथ जोड  
 कहे निसुणो स्वामी ॥ अत्र खाणी नही आवै ॥ नृप कहै सत्यव्रत  
 जे पाल्यो ॥ तेह तणो फल पावै ॥ झू० ॥ २ ॥ नृप कहै दोग पांति  
 धन दीजे ॥ कै दोग मुष्टी खाईजे ॥ दोग मांयथी दाय आत्रैजे ॥  
 एक दंडहिवलीजे ॥ झू० ॥ ३ ॥ विप्र चिंते धन तो नहि देणो ॥  
 मुष्टी महारज खाणो ॥ कर उपचार साजो होय जासुं ॥ लोभमें  
 देखो लोभाणो ॥ झू० ४ ॥ राय हुकमथी मलतव धाया ॥ थर २  
 धरणी धूजाता ॥ होट डसंता दांत घसता ॥ रोस करीनें राता  
 ॥ झू० ५ ॥ पहेली मुष्टी लागत पड्यो नीचो ॥ दूजीमें प्राणज ना-  
 ठा ॥ मर नृप कोस सर्पपणे उपनो ॥ कर्मारा फल छै माठा ॥ झू० ॥  
 ॥ ६ ॥ भव अनेक तणो छे वरनन ॥ श्री हरि वंश पुराणें ॥ कीयो  
 सबध इहां इतरोही ॥ सुगज्यो चतुरसुजाणै ॥ झू० ७ ॥ धन आडो  
 कछु नायो कांड ॥ इन भव बहु दुख पायो ॥ परभव मांही घणोहिज  
 रुलसी ॥ श्री जिनवर फुरमायो ॥ झू० ८ ॥ एहवो जाणीनें भव्य  
 प्राणी ॥ झूठ वचन तज दीज्यो ॥ परधन कैनेडा मति जाज्यो ॥

गुरु शिख मानीज्यो ॥ झू० ९ ॥ पूज श्री कनीगमजी मोटा ॥ ज्ञान  
 नमै गौतम जेवा ॥ तत शिक्ष ज्ञान मेह रेखराजजी ॥ तेहनां गुण कहु  
 केवा ॥ झू० १० ॥ तस पद पंरुजनो मधुकर ॥ नथमल कथा प्रका-  
 शी ॥ त्रिद्वज्जन होवै सो वाची ॥ मत कीज्यो मारी हांसी ॥ झू० ॥  
 ॥ ११ ॥ समत लगणीसै घरस एकीसे ॥ मास फाल्गुन वदि सातै ॥  
 सहर सुभटपूरमें ए भाखी ॥ ढाल सात विख्यातें ॥ झू० १२ ॥

॥ इति मृपावाट पर सत्यघोष चरित्र ॥

८ (अथ मुम्मन श्रेष्ठी चरित्रं)

॥ दोहा ॥

अईतादि पच पद । मणम् ऊठ प्रभात ॥  
 'मुयै मन कर' समरता । पातिक दूर पुआत ॥ १ ॥  
 चतुर्गति संसारको । हेतू च्यार रूपाय ॥  
 रजमाही तज काढता । अधिको लोभ कहाय ॥ २ ॥  
 सरुल पापको मूल है । नाखै नर शिर काय ॥  
 ए ओखणो जगतमें । लोभ पापको वाप ॥ ३ ॥  
 लोभी जन घन जोडवा । तत्पर होत अपार ॥  
 असह कष्ट नित मत सहे । करे नीच आचार ॥ ४ ॥  
 तिणपर मुम्मन सेठकी । कया चुणो भवि लोय ॥  
 लोभी नर ऐसा हुवै । सुणतां अचिरज होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली-राग इण संखरियारी पाल ॥ ए देशी ॥

जंवू भर्तमे मग्धदेश महिमा निलोहो ॥ लाल ॥ दे० ॥ सर्व  
समृद्धिगृह राजगृह पुर भलोहो ॥ लाल ॥ रा० ॥ श्रेणिक नामे राय  
शुद्ध समकित मतीहो लाल ॥ शु० ॥ न्याय निपुण जिन भक्तिमांही  
अधि कीरती हो ॥ लाल ॥ मां० ॥ १ ॥ चेलणा पटनार धर्ममेंनिर-  
मली हो ॥ लाल ॥ ध० ॥ रूप कला पति प्रेम गुणे कर आगली हो  
॥ लाल ॥ गु० ॥ मत्री अभयकुमार जेष्ठ सुत नृपतणो हो ॥ लाल ॥  
॥ जे० ॥ च्यारु बुद्धि निधान सुजसपुरमें घणो हो ॥ लाल ॥  
॥ सु० ॥ २ ॥ तिण पुर निवसै सेठ कोटीश्वर छैखरो हो ॥ लाल ॥  
॥ को० ॥ मुम्मन सेठनो नाम कृपण शिरसे हरो हो ॥ लाल ॥ कृ० ॥  
सरस खान सतपान करत छाती फटै हो ॥ लाल ॥ क० ॥ चाहे ज्यु  
भरणो पेट रखे घर धन घटै हो ॥ लाल ॥ र० ॥ ३ ॥ नही दान स-  
नमान आयारो नहि करै हो ॥ लाल ॥ आ० ॥ पडेजी मावणो भात  
॥ कै इण दु.खसू डरै हो ॥ लाल ॥ इ० ॥ पाडोसी घर देखजीमतो  
पावणो हो ॥ लाल ॥ जी० ॥ चालें पेटमें पीड लगे अलखावणो  
हो ॥ लाल ॥ ल. ॥ ४ ॥ करत दान भल भोजन देख, दिलघर  
कही हो ॥ लाल ॥ दे० ॥ याचक मुख स्वनाम सुणी नवि हरख-  
ही हो ॥ लाल ॥ सु० ॥ स्नान नहि नहि वस्त्र धापन क्रिया तन-  
परै हो ॥ लाल ॥ क्रि० ॥ श्रीपिन इसडे सदन जाय वासो करैहो  
॥ लाला ॥ जा० ॥ ५ ॥ यतः

॥ दोहा ॥

देव गुरु धर्म तत्त्वनी । श्रद्धा नाही हजूर ॥

पचैरात दिन धधमे । माया तणो मजूर ॥ १ ॥

॥ ढाल २ री-राग शंकर वसैरे कैलाशमे ॥ ए देशी ॥

लोभग्रसित हुवो करै ॥ अजुक्तो व्यापाररे ॥ नील गुली बेचै  
 निरदर्ई ॥ साजी साजू खाररे ॥ लोभ बुरोरे ससारमें ॥ १ ॥ खेती करावे  
 खातसू ॥ पोट्या आप फिरावेरे ॥ लाभ दीसे जिण काममे ॥ सोही  
 विनज करावैरे ॥ लो० ॥ २ ॥ इण विध पचता सेठजी ॥ बहुलो  
 द्रव्य कमायोरे ॥ जतन करन रतनामई ॥ वृषभ एक करायोरे  
 ॥ लो० ॥ ३ ॥ ऊपर गृह स्थापन कीयो ॥ जतन करीने भारीरे ॥ क्षण  
 इक गाफल नारहै ॥ पूजी प्राणमुप्यारीरे ॥ लो० ॥ ४ ॥ बीजो वृषभ  
 करन भणी ॥ विविध उपाय बनावैरे ॥ एतले प्रावृट ऋतु भली ॥  
 घन उमटते आवैरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ उर्पामे धन जोडवा ॥ अन्य  
 उपाय न पायोरे ॥ आधी रात्र घन वर्पता ॥ वाजे शीतल वायोरे  
 ॥ लो० ॥ ६ ॥ तन कोपीनज वाधने ॥ घोर अधारा माहीरे ॥ थर २  
 कांपत आवीयो ॥ पुर वाहिर चल प्राहीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ स-  
 रिता तट ऊभो खडो ॥ वाट काष्ठनी जोवैरे ॥ आवै बहतो तो ग्रहं ॥  
 लाभ घणेरो होवैरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एतलै काष्ठज आवीयो ॥ भारी  
 वाय उठावैरे ॥ माये धरने चालियो ॥ राज भवन तल आवैरे ॥ लो० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर वातायने । श्री श्रेणिक नरनाथ ॥

राणी संगरसरगमें ॥ बैठा दपति साथ

॥ १ ॥

॥ ढाल ३ री-राग म्हारो पिठ ब्रह्मचारी ॥ ए देशी ॥

हुवो उयोत विद्युतनो जवही । चेलणा निरखे तवहीहो ॥ फोई  
 नर दुगियागो ॥ मस्तक भार नगनतन कंभे ॥ राणी वृषसू जपेहो ॥

की संगति गहरे, जिनवाणीरू सरदहरे, एह कुटुंब सब स्वारथका,  
भला तु करले निज जीवनका ॥ गाफल. ॥ १ ॥ हारे क्रोध विच  
डोले, मेरी जान क्रोध वस डोले, मानवमुं छकीयो वोले, मायाकी  
गांड न खोले, लालचसूं झुकतो तोले, भण्या तूं फिताव काजीका,  
तमासाचेहरवाजीका ॥ गाफल. ॥ २ ॥ हारे जुग विच बडे बडे  
रायाके, होय गयी वादलकी छाया तुजे कहा वाडा वनवाया, दिल  
विच खोज ना कीजे, लाहास मरणका लीजे ॥ गाफल. ॥ ३ ॥  
हारे मथुराको राजा कसे, ते उपजो यादव वंशे, पकडयो उग्रसेन  
अवतसे, कुलकी मरजादा मेटीके, परण्यो जरासिंध बेटी ॥ गाफल ॥  
॥ ४ ॥ हारे एकदिन सभा पूरांगी, तिहां आव्यो जोतिक नाणी, तिहां  
वोले भूपति वांगी, नही कोर्ड जगतमें ऐसा के, हमसें जंग करे  
जेसा ॥ गाफल. ॥ ५ ॥ तव विबुध वचन इम वोले, भूपतना श्रुत  
पट खोले, तू भोले भावे भूले, जो जादव वंस उधारेगा, सोही  
भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ६ ॥ हारे पूतना दमसी, महाराज  
पूतना दमसी, जाकी मुंठी है जमसी, सो वृंदावनमें रमसी, गोवरधन  
धारेगा सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥ ७ ॥ हारे नाग है  
काली, नायेगा नाथने झाली, अरिजन पर निजर कराली, गोकल  
गांव वधारेगा, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ८ ॥ हारे जुमलसें  
जगी, सूरति सोहे इकरंगी, जाकी जगतमें कीरति चंगी, जो गज-  
दत्त उखालेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गा. ॥ ९ ॥ हारे सो  
वैनागकी सेज्या, जाकी सतभामा हुवे भज्या, धरे तीन खंडकी ल-  
ज्या, जो मल्लमांन विडारेगा. के, सो भूपति तुजे मारेगा ॥ गाफल. ॥  
॥ १० ॥ हारे सारग धनुष चढावे, जो गदाको मदी वावे, सख पं-  
चायण वजावे, फूलकी माला अमलागी, आग्या तीन खंड मांनी  
॥ गाफल. ॥ ११ ॥ हारे देवकी नंदा, वसुदेव तनु आनदा, द्वारापति

तेज दिनदा, एह सुणी विजुद्धतणी वाणी, कंसकी छाती धुजांगी  
 ॥ गा. ॥ १२ ॥ श्री वसुदेवपे आवे, करीवातासू ललवावे, वसुदेव  
 भेट नही पावे, मांग्या गर्भ देवकीका, कस तूं तीन भुवन टीका  
 ॥ गा. ॥ १३ ॥ हारे सुलसादेवत समरी, जिण मांग्या कुमरा कुमरी,  
 हिरणमेखी सक्ति है जवरी, छउ नदन उठवाया, शेटधर महो उव  
 मंडवाया ॥ गाफल. ॥ १४ ॥ हारे जव जन्मे सारगपाणि, कसकी  
 धरती धुजाणी, तालांकी झल फाजल फाणी, सींहांकी दाढा वंधाणी,  
 ऐसैं पुण्यवत जाणी के, जमुना भेद दीयो पांणी ॥ गाफल. ॥ १५ ॥  
 मुरारी नंद घरे आया, गवालन नाला गवराया, जसोदा हाये दुल-  
 राया, कानजी कुमर पद खेले. क, माखग गोरसमें रेले ॥ गा. ॥ १६ ॥  
 कदही सापण कू साहे, कदही आंगण जल वाहे, कदही जमुना तट  
 जावे, फिरे लालजी निसका, वजावे कस पग ढका ॥ गा. ॥ १७ ॥  
 कदही साड पकड आणे, कदही महिप पीलाणे, कदही अग उलहाणे,  
 अघरपर वसरी राखे, दांग महियनको मांगे ॥ गा. ॥ १८ ॥ देवकी  
 दरसनकू जावे, नवि नवि वस्तू छे आवे, भले भले वस्त्र पहीरावे,  
 चिरजीरो नंदलाला, वैरियां भंजण जट्टपाला ॥ गा. ॥ १९ ॥ गो-  
 वर्धन धान्यो निज हाये, काली नागकू नाये, गोप्या फिरती हर  
 साये, ऐसे पुन्यके पुजे, फिरते मधुवनके कुंजे ॥ गा. ॥ २० ॥  
 भाइ बलभद्र सहाई, किसीकी संकू नही काइ, गवालनि दधि चेंचन  
 जइ, मुरारी काण नही राखे के, दधिभर आगुलिया चाखे ॥ गा. ॥  
 ॥ २१ ॥ लालजी मुजकू मत छेडे, कंसकी नगरि अती नेडे, वधजो  
 तु गुजरके खेडे, कंसकी चढतिपुन्याइ. के, फिरती तीन खड दुहाड  
 ॥ गा. ॥ २२ ॥ कहे कान्ह कैसे म्हैं डरहू, कसकू फीटो म्हैं करहू,  
 अवरनकू राजपद धरहू, जाय पुकारे कसके आगे, मोपे ढाग महि-  
 यनको मागे. ॥ गा. ॥ २३ ॥ इम प्रस सोले जव वीते, कसकू  
 याना सन चिते, भामाका व्याव मनाय लीजे, सब भूपति बुलवाया



किलंगी अद्भूत सोहे, देवतही मन मोहे,  
 माधव मोहनलाल रगको तो सावरो ॥ दे. ॥ २ ॥  
 शुद्ध बुध भूल गई, मेरे दिल बस रही,  
 देखूरे सूरत रवि उगेरे ऊंतावरो ॥ दे. ॥ ३ ॥  
 पांनीके प्रपंच कर, देखे आय गिरधर,  
 नाचतो निरख रग उलटयो ऊछावरो ॥ दे. ॥ ४ ॥  
 नादको अस्वाद पाय, कुरगगन रहे धाय,  
 नाचत भुजंग सग, अनगज गावरो ॥ दे. ॥ ५ ॥  
 देखे मयुराके वासी, मिले जिम त्रण घ्रासी,  
 होवत हुलास अति पारन उमावरो ॥ दे. ॥ ६ ॥  
 छिनमें जमुनाके पार, छिनहीमे घरद्वार,  
 छिनमें गोपनिसंग वनमें उतावरो ॥ दे. ॥ ७ ॥  
 लूटके माखन खाय, वरज्योही रहे नाय,  
 चाखे सवथर नही रापे डर रावरो ॥ दे. ॥ ८ ॥

### ३ ( अथ रुखमणीको कागद—राग वासंत )

पत्री लिखी रूपमण प्यारी, वांचत है कृष्ण मुरारी ॥ प. ॥ १ ॥ टेरा ॥  
 सिधश्रीनें सरल शुभोपम, लायक, तुम गिरधारी, कुटनपुरथी लिखत  
 आपको, दासी निज चरणारी ॥ प. ॥ १ ॥ अत्र कुशल है प्रभु  
 कृपाथी, तुम कुस भगती सारी, चाहत मोमन निशदिन ऐसें, ज्यु चा-  
 तक जलधारी ॥ प. ॥ २ ॥ अप्रच एह समाचार तुम, वांचीयो सु-  
 विचारी, पनिहारी घटनटके वर्ततिम, मम तुमसें इरुतागी ॥ प. ॥ ३ ॥  
 नारद वचनें प्रेम लग्यो भुज, देख्या चाहू दिदारी, आज्यो वेग मि-  
 टाज्यो विगह, मोपरमेहर विचागी ॥ प. ॥ ४ ॥ ऋचिन बसत गणेश

रुगंकर, काचित् भेरु मातारी, मोमन वसत माधव माधो, मनकी जानत श्री विप्रनारी ॥ प. ॥ ५ ॥ मुख जवानी कुशल दूतपे, पूजीयो प्रभु समाचारी, लाख वातकी एक वात है, आवो वेग गिरधारी ॥ प. ॥ ६ ॥

॥ इति रुखमणी पत्रिका ॥

॥ अथ लिख्यते राम चरित्रांतर्गत ॥

१ ॥ रावणं प्रति मन्त्रिव वाक्यं ॥ लावणी ॥

॥ कहै मन्त्री शरनाथ वात हम मानो २ सीताकी डोडो गेलटेक मतिमानो ॥ टेर ॥ पद्मानो प्रचल प्रताप ऊगतो भानो २ सौमित्री बलवत जगत नहि छानो ॥ भामडल सुग्रीव आदिराजानो २ बल गइ बहु चम् बहु पलटानो ॥ पाजी जन लागे लरनदशन पिञ्जानो २ ॥ सी. ॥ १ ॥ कुण जानि नाथ नृप हस्त प्रहस्त कट जासी ॥ कुण जानी ऋण वीचराक्षस घट जासी ॥ कुण जानी सुग्रीव आदि छुट जासी कुण जानि विभीषण राज्य मणी फुट जासी ॥ देखो फिर तुम नद भ्रात उमानो ॥ सी. ॥ २ ॥ कुण जानी जनु मालीनद मर जासी २ ॥ कुणजानी लक हमदेर कपि कर जासी ॥ कुण जानि शक्ति प्रहार खाली टल जासी २ ॥ कुण जानि मनोरथ गम तणा फल जासी ॥ तव नदन उधन उटन नहि ठिकानो २ ॥ सी० ३ ॥ सीया पाछी दिया वात बन जावे २ ॥ नदन बधव छुट अपन घर आवे ॥ जो अमची ए नाथ वात नहि भावे २ ॥ तो लेसो फल चाख सचिव समजावे ॥ अपना दुःखयी नाथ आन दुख जानो ॥ सी० ४ ॥ नरम गरम उहु भाति कटी इम रानी २ ॥ रावणपकडी

टेक एक नहीं मानी ॥ जगजवरोहोवनहार लाग्यो है आनी २ ॥  
 नथमल अब रावणकी काल निसानी ॥ टारी न टरे कोय कही भग-  
 वानो ॥ क० ॥ सी० ५ ॥

॥ इति ॥

२ ॥ राग गहरो फूल गुलावरो. ॥ ए देशी ॥

पाछी आई मदोदरि राणी ॥ मोरा साहिवा ॥ समजावेजी  
 निज नाथने ॥ थारी बुध क्रांत लोपाणी ॥ मो. ॥ जाणली वीजी इण  
 वातने ॥ १ ॥ थांसू अरज करूडू रढियाला ॥ मोरा साहिवा ॥  
 हठिला ॥ मो० ॥ थेमानो मो० ॥ परत्रिय प्रेम न कीजीये ॥ टेर ॥ थे-  
 तो रामचंद्रजीरी रानी ॥ मो० ॥ जाने उठायरे ल्यावीया ॥ यातो  
 बुध करी नहि स्यानी ॥ मो० ॥ जगमें लपट कहावीया ॥ थां० २ ॥  
 ये तो राज काज सब भूल्या ॥ मो० ॥ शुद्ध नहीजी किण वातरी ॥  
 हू तो रात दिवस दुखमें झलू ॥ मो० ॥ देखदशाजी थारी नाथरी ॥  
 ॥ था. ॥ ३ ॥ थेतो हिवडारे मांहि निचारो ॥ मो० ॥ ऊठ आछी नही  
 पारकी ॥ थारे रमणी छे सहस्र अठारो ॥ मो० ॥ प्रतक्ष रभा सा-  
 रखी ॥ था० ॥ ४ ॥ थारो सीतासूं मन क्यू उमायो. ॥ मो० ॥ धवल  
 दिन कीनी रातडी ॥ थानें सासुजी जणीनें कांई खायो ॥ मो० ॥  
 मानो नहीजि मांहरी वातडी ॥ थां. ५ ॥ थानें सू समलारा कव्यो  
 मानो ॥ मो० ॥ सूप आवो जी पाठी जानकी ॥ थे तो इसडी टेक  
 मत्तितानो ॥ मो० ॥ सीतायाग्राहक प्रांनकी ॥ थां० ६ ॥ जोइतरी  
 कव्यां ही नही मानो ॥ मो० ॥ तोहो नहार ज्यो हो वंसी ॥ थासी  
 घणारे घर हांनी ॥ मो० ॥ लोक तमासा जो वसी ॥ था. ७ ॥  
 राणी थाक गई समझाई ॥ मो० ॥ दशकंधर भरतारनें ॥ नथमल

कहे जग माई ॥ मो० ॥ भविजन ॥ कू न टालै जीहो नहारनै ॥  
॥ थां० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

### ३ ॥ राग—बरवो ॥

कैसे आवेरी इणठाय ॥ मुदरिया ॥ कैसे आवेरी इणठाय  
॥ टेर ॥ एह मूदरी प्रभुजिके करकी ॥ डुक भर अलगे न थाय  
॥ मु० ॥ १ ॥ पेख भूदरी प्रति सिय इन पर ॥ बोलत मुखसँ गाय  
॥ मु० ॥ २ ॥ अरी मूदरी तूभी विछुगी ॥ प्रभुकी सगी हुईनाय ॥ मु० ॥  
॥ ३ ॥ आज थकी अवतिय जातकी ॥ सही प्रतीत नसाय ॥ मु० ॥ ४ ॥  
एह मुदरी अलग होइसो ॥ प्रभु विपतकेमाय ॥ मु० ॥ ५ ॥ एम  
कहत चित अत अकुलानी ॥ नैनोमें पानी चवाय ॥ मु० ॥ ६ ॥ देख  
उदासी हनु तव प्रगटे ॥ लागे सियाके पाय ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रभुजीके  
कुशल लक्ष्मणके ॥ मानो सुख तुमे माय ॥ मु० ॥ ८ ॥ नथमल वचन  
सुनत शिय हनूके ॥ आनद उपज्यो आय ॥ मु० ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

### ४ ॥ राग—मायरातो ॥ देशी ॥

रावणप्रति शूर्पनखा वाक्य ॥ ॥ वीरा सीता २ रो रूप अपार  
हो ॥ वीरा ॥ इद्रानी नखनें अंकुरैजी ॥ वारी राण्या २ सहस्र अठार  
हो ॥ वीरा ॥ सीतारै जोडै कुन जुरैजी ॥ १ ॥ वीरा मुखडो २ पु-  
नमचद हो ॥ वीरा ॥ पिकुवयनी गजगामनीजी ॥ वीरा काया २  
कोमल कद्रहो ॥ वीरा मृगनयणी राणी रामनीजी ॥ ३ ॥ वीरा कहा

लग २ करूं वखान हो ॥ वीरा ॥ हरिहर ब्रह्मा एक रहैजी ॥ वीरां  
 राणीमै रत्न समान हो ॥ वीरा वाणी एक गुण कुण कहैजी ॥ ३ ॥  
 वीरा जेहना २ जवरा भागहो ॥ वीरा ॥ तिणघर एहवी पदमनीजी  
 वीरा जावो २ ल्यावो घर राग हो ॥ वीरा ॥ वाजो छो त्रिखंड ५-  
 णीजी ॥ ४ ॥ वीरा देख्या २ पडसी तोलहो ॥ वीरा विगर देख्यां  
 मालुम किसीजी ॥ वीरा ॥ मनडो ॥ वीर आघो पाछा मति डोलहो ॥  
 वीरा त्रिभुवन नारी नहि इसीजी ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ३१ सा. ॥

इंद्रकी परीहै किधू धरी है विधाता आप चद्रमाते चीर काढी ॥  
 सीर अमि पानकी ॥ कंचन वरन तन रचन दिखात पोर ॥ सावन  
 कीतीजमानु वीज असमानकी ॥ रूपको वखान भ्रात ॥ वानी तें  
 कह्यो न जात ॥ करत प्रसम्प मेधा भ्रमत सुरानकी ॥ स्वरग पताल  
 लोक नरलोक हूँद देखो ॥ कामनी न दूजी ऐसी जैसी नाथ जानकी ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

वीराभ्यासो २ करसो विलास हो ॥ वीरा पाछै पडसी खवर  
 सहीजी ॥ वीरा मुझने २ देशयो स्यावासहो ॥ वीरा ॥ वैनडरी बुध  
 मै कसर नहीजी ॥ ६ ॥ रावण निसुणी २ अमृत पीध हो ॥ चित-  
 माही लागी चटपटीजी ॥ वेनड भलीए २ बधाई दीधहो ॥ वैनड  
 बोल्यो भूधव झटपटीजी ॥ ७ ॥ वेनड जासू २ जलदी चालहो ॥  
 वैनड राम लक्ष्मणने मारसूंजी ॥ वेनड ल्यासू २ सीता रसाल हो ॥  
 वैनड तिण सगे सुख विलसूजी ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

## ५ ॥ राग—उंची हवेलीवालो ॥ ए देशी ॥

वीनवै नरनारो ॥ पाळा नाथ पधारो ॥ सीया वरजीहो ॥ हो  
 जी रघुपतजीहो ॥ आछा भूमिपतजीहो ॥ वीनतडी अवधारो ॥  
 वीनतडी अवधारो ॥ वनवासै मतिए पधारो ॥ सि. ॥ वी० ॥ टेर ॥  
 राज करीजे थारो ॥ तुम विन कुण आधारो ॥ सी० १ ॥ शशि  
 विन रजनी कारी ॥ विन दीपक जाग अधारी ॥ सी० ॥ प्रभु विन  
 नगरी सारी ॥ धणिया विन भयकारी ॥ सी० २ ॥ भर्त अयो-या  
 स्वामी ॥ नहि सोहै अंतरजामी ॥ सी० ॥ अश्व अनूपम होवै ॥ गज  
 भारतो गजनेही सोवै ॥ सी० ॥ ३ ॥ राणीजी वर मांग्यो ॥ रा-  
 जाजी पण नहि भांग्यो ॥ सी० ॥ आप मुखे फुग्यायो ॥ ऋण उ-  
 तच्यो पच नमन भायो ॥ सी० ४ ॥ नाथ विचारो ऊडी ॥ नारी  
 कलहकी कूडी ॥ सी० ॥ सत्र जन आपने केमी ॥ ओळंभा तुम सिर  
 रेसी ॥ सी० ॥ ५ ॥ परजाराजा नें राणी ॥ विनवै गद २ वाणी ॥  
 ॥ सी० ॥ मुरततो विलखाणी ॥ प्रसैनें नामें पाणी ॥ सी० ॥ ६ ॥  
 पार २ अमे वारा ॥ नही मानसो तो रहसा लाग ॥ सी० ॥ इण  
 विध हव सहु करता ॥ राम लार सचरता ॥ सी० ७ ॥ राम रुहै  
 मति आयो ॥ निज २ स्थानक जावो ॥ सी० ॥ राज भर्त भाई क-  
 रसी ॥ मारो वचन नही फिरसी ॥ सी० ८ ॥ राम न मानी वातै ॥  
 तत्र रुहै कोसल्या मातै ॥ सी० ॥ सीता ३ कोमल काया ॥ जतन  
 करीयो जाया ॥ सी० ९ ॥ वाटमें धीमा बहियो ॥ तजनै आगै मत  
 जड्यो ॥ सी० ॥ मारी तिस्रुत शुभ लहियो ॥ आता साथ सदेसो  
 कहियो ॥ सी० ॥ १० ॥ पुरजन पाळा आया ॥ प्रभु तीनू आगे  
 सिधाया ॥ सी. ॥ नथमल गत करमारी ॥ उवधारी हुवा वन चारी  
 ॥ सी० ११ ॥

६ ॥ ढाल-राग हेलीवालार महेल दीयो वलै ॥ ए देशी ॥

देखो सहेल्यां, सीरी राजाधिराजा, राम पधारीया, निरखो  
अजोध्याना नाथ ॥ दे० ॥ टेर ॥ ऊंचे सिंघासन रामजी ॥ स-  
न्मुख लक्ष्मण भ्रात ॥ विहूँ पासै हे विहु वधवा ॥ सोभा तो वरणी  
न जात ॥ दे० १ ॥ हाथ्यारो हलकोहे आगलै ॥ लारै उँ घुड-  
लांरी धूम ॥ लकापत कपिपत आढढे ॥ साये राजानीं घणी धूम  
॥ दे० २ ॥ सीता विसल्या पटरागनी ॥ आदे राणी बहु लार ॥  
मोत्या हीरारा चरुडोलमें ॥ केई कासां असवार ॥ दे० ३ ॥  
राक्षसी वानरी पलटना ॥ मुवागल नव २ थाट ॥ गिर उत्ररवि  
जिम फावतो ॥ चमरांकी उड रही जाट ॥ दे० ४ ॥ दाजै नगारा नै  
नोवतां ॥ फर रद्या उतंग निसान ॥ वटीजन जस अति बोलतां ॥  
ज्यानें देवै छै नृप दांन ॥ दे० ५ ॥ चांदी सोनारा घोटांनें छड्या  
चालै लाखां छडीदार ॥ बोलै वीदावली गूंजता ॥ अमृत नवन धू-  
कार ॥ दे० ६ ॥ सहिये सुहागण सामठी ॥ भर २ मोत्यांना थाल ॥  
आवै वधावै महाराजनै ॥ दे आसीस रसाल ॥ दे० ७ ॥ अविचल  
रहिजो ए सपदा ॥ च्यारु भायांरी है जोड ॥ कोड वरस चिर-  
जीवज्यो ॥ पूरजो प्रजाना कोड ॥ दे० ८ ॥ इणविध प्रभुजी पधा-  
रीया ॥ आजोऽध्यामें कियो प्रवेश ॥ नथमल कहै माया पुण्यनी ॥  
कीजो भाई पुण्य विशेष ॥ दे० ९ ॥ इति ॥

७ ॥ राग--असवारीनी ॥

सीयावरकी देखण दो असवारी ॥ परी हो जा, वैरणमारी ॥  
रघुपतनी, निरखण दे असवारी ॥ टेर ॥ इरुना इक २ परतें ॥  
मोलत मुखसे गारी ॥ कौतुक निरखण प्रेम प्रगटियो ॥ थुन बुध

सर्व विसारी ॥ सी० ॥ १ ॥ इचरज कीधा इण अवसरमें ॥ नगर  
तणी जे नारी ॥ कटिमेखल तो पहिर्यो गलेमें ॥ हार दियो कटि-  
हारी ॥ सी० ॥ २ ॥ मजन ठाड अ'पूरो आज्यो ॥ अजन इकनै  
नारी ॥ आधो परूम्यो भोजन भाणै ॥ त्राड चली भरतारी ॥ सी० ॥  
॥३॥ सीस गूथावत भाज चली निच ॥ उतावलकी मारी ॥ चटिया  
बंध दीये नही पूरे ॥ नाय न चक्रत विचारी ॥ सी० ॥ ४ ॥ इण विध  
नार उतावल करती ॥ निज २ साथणलारी ॥ उण आगैवा उण  
आगैवा ॥ भीड मची अति भारी ॥ सी० ॥ ५ ॥ धन कौसल्या मात  
सुमित्रा ॥ जनम्या सुत अवतारी ॥ तात थकी तो भाग सयायो ॥  
सूरतरी बलिहारी ॥ सी० ६ ॥ च्यारू भाड, से जोडै सोहै ॥ मूरत  
मोहनगारी ॥ इंद्र थका पिण अधिका दीपै ॥ सो गयो गगने हारी  
॥ सी० ॥ ७ ॥ इति.

### ८ ॥ राग--चलित ॥

वेगा जावो गधा बुलावो ॥ लिउमन मान बचावो हो ॥ ह-  
नुमत ॥ गद २ ययण राम फुरमावै ॥ त्राती भरी २ आवै हो ॥ वे॥  
॥ १ ॥ लछमन मरें हमभि भरजैहैं ॥ सीया सुन तजै देह ॥ सपके  
प्राण उवारो ॥ पपन सुत ॥ इतनो सुजस अवलेह ॥ वे० ॥ २ ॥ ए-  
तला दिनथो सेवक मारो ॥ आजथी बंधु ममान ॥ लछमन जीवाया  
थी मानू मोरू ॥ दीयो जीत व दान हो ॥ वे० ॥ ३ ॥ लछमनको  
जलदी, जीवावो तो जानु ॥ कीयो दीर्घ उपगार ॥ दीन वचन रघु-  
नदन दाखै ॥ हो तुम करुणा भडार ॥ वे० ॥ ४ ॥ एम सुणी भा-  
मडल हनुमत ॥ पोले सीस नमाय हो ॥ सोचन करीये प्रभु प्रशादे ॥  
आना विसल्या उठाय हो ॥ वे० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥



## ९ ॥ राग चलित. ॥

कहत केरै सुनो श्री राम ॥ अविचार्यो कीयो काम ॥ तुममें सुत  
 गुणमणि आवास ॥ ताको दीयो वनवास ॥ १ ॥ कौशल्या सौमित्रामाय ॥  
 दोनूँन हई दुखदाय ॥ अह नगरजन दुखी घोर ॥ अजस लखो जगजोर  
 ॥ २ ॥ कलहकारी नारीजात ॥ प्रगट शास्त्रैवात ॥ कृत्या कृत्य कौन  
 करै विचार ॥ माहा अविवेक आगार ॥ ३ ॥ होणी सोतो होगड  
 नाथ ॥ हो नहार कै साथ ॥ अब तुम होड समुद्र अगाथ ॥ क्षमोमात  
 अपराध ॥ ४ ॥ वीनती ए मुझ वारवार ॥ पाछा पुर पाधार ॥ गाडी  
 विराज करीजेजी ॥ माहरी तुमनें लाज ॥ ५ ॥ भक्तिवत छै भर्त  
 सुभाय ॥ रहसी सेवामाय ॥ मानीजे करुणा भडार ॥ माय तणी  
 मनुहार । ६ ॥

## १० ॥ राग चलित ॥

तुम घर जावो मोरा वीर ॥ भरत भाई ॥ तु० ॥ हमभी चलें-  
 गे तुमभि चलोगे ॥ जननी खू धर है धीर ॥ भ० १ ॥ मात चिह  
 की आणमे रहीयो ॥ प्रजाको हरियो पीर ॥ भ० २ ॥ मर्याद भग  
 सगनी चनकी ॥ मत जइयो परदाराकी तीर ॥ भ० ३ ॥ पर धन  
 तोप रोपक पूजनमें ॥ विपत मैं धरियो धीर ॥ भ० ४ ॥ पुर ज-  
 नकी आसीस लीज्यो ॥ कीज्यो जतन शरीर ॥ भ० ५ ॥ लघुवध  
 व प्रिय शत्रुघनकों ॥ मत करियो टिलगार ॥ भ० ६ ॥ जननी जनक  
 अखवश दिपाज्यो ॥ एही है वात अखीर ॥ भ० ७ ॥ एह वचन  
 सुन भर्त रामके ॥ नेना भरानें नीर ॥ भ० ८ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ नेमचरित्रातर्गत तृतीयोपरि सखी प्रति राजुल वाक्यम् ॥

## १ ॥ कवित्वं ॥

शृंगारकी चरचं तन केसेरी, आंखकु आज मेंदी टोड हातें ॥  
तपोल करी मुख केसैं रगु, भाळकु तिलक, नाककु नाथें ॥  
चीर बनाय, विलास करू, सखि बात करू रहु फोनके साये ॥  
नेमतो आनेकु नेमकियो, अलि बीज पडो इण तीजके माये ॥ १

## २ ॥ दीप मालिकोपरि राजुल वाक्यम् ॥

मुदर सट्टिर डोर मनोहर, चित्र विचित्र किवी चित्रशाली ॥  
मेरेतो घोर अधार पिया विन, भावतनां द्विलमे छुदिपाली ॥  
आठ भवोकी स्नेहकी आथ, वढायनमे भव नाहिं सभाली ॥  
राजुल कहे सखि आड द्विपालीपें नेम विना मोरे फीकी द्विवाली ॥ २

## ३ ॥ होरीपर राजुल वाक्यम् ॥

फागुनमेंज मुहागन, भागन खेलत होरि पिया मग गोरी ॥  
लाल गुलाल उडात चलात, भरी पिचकारी ॥ अवीरजु घोरी ॥  
गावत राग प्रमाल वजावत ताल कसाल रसाल घनोरी ॥  
राजमती कहे नेम विना मेरे, होरि नहीं हिय उठत होरी ॥ ३ ॥

## ४ ॥ गण गोर पर राजुल वाक्यं ॥

बालपनैहितै गोरीकू पूजिमें, गायकै गीत शक्वी सग मोरी ॥  
दो बहरी २ आनधरी, नित, वृत कीये तोही जोरी बिखोरी ॥ नाहीं  
दरू सजनी इन तैं अब, तूसजहो फिनरू सर होरी ॥ नेम तो छोरी  
गये फिर नावत ॥ गोरि निगोरी कै आगल गोरि ॥ ४ ॥

## ५ ॥ कवित्वं. ॥

पियकी महिमा सुनके, जलिके मुख, हर्ष बढ़यो हियरा भरके ॥  
कव व्हें दिन आंखिसे देखु, दिदार मनोरथ मार रहा करके ॥ नि-  
रखी हरखी प्रभुको जड तें, अरि दाहिण नैन बुरो फुरकै ॥ जगनाथ  
मिलै न मिलै सजनी ॥ अत्र कांह कहूं छतियां धरके ॥ ५ ॥

## ६ ॥ राजमती प्रति सखि वाक्य. ॥

एशी वरात करी जदुनार्थने ॥ इंद्र घटा जिम घोर खरोरी ॥  
फैली रही महिमा त्रिहु लोरुमें, नेमशोचीद नही दुसरोरी ॥ तोरणपें  
प्रभु आय गये, अब नाहरु क्यू मन लखो करोरी ॥ कहैत सखी  
तुम बोलत वाइजी, चृको मति मुख थूंको परोरी ॥ ६ ॥

कीये विलाप बहु मन वालके ॥ चरन ग्रहो संसारकूं छोडी ॥  
मुक्ति बनीमू उमाय रहे, प्रभू राजुलसैं चितकू लियो चोरी ॥  
पीवके पैलियो मुक्ति गई नथमल्ल कहै सती कर्मकूं तोरी ॥ राजलके  
मन मोट बढ़यो ॥ शिव शोकको रूप विलोकन कोरी ॥ ७ ॥

॥ इति नेमिचरित्रांतर्गत कवित्व सप्तकम्. ॥

## ॥ सवैय्या. ॥

( १ ) नमूं श्री अरिहत ॥ कर्माको कियो अंत ॥ हुवाशो केव-  
लवत ॥ करुणा भडारी है ॥ अतिशय चौतिसधार ॥ पतीस वाणी  
उच्चार ॥ समजावे नरनार ॥ परउपगारी है ॥ शरीर सुदर आकार ॥  
सुर जेसो झळकार ॥ गुणहै अनत सार ॥ दोष परिहारी है ॥  
रुहतहें त्रिलोकुरिख मन वच काया करी ॥ लुळ लुळ वारवार ॥ व-  
दना हमारी है ॥ १ ॥

( २ ) सकल करमटाल ॥ वस कर लियो काल ॥ मुगतीमे  
रय्या माल ॥ आत्माको तारी है ॥ देखत सकल भाव ॥ हुवा है  
जगतराव ॥ सदाहि क्षायक भाव ॥ भये अविकारी है ॥ अचल अ-

दलरूप ॥ आवे नहि भव रूप ॥ अनुप सरूप उप ॥ ऐसे सिद्ध धारी  
है ॥ कहत है तिलोकरिख ॥ वताओ ए वास मधु ॥ सदाई उगते  
मुर ॥ वदना हमारी है ॥ २ ॥

(३) गुण है उचीसपुर ॥ धरत धरम ऊर ॥ मारत करमकर ॥  
सुमति विचारी है ॥ शुद्धसो आचारवत ॥ मुदर हे रूपकत ॥ भ-  
णिया सविसिद्धत ॥ वांचणी सुप्यारी है ॥ अधिक मधुर वेण ॥ कोइ  
नहि लोपे केण ॥ सकल जीवाका सेण ॥ कीरत अपारी है ॥ कहत  
हे तिलोकरिख ॥ हितकारी देत सीख ॥ एसा आचारज ताकु ॥  
वदणा हमारी हे ॥ ३ ॥

(४) पढत इग्यारा अग ॥ करमासू करे जंग ॥ पाखंडीको  
मान भग ॥ करण हुस्यारी है ॥ चऊट पुरवधार ॥ जानत आगम  
सार ॥ भविनके सुखकार ॥ भ्रमता निवारी है ॥ पढावे भविकजन ॥  
धिरकर देतमन ॥ तप करि तावे तन ॥ ममता निवारी हे ॥ कहत  
हे तिलोकरिख ॥ ज्ञान भानुपरतिख ॥ ऐसे उपाभ्याय ॥ ताकु  
वदणा हमारी हे ॥ ४ ॥

(५) आदरी सजम भार ॥ करणि करे अपार ॥ सुमति गुपति  
धार ॥ विरुथा निवारि है ॥ जयणा करे लैकाय ॥ सावय न मोले  
वाय ॥ चुजाई रुपायलाय ॥ किरिया भडारी हे ॥ ज्ञान भणे आठों  
जाम ॥ लेवे भगवत नाम ॥ धरमको करे काम ॥ ममताको मारी हें ॥  
कहत हे तिलोकरिख ॥ करमाको टाले विख ॥ एसा मुनिराज  
ताहूं ॥ वदणा हमारी हे. ॥ ५ ॥

॥ इति पचपरमेष्ठी देव स्तुतिः ॥

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ

प्रथम खण्डे

व्याख्यानाभिधं सप्तम् प्रकरणम्.

इति श्री  
सिद्धान्त शिरोमणि  
प्रथम खंड.

॥ समाप्तिः ॥

श्लोकः

रचितमिदममोघं पुस्तकं चारुं चारुं

प्रकरणं बहुभिः श्री कुंडनांघ्रिमसादात्

निजं गुरुं पठित्तं रामचंद्रेण सर्वं

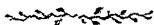
भवतु किल जिनस्य श्रावकानां विभूत्यै ॥१॥



# द्वितीय खंडः॥



## प्रकरण पहिला-नवतत्व ॥



हवे विवेकी सम्यक्तर दृष्टि जीवने । नव पदार्थ जेहवा छे । ते  
हवा । तथा रूप बुद्धि प्रमाणे गुरु आम्नायधि धारंवा ॥ ते नव  
पदार्थना नाम कहे छे ॥ जीव तत्व ॥ १ ॥ अजीव तत्व ॥ २ ॥ पुण्य  
तत्व ॥ ३ ॥ पाप तत्व ॥ ४ ॥ आश्रव तत्व ॥ ५ ॥ सवर तत्व ॥ ६ ॥  
निर्जग तत्व ॥ ७ ॥ बंध तत्व ॥ ८ ॥ मोक्ष तत्व ॥ ९ ॥

### ॥ अथ जीवतत्वना लक्षण ॥

जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्य लक्षण ॥ सदा मउपयो  
गी ॥ असख्यात प्रदेशी । सुख दुःखनो जाण ॥ सुख दुःखनो वे  
दक-तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ जीवनो एक भेट ॥ सकल जीवो  
चैतन्य लक्षण एक छे ॥ गाटे सग्रहनये रुनि एक भेदे जीव कहिये ॥

तथा जीवना दो भेद ॥ त्रस १ अने थावर २ ॥ तथा ॥ सिद्ध ॥ १ ॥  
 अने ससारी ॥ २ ॥ तथा जीवना तीन भेद ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥  
 पुरुष वेद ॥ २ ॥ नपुसक वेद ॥ ३ ॥ तथा भव सिद्धिया ॥ १ ॥  
 अभव सिद्धिया ॥ २ ॥ नो भव सिद्धिया । नो अभव सिद्धिया ॥ ३ ॥  
 अथ जीवका चार भेद ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यच ॥ २ ॥ मनुष्य  
 ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा ॥ चक्षु दर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षु दर्शनी  
 ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥ ३ ॥ केवल दर्शनी ॥ ४ ॥

### ॥ अथ जीवना पांच भेद ॥

एकेन्द्रिय ॥ १ ॥ वेइन्द्रिय ॥ २ ॥ तेइन्द्रिय ॥ ३ ॥ चउरिन्द्रिय  
 ॥ ४ ॥ पचेन्द्रिय ॥ ५ ॥ तथा ॥ सयोगी ॥ १ ॥ मन योगी ॥ २ ॥  
 वचन योगी ॥ ३ ॥ काय योगी ॥ ४ ॥ अयोगी ॥ ५ ॥

### ॥ अथ जीवना छे भेद ॥

पृथिवी काय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउ-  
 काय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रस काय ॥ ६ ॥ तथा ॥ स क-  
 पायी ॥ १ ॥ कोह कपायी ॥ २ ॥ मान कपायी ॥ ३ ॥ माया कपायी  
 ॥ ४ ॥ लोभ कपायी ॥ ५ ॥ अकपायी ॥ ६ ॥

### ॥ अथ जीवना सात भेद ॥

नारकी ॥ १ ॥ तिर्यच ॥ २ ॥ तिर्यचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥  
 मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥

### ॥ अथ जीवना आठ भेद ॥

सलेशी ॥ १ ॥ कृष्ण लेशी ॥ २ ॥ निल लेशी ॥ ३ ॥ कापुत  
 लेशी ॥ ४ ॥ तेजु लेशी ॥ ५ ॥ पद्म लेशी ॥ ६ ॥ शुक्ल लेशी  
 ॥ ७ ॥ अलेशी ॥ ८ ॥

## ॥ अथ जीवना नव भेद ॥

पृथ्वी ॥ १ ॥ अप ॥ २ ॥ तेज ॥ ३ ॥ वायु ॥ ४ ॥ वनस्पति ॥ ५ ॥ वेङ्द्रिय ॥ ६ ॥ तेङ्द्रिय ॥ ७ ॥ चउरिन्द्रिय ॥ ८ ॥ पंचेन्द्रिय ॥ ९ ॥

## ॥ अथ जीवना दश भेद ॥

एकेन्द्रिय ॥ १ ॥ वेङ्द्रिय ॥ २ ॥ तेङ्द्रिय ॥ ३ ॥ चउरिन्द्रिय ॥ ४ ॥ पंचेन्द्रिय ॥ ५ ॥ ए ५ ना अमजाप्ता । अने । मजाप्ता । एव दश भेद जाणवा ॥ १० ॥

## ॥ अथ जीवना इग्यारे भेद ॥

एकेन्द्रिय ॥ १ ॥ वेङ्द्रिय ॥ २ ॥ तेङ्द्रिय ॥ ३ ॥ चउरिन्द्रिय ॥ ४ ॥ नारकी ॥ ५ ॥ तिर्यच ॥ ६ ॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ भवनपति ॥ ८ ॥ वाणध्यतर ॥ ९ ॥ ज्योतिपी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥

## ॥ अथ जीवना चार भेद ॥

पृथ्वी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ वायुकाय ॥ ४ ॥ वनस्पति काय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ ए ६ अमजाप्ता । ने मजाप्ता ॥ एव चार भेद जाणवा ॥ १२ ॥

## ॥ अथ जीवना तेरा भेद ॥

कृष्ण लेशी ॥ १ ॥ निल लेशी ॥ २ ॥ कापुत लेशी ॥ ३ ॥ तेजु लेशी ॥ ४ ॥ पद्म लेशी ॥ ५ ॥ शुक्ल लेशी ॥ ६ ॥ ए ६ अमजाप्ता । अने । मजाप्ता । एव ॥ १२ ॥ अने ॥ एक अलेशी ॥ एव ॥ १३ ॥



## ॥ अथ जीवना चवदा भेद ॥

सूक्ष्म एकेन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ १ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ वादर  
 एकेन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ वेद्द्रियनो  
 अग्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ६ ॥ तेडंन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ ७ ॥  
 ने प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ ९ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥  
 असंज्ञी पचेन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ सज्ञी  
 पचेन्द्रियनो अग्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ एव जघन्य  
 जीवना चवदा भेद जाणवा ॥

॥ अथ उत्कृष्टा जीवना पांचसो त्रैसट ( ५६३ ) भेद कहे छे ॥  
 तेमा नारकीना १४ भेद ॥ तिर्यचना ४८ भेद ॥ मनुष्यना ३०३  
 भेद ॥ देवताना १९८ भेद ॥ एव सर्व मिली ( ५६३ ) भेद  
 जाणवा ॥

॥ द्विवे नारकीना १४ भेद कहे छे ॥

## ॥ सात नारकीके नाम ॥

रत्नप्रभा ॥ १ ॥ सर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पक  
 प्रभा ॥ ४ ॥ धूम्र प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमातम प्रभा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ रत्नप्रभा किसको कहिये ॥ पेहली नारकीमें १६०००  
 योजनको १ एरु रत्नकरड हैं ॥ जिसकी प्रभा पडती है । जिसको  
 रत्नप्रभा कहते हैं ॥ दुसरीमें तीक्ष्ण करड है । जिसको सर्करप्रभा  
 कहते हैं ॥ तिसरीमे तपतपती धूल हैं । जिसको वालु प्रभा कहते हैं ॥  
 चौथीमें रुर्दम हैं । जिसको पक प्रभा कहते है ॥ पाचवीमें धुंवा है ।

जिसको धूम्रप्रभा कहते हैं ॥ उठीमें अधारा है । जिसको तमप्रभा कहते हैं ॥ सांतवीमें महान् अधारा है । जिसको तमातम प्रभा कहते हैं ॥ ये सात नारकीना अप्रजाप्ता अने प्रजाप्ता ॥ एव चौदों भेद जाणवा ॥

॥ अथ सात नारकीना यत्र कुरी नाम गोनादि दिखाते हैं ॥

नारकी	नारकी नाम	नारकीना गोत्र	नारकीना पिंड	नारकी-रा पा-यडा	नारकी-रा आं-तरा	नरका वासा
१	घमा	रत्न प्रभा	१८००००	१३	१२	३००००००
२	घसा	सर्कर प्रभा	१३२०००	११	१०	२५०००००
३	भीला	वालु प्रभा	१२८०००	९	८	१५०००००
४	अंजना	पक प्रभा	१२००००	७	६	१००००००
५	अरीठा	धूम्र प्रभा	११८०००	५	४	३०००००
६	मघ्रा	तम प्रभा	११६०००	३	२	९९९९५
७	माघवती	तमातमप्रभा	१०८०००	१	नयी	५

॥ अथ तिर्यचना ४८ भेद कहे छे ॥

वेइद्रियना २ भेद ॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता २ ॥ तेइद्रियना २ भेद ॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता ० ॥ चउरिन्द्रियना २ भेद ॥ अप्रजाप्ता १ प्रजाप्ता २ ॥ एव ६ ॥

## ॥ अथ पंचेन्द्रियना २० भेद कहे छे ॥

जिस्का मूल भेद २ । समूर्छिम ( १ ) गर्भेज ( २ ) गर्भेजरा-  
मूल भेद(५)जलचर(१)स्थलचर(२)खेचर(३)उर्पर(४)भुजपर(५)

( १ ) जलचर किसको कहिये ॥ जलमे उपजे ते जलचर ॥  
कच्छ । मच्छ । इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

( २ ) स्थलचर किसको कहिये ॥ पृथ्वीपर चाले ते स्थलचर ॥  
जिसका ४ भेद ॥ गंडी पदा । सनह पदा ॥ गंडी पदा ते गंडा  
हाथी प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥ सनह पदा ते सिह-श्वान  
प्रमुख अनेक नाम जाणवा ॥

इखुरा ॥ दुखुरा ॥ इषुरा ते अश्व-खर और खचर इत्यादि ॥  
दुखुरा ते गाय-भैस-वैल-भृग इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

( ३ ) खेचर किसको कहिये ॥ आकाशमे चाले ते खेचर ॥  
जिसका चार भेद ॥ रोम पखी ॥ १ ॥ चर्म पखी ॥ २ ॥ समुग  
पखी ॥ ३ ॥ वितत पखी ॥ ४ ॥

रोमपखी ते रोमवाली पांखां ॥ सुपटो-मैना-कोयल-हंस  
चिडी-रुमेडी-इत्यादि अनेक नाम जाणवा ॥

चर्मपखी ते चामडारी पांखा ॥ वागल-चमचेड इत्यादि अ-  
नेक नाम जाणवा ॥ समुग पंखी ते डानाराढकणा सरीखी पाखा ॥

विततपखी ते अरटियारी ताडियां सरिखी पाखां ॥ अढाई  
द्वीपमें तो चर्मपखी-रोमपखी ए २ जातना पंखी छे ॥ अने अढाई  
द्वीपके चारे च्यारुई जातना पखी छे ॥

(४) उरपर कित्तको कहिये ॥ पेटसे चाले ते उरपर ॥  
उरपरमे सर्प इत्यादि जाणवा ॥

(५) भुजपर ते भुजासे चाले ॥ भुजपरमे नौलिया-किर-  
कांटिया-कोल-मूसा इत्यादि जाणवा ॥ ए पांच सत्री-पांच असत्री ॥  
इनका अपजाप्ता अने प्रजाप्ता ॥ एव २० ॥

॥ अथ एकेंद्रियना २२ भेद कहे छे ॥

पृथ्वी कायना ४ भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ अने वादर २ ॥ अप-  
जाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ अपरूपयन्ता चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ वादर  
२ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ तेजकायना चार भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥  
वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ वाउकायना चार भेद ॥  
सूक्ष्म १ ॥ वादर २ ॥ अपजाप्ता ३ ॥ प्रजाप्ता ४ ॥ वनस्पति काय-  
ना छे भेद ॥ सूक्ष्म १ ॥ साधारण २ ॥ अने प्रत्येक ३ ॥ ए  
तीनोका अपजाप्ता अने प्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली तिर्यचना ४८  
भेद जाणवा ॥

॥ अथ मनुष्यना ३०३ भेद कहे छे ॥

॥ १५ ॥ कर्म भूमिना मनुष्य ॥ ३० ॥ अकर्मभूमिना मनुष्य  
॥ ५६ ॥ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ एव ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना  
गर्भेज मनुष्यना ॥ अपजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥  
ने एकसोने एक क्षेत्रना समष्टिम मनुष्यना अपजाप्ता  
॥ एव ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना ॥ द्विवे कर्म भूमि ते कहने  
कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृपी ॥ ३ ॥ ए ३ प्रका-  
रना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते कर्म  
भूमिना क्षेत्र केटला छे ॥ ५ ॥ भरत ॥ ५ ॥ इरवतने ॥ ५ ॥ महा

विदेह । एव ॥ १५ ॥ ते कर्म भूमि किहा छे ॥ एकलाख योजननो जंबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवर्त ॥ १ ॥ महाविदेह ए ३ क्षेत्र कर्म भूमिना जंबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ वे लाख योजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चार लाख योजननो धातकी खडद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ भरत ॥ २ ॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख योजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो ॥ ८ ॥ लाख योजननो । अर्घ पुष्करद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवर्त ॥ २ महाविदेह छे ॥ एव । उ दु ॥ १२ ॥ ने ॥ ३ ॥ पनर कर्म भूमिना मनुष्य कथा ॥ हवे ३० अकर्म भूमिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्म भूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्म रहित दश प्रकारना कल्पटक्षे करीने जीवे तेहने अकर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥ ५ ॥ हेमवय ॥ ५ ॥ हिरणवय ॥ ५ ॥ हरिवास ॥ ५ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ देवकुरु ॥ ५ ॥ नुतर कुरु ॥ एव ॥ ३० ॥ हवे जंबुद्विपमा ॥ १ हेमयय ॥ १ हिरणयय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १ नुतर कुरु ॥ एव ॥ ६ ॥ क्षेत्र जंबुद्विपमां छे ॥ धातकि खडमां वे वे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥ अर्द्ध पुष्कर द्विपमा वे वे जाणवा ॥ एवं ॥ ३० ॥ अकर्म भूमिना मनुष्य कथा ॥ हवे छपन अंतरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्विपना भरत क्षेत्रनि मर्यादानो करणहार ॥ चुल हिमप्रत नामा पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ते सो योजननो उचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एरु हजार बावन योजनने वारे कलानो पहोलो छे ॥ चोविश हजार नवशें वत्रिश योजननो लांबो छे ॥ तेहने पूर्व पश्चिमेने छेहटे वे वे डाढा निकली छे ॥ एकेकि डाढा चोराशीशें-चोराशीशें योजननी झाझेरी लायी छे ॥ ते एकेकि डाढा उपरे ॥ सात-सात अतरद्विपा छे ॥ ते अतरद्विपा किहा छे ॥ जगतिना कोट

थसी ॥ ३०० ॥ जोजन लवण समुद्रमा जाइये ॥ तिवारे पहिलो अतर  
द्विपो आवे ॥ ते ॥ ३०० ॥ जोजननो लांगो ने पहोळो छे ॥ तिहायी  
॥ ४०० ॥ जोजन जाइये ॥ तिवारे त्रिजो अंतरद्विपो आवेते  
॥ ४०० ॥ जोजननो लांगो ने पहोळो छे ॥ तिहाथि ॥ ५०० ॥ जो-  
जन जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ५०० ॥ जो-  
जननो लांगो ने पहोळो छे ॥ तिहाथि ॥ ६०० ॥ जोजन जाइये  
तिवारे ॥ चोथो अतरद्विपो आवे ते ॥ ६०० ॥ जोजननो लांगो ने  
पहोळो छे ॥ तिहाथी ॥ ७०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ पांचमो  
अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥ जोजननो लांगो ने पहोळो  
छे ॥ तिहाथी ॥ ८०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥  
छठो अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ८०० ॥ जोजननो लांगो  
ने पहोळो छे ॥ तिहाथी ॥ ९०० ॥ जोजन जाइये तिवारे ॥ सा-  
तमो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ९०० ॥ जोजननो लांगो ने पहोळो  
छे ॥ एव । सात चौकु ॥ २८ ॥ अतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरपत  
क्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरी नामा पर्वत छे ॥ ते चुल हिम-  
वत शरिखो जाणवो ॥ तिहा पण ॥ २८ ॥ अतरद्विपा छे ॥ अठाविश  
दु ॥ ५६ ॥ अतरद्विपा जाणवा ॥ अतरद्विपाना मनुष्य ते केहने  
कहिये ॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर अवर डाढामा द्विपाना रहेनार  
छे ॥ माटे अतर द्विपाना मनुष्य कहिये ॥ हिचे ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना  
समुर्द्धिम मनुष्य ॥ १४ ॥ स्थानरुमा उपजे छे ते कहे छे ॥ उचारे  
सुवाते-वडिनितमा उपजे ॥ १ ॥ पासवणे सुवाते-लघुनितमां उपजे  
॥ २ ॥ खेळे सुवाते-उलखामा<sup>१</sup> उपजे ॥ ३ ॥ सघाणे सुवाते-  
ल्लिटमा<sup>२</sup> उपजे ॥ ४ ॥ वते सुवाते-वयनमां उपजे ॥ ५ ॥ पीते  
सुवाते-निला पिला पीतमा उपजे ॥ ६ ॥ पुइएसुवाते-परुमां<sup>३</sup> उ-

पजे ॥ ७ ॥ सोणिए सुवाते-रुद्धिरमां उपजे ॥ ८ ॥ सुके सुवाते-  
 विर्यमां उपजे ॥ ९ ॥ सुक पोगल परिसाडिए सुवाते-विर्यादिकना  
 पुद्रल सुकाणा ते फिरि भिना थाय तेहमां उपजे ॥ १० ॥ विगय-  
 जीव कलेवरे सुवाते-मनुप्यना कलेवरमां उपजे ॥ ११ ॥ इत्थि  
 पुरिस सजोगे सुवाते-स्त्री पुरुषना संजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगर  
 निधमणे सुवाते-नगरनी खालोमां उपजे ॥ १३ ॥ सव्वे सुवेव  
 असुइठाणे सुवाते-सर्व मनुप्य सवधि अथुचि स्थानकेमां उपजे  
 ॥ १४ ॥ एवं ॥ १०१ ॥ क्षेत्रना समुच्छिम मनुप्य अपजाप्ता ॥ एव  
 सर्व मिली ॥ ३०३ ॥ भेद मनुप्यना क्हा ॥

॥ हिवे देवताना १९८ भेद कहे छे ॥

मूळ भेद चार ॥ भवनपति ( १ ) वाणव्यतर ( २ ) ज्योतिर्पी  
 ( ३ ) विमानिक ( ४ )

उत्तरभेद ( १९८ ) ते कहे छे:-भवन पतिना दत्त भेद-असुर  
 कुमार ( १ ) नाग कुमार ( २ ) सुवर्ण कुमार ( ३ ) अग्नि कुमार ( ४ )  
 विद्युत् कुमार ( ५ ) दीप कुमार ( ६ ) उदधि कुमार ( ७ ) दिशा  
 कुमार ( ८ ) पवन कुमार ( ९ ) स्तनित कुमार ( १० )

॥ हिवे १५ परमाधामी कहे छे ॥

अंवे ( १ ) अंवरसे ( २ ) सामे ( ३ ) रुहे ( ४ ) विरुहे ( ५ ) काले  
 ( ६ ) महाकाले ( ७ ) सबळे ( ८ ) धनु ( ९ ) कुंभे ( १० ) वालू ( ११ )  
 वैतरणी ( १२ ) असिपत्ते ( १३ ) खरस्वर ( १४ ) महाघोषे ( १५ )

॥ हिवे सोळे प्रकारके वाणव्यंतर देव कहे छे ॥

पिशाच ( १ ) भूत ( २ ) यक्ष ( ३ ) राक्षस ( ४ ) किन्नर ( ५ ) किं-

पुरुष (६) महोरग (७) गंधर्व (८) आणपत्नी (९) पाणपत्नी (१०)  
इसीवाई (११) भुईवाई (१२) कदिय (१३) महारुंदिय (१४) कोहड  
(१५) पयग देव (१६)

॥ हिवे दस प्रकारके तिर्यक् जंभका देव कहे छे ॥

आण जंभका (१) पाण जभका (२) लयन जभका (३) सयन  
जंभका (४) वत्थ जभका (५) फल जभका (६) पुष्फ जभका (७)  
फल पुष्फ जभका (८) अग्नी जभका (९) वीज्जु जभका (१०)

॥ हिवे दस प्रकारके ज्योतिषी देव कहे छे ॥

चंद्रमा (१) सूर्य (२) ग्रह (३) नक्षत्र (४) तारा (५)  
ए ५ चर ते अठिद्विपमां छे ॥ नें ५ स्थिर ते अठिद्विप  
चाहिर छे ॥ एवं ॥ १० ॥

॥ हिवे तीन प्रकारके किल्बिषि देव कहे छे ॥

त्रण पलिया ॥१॥ त्रण सागरिया ॥२॥ तेर सागरिया ॥३॥

॥ हिवे नव लोकांतिक कहे छे ॥

सारस्वत (१) आदित्य (२) विन्दि (३) वरुण (४) गर्दतो  
या (५) तोपिया (६) अन्यानाया (७) अगिच्चा (८) रिवा (९)

॥ हिवे चारे देवलोक कहे छे ॥

सुधर्म (१) इशान (२) सनत्कुमार (३) माहेंद्र (४) ब्रह्म  
लोक (५) लतक (६) महाशुक (७) सहस्यार (८) आणत (९) प्राणत  
(१०) आरण (११) ~



॥ हिवे नव ग्रीवेक कहे छे ॥

भदे (१) सुभदे (२) सुजाए (३) सुमाणसे (४) मिय दर्शने (५)  
सुदर्शने (६) आमोहे (७) सुपडिवद्धे (८) जशोधरे (९)

॥ हिवे पांच अनुत्तर विमान कहे छे ॥

विजय ( १ ) विजयत ( २ ) जयत ( ३ ) अपराजित ( ४ )  
सर्वार्थसिद्ध ( ५ )

चौदे नारकीना ४८-तिर्यचना ३०३-मनुष्यना १९८-देवता-  
ना एव सर्व मिली ५६३ जीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति जीवतत्व समाप्त ॥

॥ अथ अजीवतत्व कहे छे ॥

अजीव किसको कहिये ॥ अजीव जड लक्षण सुख दुखने जाणे  
नही, साता असाता, वेदे नही, उपयोग रहित, परजा प्राण रहित, जि-  
सको अजीवतत्व कहिये ॥

॥ अजीवतत्वके जगन्य १४ भेद ॥

धर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कथ (१) देश (२) प्रदेश (३)  
अधर्मास्तिकायका ३ भेद ॥ स्कथ (१) देश (२) प्रदेश (३) आका-  
शस्तिकायका ३ भेद ॥ स्कथ [१] देश [२] प्रदेश [३] एव [९]  
दसमो काल ॥ ए (१०) भेद अरुपि अजीवना कथा ॥ हिवे रुपि  
अजीवना (४) भेद कहे छे ॥ पुद्गलास्तिकायका (४) भेद ॥ स्कथ  
(१) देश (२) प्रदेश (३) परमाणु पुद्गल (४) एव ॥ १४ ॥

॥ उत्कृष्टा अजीवतत्वका ( ५६० ) भेद तेहमा  
( ३० ) भेद अजीव अरूपीना कहे छे ॥

धर्मास्तिकाय-द्रव्य थकी एक द्रव्य ( १ ) क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे ( २ ) काल थकि अनादि अनंत ( ३ ) भावथकि अवर्णे अगंधे--अरसे-अफासे-अमूर्ति [ ४ ] गुणथकि चलण सहाय [ ५ ] अधर्मास्तिकाय-द्रव्यथकी एक द्रव्य [ ६ ] क्षेत्रथकि लोक प्रमाणे [ ७ ] कालथकि अनादि अनंत [ ८ ] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे-अफासे--अमूर्ति [ ९ ] गुण थकि स्थिर सहाय [ १० ] आकाशास्तिकाय-द्रव्यथकि-एक द्रव्य [ ११ ] क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे [ १२ ] काल थकि अनादि अनंत ( १३ ) भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे-अफासे--अमूर्ति [ १४ ] गुण थकी ॥ अत्रगाहनादान [ १५ ] हिवे काल-द्रव्यथकी अनेक द्रव्य [ १६ ] क्षेत्रथकि-अद्विद्विप प्रमाणे [ १७ ] कालथकी-अनादि अनंत [ १८ ] भावथकि अवर्णे-अगंधे-अरसे-अफासे-अमूर्ति [ १९ ] गुणथकि वर्तना लक्षण [ २० ] एव ॥ २० ॥ और धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय इन तीनोंके तीन तीन भेद अने एक काल एव सर्व मिली अरूपि अजीवना [ ३० ] भेद कथा ॥

हिवे रूपि अजीवना [ ५३० ] भेद कहे छे ॥

वर्ण पांच—काळो [ १ ] नीलो [ २ ] रातो [ ३ ] पीलो [ ४ ] धोळो [ ५ ] एक एककेका वर्णमाही बीस बीस भेद लाभे ॥ ते कहे छे ॥ द्रव्य २ गन्ध-पांच ५ रस-पांच ५ स्रवाण-आठ ८ स्पर्श एव बीस [ २० ] पचा शो ॥ १०० ॥

हिवे गन्ध द्रव्य २ ॥ ते दुर्गन्ध [ १ ] सुगन्ध [ २ ]

मांही तेवीस तेवीस भेद लाभे-पांच ५ वर्ण, पांच ५ रस, पांच ५ सठाण, आठ ८ स्पर्श एव २३ दु-जियालीस [ ४६ ].

हिवे रस पांच ५-तीखो [ १ ] कडुवो ( २ ) कषायलो [ ३ ] खाटो [ ४ ] मीठो ( ५ ) एकेका रसमाही वीसवीस भेद लाभे-पांच ५ वर्ण, दोय २ गंध, पांच ५ सठाण, आठ ८ स्पर्श एवं वीस पचा सो [ १०० ]

हिवे संठाण पाच ५-परिमडल सठाण ( १ ) वटसंठाण ( २ ) व्रंस सठाण ( ३ ) चौरस संठाण ( ४ ) आयतन सठाण ( ५ ) एके का सठाणमाही वीस वीस भेद लाभे-पांच ५ वर्ण, दोय २ गंध, पाच ५ रस, आठ ८ स्पर्श एव वीस पचा सो ( १०० )

हिवे स्पर्श ८ आठ -खरखरो ( १ ) मुंहालो ( २ ) हलको ( ३ ) भारी ( ४ ) ठंडो ( ५ ) ऊनो ( ६ ) लुखो ( ७ ) चोपडयो ( ८ ) एकेका स्पर्शमाही तेवीस तेवीस भेद लाभे-५ पाच वर्ण, २ दोय गंध ५ पांच रस, ६ छे स्पर्श, ५-पाच सठाण\* एवं ( २३ ) तेवीस अठा ( १८४ )

एवं सो वर्णना--छिंवालीस गधना--सो रसना--सो सठाणना  
 १०० ४६ १०० १००  
 एऊसो चौराशी स्पर्शना ए पाचशे तीस [ ५३० ] अजीव रूपीना  
 १८४  
 और तीस [ ३० ] अजीव अरूपीना [ जे पूर्व कथा ते ] सर्व मिली  
 ( ५६० ) अजीवना भेद जाणवा ॥

॥ इति अजीव तत्व समाप्तम् ( २ ) ॥

\* खरखरोमे-खरखरो और मुहालो ८ दोय स्पर्श वर्जवा-एम

## ॥ अथ पुण्य तत्व कहे छे ॥

पुण्य तत्व ते दुःखे दुःखे बाँरे मुखे मुखे भोगवे जिसको पुण्य तत्व कहिये ॥

पुण्य तत्वके जयन्य नव [९] भेद ते कहे छे:—

अन्न पुत्रे [१] पाण पुत्रे [२] लयण पुत्रे (३) सयण पुत्रे (४) वत्थ पुत्रे (५) मन पुत्रे [६] वचन पुत्रे [७] काय पुत्रे (८) नमस्कार पुत्रे (९)

ए (९) नव भेदे पुण्य उपार्जे और उत्कृष्टा (४२) भेदे पुण्य भोगवे ते कहे छे:—

शाता वेदनीय (१) उच्च गोत्र (२) मनुष्य गति (३) मनुष्यानुपूर्वी (४) देवतानि गति (५) देवानुपूर्वी (६) पंचेन्द्रियनि जाति [७] उदारिकु शरिर [८] वैक्रेय शरिर (९) अहारक शरिर (१०) तैजस शरिर (११) कर्मण शरिर (१२) उदारिकुना अग उपांग [१३] वैक्रेयना अग उपांग (१४) आहारकना अग उपांग (१५) वज्ररिपभ नाराच संघयण [ १६ ] समचउरश सठाण [ १७ ] शुभवर्ण (१८) शुभगध (१९) शुभरस (२०) शुभस्पर्श (२१) अगुरु लघुनाम (२२) पराघात नाम (२३) उस्वाम नाम [२४] आताप नाम (२५) उग्रोत नाम (२६) शुभ चालवानि गति (२७) निर्माण नाम (२८) त्रस नाम (२९) वादर नाम (३०) प्रजाप्त नाम (३१) प्रत्येक नाम (३२) स्थिर नाम [३३] शुभ नाम (३४) सौभाग्यनाम (३५) सुस्वर नाम (३६) आदेय नाम (३७) जशौ कीर्ति नाम (३८) देवतानुं आउपू (३९) मनुष्यनु आउपू (४०)

गल वत् (४१) तिर्यकर नामकर्म ॥ ४२ ॥ एव (४२) भेद पुण्यना  
जाणवा ॥

॥ इति पुण्य तत्व समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ पाप तत्व कहे छे ॥

पाप तत्व ते सुखे सुखे वाधे और दुःखे दुःखे भोगवे जिसको  
पाप तत्व कहिये ॥

पाप तत्वके जघन्य अद्वारा ( १८ ) भेद.—

प्रणातिपात (१) मृपावाद (२) अदत्तादान (३) मैथुन (४)  
परिग्रह (५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ (९) राग (१०)  
द्वेष (११) कलह (१२) अभ्याख्यान (१३) पैरून्य (१४) परपरि  
वाद (१५) रति अरति (१६) माया मोसो (१७) मित्रादंसण सल्ल (१८)

ए अद्वारे प्रकारे पाप उपार्जे और उत्कृष्टा ( ८२ ) प्रकारे पाप  
भोगवे ॥ ते कहे छे:—

मतिज्ञानावरणिय (१) श्रुतज्ञानावरणिय (२) अवप्रिज्ञानाव-  
रणिय (३) मनपर्जव ज्ञानावरणिय (४) केवलज्ञानावरणिय [५]  
दानांतराय (६) लाभांतराय (७) भोगांतराय (८) उपभोगांतराय  
(९) वीर्यांतराय (१०) निद्रा (११) निद्रानिद्रा (१२) प्रचला (१३)  
प्रचला प्रचला (१४) थीणद्धिनिद्रा (१५) चक्षु दर्शनावरणिय (१६)  
अचक्षु दर्शनावरणिय (१७) अवधि दर्शनावरणिय (१८) केवल  
दर्शनावरणिय (१९) निच गोत्र (२०) वेदनीय [२१]  
मिथ्यात्व मोहनिय (२२) [२३] [२४] अपजा-

पणु [२५] साधारण [२६] अस्थिर नाम [२७] अशुभ नाम  
 [२८] दौर्भाग्य नाम [२९] दुःस्वर नाम (३०) अनादेय नाम [३१]  
 अजशोकीर्ति नाम (३२) नरकनि गति [३३] नरकनु आउपू [३४]  
 नरकानुपूर्वी (३५) अनंतानुत्रयि क्रोध (३६) मान (३७) माया  
 (३८) लोभ (३९) अपचखाणावरणिय क्रोध (४०) मान (४१)  
 माया (४२) लोभ (४३) पचखाणावरणिय क्रोध (४४) मान (४५)  
 माया (४६) लोभ (४७) सजलनो क्रोध (४८) मान (४९) माया  
 (५०) लोभ (५१) हाश्य (५२) रति (५३) अरति (५४) भय (५५)  
 शोक [५६] दुगडा (५७) स्त्रीवेद (५८) पुरुषवेद [५९] नपुंसकवेद  
 (६०) तिर्यचनी गति [६१] तिर्यचनी अनुपूर्वी (६२) ऐन्द्रियपणु (६३)  
 वेन्द्रियपणु (६४) तेन्द्रियपणु [६५] चउरिन्द्रियपणु (६६) अशुभ  
 चालनानी गति (६७) उपघात नामकर्म (६८) अशुभ वर्ण (६९) अशु-  
 भ गध (७०) अशुभ रस (७१) अशुभ स्पर्श (७२) ऋषभ नाराच सघ-  
 यण ( ७३ ) नाराच सघयण ( ७४ ) अर्द्धनाराच सघयण (७५)  
 किलिका सघयण ( ७६ ) छेवडु सघयण ( ७७ ) निगोह परिमंडल  
 सठाण ( ७८ ) सादियो सठाण ( ७९ ) वामन सठाण ( ८० )  
 कुञ्ज सठाण ( ८१ ) हुडक सठाण ( ८२ ) एव ( ८२ ) ।ोद पाप  
 तत्वना जाणवा ॥

॥ इति पापतत्त्व समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ आश्रव तत्व कहे छे ॥

आश्रव तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपीयो तलाव कर्म रूपी-  
 यो पानी आश्रवरूपी नाला करीने आवे जिसको आश्रव तत्व कहिये ॥

आश्रव तत्वके जघन्य बीम ( २० ) भेदः—

पिण्यात्व आश्रव [ १ ] अप्रत आश्रव [ २ ] प्रमाद आश्रव

गल वत् (४१) तिर्यकर नापकर्म ॥ ४२ ॥ एव (४२) भेद पुण्यना  
जाणवा ॥

॥ इति पुण्य तत्व समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ पाप तत्व कहे छे ॥

पाप तत्व ते सुखे सुखे बांधे और दुःखे दुःखे भोगवे जिसको  
पाप तत्व कहिये ॥

पाप तत्वके जघन्य अहारा ( १८ ) भेदः—

प्रणातिपात (१) मृषावाढ (२) अदत्तादान (३) मैयुन (४)  
परिग्रह (५) क्रोध (६) मान (७) माया (८) लोभ (९) राग (१०)  
द्वेष (११) कल्ह (१२) अभ्याख्यान (१३) पैरून्य (१४) परपरि  
वाद (१५) रति अरति (१६) माया मोसो (१७) मित्रादंसण सल्ल (१८)

ए अहारे प्रकारे पाप उपार्जे और उत्कृष्टा ( ८२ ) प्रकारे पाप  
भोगवे ॥ ते कहे छेः—

मतिज्ञानावरणिय (१) श्रुतज्ञानावरणिय (२) अवधिज्ञानाव-  
रणिय (३) मनपर्जव ज्ञानावरणिय (४) केवलज्ञानावरणिय [५]  
दानांतराय (६) लाभांतराय (७) भोगातराय (८) उपभोगातराय  
(९) वीर्यातराय (१०) निद्रा (११) निद्रानिद्रा (१२) प्रचला (१३)  
प्रचला प्रचला (१४) धीणद्विनिद्रा (१५) चक्षु दर्शनावरणिय (१६)  
अचक्षु दर्शनावरणिय (१७) अवधि दर्शनावरणिय (१८) केवल  
दर्शनावरणिय (१९) निच गोत्र (२०) अशाता वेदनीय [२१]  
मिथ्यात्व मोहनिय (२२) स्थावरपणु [२३] सूक्ष्मपणु [२४] अमजा-

## अथ संवर तत्व कहे छे ॥

संवर तत्व किसको कहिये ॥ जीवरूपी तलाव, कर्मरूपी पानी, आश्रय रूपिया नाला करी आवताने रोके जिसको संवर तत्व कहिये ॥

संवर तत्वके जघन्य बीस (२०) भेदः—

समकित संवर [१] व्रतपञ्चत्वाण संवर [२] अपमात्र संवर (३) अरुणाय संवर (४) शुभजोग संवर (५) प्रणातिपात—ते जीवकी हिंसा नही करे तो संवर (६) मृषादाद—ते झूठ नही बोले तो संवर (७) अदत्तादान—ते चोरी नही करे तो संवर (८) मैयुन नही सेवे तो संवर (९) परियह नही राखे तो संवर (१०) श्रोत्रेन्द्रिय वश करे तो संवर (११) चक्षुडन्द्रिय वश करे तो संवर (१२) घ्राणेन्द्रिय वश करे तो संवर (१३) रसेन्द्रिय वश करे तो संवर (१४) स्पर्शेन्द्रिय वश करे तो संवर (१५) मन वश करे तो संवर (१६) वचन वश करे तो संवर (१७) काया वश करे तो संवर (१८) भद्र उपगर्ण जयणासे लेवे जयणासे मुके तो संवर (१९) सुई कुसग जयणासे लेवे जयणासे मुके तो संवर ( २०)

उत्कृष्टा (५७) भेदः—

इर्षा सुमति (१) भाषा सुमति (२) एषणा सुमति (३) आयाण भंडमत्त निखेयणा सुमति (४) उच्चार पास वण खेल जल सिंघाण पारिठावणीया सुमति (५) ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ॥ अने ॥ (३) गुप्ति ॥ मन गुप्ति (१) वचन गुप्ति (२) काय गुप्ति (३) ॥ ए (८) हिवे



[ ३ ] कपाय आश्रव [ ४ ] अशुभजोग आश्रव [ ५ ] प्राणातिपात आश्रव [ ६ ] मृपावाद आश्रव [ ७ ] अदत्तादान आश्रव [ ८ ] मैयुन आश्रव [ ९ ] परिग्रह आश्रव [ १० ] श्रोत्रेन्द्रिय वसन करे तो आश्रव [ ११ ] चक्षुइन्द्रिय वसन करे तो आश्रव [ १२ ] घ्राणेन्द्रिय वसन करे तो आश्रव [ १३ ] रसेन्द्रिय वसन करे तो आश्रव [ १४ ] स्पर्शेन्द्रिय वसन करे तो आश्रव ( १५ ) मन वसन करे तो आश्रव [ १६ ] वचन वसन करे तो आश्रव ( १७ ) काय वसन करे तो आश्रव ( १८ ) भड उपगर्ण अज्ञयणासें लेवे अज्ञयणासें मेले तो आश्रव ( १९ ) सुई कुसग अज्ञयणासे लेवे ओर अज्ञयणासे मेले तो आश्रव ( २० )

उत्कृष्टा ( ४२ ) भेदः—

पांच ( ५ ) आश्रव ओर पांच ( ५ ) इन्द्रियके भेद ( पूर्व कथा जे ) एव दस ( १० ) क्रोध ( ११ ) मान ( १२ ) माया ( १३ ) लोभ ( १४ ) और तीन ( ३ ) अशुभ जोग ते मन ( १५ ) वचन ( १६ ) काया ( १७ ) और ( २५ ) क्रिया तेहना नामः—

कायिया ( १८ ) अधिगरणिया ( १९ ) पाडपिया ( २० ) पारितावणिया ( २१ ) पाणाइ वाईया ( २२ ) आरंभिया ( २३ ) परिग्गहिया ( २४ ) मायावत्तिया ( २५ ) अपच्चखाणवत्तिया ( २६ ) मिडादंशणवत्तिया ( २७ ) दिठीया ( २८ ) पुठिया ( २९ ) पाडुचिया ( ३० ) सामतो वणिया ( ३१ ) नेसथिया ( ३२ ) सहथिया ( ३३ ) अणवणिया ( ३४ ) विदारणिया ( ३५ ) अणाभोगी ( ३६ ) अणवकंखवत्तिया ( ३७ ) अनापउगी ( ३८ ) सामुदाणी [ ३९ ] पेजवत्तिया [ ४० ] दोसवत्तिया ( ४१ ) इरियावहिया क्रिया ( ४२ ) एव ( ४२ ) भेद आश्रव तत्त्वना जाणवा ॥

॥ इति आश्रव तत्व समाप्तम् ॥ ५ ॥

## निर्जरा तत्वके जघन्य (१२) भेदः-

अनसण ( १ ) अगोदरी ( २ ) भिक्षाचरी ( ३ ) रस परि  
त्याग ( ४ ) फाय क्लेश ( ५ ) पडिसलीणया ( ६ ) ए ॥ ६ ॥  
भेद घाह्य तपना कथा ॥ हिवे ॥ ६ ॥ भेद अव्यतर तपना कहे छे ।  
प्रायश्चित्त [७] विनय [८] वेयावच्च [९] सजाय [१०] ध्यान [११]  
काउमगा [१२] एव ॥ १२ ॥

## हिवे विस्तार करी निर्जराना भेद कहे छेः-

[ १ ] अनसण-ते तीन (३) अहार तथा चार [४] अहारको  
त्याग करे ॥ तिणरा दोय [२] भेद ॥ ईतरिय [१] और आव[२] ।  
ईतरिय--ते उपवासादि छै-महिने तरु तप करे जिणने ईतरिय  
कहिये ॥ १ ॥ आव-ते जाव जीवतकरु अहारनो त्याग करे जि  
णने आव कहिये ॥ २ ॥

तिणरा (२) भेद ॥ पादोपगमन (१) भक्त प्रत्याख्यान (२)  
पादोपगमन किणने कहिये । पडिया वृक्षनी डालनी परे हाळे चाळे  
नहीं । जिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) निरव्याघात थकी  
(२) ॥ व्याघात-ते उपद्रव उपज्यां करे (१) निरव्याघात-ते विना  
उपद्रव उपज्यांही करे (२) चोविहारने पडिकमणा रहित । भगत  
प्रत्याख्यान--ते तीन अहारका तथा चार अहारका त्याग करे ।  
तिणरा (२) भेद । व्याघात थकी (१) नें । निरव्याघात थकी करे  
[२] ॥ डलन चलनकी क्रिया करे । पडिकमणा सहित सधारो करे  
जिणने भगत प्रत्याख्यांन कहीजे ॥ २ ॥ इति अगसग ॥ १ ॥

(२२) परिसह कहे छे ॥ क्षुधा परिसह (१) तृषा परिसह (२) शीत परिसह (३) ताप परिसह (४) दश मश परिसह [५] अचेल परिसह (६) अरति परिसह (७) स्त्री परिसह (८) चरिया परिसह (९) निसिया परिसह (१०) सेजा परिसह (११) आक्रोग वचन परिसह (१२) वध परिसह (१३) जाचत्रा परिसह (१४) अलाभ परिसह (१५) रोग परिसह (१६) त्रगस्पर्श परिसह (१७) मेल परिसह (१८) सत्कार पुरस्कार परिसह (१९) प्रज्ञा परिसह (२०) अज्ञान परिसह (२१) दशग परिसह (२२) ॥ ए ॥ २२ ॥ ने ॥ ८ ॥ पूर्वे कथा ते ॥ ए ॥ ३० ॥ सति (३१) मुति (३२) अज्जवे (३३) मदवे (३४) लाप्रये (३५) सत्रे (३६) सत्रमे (३७) तत्रे (३८) चियाए (३९) यभवेर वासे (४०) ॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जति-धर्म आराधने ॥ ने ॥ १२ ॥ भावना भावनी ॥ ते कहे छे ॥ अनित्य भावना (१) अशरण भावना (२) ससार भावना (३) एकत्व भावना (४) अगिच भावना (५) अशुचि भावना (६) आश्रव भावना (७) सवर भावना (८) निर्जरा भावना (९) लोक भावना (१०) वीर भावना (११) धर्म भावना (१२) ॥ ए ॥ ४० ॥ ने ॥ १२ ॥ ५२ ॥ सामायक चारित्र (५३) छेदो पस्थापनिय चारित्र ॥ ५४ ॥ परिहार विद्युद्ध चारित्र (५५) सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥ ५६ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७ ॥ भेद सवर तत्वना जाणत्रा ॥

॥ इति सवर तत्व समाप्तम् ॥ ६ ॥

॥ अथ निर्जरा तत्व कहे छे ॥

निर्जरा ते देस थकी कर्म तोडीने देस थकी जीवने ऊर  
कहे ॥ चिह्नो निर्जरा तत्व कहिये ॥

नकी प्रतीत राखे ॥ १ ॥ रागद्वेष अल्प करे ॥ २ ॥ परमका फलको विचार करे ॥ ३ ॥ दीप समुद्रादिक क्षेत्रको विचार करे ॥ ४ ॥

### धर्मध्यानरा ४ लक्षण—

जिनाज्ञा प्रमाणे रहे ॥ १ ॥ समकृत निश्चल राखे ॥ २ ॥ उपदेशकी रुचि राखे ॥ ३ ॥ मूत्र सिद्धातरी प्रतीत राखे ॥ ४ ॥ धर्मध्यानरा ( ४ ) आलम्बन ते कित्सा ॥ २ ॥ वाचना ते वाचणीरो लेवो ॥ १ ॥ पुत्रणा ते सदेहनो पुत्रिवो ॥ २ ॥ परियहणा ते ग्यानको चितारयो ॥ ३ ॥ परम कथा ते धरमनो रुहियो ॥ ४ ॥

### धर्मध्यानरी ४ अनुप्रेक्षा ते कहे छेः—

अनुप्रेक्षा-ते अर्थको चित्तवयो तिणरा चार भेद ॥ ओ ससार सर्व अनित्य छे ॥ इण रीतसु विचारयो ॥ १ ॥ इण ससारमें किणहीरो सरणो नथी ॥ २ ॥ ओ जीव एकलो आयो एकलो जावसी । कोई लारे चाछे नथी ॥ ३ ॥ ससार चार गति दुखनो भडार छे ॥ ४ ॥ इति धर्मध्यानरा १६ भेद सपूर्ण ॥ शुरु ध्यानरा [ ४ ] भेद ॥ शद्र अर्थको भेद विचारवो ॥ १ ॥ एक द्रव्यको द्रव्य गुण पर्यायको विचारयो ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया दृषवी ॥ ३ ॥ समस्त जोग लेइया रुधवी ॥ ४ ॥ शुरु ध्यानरा ( ४ ) लक्षण ॥ देह थकी आत्मा जुदी चित्तवे ॥ १ ॥ सर्व ससारको त्याग करे ॥ २ ॥ देवादिकका उपसर्गसू चले नही ॥ ३ ॥ ममत भावमें मुरजे नहीं ॥ ४ ॥

हिचे शुरु ध्यानका [ ४ ] आलम्बन ते कित्सा ॥ क्षमा ॥ १ ॥ निरलोभता ॥ २ ॥ सरलता ॥ ३ ॥ निराभिमानता ॥ ४ ॥

लौकीक स्वधी विनयका (७) भेद ॥ गुरु समीपे वरतवो [१] गुरांकी मरजी भ्रमार्गे रहिवो (२) ज्ञानादिक निमित्तै भात पांगी आणि देवो (३) ग्यांननो दातार जाणी विनय करिवो (४) ऊपसमते सप्त-ताभाव राखिवो (५) प्रस्थाव ते अवसर देख वरतवो (६) सर्व का-रजमें सन्मुख वरतवो (७)

व्यावचका (१०) भेद । आचार्यकी [१] ऊपाध्यायजीकी (२) नवदीक्षत शिष्यकी [३] रोगी ग्लानीकी (४) तपसीकी (५) विवर-जीकी [६] सधरमीकी (७) कुलकी (८) गगकी (९) सधकी [१०] ॥ इणं दसोंकी व्यावच करे । एव व्यावचका भेद (१०) हिवे सजायका (५) भेद ॥ वाचणा ते गुरु समीप वाचणी लेवे (१) पडी पुजणा ते संदे-हनो पूछवो (२) परियहणा ते वारंवार गुणवो (३) अणुप्येहाते अर्थनो चिंतविवो (४) धरम कथा ते धरम कहिवो (५) ॥ हिवे ध्यां-नका चार [४] भेद ॥ आर्त्तध्यान [१] रुद्र ध्यान (२) धरम ध्यांन [३] शुक्ल ध्यांन (४) आर्त्त ध्यानरा [४] भेद ॥ अमनोज्ञ शब्द । रूप-रस-गंध फरसनो विजोग चिंतविवो ॥ १ ॥ मनोज्ञ शब्द । रूप-गंध-रस-फरसनो सजोग चिंतविवो ॥ २ ॥ रोगादिक उपनां विजोगनो चिंतविवो ॥ ३ ॥ काम भोगादिकना सजोगनो चिंतविवो ॥ ४ ॥

हिवे आर्त्त ध्यानरा ४ लक्षण कहे छे:—

मोटे सादे विलापनो करिवो ॥ १ ॥ दीनपणो आणिवो ॥ २ ॥ आंसु नांखवो ॥ ३ ॥ निसासो भेल्लवो ॥ ४ ॥ ॥ रुद्रध्यानका चार (४) लक्षण ॥ हिंस्याका भाव प्रवर्ते ॥ १ ॥ कुशाह्न हिंस्या दिढावे ॥ २ ॥ हिंस्यामें लवलीन रहे ॥ ३ ॥ हिंस्या करि जाव जीव लगे पश्चात्ताप नही करे ॥ ४ ॥ धरम ध्यानका ४ भेद ॥ जिन वच-

नकी प्रतीत राखे ॥ १ ॥ रागद्वेष अल्प करे ॥ २ ॥ करमका फलको विचार करे ॥ ३ ॥ दीप समुद्रादिक क्षेत्रको विचार करे ॥ ४ ॥

### धर्मध्यानरा ४ लक्षण.—

गिनाज्ञा प्रमाणे रहे ॥ १ ॥ समकित निश्चल राखे ॥ २ ॥ उपदेशकी रुचि राखे ॥ ३ ॥ सूत्र सिद्धातगी प्रतीत राखे ॥ ४ ॥ धर्मध्यानरा ( ४ ) आलंनन ते क्तिता ॥ २ ॥ वाचना ते वाचणीरो लेवो ॥ १ ॥ पुठणा ते सदेरनो पुठिवो ॥ २ ॥ परियट्टणा ते ग्यानको चित्तारो ॥ ३ ॥ उरम कथा ते धरमनो कहियो ॥ ४ ॥

### धर्मध्यानरी ४ अनुप्रेक्षा ते कहे छे —

अनुप्रेक्षा-ते अर्थको चित्तववो तिणरा चार भेद ॥ ओ ससार सर्व अनित्य छे ॥ इण रीतमु विचारो ॥ १ ॥ इण समारमे किणहीरो सरणो नथी ॥ २ ॥ ओ जीव एकलो आयो एकलो जावसी । कोई लारे चाले नथी ॥ ३ ॥ ससार चार गति दुग्वनो भडार छे ॥ ४ ॥ इति धर्मध्यानरा १६ भेद सपूर्ण ॥ शुद्ध ध्यानरा [ ४ ] भेद ॥ शब्द अर्थको भेद विचारवो ॥ १ ॥ एक द्रव्यको द्रव्य गुण पर्यायको विचारवो ॥ २ ॥ सूक्ष्म क्रिया रुधवी ॥ ३ ॥ समस्त जोग लेउया रुधवी ॥ ४ ॥ शुद्ध ध्यानरा ( ४ ) लक्षण ॥ देह यकी आत्मा जुटी चित्तवे ॥ १ ॥ सर्व ससारको त्याग करे ॥ २ ॥ देवादिकका उपसर्गसू चले नही ॥ ३ ॥ ममत भावमे मुरजे नहीं ॥ ४ ॥

द्विवे शुद्ध ध्यानका [ ४ ] आलंनन ते क्तिता ॥ क्षमा ॥ १ ॥ निरलोभता ॥ २ ॥ सरलता ॥ ३ ॥ निराभिमानता ॥ ४ ॥

शुक्ल ध्यानकी [ ४ ] अनुपेक्षा ते किसी ॥ अर्थ विचारको पांच आश्रव द्वार नें अनर्थ हेतु चिंतववो ॥ १ ॥ संसारको अमुष्पणो चिंतववो ॥ २ ॥ संसारको अनित्यपणो चिंतववो ॥ ३ ॥ संसारको क्षिणभगुर स्वभाव विचारवो ॥ ४ ॥

काउसगका [ २ ] भेद ॥ द्रव्य काउसग ॥ १ ॥ भाव काउसग ॥ २ ॥ द्रव्य काउसगका चार भेद ॥ शरीर काउसग ते शरीरको तजवो ॥ १ ॥ गण काउसग ते गच्छको तजवो ॥ २ ॥ ऊपधी काउसग ते ब्रह्मादिक तजवो ॥ ३ ॥ भात पांणी काउसग ते भात पांणीको तजवो ॥ ४ ॥

भावकाउसगका ( ३ ) भेद ॥ कपाय काउसग ॥ १ ॥ कर्म काउसग ॥ २ ॥ संसार काउसग ॥ ३ ॥ कपाय काउसगका ॥ ४ ॥ भेद ते कहे छे ॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ इणां च्यारांको तजवो ॥ कर्म काउसग ते आहुं करमांरो तजवो ॥ ८ ॥ संसार काउसग ते च्यारं गतिको तजवो ॥ काउसगका भेद सपूर्ण ॥

इति निरजरा तत्वं समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ बंध तत्व कहे छे ॥

बंध तत्व किणने कहिजे । जीव पुद्गलानें एकठा करे । जिसको जिणरा (४) भेदः—

प्रकृति बंध (१) थिति वध (२) अनुभाग वध (३) प्रदेश वध (४) ॥ प्रकृति वध ते मूभाव (१) थिति वध ते कर्माकी थिति [२] अनुभाग वध ते सुभासुभ रस (३) प्रदेश वध ते जीव कर्मरो एकठापणो जिम तिलमें तैल, दुधमें घृत, धातुमें माटी ॥ वध उपर

मोदकनो दृष्टांत जिम लाडुरो सभाव वाय हरे । पित्त हरे । इत्यादिक सभाव ते धिति ब्रध । लाडुरा रसरी स्थिति । अनुभाग । जिम लाडु मीठो । चरको खारो । इत्यादिक रस प्रबंध ते लाडुरा द्रव्य जिम । करमारी प्रकृति ऊपरे । मोदकना दृष्टांतनी परे । च्याहं बंध जाणवा । प्रकृति ते । आठ कर्मारो स्वभाव । ग्यांनावरणी कर्मरों सभाव । जिम आख्या आडो पाटो बाध्या दीसे नही । तिम ग्यांनावरणी करमरा उदयसू ग्यान आवे नही ॥ १ ॥ दरसनावरणी कर्म पोलीया समान । जिम पोलीयो राजासु मिलावा न दें । जिम दरसनावरणी कर्म सुद्ध दरसन होणे ठेवे नही ॥ २ ॥ वेदनी कर्म मधु लिप्त खडा धारा समान ॥ ३ ॥ मोह कर्म ऊपर मदिराको दृष्टांत । मदिरा पीयां क्युही मूर रेहवे नही । जिम मोह कर्मरे ऊदे संमक्ति चारित्रकी सुधना नही रेहवे ॥ ४ ॥ आउखा कर्म ऊपरि खोडाको दृष्टांत । खोडामाहे पग दीया खोडा वारे निसर सके नही । जिम आउखा कर्मती मिति भोगत्रिया विना छूटे नही ॥ ५ ॥ नाम कर्म-ते चितारोके दृष्टांत । जिम चितारो नाना प्रकारका सुभ अ सुभ चित्रांम करे । तिम नाम कर्मके उदय सुभ नाम असुभ नाम पावे ॥ ६ ॥ गोत्र कर्म ऊपरि कुभारको दृष्टांत । जिम कुभारनो कीयो घडो ऊचके घर गया उत्तम क्हायो अने नीचके घरे गया मःयम क्हावे । तिम गोत्र कर्मके ऊदे ऊच गोत्र नीच गोत्र वाजे ॥ ७ ॥ अतराय कर्म ऊपरे । राजाका भडारीको दृष्टांत । जिम राजाको भडारी दानादिक देवा देवे नही । तिम अतराय कर्म दानादिक गुण पगट होय देवे नही ॥ ८ ॥ इति प्रकृति बध लक्षणः ॥

द्विधे धिति बध रूहे छे । ग्यानावरणी ॥ १ ॥ दरसनावरणी ॥ २ ॥ अंतराय ॥ ३ ॥ इण तीन करमोंरी धिति जयन्य तो अंतर्मुहुर्त्तकी ॥ उक्तुष्टी (३०) फोडाकोड सागरकी । वेदनीकी जयन्य दोय



समयकी ते वीतरागीके होय । उत्कृष्टी (३०) कोडाकोड सागरकी । मोहनी कर्मकी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तकी । उत्कृष्टी ( ७० ) कोडा कोड सागरकी ॥ आउखा कर्मकी जघन्य अतर मुहुर्त्तकी । उत्कृष्टी (३३) सागरकी । क्रोडपूरवरो तीजो भाग इयक नाम करम गोत्र करमकी जघन्य (८) मुहुर्त्तकी उत्कृष्टी । (२०) कोडा कोड सागरकी ॥ इति धिति वध ॥

हिवे अनुभाग वध; सुभ असुभ रस आठ कर्मांमे । च्यार तो घातीया कर्म च्यार अघातिया कर्म ॥ इति अनुभाग वध ॥

हिवे प्रदेस बंध कहे छे ॥ ग्यांनावरणी कर्म छै बोलां करीनें वांधे । ग्यांनको प्रत्यनीक होय ॥ १ ॥ ग्यांनका दातार गुरुनें गोप-वे ॥ २ ॥ ग्यांनकी अतराय पाढे ॥ ३ ॥ ग्यांन ऊपर द्वेप करे ॥४॥ ग्यांनकी आसातना करे ॥ ५ ॥ ग्यांनकोविपरीत उपदेश देवे ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ दरसनावरणी कर्म छै बोलाकरी वांधे । छै बोल एहीजनें ग्यांनकी जागह दरसन केहणो ॥ वेदनी कर्मरा दोय भेद । साता वेदनी [१] असाता वेदनी [२] साता वेदनी [१२] बोलां करके वांधे ॥ प्राण भूत जीव सत्वकी अनुरूपा करतो ॥ १ ॥ दुख नही उपजावतो ॥ २ ॥ तापना नही उपजावतो ॥ ३ ॥ पर प्राणीनें सोच नही उपजावतो ॥ ४ ॥ कलेस नही उपजावतो ॥ ५ ॥ परितापना नही उपजावतो ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ बोलतो एउ जीव आश्रीनें । एहीज छै घणा जीव आश्री एव ॥ १२ ॥ असातावेदनी वारें बोलां कर वांधे । ऊपर लिखिया जिवेही (जंलटा) कहणा । मोहनीकर्म च्यार बोलांकर वांधे । तीव्र क्रोध करी । तीव्र मान करी । तीव्र माया करी । तीव्र लोभ करी । आउचो कर्म जीव (१६) बोलाकरी वांधे ॥ च्यार बोला करी जीव नारमीनो आउखो वांधे । मोटो आग्भ करे तो

[१] परिग्रहरी मोटी तृष्णा करतो ॥ २ ॥ पचेंद्रीनो वद्ध करतो ॥ ३ ॥ दारु मास आचरे तो ॥ ४ ॥ च्यार बोलां करी जीव तिर-जचको आउखो वाधे । तीत्र क्रोध करतो ॥ १ ॥ तीत्र मान करतो ॥ २ ॥ कूडी साख भरतो ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप करतो ॥ ४ ॥ च्यार बोला करी मनुष्यको आउखो वाधे । प्रकृतिको भद्रीक ॥ १ ॥ प्रकृतको विनीत ॥ २ ॥ जीवकी अनुरूपा करतो ॥ ३ ॥ अमउर भाव राखतो ॥ ४ ॥ च्यार बोलाकरि देवताको आउखो वाधे ॥ ४ ॥ सराग सजम करके ॥ १ ॥ सजमा संजम करके ॥ २ ॥ बाल तप करके ॥ ३ ॥ अकाम निरजरा करके ॥ ४ ॥

नाम करमरा (२) भेद । सुभ नाम ॥ १ ॥ असुभ नाम ॥ २ ॥ सुभ नाम च्यार बोलां करके वाधे । काय सरल ॥ १ ॥ भावसरल ॥ २ ॥ भाषासरल ॥ ३ ॥ सत्यवादी ॥ ४ ॥ असुभ नाम करम च्यार बोलां करके वाधे । ऊपर लिखिया जिके बोल (ऊलटा) के-हणा । गोत्रकर्मका (२) भेद ॥ ऊच गोत्र [१] नीच गोत्र [२] ऊच गोत्र आठ बोलांकर वाधे ॥ आठ मद नही करे तो जाति मद ॥ १ ॥ कुलमद ॥ २ ॥ बलमद ॥ ३ ॥ रूपमद ॥ ४ ॥ तपमद ॥ ५ ॥ लाभमद ॥ ६ ॥ सूत्रमद ॥ ७ ॥ ठकुराई मद ॥ ८ ॥ ए आठ बोल न करे तो ऊच गोत्र वाधे ने ॥ ए आठ बोल करे तो नीच गोत्र वाधे ॥ अतराय कर्म पाच बोलां करी वाधे । दानकी ॥ १ ॥ लाभकी ॥ २ ॥ भोगकी ॥ ३ ॥ उपभोगकी ॥ ४ ॥ तपस्याकी ॥ ५ ॥ ए (५) अतराय देवे तो अतराय कर्म वाधे ॥ एव आठ कर्म वाधवाका [८५] बोल सपूर्ण ॥

आठ कर्म ( ९३ ) भेदे भोगवे ते कहेछे ॥

ग्यानावरणी कर्म ( १० ) भेदे भोगवे ॥ सोयावरणे ॥ १ ॥

सोयाविनांग वरणे ॥ २ ॥ इमहीज चक्षु इंद्रि ॥ ३ ॥ घ्राण इंद्रि ॥ ४ ॥ रस इंद्रि ॥ ५ ॥ फरस इंद्रि ॥ ६ ॥ इंगारो आवरण नें विज्ञान आवरण। आवरण ते सुंगे नही। विग्यान आवरण ते समजे नही। ए ( १० ) दरसनावरणी कर्म नत्र भेदे भोगवे । चक्षु दरसनावरणी ॥ १ ॥ अचक्षु दरसनावरणी ॥ २ ॥ अवधि दरसनावरणी ॥ ३ ॥ केवल दरसनावरणी ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रा निद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचला प्रचला ॥ ८ ॥ धीणधी ॥ ९ ॥

वेदनी कर्म दोय भेदे भोगवे ॥ साता वेदनी ॥ १ ॥ असाता वेदनी ॥ २ ॥ साता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ मनोज्ञ शब्द (१) मनोज्ञ रूप (२) मनोज्ञ गंध (३) मनोज्ञ रस (४) मनोज्ञ स्पर्श (५) मन सुख (६) वचन सुख (७) काय सुख (८) एवं आठ ॥ असाता वेदनी आठ प्रकारे भोगवे ॥ अमनोज्ञ शब्द (१) अमनोज्ञ रूप (२) अमनोज्ञ गंध (३) अमनोज्ञ रस (४) अमनोज्ञ स्पर्श (५) मन दुःख (६) वचन दुःख [ ७ ] काय दुःख (८) एवं [८] मोहोनीय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ समकित मोहोनी [१] मिथ्यात्व मोहोनी [२] मिश्र मोहोनी [३] कषाय मोहोनी [४] नोरूपाय मोहोनी [५] एव पांच ॥

आउखो कर्म चार प्रकारे भोगवे ॥ नरकनो आउखो [ १ ] आउखो [२] मनुष्यनो आउखो [३] देवतानो आउखो चार ॥

नाम कर्मना दोय भेदः—शुभ नाम कर्म १ और अशुभ नामकर्म [२] शुभ नाम कर्म चवदे प्रकारें भोगवे ॥ भलो शब्द (१) भलो रूप [२] भलो गंध (३) भलो रस (४) भलो स्पर्श (५) भली (६) भली स्थिति [७] भली लावण्य (८) यशो कीर्ति (९)

इष्ट उठाण (१०) कर्म (११) उल [१२] वीर्य (१३) पुरुषाकार  
पराक्रम [१४] एव (१४)

असाता वेदनी (१४) चवदा प्रकारे भोगवे ॥ माठो राह (१)  
माठो रूप (२) माठो गंज (३) माठो रस (४) माठो स्पर्श (५) माठी  
गति (६) माठी स्थिति (७) माठी लावण्य (८) अयशो किर्ति (९)  
अनिष्ट उठाण (१०) दुष्कर्म (११) निर्मल (१२) निर्वीर्य (१३)  
अपुरुषाकार पराक्रम (१४) एव (१४)

गौत्र कर्मका दोष भेद ॥ ऊच गोत्र (१) नीच गोत्र (२) ऊंच  
गोत्र (८) प्रकारे भोगवे ॥ जाति ऊच (१) कुल ऊच (२) उल ऊच  
(३) रूप ऊच (४) तप ऊच (५) लाभ ऊच (६) सूत्र ऊच (७)  
ठकुराई ऊच (८) एव (८)

हिचे नीच गोत्र (८) आठ प्रकारे भोगवे:—नीच जाति (१)  
नीच कुल [२] इत्यादि आठ बोल पूर्ववत् जानना ॥

अंतराय कर्म पांच प्रकारे भोगवे ॥ दानांतराय (१) लाभांतराय  
(२) भोगांतराय (३) उपभोगांतराय [४] वीर्यांतराय (५) एवं (९३)  
बोल संपूर्ण ॥

॥ इति यथ—तत्त्वं समाप्तम् ॥ ८ ॥

॥ हिचे मोक्ष तत्व कहे छे ॥

मोक्ष तत्त्वके नवद्वार:—सत्यपद प्ररूपनाद्वार (१) द्रव्य प्रमाण-  
द्वार (२) क्षेत्र प्रमाणद्वार (३) स्पर्शनाद्वार (४) कालद्वार [५] अ-  
तर्दीर (६) भागद्वार (७) भावद्वार (८) अल्पा बहुत्वद्वार [ ९ ]  
एव (९)

हिवे सत्यपद प्ररूपनाद्वार ऊपरे चवदे मार्गणा कहे छे ॥ चार गतीमां मनुष्य गती विना मोक्ष नथी (१) पांच जातमां पचेद्रिय विना मोक्ष नथी (२) छे कायमां त्रप् काय विना मोक्ष नथी (३) अ-कपाई विना मोक्ष नथी (४) अयोगी विना मोक्ष नथी (५) अवेदी विना मोक्ष नथी (६) केवलज्ञान विना मोक्ष नथी (७) केवलदर्शन विना मोक्ष नथी ( ८ ) यथा क्षायरू चारित्रि विना मोक्ष नथी ( ९ ) शुरु लेशा विना मोक्ष नथी ( १० ) भव्य विना मोक्ष नथी ( ११ ) क्षायक समकित विना मोक्ष नथी ( १२ ) सत्री विना मोक्ष नथी ( १३ ) अनारिक विना मोक्ष नथी ( १४ )

॥ इति सत्यपद प्ररूपना द्वार ॥ १ ॥

हिवे द्रव्य प्रमाणद्वार कहे छे ॥ निश्चे नैमे तो आठ कर्मासू छूटा तेहिज मोक्ष कहिजे ॥ और मोक्ष तेही सिद्ध ॥ ते सिद्ध कि-तने ॥ द्रव्य थकी तो अभव्य जीवसू अनतगुणा पडवाई सम्पग् दृष्टी ॥ ते थकी अनत गुणा सिद्ध छे ॥

॥ इति द्रव्य प्रमाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे क्षेत्र प्रमाणद्वार कहे छे ॥ सर्वार्थसिद्ध विमानसू चारा जो-जन ऊपरे सिद्ध स्थान छे ॥ ते सिद्ध शिला पेंतालीस लाख यो-जननी लांबी चौडी छे ॥ और एक क्रोड बयालीस लाख गुणतीस हजार दोयशे गुण पचास योजन जाक्षेरी तेहनी परधी छे ॥ और छेहे माखीनी पांग्वथी पतली छे ॥ जिण ऊपर सिद्ध भगवान् विरा-जमान छे ॥

॥ इति क्षेत्र प्रमाणद्वार ॥ ३ ॥

हिवे स्पर्शना द्वार कहे छे ॥ जेटलो क्षेत्र सिद्ध स्पर्श छे ॥ ते थकी स्पर्शना इधकी छे ॥ एक सिद्ध छे जठे अनंता सिद्धारां प्रदेश छे ॥

॥ इति स्पर्शनाद्वार ॥ ४ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ एक सिद्धा श्री आदी छे पिण अत  
नी ॥ घणा सिद्धा श्री आदिभी नहीं अतभी नहीं. ॥

॥ इति कालद्वार ॥ ५ ॥

हिवे छहो अतद्वार कहे छे ॥ ते सिद्धामें आंतर नयी ॥ कयो-  
की सिद्धपणो पाया पडे फिर मिटे नही ॥ तथा सिद्ध भगवानमें  
कोई सिद्ध उपजे नही ॥ और बिटे पडे तो जग्रन्य एक समयको  
उत्कृष्टो छै महिनारो इति अतद्वार ॥ ६ ॥ हिवे भागद्वार कहेंवे छे ॥  
सिद्ध भगवान कितने छे ॥ सर्ज जीवाके अनतमें भागे ॥ पृथ्वी ाय  
(१) अपकाय (२) तेजकाय (३) वाजकाय (४) त्रयकाय (५) इनसें  
अनतगुणा ज्यादा छे ॥ और वनस्पती कायसू अनतमे भाग छे ॥७॥

॥ इति भागद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ उदय भाव (१) उपशम भाव (२)  
क्षायक भाव (३) क्षयोपशम भाव (४) प्रणामिया भाव [५] ए पांच  
भावमेसू सिद्ध भगवानमें दोय भाव पावे ॥ क्षायक भाव १ और  
प्रणामिया भाव २ ॥ एव दोय २ ॥

॥ इति भावद्वार ॥ ८ ॥

हिवे अल्पा बहुतद्वार कहे छे ॥ सर्वसू थोडा नपुंसक लिंग  
सिद्धा ते थकी स्त्री लिंग सिद्धा सख्यात गुणा ॥ ते थकी पुरुष  
लिंग सिद्धा सख्यात गुणा ॥ ९ ॥

॥ इति अल्पा बहुतद्वार ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
नवतत्वाख्यं प्रथमं प्रकरणम् ॥





## प्रकरण दूसरा-लघुदंडक.

### ॥ गाथा ॥

शरीर (१) अग्रगहणा (२) सघयण (३) सठाण (४) कसाय (५) तद्वहंति सन्नाओ [६] लेसि (७) दीय [८] समुचाए (९) सन्नि (१०) वेदेय (११) पज्जची ॥ १ ॥ (१२) दिठी (१३) दंशण (१४) नाण [१५] अनाणे (१६) जोग (१७) उवओगे (१८) तद्दरुम्मं आहारे (१९) उववाय (२०) ठिई (२१) समोहाए (२२) चवण (२३) गया गई (२४) पांग (२५) जोगे (२६). ॥ २ ॥

अर्थः—( शरीर-ते ५ उदारीक शरीर (१) वैक्रेय शरीर (२) आहारीक शरीर (३) तैजस शरीर (४) कार्मण शरीर [५].

विवेचनः—उदार कहिये श्रेष्ठ तथा मुक्ति इस शरीरसूं जावै, जिसको उदारीक शरीर कहिये. ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरः-ते मन इच्छित रूप उनावे, जिससैं वैक्रेय शरीर कहिये ॥ २ ॥ आहारीक शरीरः-ते चवदे पूर्वधारी मुनिराज ससे हरवाने शरीरमेंसूं पूतलो काढे जिसको आहारीक शरीर कहिये ॥ ३ ॥ तैजस शरीरः—ते आहारदिक पुद्गलकू पचावे जिससे तैजस शरीर कहिये ॥ ४ ॥ कार्मण शरीर-ते आहागदिक पुद्गलने खाने जिससे कार्मण शरीर कहिये. ॥ ५ ॥

(२) अवगहणा-ते २ ॥ भ्रूवधारणिक (१) उत्तर वैक्रेय (२) विवेचनः--भ्रूवधारणिक ते मूलगो शरीर । जघन्य आंगुल नें असख्या-  
'तमं' भाग । उत्कृष्टी हजार योजन जाझेरी ॥ १ ॥ उत्तर वैक्रेय ते जघन्य  
आंगुल ने असख्यातमं भाग उत्कृष्टी लास योजननी अवगहणा ॥ २ ॥

(३) शघयण ते ६ वज्ररूपभ नाराच शंभयण (१) ऋषभ  
नाराच शंभयण (२) नाराच शघयण (३) अर्द्धनाराच शघयण  
(४) कीलीका शंभयण (५) छेवट शंभयण (६).

विवेचनः--वज्रकी कीली-वज्रको पाटो-वज्रका मर्कट--वज्र  
हुवे जिसको वज्ररूपभ नाराच शंभयण कहिये. ॥ १ ॥ वज्ररो पाटो  
वज्र एटो नू हुवै कीली नवी जिमको ऋषभ नाराच शंभयण कहिये.  
॥ २ ॥ नाराच-ते वज्रमयी वधन हुवे जिमने नाराच शंभयण कहिये.  
॥ ३ ॥ अर्द्ध वज्रमयी वधन हुवै जिसको अर्द्ध नाराच शंभयण  
कहिये. ॥ ४ ॥ कीली ते हाड कीली सयुक्त हुवै जिसको कीलीका  
शंभयण कहिये. ॥ ५ ॥ छेवट-ते हाड चर्मसू या होय-जिसको  
छेवट शंभयण कहिये. ॥ ६ ॥

( ४ ) संठाण-ते ६ सम चौरस सठाण (१) नग्रोध परिमडल  
सठाण (२) सादियो सठाण (३) वावन सठाण (४) कुब्ज सठाण  
(५) हूडक सठाण (६)

विवेचनः--नारो तरफ परोपर डोर लागे तथा सपूर्ण अग  
शोभायमान हुवै जिसको समचौरस सठाण कहिये ॥ १ ॥ नग्रोध  
ते वट समान शरीर हो तथा ऊपरलो अग शोभायमान हुवै जिसको  
नग्रोध परिमडल संठाण कहिये ॥ २ ॥ सादियो-ते नीचलो अग  
शोभायमान हुवै, जिमको सादियो संठाण कहिये ॥ ३ ॥ वावन-



(१३) दृष्टी ते ३. ॥ सम्यग् दृष्टि (१) मिथ्या दृष्टी (२) सम्यग् मिथ्यादृष्टी (३)

विवेचनः—सम्यग्दृष्टी—ते देव गुरु धर्म यथार्थ मानै जिसको सम्यग्दृष्टी कहिये. ॥ १ ॥ मिथ्यादृष्टी—ते अयथार्थ मानै जिसको मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ २ ॥ सम्यग् मिथ्यादृष्टि—ते यथार्थ अयथार्थ दोनूं सममानै जिसको सम्यग् मिथ्यादृष्टि कहिये ॥ ३ ॥

(१४) दर्शन—ते ४ ॥ चक्षु दर्शन (१) अचक्षु दर्शन (२) अवधि दर्शन (३) केवल दर्शन (४)

विवेचनः—चक्षु—ते नेत्र करी दर्शन ते देखे जिसको चक्षु दर्शन कहिये ॥ १ ॥ अचक्षु—ते नेत्र विना च्यार इंद्रि करी दर्शन ते देखे जिसको अचक्षु दर्शन कहिये ॥ २ ॥ अवधिदर्शन—ते अवधि करीने देखे जिसको अप्रधि दर्शन कहिये ॥ ३ ॥ केवल दर्शन—ते सपूर्ण समस्त पदार्थ देखै जिसको केवल दर्शन कहिये ॥४॥

[१५] णाणते ज्ञान—५. ॥ मति ज्ञान (१) श्रुत ज्ञान (२) अवधि ज्ञान (३) मनपर्यव ज्ञान (४) केवल ज्ञान (५)

विवेचनः—मति ज्ञान—ते आपकी बुद्धीसे पंचेंद्रिय ओर छठो मन—यहपट् करीने पदार्थने जाणै—जिसको मति ज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञान ते सुणवा करीने जाणै जिसको श्रुत ज्ञान कहीये ॥ २ ॥ अवधिज्ञान ते मर्यादा लीया प्रत्यक्ष द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणै जिसको अवधि ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञान ते सनी पचे-द्रीका, मनोगत भाव प्रत्यक्ष जाणै जिसको मनपर्यवज्ञान कहिये ॥ ४ ॥ केवलज्ञान ते सपूर्ण समस्त पदार्थ ओर द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणै जिसको केवलज्ञान कहिये ॥-५ ॥

[१६] अगाण-ते अज्ञान ३ ॥ मति अज्ञान (१) श्रुत अज्ञान  
(२) विभग अज्ञान (३).

विवेचन.-मति अज्ञान ते (५) इन्द्रिय ओर छठो मन ये ठे करीनें  
अर्थनें अर्थ जाने जिसको मति अज्ञान कहिये ॥ १ ॥ श्रुत  
अज्ञान-ते सुणवा करीनें अर्थ ज्ञान हुवे जिसको श्रुत अज्ञान  
कहिये ॥ २ ॥ विभग ज्ञान-ते विपरीत ज्ञान होय जिसको विभग  
ज्ञान कहिये ॥ ३ ॥

( १७ ) जोग ते (१५) मनका भेद (४) सत्य मनयोग (१)  
असत्य मनयोग (२) मिश्र मनयोग (३) व्यवहार मनयोग (४) ॥  
सत्य भाषा (५) असत्य भाषा (६) मिश्र भाषा (७) व्यवहार भाषा  
(८) उदारिक काययोग (९) उदारिक मिश्रकायको योग (१०)  
अक्रिय काय योग (११) बैक्रिय मिश्रकायको योग (१२) आहारिक  
काययोग (१३) आहारिक मिश्रकायको योग ( १४ ) कर्मण काय  
योग ( १५ ) ॥

विवेचनः—सत्य मनयोग-ते यथार्थ चिंतवणा करै ( यथा )  
घटनें घटही चिंतवे-जिसको सत्य मन योग कहिये ॥ १ ॥ असत्य  
मन योग ते अर्थार्थ चिंतवणा करै ( यथा ) घटनें पट चिंतवै जि-  
सको असत्य मनयोग कहिये ॥ २ ॥ मिश्र मन योग ते सांच झूठ  
सामिल चिंतवे ( यथा ) मृत्तिकारा घटनें ताम्र घट चिंतवै जिसको  
मिश्र मन योग कहिये ॥ ३ ॥ व्यवहार मन योग ते सत्य मृत्पा दोनूही  
नही, जिसको व्यवहार मन योग कहिये ॥ ४ ॥ ओर सत्य भा-  
षादिकु के चार भेद पूर्ववत् जानना ॥ एव ॥ ८ ॥ विवे सात कायाके  
योग ॥ उदारिक ते केवल जिसे उदारिक शरीरको व्यापार होय  
जिसको उदारिक काययोग कहिये ॥ ९ ॥ उदारिकमें दूजा शरीरको

व्यापार मिल्यो होय जिसको उदारिक मिश्रकाय योग कहिये ॥ १० ॥  
 बैक्रिय शरीरनो व्यापार होय जिसको वैक्रेय शरीर काययोग कहि  
 ये ॥ ११ ॥ वैक्रेयका व्यापारमे दूसरे शरीरका संबंध होय जिसका  
 वैक्रेय मिश्रकाययोग कहिये ॥ १२ ॥ आहारिक शरीरनो व्यापार  
 होय जिसको आहारिक काययोग कहिये ॥ १३ ॥ आहारिक  
 व्यापारमें दूसरे शरीरका व्यापार होय जिसको आहारिक मिश्र का  
 योग कहिये ॥ १४ ॥ कर्मण योग ते केवल कर्मण शरीरको व्या  
 पार हुवे जिसको कारमण योग कहिये ॥ १५ ॥

( १८ ) उपयोग-ते ॥ १२ ॥ पांच ज्ञान ॥ तीन अज्ञान ॥ चा  
 दरसन ॥ नाम पूर्ववत् जाणवा ॥

[ १९ ] तहाकम्म आहारे याने आहार लेवे जिसका दो  
 भेद ॥ व्याघात आश्री (१) और निर्व्याघात आश्री [२]

विवेचन:-व्याघात आश्री ते लोकरने अतमें रहे हुवे जीव ज  
 घन्य तीन दिसको उत्कृष्टो चार दिशनो तथा पांच दिशनो आहार  
 लेवे (१) निर्व्याघात आश्री ते लोकके मध्यमें रहे हुवे जीव छै  
 दिशनो आहार ग्रहण करे ॥ २ ॥ नाम पूर्व दक्षिण  
 पश्चिम उत्तर ऊंची नीची ॥

विवेचनः—समोहया मरण ते मरणातिक समुद्रघात करी भेणी चांगमरे जिसको समोहया मरण कहिये ॥ १ ॥ असमोहया मरण ते विना समुद्रघात मरे अर्थात् बहुकनी गोळीके समान सिधो जाय उपजे जिसको असमोहया मरण कहिये ॥ २ ॥

( २३ ) चरण ते एक समयमे कितने जीव चवे जघन्य १-२-३ उत्कृष्टा सख्याता असख्याता अनंता चवे ॥

[ २४ ] गया गई ते गती और आगती. । गती ते आयु पूरण करीने कितने दंडकमे, जावे उसतो गती कहिये ॥ १ ॥ आगती ते आयु पूरण करीने कीतने दंडकनो जीव आय कर उपजे उसको आगती कहिये ॥ २ ॥

( २५ ) प्पाण ते प्राण ॥ १० ॥ श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण [१] चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण [२] घ्राणेन्द्रिय बलप्राण (३) रसनेन्द्रिय बलप्राण [४] स्पर्शेन्द्रिय [५] मन बलप्राण (६) वचन बलप्राण (७) काय बलप्राण (८) श्वासोश्वास प्रतप्राण [९] आयु बलप्राण ( १० )

विवेचनः—प्रलप्राण ते पराक्रम जाणवो. ॥

( २६ ) जोग ते समुच्चय ३ ॥ मनजोग (१) वचनजोग (२) कायजोग (३) ॥ इति गाथार्थः ॥

॥ अथ २४ दंडक ऊपरे २६ द्वार कहे छे—

सात नारकीनो एक दंडक ॥ \* सातोही नारकीमे शरीर पावे तीन ॥ वैकीय [ १ ] तैजस ( २ ) कार्षण ( ३ )

\* ते सात नारकीना नाम—घमा (१) घसा (२) सीला (२) अंजगा (५) गिठा (५) मघा (६) माघबई (७) हिवे सात नारकीना गोत्र—रतनप्रभा (१) सकरप्रभा (२) बालुप्रभा (३) पंकप्रभा (५) धूमप्रभा (५) वमप्रभा (१) तमातमप्रभा (७) ए सातनो एक दंडक जाणवो ॥

अवग्गाहणा ॥ समुचय सातोही नारकीनी, जघन्य आगूलके  
असख्यात्ममे भाग ॥ उत्कृष्टी पांचजे धनुपनी ॥

उत्तर वैक्रैय अग्रगहणा समुचय जघन्य आगूलने सख्यातमे  
भाग ॥ उत्कृष्टी हजार धनुपनी ॥ हिवे न्यारी न्यारी रुहे छे ॥

पेहली नारकीनी भव धारणिक अवग्गाहणा पुणा आठ वनुप  
और छे अगूलनी ॥ उत्तर वैक्रैय उत्कृष्टी साडा पधरा धनुप और  
वारा अगूलनी ॥ अवग्गाहणा ॥ दूजी नारकीमें भव धारणिक साडा  
पधरा वनुप और वारा अगूलनी उत्तर वैक्रैय सवा इरुतीस धनुपनी  
अवग्गाहणा ॥

तीजी नारकीमें भव धारणिक सवा इरुतीस धनुपनी उत्तर वैक्रैय  
साडे वासट धनुपनी अवग्गाहणा ॥

चौथी नारकीमें भव धारणिक साडा वासट धनुपनी उत्तर वैक्रैय  
सवासे-वनुपनी-अवग्गाहणा ॥

प्रांचवी नारकीमें भव धारणिक सवासे धनुपनी उत्तर वैक्रैय  
अठारसै धनुपनी अवग्गाहणा ॥

षट्ठीमें भव धारणिक अठारसै धनुपनी उत्तर वैक्रैय ५०० पां-  
चसे धनुपनी अवग्गाहणा ॥

सातवी नारकीमें भव धारणिक पांचसे वनुपनी उत्तर वैक्रैय  
हजार धनुपनी अवग्गाहणा ॥ २ ॥

सत्रयण सातोही नारकीमें नयी ॥ ३ ॥

सत्रण सातोही नारकीमें एक हुडक पाधे ॥ ४ ॥

रुपाय सातोही नारकीमें चारही पाधे ॥ ५ ॥

सज्ञा सातोही नारकीमें चारूही पावै ॥ ६ ॥

छेशा समुच्चय नारकीमें ३ पावै ॥

हिवे न्यारी २ कहे छे ॥

पेहली दूजीमे कापोत ॥ तीजीमे कापोत और नील ॥ कापो-  
तका घणा नीलका थोडा ॥ चौथीमे नील ॥ पांचवीमे नील और कृष्ण ॥  
नीलका घणा कृष्णका थोडा ॥ छठीमें एक कृष्ण ॥ सातवीमे महा कृष्ण  
॥ ७ ॥ त्रिद्वय सातही नारकीमें पाच पावै ॥ ८ ॥

समुद्रगत-सातोही नारकीमें चार चार पावै पहली ॥ सत्री  
असत्री पहली नरकका अपर्याप्तमें सत्री असत्री दोनूही पावै असत्री  
आय छपजे जिणसु ॥ पहली नारकीना पर्याप्तमें शेष ५-६ नार-  
कीमें सत्रीही जपावे ॥ १० ॥

वेद-साताहीमे एक नपुसक वेद पावै ॥ ११ ॥

पजत्ते पर्याप्त ५ पावै भाषा मन सायेही पूरी करै जिणसू पांच  
गिणणी ॥ १२ ॥

दिष्टी साताहीमें ३ पावे-सातमीरा अपर्याप्तावे १ मिथ्यादृष्टि  
पावे ॥ १३ ॥

दरसन-साताहीमें तीन तीन पावै केवल दर्शन दल्यो ॥ १४ ॥

नाण-ते ज्ञान सातूहीमे ज्ञान ३ पावै ॥ प्रथम सातमीरा अप-  
र्याप्तमें ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥

अज्ञान-साताहीमें तीन तीन पावे ॥ १६ ॥

जोग-साताहीमें ॥ ११ इग्यारे २ पावे ४ मनका-४ वचनका  
३ कायाका वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कारमण एव ११. ॥

उपयोग साताहीमे ९ नव २ पावै ॥ तीन ज्ञान ३ अज्ञान ३  
दरसन एव ९ सातमीरा अपर्याप्तमै ६ ॥ तीन ज्ञान नास्ति ॥ १८ ॥

आहार ६ दिशाको लेवे ॥ १९ ॥

उजवाय ऊपजे एरु समयमें साताहीमें जघन्य १--२--३  
उत्कृष्टा असख्याता ऊपजे सातूहीमै ॥ २० ॥

थिती ॥ समुचय जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी ३३ सा-  
गरकी न्यारी २ कहै छे ॥

पहिली नारकीनी थितीनें जघन्य १० हजार वरसकी उत्कृष्टी १  
सागरकी ॥ १ ॥ दूजी नारकीनी स्थिती जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टी  
३ सागरकी ॥ २ ॥ तीजी नारकीनी स्थिती जघन्य ३ सागरकी  
उत्कृष्टी सातसागरकी ॥ ३ ॥ चोथी नारकीनी स्थिति जघन्य ७  
सागरनी उत्कृष्टी १० सागरनी ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीनी स्थिती  
जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १७ सागरनी ॥ ५ ॥ छठी नारकीनी  
स्थिती जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी २२ सागरनी ॥ ६ ॥ सातवी  
नारकीनी स्थिती जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी ॥ ७ ॥ २१ ॥

समोहया असमोहया ॥ मरण साताहीमें दोय २ पावै ॥ २२ ॥

चवण सातूहीमे एरु समयमें जघन्य १--२--३ चवे उत्कृष्टा  
असख्याता चवे ॥ २३ ॥

गतागत-पहलीसू छठी ताई २ दडककी गति ओर २ की ॥  
आगति तिर्यच पचेद्री, मनुषकी ॥ सातमीमे आगत २ की एहीज  
गत १ तिरजच पचेद्रीकी ॥ २४ ॥

प्राग साताहीमें १० दस २ पावै ॥ २५ ॥

जोग साताहीमै तीन २ पावै ॥ २६ ॥

॥ इति प्रथम दडक नरकारण्य ॥

द्वि १० भुवनपतिना १० दस दडक ॥ \*तेमा शरीर पावे  
 ३ तीन ॥ वैक्रेय-तेजस-कार्मण ॥ १ ॥ अवगहणा ॥ भय धारणीक  
 भवनपतिनी ॥ जग्न्य अगुलनो असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी  
 सात हातनी ॥ अने ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो जग्न्य अगुलने सख्या-  
 तमे भाग-उत्कृष्टी लाख योदननी ॥ २ ॥ सघयण नथी ॥ ३ ॥  
 सठाण पावे एक ममचउर ससठाण ॥ ४ ॥ कपाय पावे चार पिण  
 देवताने लोभ घणो ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ पण ॥ देवतारें  
 परिग्रह सज्ञा घणी ॥ ६ ॥ लेशा पावे चार कृष्ण लेशा ॥ नील  
 लेशा-कापुत लेशा-तेजुलेशा ॥ ७ ॥ इत्री पावे पाच ५ ॥ ८ ॥  
 समुद्रात पांच पावे ॥ वेदनी कपाय मारणातिक ॥ वैक्रेय ने तेज-  
 स ॥ ९ ॥ सज्ञी असज्ञी वे जाणया ॥ १० ॥ वेद पावे वें स्त्री ने  
 पुरुष ॥ ११ ॥ प्रजा ५ पावे भापा मन भेला पावे तिण आश्री  
 ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे तिन ॥ १३ ॥ दर्शण पावे तिन केवल दर्शन नही  
 ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे तिन ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान  
 ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तिन ॥ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभगअज्ञान  
 ॥ १६ ॥ जोग इग्यारे ॥ चार मनना, चार वचनना, तिन कायाना ॥  
 वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग ॥ एव इग्यारे ॥ १७ ॥  
 उपयोग पावे नव ॥ तिन ज्ञान ॥ तिन अज्ञान ॥ तिन दर्शन ॥ एवं  
 नव ॥ १८ ॥ आहार ॥ जग्न्य ने उत्कृष्टो छ दिसनो ले ॥ १९ ॥  
 उववाय ते जघ्न्य एक समये १-२-३ उपजे उत्कृष्टा असख्याता  
 उपजे ॥ २० ॥ स्थितीः-

\* तेह नाम — असुर कुमार (१) नाग कुमार (२) सुवर्ण कुमार  
 (३) अग्नि कुमार (४) विद्युत कुमार (५) द्वीप कुमार (६) उदधि कुमार  
 (७) दिशा कुमार (८) पवन कुमार (९) स्तनित कुमार (१०) ए दस  
 दडक भवनपतिना जाणवा ॥



भवन पतिमां दक्षण दिसना ॥ असुर कुमारनी ॥ जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागरनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दश हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी साडा त्रण पल्योपमनी ॥ तेहना नवनी कायना देवतानी ॥ जघन्य दस हजार वरसनी उत्कृष्टी दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी पोंण पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुर कुमारनी स्थिती ॥ जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागर झाझेरी ॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दशहजार वर्षनी ॥ उत्कृष्टी साडाचार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी स्थिति जघन्य दसहजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी वे पल्योपम देस ऊंणी ॥ तेहनी देवीनी स्थिति जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक पल्योपम देस उणीनी ॥ २१ ॥ समोहिया असमोहिया ए दोय मरण पावे ॥ २२ ॥ चवण ते जघन्य एक समयमें १-२-३ चवे उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ २३ ॥

गयागई ते गति पाचनी वादर पृथ्वी (१) पांणी (२) वनस्पती (३) तिर्यच पंचेन्द्रिय [४] ओर मनुष्य [५] एवं (५) आ गति दोयनी तिर्यच पंचेन्द्रिय (१) ओर मनुष्य (२) एवं दोय ॥ २४ ॥ प्राण दस पावे ॥ २५ ॥ जोग तिन पावे (२६)

॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक सपूर्ण ॥

॥ हवे पांच स्थावरना पांच दंडक कहे छे ॥

पृथिवी (१) पाणी (२) तेऊ (३) वनस्पति (४) ए चारमें शरीर तिन ॥ उदारिक तेजस नें कार्मण ॥ अने वाउमे शरीर पावे चार ॥ उदारिक वैक्रेय तेजस नें कार्मण ॥ १ ॥ अवबेणा भव धारणिक पृथिवी पाणी तेऊ ॥ जघन्य नें उत्कृष्टी अंगुल नें असख्यातामे

गग ॥ उत्तर वैक्रय नथी वाऊकायमें भवधारणिक उत्तरवैक्रय ज०  
 ३० आगुल ने असख्यातमे भाग अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुल ने  
 असख्यातमे भाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजन झाझेरी कमल प्रमुखनी  
 उत्तरवैक्रय नथी ॥ २ ॥ सघयण एक छेवहु ॥ ३ ॥ संठाण एक  
 हुंडक ॥ हिवे पाचेना सठाण न्यारा २ कहे छे ॥ पृथिवीनु संठाण  
 मसुरनी ढाल तथा चद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनु सठाण पाणीना  
 परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनु सठाण सोयना भाराने आकारे  
 ॥ ३ ॥ वायरानु सठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं  
 संठाण नाना प्रकारनु ॥ ५ ॥ ४ ॥ रूपाय चारे ॥ ५ ॥ संज्ञा चार  
 ॥ ६ ॥ लेशा वादर पृथिवी पाणी वनस्पतिमें चार २ पावे पेहेली ॥  
 अने पाचुहिंस्रुक्षाथावरोमे वादर तेऊ वाऊमे लेशा तिन पावे  
 पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री पावे एक कायाकी ॥ ८ ॥ समुद्रात पृथिवी  
 पाणी तेउ वनस्पतिमें ॥ ३ ॥ पावे वेदनी कपाय मारणांतिक ॥ अने  
 वायरामें समुद्रात च्यार पावे वैक्रय वधी ॥ ९ ॥ सज्ञी ते पांचे  
 थावर असज्ञी ॥ १० ॥ वेद पावे एक नपुमक ॥ ११ ॥ पर्या चार  
 पावे ॥ आहार पर्या ॥ शरीर पर्या ॥ इंद्री पर्या ॥ श्वासोश्वास पर्या  
 ॥ १२ ॥ दष्टि पावे एक मिथ्यात ॥ १३ ॥ दर्शन पावे एक अचक्षु  
 दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञान नथी ॥ अज्ञान पावे दोय मति अज्ञान ॥  
 श्रुत अज्ञान ॥ १५ ॥ जोग पृथिवी पाणी तेउ वनस्पतीने तीन पावे ॥  
 उदारीक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कामण काय जोग ॥ ३ ॥  
 अने वायरामें पांच ते ॥ वैक्रय वैक्रयनोमिश्र ॥ एवे वध्या ॥ १६ ॥  
 उपयोग पावे तीन ॥ दोय अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं तीन  
 ॥ १७ ॥ आहार ॥ जघन्य तीन दिसनो उत्कृष्टी छे दिसनो लेवे  
 ॥ १८ ॥ उववाय ते पृथ्वी अप तेउ वाऊ ए न्यार थावरोमें पाचूं  
 थारर आशी समय २ मे असख्याता उपजे निरतर ॥

वनस्पती आश्री समय २ निरतर अनता ऊपजे (शेष) दडक आश्री पावेही थावरोमें जघन्य एक समयमे १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा असख्याता ऊपजे ॥ १९ ॥

स्थिति पृथिवीनी जघन्य अंतर्भूत उत्कृष्टी २२ हजार वरसनी आउनी जघन्य अंतमू० उत्कृ० ७ हजार वरसनी तेऊनीर्तनी ॥ जघ० अंतर्भू० उत्कृष्टीत्रण अहोरात्रनी ॥ ३ ॥ वायरानी जघन्य अंतर्भूतनी उत्कृष्टी त्रग हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी जघन्य अंतर्भूतनी उत्कृष्टी दसहजार वरसनी ॥ २० ॥ समोहिया असमोहिया मरण दोनुही पावे ॥ २१ ॥ चवण ते पृथ्वी आदि च्यार थावरोमें समय २ असख्याता चवे वनस्पतिमे समय २ अनता चवे ॥ २२ ॥ गया गई वादर पृथ्वी पाणी वनस्पती ए तीनोकी आगती २३ की नारकी वरजी सुक्ष्म पृथ्वी पाणी वनस्पतीकी गति १० ते [५] थावर (३) विगलेंद्रीय तिर्यच पचेन्द्रिय मनुष्य तेउ वाऊनी नयकी गति ओर दशकी आगती पृथ्वीनी परे ॥ २३ ॥

प्राण पांचे ने चार ॥ एक इंद्रियणु ॥ १ ॥ कायवल ॥ २ ॥ श्वासो श्वास ॥ ३ ॥ आउखू ॥ ४ ॥ जोग पावे एक काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति पांच थावरना पांच दडक ॥

॥ हिवे तीन विगलेंद्रीयना ३ दंडक कहे छे ॥

वेइद्री तेरद्री चोरिंद्रीमां शरीर पावे तीन ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवगाहणा भवधारणिक वेइंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग उत्कृष्टी वारा जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग उत्कृष्टी तिन गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी चार गाउनी

उत्तर वेक्रिय नथी ॥ २ ॥ सघयण पावे एक छेवट्ट ॥ ३ ॥ सगण  
 पावे एक हुंडक ॥ ४ ॥ कपाय पावे चारे ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चारे  
 ॥ ६ ॥ लेशा पावे तीन पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्री वेरिंद्रीने दौफाया ॥ ११  
 जिभ (२) तेरिंद्रीने इंद्री तीन ॥ नासिका वधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्री चार ।  
 आख वधि ॥ ८ ॥ सघुदघात पावे तीन वेदनी कपाय ने मारणांतिम  
 ए तीन ॥ ९ ॥ संज्ञी नास्ति असज्ञी हे ॥ १० ॥ वेद एक नपुसक  
 पावे ॥ ११ ॥ पर्या पांच पावे मन नही ॥ १२ ॥ द्रष्टी पावे दौय ।  
 समकित द्रष्टी ने ॥ मिथ्यात द्रष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन वेइंद्री तेइंद्रीमें ए  
 अचक्षु दर्शन ॥ चउरिंद्रीमें दो दर्शन ॥ चक्षु दर्शन ने ॥ अचक्षु दर्शन ।  
 ॥ १४ ॥ ज्ञान वे-मति ज्ञान ने श्रुत ज्ञान ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे वे-  
 मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ ॥ १६ ॥ जोग पावे चार उदारिक १  
 उदारिकनो मिथ्र २ कर्मण काय जोग ३ व्यग्रहार वचन ४ ॥ १७ ॥  
 उपयोग पावे वेइंद्री तेइंद्रीने पांच ॥ वे ज्ञान वे अज्ञान एक अचक्षु  
 दर्शन । ए पांच ॥ चउरिंद्रीने उपयोग छ ॥ वे ज्ञान वे अज्ञान वे  
 दर्शन ए छै ॥ १८ ॥ आहार छे ॥ जग्न्य अने उत्कृष्टी छ दिमने  
 छे ॥ १९ ॥ उववाय ते एक समयमे जग्न्य १-२-३ उपजे  
 उत्कृष्टा असरयाता उपजे ॥ २० ॥ स्थिति वेद्रीनी जग्न्य अतर्मुह  
 र्तनी उत्कृष्टी मारे वरसनी ॥ तेइंद्रीनी जग्न्य अतर्मुहर्तनी उत्कृष्टी  
 ओगण पचास दिवसनी ॥ चउरिंद्रीनी जग्न्य अतर्मुहर्तनी उत्कृष्टी  
 छै महिनानी ॥ २१ ॥ समोहया । अने असमोहिया मरण दौय पावे  
 ॥ २२ ॥ चवण ते एक समयमे जग्न्य १-२-३ चवे उत्कृष्ट  
 असरयाता चवे ॥ २३ ॥ गया गई ते दशकी गति० दशकी अ  
 गति पाच थावर तीन विकलेद्री तिर्यच पंचद्री ओर मनुष्य एर १०  
 ॥ २४ ॥ प्राण वेदियमे पावे छै. स्पर्श (१) रसना (२) कायाल  
 [३] श्वासोश्वास [४] आउग्य (५) वचन (६) ए छै ॥ तेरिंद्रीने

सात प्राण । ते नासिका पथी । चउरिंद्रीनें आठ प्राण आंख वधी  
॥ २५ ॥ जोग दौय ॥ वचन जोग ने काय जोग ॥ ॥ २६ ॥

॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दडक ॥

॥ हिवे वीसमो तिर्यच पंचेद्रियनो दंडक. ॥

जिनरा २ भेट असनी तिर्यच पंचेद्री १ और सनी तिर्यच  
पंचेद्री ॥ २ ॥

हिवे असनी तिर्यच पंचेद्री पर २६ द्वाग उतारिये छे ॥ शरीर  
पावै ॥ ३ ॥ उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥

अवगहणा भव धारणीक जघन्य आंगूल ने असख्यातमो भाग  
उत्कृष्टी हजार योजननी ॥ स्थलचरनी जघन्य आंगूल ने असखा-  
तमो भाग उत्कृष्टी पृथक् \* गाउनी ॥ खेचरनी जघन्य आंगूल ने  
असख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुपनी ॥ उरपरनी जघन्य आंगू-  
ल ने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी पृथक् योजननी ॥ भुजपरनी जघन्य  
आंगूल ने असख्यातमो भाग उत्कृष्टी पृथक् धनुप्यनी ॥ २ ॥ उत्तर  
वैक्रेय नास्ति ॥ इद्रिय पाचोहीमें पांच पांच पावै ॥ ८ ॥

स्थिती—जघन्य पाचोहीनी अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी जलचरनी कोड  
पूरवनी ॥ स्थलचरनी चौयांशी हजार वरसनी ॥ खेचरनी बहोत्तर  
हजार वरसनी ॥ उरपरनी त्रेपन हजार वरसनी भुजपरनी वंयालीस  
हजार वरसनी ॥ २१ ॥

गति आगति—वावीसनी गती ते विमानिक ज्योतिषी वरजीने  
शेष वावीस दडकनी ॥ आगति दशनी चौरेंद्रियवत् ॥ २४ ॥ प्राण  
पावे नय ॥ श्रोत्र वयो ॥ २५ ॥

शेषद्वार चौरेंद्रियवत् जाणवा ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ हिवे सत्री पंचेंद्रि उपर २६ द्वार कहे छे ॥

शरीर पावे चार ॥ आहारीक टळयो ॥ १ ॥ अवग्रहणा जघन्य  
सर्वनी आगुलने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी जलचरनी हजार योज-  
ननी ॥ स्थलचरनी छे गाऊनी ॥ खेचरनी पृथक् धनुषनी ॥ उरप-  
रनी हजार योजननी ॥ भुज परनी पृथक् गाऊनी ॥ ये भव धारणिक  
अवग्रहणा रुही ॥ हिवे उत्तर वैक्रिय अवग्रहणा सर्वनी जघन्य आगुलने  
सख्यातमो जाग ॥ उत्कृष्टी सर्वनी नवशे योजननी ॥ २ ॥ शंघयण छे पावै  
॥ ३ ॥ सठाण छे पावे ॥ ४ ॥ कपाय पावै ४ ॥ ५ ॥ सज्ञा पावै चार  
॥ ६ ॥ लेखा पावै छे ॥ ७ ॥ इंद्रीय पावै पाच ॥ ८ ॥ समुद्रघात  
पावे पांच ॥ प्रथम ॥ ९ ॥ सत्री है ॥ असत्री नास्ति ॥ १० ॥ वेद  
पावे तीन ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावै तीन ॥  
॥ १३ ॥ दर्शन पावै तीन ॥ केवल दर्शन वजित ॥ १४ ॥ ज्ञान पावै  
प्रथम तीन ॥ १५ ॥ अज्ञान पावै तीन ॥ १६ ॥ जोग पावै तेरा ॥  
आहारीक वजित ॥ १७ ॥ उपयोग पावे नव ॥ तीन ज्ञान तीन अ-  
ज्ञान तीन दर्शन ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे  
॥ १९ ॥ उपजाय ते एक समयमे जघन्य ॥ १-२-३-उपजे उत्कृष्ट  
असख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य सर्वनी अंतर्मुहूर्तनी ॥  
उत्कृष्टी जलचर उरपर भुजपरनी क्रोड २ पूर्वनी ( पूरव किसको  
कहिये ॥ शितर लाख क्रोड वर्ष उप्पन्न हजार क्रोड वर्ष वीते जि-  
सको एक पूरव कहिये ॥ ) स्थलचरनी तीन पल्योपमनी ॥ खेच-  
रिनी पल्योपमना असख्यातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमो-  
हया मरण दोनूही पावे ॥ २२ ॥ चरण ते एक समयमे जघन्य  
१-२-३ चरे उत्कृष्टा असख्याता चरे ॥ २३ ॥ गतागति ते स-  
त्री तिर्यच पचेद्रीनी २४ नी गति ॥ आगति २२ नी ॥ २४ ॥

प्राण १० दश पावे ॥ २५ ॥ जोग ३ पावै ॥ २६ ॥

॥ इति तिर्यच पचेद्रीनो वीसमो दंडक ॥

॥ हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दंडक कहे छे ॥

जिनरां दोय भेद ॥ असन्नी मनुष्य १ और सन्नी मनुष्य २ ॥  
सन्नी मनुष्यना भेद २ ॥ कर्म भूमि १ और अकर्म भूमि २ ॥ हिवे  
असन्नी मनुष्य उपरे २६ द्वार उतारिये छे ॥ शरीर पावै तीन पृथ्वी  
वत् ॥ १ ॥ अवगहणा भय धारणिक जघन्य उत्कृष्ट आगूलने अ-  
संख्यातमो भाग ॥ २ ॥ सघयण १ पावे चरम ॥ ३ ॥ सठाण एक  
पावे चरम ॥ ४ ॥ रूपाय चार पावे ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥  
लेशा पावे तीन प्रथम ॥ ७ ॥ द्द्रीय पावे पाच ॥ ८ ॥ समुद्घान  
पावै तीन प्रथम ॥ ९ ॥ असन्नी है ॥ सन्नी नास्ति ॥ १० ॥ वेद  
पावै १ नपुसक ॥ ११ ॥ प्रजा पावै चार ॥ अधूरी प्रथम ॥ १२ ॥  
दृष्टी पावै एक ॥ मिथ्यादृष्टि ॥ १३ ॥ दर्शण पावे एक ॥ अचक्षु ॥ १४ ॥  
ज्ञान नास्ति ॥ १५ ॥ अज्ञान दोय प्रथम पावे ॥ १६ ॥ जोग पावे  
३ ॥ उदारिक उदारिकनो मिश्र कार्मण जोग ॥ १७ ॥ उपयोग पावे  
तीन तथा चार ॥ पूर्ववत् ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो  
लेवे ॥ १९ ॥ उपवाय ते जघन्य एक समयमे, १-२-३ उपजे  
उत्कृष्टा असख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अतर्ह-  
र्तनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनुही पावै ॥ २२ ॥  
चवण एक समयमे जघन्य १-२-३ चवे उत्कृष्टा असख्याता  
चवे ॥ २३ ॥ गतागति ते असन्नी मनुष्यनी दसही गति ॥ पाच  
स्थावर । तीन त्रिकलेंद्री तिर्यच पचेद्री मनुष्य । एउ दश ॥ आगति

आठकी ॥ पूर्ण कया जिसमेसू तेउ वाउ टळया ॥ २४ ॥ प्राण पावे  
आठ ८ ॥ मन वचन प्राण टळया ॥ २५ ॥ जोग पावे १ कायजोग ॥ २६ ॥

॥ इति असत्री मनुष्य उपरे २६ द्वार ॥

॥ हिवे कर्म भूमी सत्री मनुष्य उपरे २६ द्वार कहे छै ॥

तेमां शरीर पावे पाच ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणिक समु-  
च्चय जघन्य आंगुलने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी पांचशे धनुपनी ॥  
उत्तर वैक्रय समुच्चय जघन्य आंगुलने सख्यातमे भाग उत्कृष्टी  
लाख योजननी ॥

पांच भर्त पाच ईरवर्त ये दस क्षेत्रोंमें छे आरा वर्ते । जिसमे  
अवसर्पणी काल आ श्री अवगहणा कहे छे ॥

पेहले आरे लागतां ३ गाऊनीं अवगहणा उतरतां २ गाऊनीं ॥ १ ॥  
दूजे आरे लागता दो २ गाऊनीं उतरता एक गाऊनी ॥ ३ ॥ तीजे आरे  
लागतां एक १ गाऊनी उतरता पाचशे ५०० धनुपनी ॥ ३ ॥ चौथे आरे  
लागतां पाचशे धनुपनी उतरता सात ७ हातनी ॥ ४ ॥ पांचमे आरे  
लागतां सात ७ हातनी उतरता एक १ हातनी ॥ ५ ॥ छठे आरे  
लागतां १ एक हातनी उतरतां एक हात मठेरी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री अवगहणा कहे छे ॥

पेहेलो आरो लागता १ हाथ मठेरी उतरता एक हातनी ॥ दूजो आरो  
लागता १ हातनी उतरतां ७ हातनी ॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां  
सात ७ हातनी उतरता पांचशे धनुपनी ॥ ३ ॥ चौथो आरो आ-



गतां पांचशे धनुपनी उतरतां १ एक गाऊनी ॥ ४ ॥ पाचमो आरो  
लागतां १ एक गाऊनी उतरतां २ दोय गाऊनी ॥ ५ ॥ छहो आरो  
लागता २ दोय गाऊनी उतरतां ३ तीन गाऊनी ॥ ६ ॥

पांचमाविदेहमें जघन्य आंगूलने असख्यातमे भाग उत्कृष्टी  
पांचशे धनुपनी ॥ २ ॥

सघयण पावे छे ॥ ३ ॥ संठाण पावे छे ॥ ४ ॥ कपाय पावे  
घार ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे छे ॥ ७ ॥ इद्रिय  
पांवे पांच ॥ ८ ॥ समुद्र्यात पावे सात ॥ ९ ॥ सत्री है । असत्री  
नास्ति ॥ १० ॥ वेद पावे तीन तथा अवेदी पिण हुवे ॥ ११ ॥  
परजा पावे छे ॥ १२ ॥ दृष्टी पावे तीन ॥ १३ ॥ टरशण पावे  
चार ॥ १४ ॥ ज्ञान पावे पाच ॥ १५ ॥ अज्ञान पावे तीन ॥ १६ ॥  
जोग पावे पंधरा तथा अयोगी पिण हुवे ॥ १७ ॥ उपयाग पावे  
बारा ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो छेवे ॥ १९ ॥  
उववाय ते जघन्य एक समयमे १-२-३ उपजे उत्कृष्टा स-  
ख्याता उपजे ॥ २० ॥ स्थिती समुच्चय जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी  
क्रोड पूरवनी ॥

हिवे पांच भर्त पांच ईस्वर्तमें अवसर्पणी काल

आश्री स्थिती कहे छै—

पेहलो आरो लागता ३ पल्योपमनी उतरतां २ पल्योपमनी  
॥ १ ॥ दूजो आरो लागतां २ पल्योपमनी उतरता १ पल्योपमनी  
॥ २ ॥ तीजो आरो लागतां १ पल्योपमनी उतरतां क्रोड पूरवनी  
॥ ३ ॥ चौथो आरो लागतां क्रोड पूरवनी उतरतां एकसोवीस  
(१२०) वरसनी ॥ ४ ॥ पांचगो आरो लागतां एकसोवीस (१२०)

वरसनी उतरता बीस वरसनी ॥ ५ ॥ ङ्हो आरो लागता बीस  
(२०) वरसनी उतरता सोळे [१६] वरसनी ॥ ६ ॥

॥ हिवे उत् सर्पणी काल आश्री स्थिनी कहे छे ॥

पेहलो आरो लागता १६ वरसनी उतरता २० वरसनी ॥ १ ॥  
दूजो आरो लागता २० वरसनी उतरता १२० वरसनी ॥ २ ॥  
तीजो आरो लागता १२० वरसनी उतरता क्रोड पूरवनी ॥ ३ ॥  
चौथो आरो लागता क्रोड पूरवनी उतरता एक पल्योपमनी ॥ १ ॥  
पाचो आरो लागता एक पल्योपमनी उतरता २ पल्योपमनी ॥ ५ ॥  
छहो आरो लागता २ पल्योपमनी उतरता ३ पल्योपमनी ॥ ६ ॥  
पांचमाविदेहमां जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी क्रोड पूरवनी \* ॥२१॥

समोहया असमोहया मरण टोय पावे ॥ २२ ॥ चवण एक स-  
मयमे जघन्य १-२-३ चवे ॥ उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ २३ ॥  
गतागति कर्मभूमी सन्नी मनुष्यनी गत २४ दहकनी ॥ आगत २२  
नी तेऊ वाऊनो दंढक वर्जी ॥ २४ ॥ प्राण पावे दस ॥ २५ ॥  
जोग पावे ३ । मनजोग । वचनजोग । कायजोग ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ हिवे युगुलिक मनुष्य ऊपरे २६ ढार कहे छे ॥

शरीर पावे तीन उदारिक तेजस कार्मण ॥ १ ॥ अवग्गहणा  
भव धारणिक जघन्य पांचशे धनुष जाझेरी उत्कृष्टी ३ गाऊनी कर्म  
भूमि युगुलिया आश्री कही ॥ हिवे अकर्म भूमी युगुलीया आश्री  
कहे छे ॥ पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरुमे जघन्य देश उणी ३ गा-

\* क्रोड पूरवसें अधिक भावरो तथा पांचशे धनुषसें अधिक  
वगाहणा युगुलिक मनुष्यके निवाम अन्य मनुष्यकी नु

ऊर्नी ॥ उत्कृष्टी ३ गाऊनी ॥ पाच हरिवास पांच रन्यकनासमें  
 जघन्य देश उणी २ गाऊनी उत्कृष्टी २ गाऊनी ॥ पांच हेमवय  
 पाच हरणवयमे जघन्य देश उणी २ गाऊनी उत्कृष्टी १ गाऊनी ॥  
 छप्पन अंतर्दीपामें ( ८०० ) आठशे धनुषनी ॥ २ ॥ शवयण पावे  
 १ वज्र ऋषभ नाराच सघयण ॥ ३ ॥ संटाग पावे १ सम चौरस  
 ॥ ४ ॥ कपाय पावे चार ( ४ ) ॥ ५ ॥ संज्ञा पावे चार ( ४ )  
 ॥ ६ ॥ लेशा पावे ४ पेहेली ॥ ७ ॥ इंद्रिय पावे पांच ( ५ ) ॥ ८ ॥  
 समुद्धात पावे तीन [ ३ ] प्रथम ॥ ९ ॥ सत्री हे असत्री नास्ति  
 ॥ १० ॥ वेद पावे दोय ( २ ) ॥ ११ ॥ परजा पावे छे ॥ १२ ॥  
 दृष्टी पावे ( १ ) एक मिथ्यादृष्टी पत्यसूं ऊगां आउखावाळामें ॥  
 १ पल्योपमसू लेकर तीन पल्योपमनो आउखाताइ दृष्टी पावे ( २ )  
 दोय ॥ सम्यक्दृष्टी और मिथ्यादृष्टी ॥ १३ ॥ दर्शन पावे [ २ ]  
 दोय चक्षु दर्शन और अचक्षु दर्शन ॥ १४ ॥ ज्ञान एक पल्योपमसू  
 उणा आउखावाळामें नास्ति ॥ एक पल्योपमसूं तीन पल्यो-  
 पमना आउखावाळामे ज्ञान पावै ( २ ) दोय प्रथम ॥ १५ ॥  
 अज्ञान पावे दोय ( २ ) ॥ १६ ॥ जोग पावे ग्यारा ४ मनका ४ व-  
 चनका ॥ एव ८ ॥ उदारिक ॥ ९ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ १० ॥  
 कार्मण ॥ एव ११ ॥ १७ ॥ उपयोग १ पल्योपमसू ऊणा आउखा-  
 वाळामे ४ पावे ॥ अज्ञान दोय, दर्शन दोय ॥ एक पल्योपमना आ-  
 उखासू ३ पल्योपमना आउखाताइ उपयोग पावे छे ॥ २ ज्ञान  
 २ अज्ञान २ दरसन ॥ १८ ॥ आहार जघन्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे  
 ॥ १९ ॥ उववाय एक समयमें जघन्य १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा  
 संख्याता ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति जघन्य क्रोड पूरव जाझेरी उत्कृ-  
 ष्टी तीन पल्योपमनी ॥ वे कर्म भूमिऊ जुगळीया आश्री कही ॥ हिवे  
 अरुर्मभूमि आश्री कहे छे ॥ पांच देवकुरुमें ॥ पाच उत्तरकुरुमें ॥

जघन्य देश उणी तीन पल्योपमनी उत्कृष्टी ३ पल्योपमनी ॥ पांच हरिवास पाच रमकवासमें जघन्य देश ऊणी २ पल्योपमनी उत्कृष्टी २ पल्योपमनी पाच हेमत्रय पाच एरणवयमें जघन्य देश उणी १ पल्योपमनी उत्कृष्टी १ पल्योपमनी ॥ छपन (५६) अतर द्विपामे जघन्य उत्कृष्ट पल्योपमना असरयातमा भागनी ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण २ पावे ॥ २२ ॥ चवण एक समयमें जघन्य १-२-३ चवे उत्कृष्टा संरयाता चवे ॥ २३ ॥ गतागति एक पल्यसू उणा आउखाशला जुगलियाकी ओर छपन (५६) अतरद्वीपकी जुगलियाकी ॥ गति ११ नी १० दस भवनपति ओर वाणव्यतर एव ११ ॥ पाच देवकुरु पाच उत्तरकुरु पाच हरिवास पाच रमकत्राम पाच हेमत्रय पाच एरणत्रय ए (३०) अरुर्म भूमि युगलियानी १३ की गति ॥ ज्योतिपी त्रिमाणीक ॥ ए २ दडक वध्या ॥ आगति सर्व जुगलियानी २ नी ॥ तिर्यच पचेंद्री (१) ओर मनुष्य (२) ॥ २४ ॥ प्राण १० पावै ॥ २५ ॥ जोग ३ पावै ॥ २६ ॥

इति ईकवीसमो मनुष्यनो दंडक ॥

॥ हिवे २२ मो वाणव्यंतराना दंडक उपर २६ द्वार कहे छे ॥

वाणव्यतरनो अधिकार भवनपतीनी परे जाणवो (नवर) आउखानो फेर ॥ वाणव्यंतर देयतानो आउखो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो १ पल्योपमनो ॥ वाणव्यतरोंनी देरीनो जघन्य १० हजार वरसनो उत्कृष्टो अर्द्ध पल्योपमनो ॥ इति २२ मो वाणव्यतरनो दंडक ॥

॥ हिवे ज्योतिपीनो अधिकार कहिये छे ॥

तेवीस द्वार तो भवनपतिनी परे जाणवा ॥ शेष ३ बोलनो

फेर ॥ लेगा १ तेजू ॥ ८ ॥ सनीहै । असनी नास्ति असनी  
 मरी ज्योतिपी विगाणीरुमे ऊपजे नही ॥ १० ॥ रिथती ते चंद्रमानी  
 जघन्य १ पल्योपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ लाख  
 वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योपमना चोथा भागनी उत्कृष्टी  
 अर्द्ध पल्योपम पाचसे वरसनी ॥ ग्रहनी जघन्य तो पूर्ववत् उत्कृष्टी  
 १ पल्योपम १ हजार वरसनी तेहनी देवीनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी  
 अर्द्ध पल्योपमनी ॥ नक्षत्रनी जघन्य पूर्ववत् उत्कृष्टी अर्द्ध पल्योप-  
 मनी ॥ नक्षत्रनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो  
 पल्योपमनो चोथो भाग जाझेरो ॥ तारानी जघन्य पल्योपमना ८ मा  
 भागनी तेहनी देवीनी जघन्य पल्योपमनो ८ मो भाग उत्कृष्टी पल्यो-  
 पमना ८ मो भाग जाझेरी ॥ ए पांचानी स्थिति जाती आश्री जा-  
 णवी ॥ इंद्रनी तो उत्कृष्टीज हुवै ॥

॥ इति २३ मो ज्योतिपिनो ढडक ॥

॥ हिवे विमाणिक देवतां उपर २६ द्वार कहे छे ॥

विमाणिक देवतामें १२ तो स्वर्ग तेहनां नाम ॥ सुवर्म देवलोक  
 (१) ईशान देवलोक (२) सनत्कुमार देवलोक (३) माहेंद्र देव-  
 लोक (४) ब्रह्मदेवलोक (५) लांतक देवलोक (६) महा  
 शुक्र देवलोक [ ७ ] सहस्रार दे० (८) आनत देवलोक (९) माणत  
 दे० (१०) आरण दे० (११) अच्युत दे० (१२) हिवे नव-  
 ग्रीवैरुके नामः- ॥ भद्र (१) सुभद्र (२) सुजात [३] सुमानस (४)  
 प्रिय दर्शने (५) सुदर्शने (६) अमोघ (७) सुमति भद्र (८) जसोधर  
 (९) ॥ हिवे पांच अणुत्तर विमाणके नामः-विजय (१) विजयंत (२)  
 जयत (३) अपराजित (४) सर्वार्थसिद्ध (५) एव २६ यामें ॥

शरीर तो ३ पावे वैक्रिय १ तेजस २ कारमण ३ ॥ १ ॥ अवगहणा भव धारणीक समुच्चय जघन्य आंगूलने असख्यातमे भागनी उत्कृष्टी ७ हातनी ॥ उत्तर वैक्रिय जघन्य आंगूलने संख्यातमे भागनी उत्कृष्टी लाय योजननी ॥ धारमां देवलोक आगे उत्तर वैक्रिय न स्ति ॥

॥ हिवे भवधारणिक उत्कृष्टी न्यारी २ कहे छे ॥

पहिला दूजा स्वर्गमे ७ हातनी ॥ तीजा चौथागे ६ हातनी ॥ पांचमं छठामं ५ हातनी ॥ सातमे आठमामं ४ हाथनी ॥ ९ नवमां दसमां इग्यारा चारामं ३ हाथनी ॥ नवग्रीवेकमे २ हाथनी ॥ पाच अणुत्तर विमाणमं १ हाथनी ॥ २ ॥ सघयण नास्ति ॥ ३ ॥ सठाण भवनपतिनी परे ॥ ४ ॥ कपाय पावे चार ॥ ५ ॥ सज्ञा पावे चार ॥ ६ ॥ लेशा पावे समुच्चय ३-तेज १ पद्म २ शुक्र ३ ॥ हिवे न्यारी २ कहे छे ॥ पहला दूजामे तेज ॥ तीजा चौथा पाचमामं पद्म ॥ छठायी आगे शुक्र ॥ ७ ॥ इन्द्रिय पावे पांच ॥ ८ ॥ समुद्रगत पावै प्रथम पाच ॥ १२ मा स्वर्गताई प्रवृत्ति रूप है ॥ आगे ३ तो प्रवृत्तिरूप तेजस वैक्रिय सत्तारूप है ॥ ९ ॥ सत्री है असत्री नास्ति ॥ १० ॥ वेद पहिला दूजामं २ पावे-ह्री वेद १ पुरुष वेद आगे १ पुरुष वेद ॥ ११ ॥ परजा ५ भवन पतीवत् ॥ १२ ॥ दृष्टी १२ मा स्वर्गताई ३ । नवग्रीवेकमे २ सम्यक् दृष्टी १ मिथ्यादृष्टी २ ॥ पाच अणुत्तर विमाणमं १ सम्यग्दृष्टी ॥ १३ ॥ दरमण पावे ३ ॥ १४ ॥ ज्ञान पावै ३ ॥ १५ ॥ अज्ञान ३ नवग्रीवेकताई अणुत्तर विमाणमं अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग ११ चार मनरा ४ वचनरा वैक्रिय वैक्रियना गिथ कारमण ॥ १७ ॥ उपयोग नव ग्रीवेकताई ९ पावै अणुत्तर वि-

मानमें उपयोग पावे छे ॥ ३ अज्ञान नास्ति ॥ १८ ॥ आहार  
 न्य उत्कृष्ट छे दिसनो लेवे ॥ १९ ॥ उववाय ते ८ मा स्वर्ग  
 एक समयमें जघन्य १-२-३ उपजे उत्कृष्टा असंख्याता ऊपजे  
 ९ मा स्वर्गसू आगे जघन्य १-२-३ ऊपजे उत्कृष्टा संख्य  
 ऊपजे ॥ २० ॥ स्थिति समुचय जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी  
 सागरनी ॥

॥ न्यारी न्यारी कहे छे ॥

पहेला देवलोकमें जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी दो सागरनी  
 देवीनी जाति द्योय परिगृहीता १ और अपरिगृहीता ॥ परिगृहीत  
 स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी सात पल्योपमनी ॥ अपरि  
 हीतानी स्थिती जघन्य १ पल्योपमनी उत्कृष्टी ५० पल्योपमनी  
 दूजा देवलोकमा जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी दोसागर जाझे  
 ॥ देवी परिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपमनी जाझेरी उत्कृष्टी न  
 पल्योपमनी अपरिगृहीतानी जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उत्कृष्टी ५  
 पल्योपमनी ॥ तीजा देवलोकमे जघन्य २ सागरनी उत्कृष्टी  
 सागरनी ॥ चोथा देवलोकमे जघन्य २ सागर जाझेरी उत्कृष्टी  
 सागर जाझेरी ॥ पांचमे देवलोकमें जघन्य ७ सागरनी उत्कृष्टी १  
 सागरनी ॥ छेठे देवलोकमें जघन्य १० सागरनी उत्कृष्टी १४ स  
 गरनी ॥ सातमा देवलोकमें जघन्य १४ सागरनी उत्कृष्टी १  
 सागरनी ॥ ८ में देवलोकमें जघन्य १७ सागरनी उत्कृष्टी १  
 सागरनी ॥ ९ मा देवलोकमें जघन्य १८ सागरनी उत्कृष्टी १  
 सागरनी ॥ १० मा देवलोकमे जघन्य १९ सागरनी उत्कृष्टी २  
 सागरनी ॥ ग्यारमा देवलोकमें जघन्य २० सागरनी उत्कृष्टी २  
 सागरनी ॥ बारमा देवलोकमे जघन्य २१ सागरनी उत्कृष्टी २

सागरनी ॥ प्रथम त्रैवेकमे जघन्य २२ सागरनी उत्कृष्टी २३ सागरनी ॥ द्वात्रिंशत्तमै जघन्य २३ सागरनी ॥ उत्कृष्टी २४ सागरनी । तिजा त्रैवेकमे जघन्य २४ सागरनी । उत्कृष्टी २५ सागरनी । चोथा त्रैवेकमे जघन्य २५ सागरनी । उत्कृष्टी २६ सागरनी । पाचमा त्रैवेकमे जघन्य २६ सागरनी । उत्कृष्टी २७ सागरनी । छठे त्रैवेकमे जघन्य २७ सागरनी । उत्कृष्टी २८ सागरनी । सातवा त्रैवेकमे जघन्य २८ सागरनी । उत्कृष्टी २९ सागरनी । आठमा त्रैवेकमे जघन्य २९ सागरनी । उत्कृष्टी ३० सागरनी । नवमा त्रैवेकमे जघन्य ३० सागरनी । उत्कृष्टी ३१ सागरनी । विजयतादिक चार अनुत्तर विमानमे जघन्य ३१ सागरनी । उत्कृष्टी ३३ सागरनी । सर्वार्थ सिद्ध विमानमे जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरनी ॥ २१ ॥ मरण समोहया असमोहया दोनूही पावे ॥ २२ ॥ चवण आठमां स्वर्गताई जघन्य एक समयमे ॥ १-२-३ चवे ॥ उत्कृष्टा असख्याता चवे ॥ नवमा स्वर्गसू लेकर सर्वार्थ सिद्धताई

जघन्य एक समयमे ॥ १-२-३ चवे । उत्कृष्टा सख्याता चवे ॥ २३ ॥ गतागति पहिला द्वात्रिंशत्तमै देवलोकनी पाचकी गती । वादर पृथ्वी (१) पाणी (२) वनस्पति (३) तिर्यच पंचेद्रीय [४] मनुष्य (५) एव (५) आगति दोयनी तिर्यच पंचेद्रीय (१) मनुष्य [२] ए दोय तीजा स्वर्गसू लेकर आठमा स्वर्गताई दोयकी गति दोयकी आगति ॥ तिर्यच पंचेद्रीय और मनुष्य ॥ नवमा स्वर्गसू लेकर सर्वार्थसिद्धताई एक मनुष्यनी गति और आगति ॥ २४ ॥ प्राण पावे (१०) ॥ २५ ॥ जोग पावे (३) मन जोग । वचन जोग । काय जोग ॥ २६ ॥

॥ इति २४ मो विमानिक देवनो दंडक ॥



हिवे सिद्धनो द्वार कहे छे ॥ शरीर नथी अशरीरी है ॥ १ ॥  
 अवगहणा जघन्य एक हात आठ आगुलनी ॥ मद्गम चार हात सोला  
 अंगुलनी ॥ उत्कृष्टी (३३३) धनुष बत्तीस आगुलनी ॥ या आत्म  
 प्रदेशांकी अवगहणा जाणवी ॥ २ ॥ सघयण नास्ति । असघयणी  
 है ॥ ३ ॥ संठाण नास्ति । अमूर्तिक है ॥ ४ ॥ कपाय नास्ति ।  
 अकपायी है ॥ ५ ॥ सज्ञा नास्ति । नो सन्ना दहूत्ता है ॥ ६ ॥ लेश  
 नास्ति । अलेशी है ॥ ७ ॥ इंद्रिय नास्ति । अनिंद्रिय है ॥ ८ ॥  
 समुद्घात नास्ति । असमुद्घाती है ॥ ९ ॥ सन्नी असन्नी नास्ति ।  
 नोसन्नी नोअसन्नी है ॥ १० ॥ वेद नास्ति । अवेदी है ॥ ११ ॥  
 परजा नास्ति । नोप्रजाप्त नोअप्रजाप्त है ॥ १२ ॥ दृष्टी एक  
 सम्यक् दृष्टी है ॥ १३ ॥ दरसन एक केवल दरसन है ॥ १४ ॥  
 ग्यान एक केवल ज्ञान पावे ॥ १५ ॥ अज्ञान नास्ति ॥ १६ ॥ जोग  
 नास्ति । अयोगी है ॥ १७ ॥ उपयोग पावे दोय केवलज्ञान (१)  
 केवल दरसन (२) ॥ १८ ॥ अहार नास्ति । अणाहारीक है ॥ १९ ॥  
 उत्रवाय ते उपजवो नास्ति । एक समयमें सिद्ध हुवे तो १-२-३  
 उत्कृष्ट (१०८) सिद्ध होवे १ सो ३२ ताई सीजे तो ८ समाताई  
 सीजे ॥ तेतीससो ४८ ताई सीजे तो ७ समाताई सीजे ॥ गुणंचा-  
 र सोमाताई सीजे तो ६ समाताई सीजे ॥ ( ६१ सो ७० )  
 ताई सीजे तो ५ समाताई सीजे ॥ ( ७३ सो ८४ ) ताई सीजे तो  
 ४ समाताई सीजे ॥ ( ८५ सो ९६ ) ताई सीजे तो ३ समाताई  
 सीजे ॥ ( ५७ सो १०२ ) ताई सीजे तो २ समाताई  
 सीजे ॥ ( १०३ सो १०८ ) ताई सीजे तो एक समाताई सीजे ॥  
 एते त्रिरह पठे ॥ २० ॥ धिति आयु कर्मनी नास्ति । एकसिद्ध आश्री  
 “ साइये अपज्जव सीये ” कहिजे । आदिहै । अत नथी । घणा  
 सिद्ध आश्री “ अणाईये अपज्जवसीये ” (-याने ) आदिभी नास्ति

ओर अतभी नास्ति ॥ २१ ॥ समोहया असमोहया मरण दोनूही  
 नास्ति ॥ २२ ॥ चरण नास्ति ॥ २३ ॥ गतागति नास्ति आगति  
 १ मनुष्यना दडकनी ॥ २४ ॥ माण नास्ति । निश्चय माण पावे (४)  
 सुख [१] सत्ता [२] मोघ (३) चेतन (४) ॥ २५ ॥ योग नास्ति  
 अयोगी है ॥ २६ ॥

॥ इति सिद्ध द्वार ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त गिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
 लघुदंडकाख्यं द्वितीय प्रकरणम् ॥



पाथडे (१६?६६) सोठे हजार एरुसे ठासठ योजन और एरु योजनका त्यायीआ दो भागनो अंतर छे ॥ ४ ॥ पाचमी नारकीके प्रत्येक पाथडे सवा पचीस हजार [२५२५०] योजनको अंतर छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीके प्रत्येक पाथडे साढा बावन हजार [५२५००] योजनको अंतर छे ॥ ६ ॥ सातमी नारकीमें पाथडो छे पिण अंतर नथी ॥ ७ ॥

॥ इति अतर्द्वार ॥ ३ ॥

॥ हिवे नरकावासां द्वार कहे छे ॥

देहेली नारकीना तीस लाख नरकावासा [१] दूजी नारकीना ( २५००००० ) पचीस लाख नरकावासा ( २ ) तीजी नारकीना [ १५००००० ] पधरा लाख नरकावासा ॥ ३ ॥ चोथी नारकीना दस लाख [ १०००००० ] नरकावासा ॥ ४ ॥ पाचमी नारकीना तीन लाख ( ३००००० ) नरकावासा ॥ ५ ॥ छठी नारकीना एक लाख नरकावासा ( १००००० ) ॥ ६ ॥ सातवी नारकीना [५] पाच नरकावासा ॥ ७ ॥ एव सर्व मिली सातवी नारकीना चवच्यारौं लाख (८४०००००) नरकावासा जाणवा ॥

॥ हिवे नरकावासा कितना लंबा चौडा छे ते कहे छे ॥

केइएरु नरकावासा संख्याता योजनका छे ॥ केइ एरु असख्याता योजनका है ॥ संख्याता असख्याता योजनको मान कहे छे ॥ एरु गीत्र गतीनो धणी तथा चपल गतीनो धणी देवता आठ लाख पचास हजार सातशे चालीस योजनको एक दग गो भरे ॥ इरी चालसे छे महिना तक चाले ॥ और चालनां जितनो क्षेत्र सर्गो उसको संख्याता

योजन कहिये ॥ और असंख्याता योजनकी गणती नहीं ॥ संख्याता योजनका नरकावासमें संख्याता नारकीका नेरिया छे ॥ और असंख्याता योजनका नरकावासमें असंख्याता नारकीका नेरिया छे ॥ इति नरका वासा प्रमाण द्वार ॥ ४ ॥

द्विजे अलोक द्वार कहे छे ॥ ५ ॥ पहली नारकीसू बारा योजन पीछे अलोक छे ॥ १ ॥ दूजी नारकीसू बारा योजन ॥ एक योजनको तीन भाग पछे अलोक छे ॥ २ ॥ तीजी नारकीसू तेरा योजन ॥ पछे अलोक छे ॥ ३ ॥ चौथी नारकीसू चवदा योजन पछे अलोक छे ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीसू चवदा योजनका एक भाग पछे अलोक छे ॥ ५ ॥ छठी नारकीसू पधरा योजनका दोय भाग पीछे अलोक छे ॥ ६ ॥ सातवी नारकीसू सोळा योजन पछे अलोक छे ॥ ७ ॥

॥ इति अलोक द्वार ॥ ५ ॥

द्विजे क्षेत्र वेदना द्वार कहे छे ॥ नारकीमें दस प्रकारकी क्षेत्र वेदना ॥ अनती भूख ( १ ) अनती तृषा ( २ ) अनतो शीत ( ३ ) अनत उष्ण ( ४ ) अनतो पराधीनपणो ( ५ ) अनतीदहा ( ६ ) अनतीखाज ( ७ ) अनतोभय ( ८ ) अनतो शोक ( ९ ) अनती जरा ॥ १० ॥ ये दस प्रकारकी क्षेत्र वेदना नरकना नेरिया शाश्वती भोगवे छे

॥ इति क्षेत्र वेदना द्वार ॥ ६ ॥

द्विजे भवनपति द्वार कहे छे ॥ वेहेले नारकीमें बारा आंतरा कथा जिणमेसू दोय आंतरा छोड दीजे ॥ शेष दस आंतरामे दस प्रकारका भवनपति रहे छे ॥ असुर कुमार ( १ ) नाग कुमार ( २ ) सुवर्ण कुमार ( ३ ) विशुत्कुमार ( ४ ) अग्नी कुमार ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार ॥ ६ ॥ उडपि कुमार ॥ ७ ॥ दिशि कुमार ॥ ८ ॥ वायु कु-

मार ॥ ९ ॥ स्तनित कुमार ॥ १० ॥ एव दश ॥ असुर कु  
 राखडीको चिन्ह ॥ नाग कुमारके सर्पको चिन्ह ॥ सुवर्ण  
 गरुड पक्षीको चिन्ह ॥ विट्ठुमारके वज्रको चिन्ह ॥ अर्ग  
 रके पूर्ण कलशको चिन्ह ॥ द्वीप कुमारके सिंहका चिन्ह ॥  
 कुमारके घोडाका चिन्ह ॥ दिशि कुमारके हातीको चिन्ह ॥  
 मारके मच्छको चिन्ह ॥ स्तनित कुमारके वर्द्धमान सरावलाको

ए दश प्रकारना भुवन पतियोंका सात क्रोड बहैत्तर ला  
 वन छे ॥ चार क्रोड छे लाख दक्षिण दिशका भवनपत्याकां  
 छे ॥ न्यारा न्यारा कहे छे ॥

दक्षिण दिशके असुर कुमारके २४०००००० चौतिस  
 भवन ॥ नागकुमारके चमालीस लाख भवन ॥ सुवर्ण कुमारके  
 तीस लाख भवन ॥ विट्ठुमारके चालीस लाख भवन ॥ अ  
 मारके चालीस लाख भवन ॥ द्वीपकुमारके चालीस लाख भ  
 उदधि कुमारके चालीस लाख भवन ॥ दिशीरुमारके चालीस  
 भवन ॥ वायुकुमारके पचास लाख भवन ॥ स्तनित कुमारके च  
 लाख भवन ॥ ए दक्षिण दिशके भुवनपत्याका ५

दिवे उत्तरदिशके भवनपत्याका भवनकी ।

द्विवे वाणव्यतरद्वार रुहे छे ॥ पेहेली नारकीनी एक हजार योजनकी ऊपरकी ठीकरी रुही ॥ जिणमेसू सौ योजन ऊपर छोडिजे और सौ योजन नीचे छोडिजे ॥ बीचमें आठसे योजनकी पोलाड छे ॥ तिणमें असख्याता "सोले-जातका " वाणव्यतरा देवता ओका नगर छे ॥ एक एक नगर जयन्य भरनक्षेत्र प्रमाणें मज्जम महा विदेह प्रमाणें उत्कृष्ट जजुद्वीप प्रमाणें मोटा छे ॥ एक एक भवन सवासो सवासो योजनका लया चौडा छे ॥ जिणमें चारा, तलाव कुवा सरोवर पोखरणी सिद्धायतन ध्वजा पताका वावडी इत्यादिक आदि हे " पांच प्रकारना सुख वाण व्यतर देव भोग रखा छे

॥ इति वाणव्यतर देवद्वार ॥ ८ ॥

॥ इति सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे भवन-  
द्वाराख्यं तृतीय प्रकरणम् ॥





## ॥ प्रकरण चोथा-ज्योतिषीद्वार ॥



जंबुद्वीपमा दोय चंद्रमा दोय सूर्य एकसो छी अतर्गृह छप्पन न-  
 क्षत्र एक लाख तेहतीस हजार नवसे पचास क्रोडा क्रोडी तारा छे ॥  
 सूर्यना एकसो चव्व्याशी ( १८४ ) मांडला छे ॥ तेमां ६५ पेंसट  
 माडला जनुद्वीपनी जगतीथी माही एकसो अशी योजन जाइये एटली  
 सुधीमां छे अने जगतीथी ३३० तीनसोतीस जोजन लवण समु-  
 द्रमां जाइये एटली सुधीमां एकसो उगुणीस मांडला छे ॥ सर्व मिली  
 पांचशे दश [५१०] योजनमां ( १८४ ) एकसो चव्व्याशीं मांडला  
 रह्या छे ॥ सर्वाभ्यंतर [प्रथम] मंडलथी बाहिरला अने छेला माडला  
 के पाचशे दश योजनकी छेटी छे ॥ एकेक माडलाके परस्पर दो दो  
 योजननी छेटी छे ॥ सूर्यनो विमान एक योजनना  $\frac{५६}{५६}$  भागनुं लांबो  
 पहूलो छे ॥ अने  $\frac{३५}{३५}$  भागनो जाडो छे ॥ जंबुद्वीपमा सूर्यनो प्रथम  
 मांडलो मेरु पर्वतथी (४४८२०) योजनने छेटे छे ॥ इम मांडले २  
 दोदो योजनने  $\frac{५६}{५६}$  भाग वधारता छेलुं १८४ मो मांडलो मेरुथी  
 (४५३३०) योजनने छेटे आवे इमज छेला माडलाथी माहिले २  
 मांडले आयतामा (२) योजनने  $\frac{५६}{५६}$  भाग घटाडता जाय प्रथम मडल  
 ( ४४८२० ) योजनने छेटे आवे ॥ सर्वाभ्यतर ( प्रथम ) मांडलो

(०९६४०) योजननु लांबु पहोलूं छे ॥ ने तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे ॥१॥ दूजो मंडलो [९९६४५] योजनने  $\frac{३५}{१००}$  भागनुं लावू पहोलू छे, ने तेनि परिधि (३१५१०७) योजननि छे इम निकलता लांपणा पहोलपणामा (५) योजनने  $\frac{३५}{१००}$  भाग वधारता ने परिधिमां अठारे योजन वधारता छेलुं (१८४) भूमांडलो (१००६६०) योजननुं लांबु पहोलूं छे ने तेनि परिधि (३१८३१८) योजननी छे, इम छेला मंडलथी माहिले माडले प्रवेश करता पण पूर्वोक्त रीते लांपणां पहोलपणां परिधिमाथी पूर्वोक्त रीते घटाडतां जाव प्रथम मांडलानु लाव पहोलपणुं तथा परिधि आवे जीवारे सूर्य सर्वाभ्यतर (प्रथम) मडलने आश्रिने गति करे तिवारे एक मुहूर्ते (५२५१) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग चाले ॥ तिवारे इहाना मनुष्यने (४७०६३) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ जिवारे दूजा मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे एक मुहूर्ते (५२५१) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग चाले तिवारे (४७११९) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग वेगलेथी उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ इम निकलतां माडले २ चालमा भाग  $\frac{३६}{१००}$  वधारता ने नजरे आवे, तेमां ८४ योजन वधारता २, छेले १८४ में माडले एक मुहूर्ते (५३५०) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग चाले ने (३१८३१) योजनने  $\frac{३६}{१००}$  भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे, इम मांही प्रवेश करता माडले २, मुहूर्त गतिमाने नजरे आवे, तेमा पूर्वोक्तरीते घटाडता २, प्रथम मांडले पूर्वोक्त मान आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यतर (प्रथम) मांडलाने आश्रिने सूर्य गति करे तिवारे (१८) मुहूर्तनो दिवस ने (१२) मुहूर्तनि रात्रि होय दूजा मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे पूर्वोक्तमाथी  $\frac{३६}{१००}$  भाग दिवसमाधि घटाडता ने रात्रीमां वधारता जाव (७८४) में माडले (१०) मुहूर्त तो दीनने (१८) मुहूर्तनी रात्रि होय



इम छेले माडलेथी प्रथम मांडले आवता पूर्वोक्त भाग दीन रानीमां  
 चधारता घटाडता ( १८ ) सुहूर्तने दीनने ( १० ) सुहूर्तनि रात्रि  
 आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यतर ( प्रथम ) मांडलाने आश्रिने सूर्य गति  
 करे तिवारे तापक्षेत्रनो आकार ऊर्ध्व मुखे ऋलबु वनस्पतिनां फुलने  
 आकारे माहि सकुचित ॥ बाहिर लवण तरफ विस्तृत मांडी मेरुपासे,  
 अर्ध बलयाकारे बाहीर लवण तरफ पहोलो मांडि पलाठीना मुखने  
 आकारे, बाहिर गाडानि उद्धिने आकारे ॥ ते तापक्षेत्रनि वे पांसे  
 ( २ ) अवस्थित बाहा छे, ते पीशतालीश २ हजार बौ-  
 जननी लांभी छे ॥ अने एकेकी ताप क्षेत्र सस्थितरूप बाहा-  
 ने ( २ ) अनवस्थित बाहा छे, मेरु समीपे सर्वाभ्यंतर  
 बाहा, अने लवण तरफ सर्व बाहिरली बाहा तेनि सर्वाभ्यंतर बाहा,  
 मेरु पांसे ( ९४८६ ) योजनने  $\frac{१}{४}$  भाग परिधिपणे छे, ते किम,  
 मेरुनि परिधिने ( ३ ) गुणी ( १० ) भांगे तो पूर्वोक्त मान आवे ॥ ते  
 ताप क्षेत्र निसर्व बाहिरनि बाहा, लवण पासे [ ९४८६८ ]  
 योजनने  $\frac{१}{४}$  भागनी परिधिपणे छे, ते किम, जंबुद्वीपनि परिधिने  
 ( ३ ) गुणी ( १० ) भांगता पूर्वोक्त मान आवे ॥ तिवारे ताप क्षेत्र  
 ( ७८३३३ ) योजनने  $\frac{१}{४}$  भाग लांबपणे छे, सगडनिउद्धिने आकारे  
 छे, तिवारे अंधकार, क्षेत्राकार, ताप क्षेत्राकागनि परें जाणवो ॥ मेरु  
 पासे ते अंधकार क्षेत्रनि सर्वाभ्यतर बाहा ( ६३२४ ) योजनने  $\frac{१}{४}$   
 भागनि परिधिपणे छे, ते किम, मेरुनि परिधिने ( २ ) गुणी [ १० ]  
 भांगता पूर्वोक्त मान आवे ॥ ते अंधकार क्षेत्रनि सर्व बाहिरनि बाहा  
 लवण समीपे ( ६३२४५ ) योजनने  $\frac{१}{४}$  भाग परिधिपणे छे, ते किम,  
 जंबुद्वीपनि परिधिने [ २ ] गुणी ( १० ) भांगता पूर्वोक्त मान आवे

जीवारे-सूर्य बाहिरला मांडलाने आश्रिने गति करे तिसारे, ताप क्षेत्राकार पूर्ववत् ( नवर एटलो पेर ) जे अधकारनु प्रमाण वर्णव्यु ते ताप क्षेत्रनु प्रमाण जाणतु ॥

॥ इति सूर्याधिकारः ॥

दिवे, चंद्रमाना (१५) माडला छे ॥ तेमा जगतीथि (१८०) योजनमाही जाइये एटला क्षेत्रमा (५) माडला छे ॥ ने जगतीथि (३३०) योजन लवणमा जाइये एटला क्षेत्रमा (१०) माडला छे ॥ एव सर्व मिली (५१०) योजनमा (१५) माडला रखा छे ॥ प्रथम माडलाधी त्रेलु माडलो पण (५१०) योजनने छेते छे ॥ एकैक चद्रमडलने (३५) योजन  $\frac{३५}{५}$  भाग  $\frac{५}{५}$  भागनु अतर छे, एरु मडल  $\frac{३५}{५}$  भागनु लातु पढोछ छे ने  $\frac{३५}{५}$  भागनु जाइ छे ॥ सर्गाभ्यतर ( प्रथम ) मडल मेरुथि ( ४४८२० ) योजनने छेते छे ॥ दूजो मडल मेरुथी ( ४४८५६ ) योजनने  $\frac{३५}{५}$  भागने  $\frac{५}{५}$  भागने छेते छे ॥ इम निकलता माडले २, उनिस योजनने  $\frac{३५}{५}$  भागने  $\frac{५}{५}$  भाग वधारनार, छेलु पदरमु माडल, मेरुथी (४५३३०) योजनने छेते आवे ॥ इम माडले २, माहीली कोरे प्रवेश करता, पूर्वोक्त योजन घटाइता २, प्रथम मडल मेरुथि पूर्वोक्त छेते आवे ॥ सर्गाभ्यतर (प्रथम) मडल (९९६४०) योजननुं, लांतु पढोछ छे, ने तेनि परिधि (३१५०८९) योजन जाझेरानि छे, दूजो मडल (९९७१२) योजन  $\frac{३५}{५}$  भागने  $\frac{५}{५}$  भागनु लांतु पढोछ छे, ने तेनि परिधि (३१५३१९) योजन जाझेरानि छे, -इम निकलता माडले २, लांव पढोळपणामा (७२) योजनने  $\frac{३५}{५}$  भागने  $\frac{५}{५}$  भाग यधारता ने परिधिमा ( २३० ) योजन माडले २, वधारता छेल ( १५ ) मा माडलो ( १००६६० ) योजननु लांतु छे, ने तेनि परिधि ( ३१८३१५ ) योजननी आवे ॥ इम बाहिरथि माडले माडले प्रवेश करता, पूर्वोक्त लांव पढोळपणा-

मांथी, पूर्वोक्त योजन घटाडताने, परिधिना मानमाथी, पण पूर्वोक्त योजन घटाडता, प्रथम मडलनु लांगपणुं पहोलपणुं तथा परिधि आवे ॥ जिवारे चद्र सर्वाभ्यतर ( प्रथम ) मडलने, आश्रिने गति करे, तिवारे एक मुहूर्ते चंद्र (५०७३) योजनने एक योजनना (१३७२५) भाग करिये तेवा  $\frac{५०७३}{१३७२५}$  भाग चाले तिवारे इहाना मनुष्यने (४७२६३) योजनने  $\frac{३१}{१००}$  भाग वेगलेयी उगतो चंद्र नजरे आवे जीवारे चद्र दूजा माडलाने आश्रिने गति करे तिवारे (१) मुहूर्ते (५०७७) योजनने  $\frac{१३७२५}{५०७७}$  भागवाले एव निकलता मांडले २, मुहूर्त गतिमां (३) योजनने  $\frac{१३७२५}{३}$  भाग वधारता यावत्, छेले [१५] मांडले [१] मुहूर्ते (५१२५) योजनने  $\frac{१३७२५}{५१२५}$  भाग चाले, इम माही प्रवेश करता मांडले २, मुहूर्त गतिमाथी पूर्वोक्तरीते, योजन भाग घटाडता प्रथम मांडले, मुहूर्त गति आवे, ते दीने चंद्र उगतो (३१८३१) योजनथी नजरे आवे ॥

॥ इति चद्राधिकारः ॥

हिवे नक्षत्राना [८] मांडला छे तेमां जगतीथी (१८०) योजन जवुद्रीपमां पेशिये, एटलामां (२) मंडल छे नें जगतीथी [३३०] योजन लवणमां जइये, एटलामां नक्षत्रना [६] मांडला छे सर्व मिली [५१०] योजनमां [८] मांडला रथा छे, सर्वाभ्यतर ( प्रथम ) मडलथी, छेलु (८) मु मडल (५१०) योजनने छेटे छे ॥ नक्षत्रना मांडला (२) नें (२) योजननु आतरं नक्षत्रनुं मांडलो १ गाउनुं लांबु पहोलु नें अर्द्ध गाउनु जाडु छे ॥ मेरुथी [४४८२०] योजनने छेटे प्रथम मांडलो छे मेरुथी (४५३३०) योजनने छेटे छेलु (८) मु मांडलो छे प्रथम मांडलो (९९६४०) योजननु लांबु पहोलु छे; नें (३९५०८९) योजन जाझेरानि तेनि परिधि छे ॥ बाहिरलु [८] मु, मांडलो (१००६६०) योजननुं, लांबु ३ नें

( १३८३१५ ) योजननि तेनि परिधि छे, जीवारे प्रथम मांडळे चाले तिवारे (१) एक मुहूर्ते ( ५२६५ ) योजनने  $\frac{३६३६६३}{१०००००}$  भाग चाले जीवारे छेला मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे मुहूर्ते ( ५३१९ ) योजनने  $\frac{३६३६६३}{१०००००}$  भाग चाले (८) नक्षत्रना मांडला १-३-६-७-८-१०-११-१५ मा, चंद्रमडल साये भेला छे, एक मुहूर्ते चंद्र जे जे मांडलाने आश्रिने गति करे ते ते, मांडलानी परिधिना ( १७६८ ) भाग चाले ते मांडलनि परिधिने ( १०९८०० ) छे दिये तेवा मूर्य (१) मुहूर्ते (१८३०) भाग चाले नक्षत्र (१८३५) भाग चाले ॥

॥ इति नक्षत्राधिकारः ॥

दिवे (५) सवळरना नाम.-नक्षत्र सवळर [१] युग सवळर (२) प्रमाण सवळर (३) लक्षण सवळर (४) शनैश्चर सवळर (५) नक्षत्र सवळरना ( १२ ) भेद कहे छे ॥ श्रावण जाव आपाढ ॥ ( अथवा ) बृहस्पति नामे ग्रह ( १२ ) वर्षे सर्ग नक्षत्रना मांडलाने पूर्ण करे नक्षत्र भोगवी छे ते नक्षत्र सवळर कहिये ॥ १ ॥ युग सवळरना पाच भेद ॥ चंद्र (१) चंद्र चंद्र (२) अभिवर्द्धित [३] चंद्र (४) अभिवर्द्धित (५) ॥ प्रथम चंद्र सवळरना (२४) पर्व एव दूजा चोथाना पण (२४) पर्व जाणवा ॥ अभिवर्द्धितोना छवीस २, पर्व, एव [ ५ ] सवळरे (१) युग १२४ पर्व ॥२॥ प्रमाण सवळरना ५ भेद ॥ नक्षत्र (१) चंद्र (२) ऋतु (३) आदित्य (४) अभिवर्द्धित [५] ॥३॥ लक्षण सवळरना (५) भेद ॥ सम नक्षत्र (जे वखते जेनो जोग जोइये ते) जोग जोडे सम ऋतु परिणमे, अति ताप टाढ नहि, बहु उदक वर्षे, तेने नक्षत्र सवळर कहिये [१] पूर्णिमाए चंद्र साये विषय चार नक्षत्रनो योग होय, तापे टाढे, अति दान घणो

मेह वर्षे, तेने चंद्र संवत्तर कहिये ॥ २ ॥ वनस्पतिना प्रवाल विषम परिणमे, ऋतु विना अकाले फुल फल आवे, वर्षा सम्यक प्रकारे न वर्षे, तेने कर्म संवत्तर कहिये ॥ ३ ॥ थोटे मेहे करी, पृथिवी पाणीनो रस, फुल फलनो रस आपे, सम्यक प्रकारे धान्य निपजे तेने आदित्य संवत्तर कहिये ॥ ४ ॥ सूर्यने तापे करि-तप्या थका, क्षण लव दिवस, ऋतु परिणमे, न नीचा स्थानक जले करि पुराय तेने अभिर्द्धित संवत्तर कहिये ॥ ५ ॥ ४ ॥ अभिजितादि (२८) नक्षत्रोने, शनैश्वर मंडाग्रह ३० वर्षे भोगवी ले, तिवारे शनैश्वर संवत्तर (अथवा) ए संवत्तर (२८) प्रकारनो ते अभिच, जावं, उत्तरापाढा (५) एक संवत्तरना (१२) मास तेना (२) प्रकारे नाम, लोकिक पक्षे श्रावण जाव आपाढ ॥ लोकोत्तर पक्षे अभिर्द्धित (१) प्रतिष्ठित (२) विजय (३) प्रीति वर्द्धन (४) श्रेयांश (५) शीव (६) शिशिर (७) हिमवत (८) वसत (९) कुसुम सभव (१०) निद्राय (११) वनविरोध (१२) एक मासना (२) पक्ष बहुल पक्ष (१) शुक्र पक्ष २, एक पक्षना (१५) दिवस ते प्रतिपदा दिवस जाव पंचदशी दिवस ॥ हिवे (१५) दिवसना (१५) नाम ते ॥ पूर्वांग (१) सिद्ध मनोरम (२) मनोहर (३) यशोभद्र (४) यशोधरा (५) सर्व काम समृद्ध (६) इद्र मूर्धाभिषिक्त (७) सोमणस (८) धनजय (९) अर्थ सिद्ध (१०) अभिजात (११) अत्यासन [१२] शतजय (१३) अग्निवेशम (१४) उपशम (१५) हिवे [१५] दिवसने [१५] तिथी ते नदा (१) भद्रा (२) जया [३] तुडा [४] पूर्णा (५) ए रीते (५) नें ३ वार उचलावता (१५) थाय, एक पक्षनि (१५) रात्रि ते प्रतिपदा जाव पंचदशी ॥ हिवे (१५) रात्रिना नाम, ते उत्तमा (१) सुनक्षत्रा (२) एलापत्या (३) यशोधरा [४] सोमणसा (५) श्री सभूता [६] त्रिनया

(७) विजयंती [८] जयती [९] अपगजिता (१०)  
 इच्छा (११) समाहारा [१२] तेजा (१३) अति तेजा [१४]  
 देवानदा [१५] हिवे रात्रिनी (१५) तिथि कहे छे ॥  
 उग्रयती (१) भोगयती [२] यशोयती (३) सर्व सिद्धा (४) शृंग  
 नाम (५) ए गीते ३ वार, उथलावता (१५) तिथी थाय ॥ एक अ-  
 होरात्रना (३०) मुहूर्तना नाम ॥ रौद्र (१) श्वेत (२) मित्र (३) वायु  
 (४) सुपीन (५) अभिचद्र (६) माहेद्र (७) जलयान (८) ब्रह्म (९)  
 ब्रह्म सत्य (१०) इज्ञान (११) त्वष्टा (१२) भावितात्मा (१३) वै-  
 श्रमण (१४) वारुण [१५] आनद (१६) विजय (१७) विश्वसेन  
 (१८) प्राजापत्य (१९) उपश्रम (२०) गार्ग्य (२१) अग्नि वैश्य  
 (२२) शतवृषभ (२३) आतपयान (२४) अमम (२५) ऋणयान  
 (२६) भौम (२७) वृषभ (२८) सर्वार्थ (२९) राक्षस (३०) हिवे  
 ऋण (११) ना नाम, ॥ वव (१) वालव (२) कौलव (३) स्तिमित  
 लोचन (४) गरादि (५) वणिज (६) विष्टि (७) शकुनि [८] चतु-  
 प्पद (९) नाग (१०) किंस्तुघ्न (११) तेमां ७ करण चर, ते मथ-  
 यना ७, नें उपरला ४ करण स्थिर छे, शुकुपक्षे पडवा रात्रे घन  
 करण ॥ दूजे दीवशे वालव करण, रात्रे कौलव ॥ एवं तिथीना दि-  
 वस रात्रिने ॥ करण एकेक पडि एकेक एम लेता मुकता जाव पू-  
 र्णिमा, ए दीवशे विष्टि रात्रे वव बहुल पक्षे पडवाने दिवशे वालव  
 रात्रे कौलव एव दीवश रात्रे अनुक्रमे करण लेता मुकता जाव चतु-  
 र्दशी ए दिवशे विष्टि रात्रे शकुनी अमावास्या ए दीवशे चतुष्पद रात्रे  
 नाग शुकुपक्षे पडवा दिवशे किंस्तुघ्न चरकरणते वदलाय ॥ स्थिर  
 ते हमेश तेज तिथिये आवे ॥ सबउरमां आदि चद्र ॥ अयनमां  
 आदि दक्षिणायन ॥ ऋतुमा आदि प्रावृद् ॥ मासमां आदि श्रावण ॥  
 पक्षमां आदि बहुल ॥ अहोरात्रमां आदि द्विस ॥ मुहूर्तमां आदि

(२) हिवे संठाणद्वार कहे छे ॥ पहिलो।दूजो।तीजो।चोयो।  
नवमो।दसमो।ग्यारमो।वारमो देवलोक अर्थ चंद्रमाके आकार ॥  
पांचमो छठो सातमो आठमो देवलोक और नव ग्रीवेक और सर्वार्थ  
सिद्ध विमान पूर्ण चंद्रमाके आकार ॥ चार अणुत्तर विमान सिंघो-  
डाके आकार ॥

॥ इति सठाणद्वार ॥ २ ॥

हिवे प्रतरद्वार कहे छे:—सर्व देवलोकमें ( ६२ ) प्रतर ॥  
न्यारे न्यारे कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे ( १३ ) प्रतर ॥ तीजा  
चोथा देवलोकमें ( १२ ) प्रतर ॥ पांचमा देवलोकमें ( ६ ) प्रतर ॥  
छठ्ठा देवलोकमें ( ५ ) प्रतर ॥ सातमे देवलोकमें ( ४ ) प्रतर ॥ आठमे  
नवमे दशमे इग्यारमें वारमे देवलोकमे चार २ प्रतर ॥ नव ग्रीवेकके  
( ९ ) प्रतर ॥ पांच अणुत्तर विमानका एक प्रतर ॥

॥ इति प्रतरद्वार ॥ ३ ॥\*

हिवे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकमें ( ३२००००० )  
वत्तिस लाख विमान ॥ दूजा देवलोकमे ( २८ ) लाख विमान ॥ तीजा  
देवलोकमें वारा लाख विमान ॥ चोथा देवलोकमें आठ लाख विमान ॥  
पांचमा देवलोकमे चार लाख विमान ॥ छठ्ठा देवलोकमें प-  
चास हजार विमान ॥ सातमा देवलोकमे प्चालीस हजार विमान ॥  
आठमां देवलोकमे छे हजार विमान ॥ नवमां दसमा देवलोकमे  
चारशे विमान ॥ इग्यारा वारमां देवलोकमे ( ३०० ) विमान ॥ नव-  
ग्रीवेकना तीन त्रिगडा ॥ पहिले (ऊपरला) त्रिगडामें ( १११ ) विमान ॥  
दूसरा (बीचला) त्रिगडामें ( १०७ ) विमान ॥ तीजा [नीचला] त्रिग-

दामें (१००) विमान ॥ पांच अणुत्तर विमानमें [५] विमान ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ ४ ॥

\* द्विजे पङ्क्तिवध द्वार कहे छे ॥ पहिला दूजा देवलोकमे गुणतीस्से (२९००) पचोस २५) पङ्क्ति ॥ तीजा चोथा देवलोकमे (२१००) इक्कीससे पङ्क्ति ॥ पाचमा देवलोकमे ( ८३४ ) आठसे चौतीस पङ्क्ति ॥ उठ्ठा देवलोकमे ( ५८५ ) पक्ति ॥ सातमे देवलोकमे (३९६) तीनसे छिन्नु पक्ति ॥ आठमे देवलोकमे ( ३३२ ) तीनसे वत्तिस पक्ती ॥ नवमा दसमा देवलोकमें [ २६८ ] पक्ती ॥ इग्यारमे बारमे देवलोकमे ( २०४ ) पक्ति ॥ नवग्रीवैकमा तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडामें (१११) पक्ति ॥ दूसरा त्रिगडामें ( ७५ ) पक्ति ॥ तीसरा त्रिगडामें (२९) पक्ति ॥ पांच अणुत्तर विमानमें (५) पक्ति ॥ एव सर्व मिली (७८७४) पक्ति जांगवी ॥

॥ इति पक्तिवध द्वार ॥ ५ ॥

द्विजे सख्याता असख्याता द्वार कहे छे ॥ सर्व ऊर्ध्वलोकमें ( ८४९७०२३ ) विमान छे ॥ जिनका पाच भाग कीजे ( १६९९४०४ विमान प्रत्येक भागमे रहे छे ) एक योजनका तीन भाग मांहीला दोय भाग लीजे ॥ एक भागमें सख्याते योजनका विमानोंमें सख्याता देवता रहे छे ॥ और चार भागमें असख्याता योजनका विमानोंमें असख्याता देवता रहे छे ॥

॥ इति सख्याता असख्याता द्वार ॥ ६-॥

\* ( विमान संख्या ) पहिला देवलोकसे लेकर सर्वार्धसिद्धतक क्रमसे जाननां ( ३२००००० ) २८००००० ) १२००००० ) ८००००० ) ४००००० ) ५०००० ) ४०००० ) ६०० ) ४००) ३०००) १११) १००) १०० ) ५) एव सर्व ८४९७०२३ विमान—



हिवे राजुद्वार कहे छे ॥ पेहेलो दूजो देवलोक सं भूमतलाधी  
राजू ऊंचो ॥ तीजो चौथो देवलोक अठाई राजू ऊंचो ॥ पांच  
देवलोक सवातीन राजू ऊंचो ॥ उठो देवलोक साडातीन राजू ऊंचो  
सातमो देवलोक पूणाचार राजू ऊंचो ॥ आठमो देवलोक चार  
ऊंचो ॥ नवमो दसमो इग्यारमो बारमो देवलोक पांच राजू ऊंचो  
नव ग्रीवक छे राजू ऊंचा ॥ पांच अणुत्तर विमान सात राजू मेठरा ऊंचा

॥ इति राजुद्वार ॥ ७ ॥ \*

हिवे आधार द्वार कहे छे ॥ पेहेलो दूजो देवलोक घनवाय  
आधार ॥ तीजो चौथो पांचमो देवलोक घनोदधिके आधार ॥ छ  
सातमो आठमो देवलोक घनवाय अने घनोदधिके आधार ॥ नव  
देवलोकसे लेकर सर्वार्थ सिद्ध विमान तक केवल आकाशके आधार

॥ इति आधारद्वार ॥ ८ ॥

हिवे मेहेलात द्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे [५०  
पांचशे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ तीजा चौथा देवलोकमे छेस  
२, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ पांचमे छठे देवलोकमे सातशे  
योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ सातमे आठमे देवलोकमे आठसे  
योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ नवमे दसमे इग्यारमे बारमे देवलोक  
नवशे २, योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ नव नव ग्रीवकमे, हजार  
योजनकी ऊंची मेहेलात ॥ पांच अणुत्तर विमानमे इग्यारे इग्यारे  
योजनकी ऊंची मेहेलात ॥

॥ इति मेहेलात द्वार ॥ ९ ॥

\* एक राजु जमीनका प्रमाण ३-८१-२७-९७० मगका एक लो  
दका गोलानो एक 'भार' कहा जाता है एमे हजार गोलका एक गोला  
घनाके कोई देवता उचा जाके उसको निचा वाले 'तब वो गोला ६  
महिने ६ दिन ६ प्रहर और ६ घटिकामे जीतनी जगा ( आकाश )  
बल्लंघे वतनी जगाको एक " राजु " की जगा कही जाती है

द्विजे अगणाईद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमें सत्ता-  
वीससे योजनकी अगणाई ॥ तीजा चोथा देवलोकमा छवीसे  
योजनकी अगणाई ॥ पांचमा छटा देवलोकमे पवीस्से यो-  
जनकी अगणाई ॥ सातमे आठमे देवलोकमे चौदीस्से योजनकी अ-  
गणाई ॥ नवमा दसमा इग्यारमा चारमा देवलोकमे तेवीस्से योजनकी  
अगणाई ॥ नवग्रीवेकमे बावीस्से योजनकी अगणाई ॥ पाच  
अणुत्तर विमानमे एकवीस्से योजनकी अगणाई ॥

॥ इति अगणाई द्वार ॥ १० ॥

द्विजे वर्णद्वार कहे छे ॥ पेहेला दूजा देवलोकमे वर्ण पावे पांच  
तीजा चोथा देवलोकमे वर्ण पावे चार कालो टळयो ॥ पाचवे उठे  
देवलोकमे वर्ण पावे तीन कालो नीओ टळयो ॥ सातमे आठमे  
देवलोकमें वर्ण पावे दोय कालो नीलयो रातो टळयो ॥ नवमे दसमे  
देवलोकसू छेरु सरार्थ सिद्ध तरु वर्ण पावे एक ॥

॥ इति वर्णद्वार ॥ ११ ॥

द्विजे चिन्हद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इद्रके मुकुटमांही  
मृगको चिन्ह ॥ दूजा देवलोकके इद्रके मुकुटमांही भैसाको चिन्ह ॥  
तीजा देवलोकके इद्रके सुपरको चिन्ह ॥ चोथा देवलोकके इद्रके  
बोरुडाको चिन्ह ॥ पांचमे देवलोकके इद्रके पेदाको चिन्ह ॥ छठे  
देवलोकके इद्रके हाथीको चिन्ह ॥ सातमे देवलोकके इद्रके घोडाको  
चिन्ह ॥ आठमा देवलोकका इद्रके सर्पको चिन्ह ॥ नवमे दसमे  
देवलोकके इद्रके गेंडाको चिन्ह ॥ इग्यारमा चारमा देवलोकके इद्रके  
वृषभको चिन्ह ॥ आगे चिन्ह नथी ॥

॥ इति चिन्हद्वार ॥ १२ ॥

हिवे सामानिक द्वार रुहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इंद्रके चौर्याशी हजार सामानिक देवता ॥ दूजा देवलोकके इंद्रके अशी हजार सामानिक देवता ॥ तीजा देवलोकके इंद्रके वेहेत्तर हजार सामानिक देवता ॥ चोथा देवलोकके इंद्रके सत्तर हजार सामानिक देवता ॥ पांचमे देवलोकके इंद्रके साठ हजार सामा० ॥ छठे देवलोकके इंद्रके पचास हजार सामानि० ॥ सातमे देवलोकके इंद्रके चालिस हजार सामा० ॥ आठमे देवलोकके इंद्रके तीस हजार सामानिक देवता ॥ नवमे दसमे देवलोकके इंद्रके बीस हजार सामा० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोकके इंद्रके दस हजार सामा० ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति सामानिकद्वार ॥ १३ ॥

हिवे आत्मरक्षकद्वार कहे छे ॥ पेहेला देवलोकके इंद्र महाराजके तीन लाख छत्तीस हजार आत्मरक्षक देवता ॥ दूजा देवलोकके इंद्र महाराजके तीनलाख बीस हजार आत्मरक्षक० ॥ तीजे देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख अठयाशि हजार आत्मरक्षक० ॥ चोथे देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख अशी हजार आत्मरक्षक० ॥ पांचमा देवलोकके इंद्र महाराजके दोय लाख चालिस हजार आत्मरक्षक० ॥ छठे देवलोकके इंद्रमहाराजके दोय लाख आत्मरक्षक० ॥ सातमा देवलोकके इंद्र महाराजके एक लाख छासठ हजार आत्मरक्षक० ॥ आठमा देवलोकके इंद्र महाराजके एक लाख बीस हजार आत्मरक्षक० ॥ नवमे दसमे देवलोकके इंद्र महाराजके अशीहजार आत्मरक्षक० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोकके इंद्रमहाराजके चालीस हजार आत्मरक्षक० ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति आत्मरक्षकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे लोरुपाल द्वार कहे छे ॥ एकेरु इद्र महाराजके चार २, लोरुपाल ॥ लोरुपालके नाम सोम १ यम २ वरुण ३ वैश्रवण ४ ॥ सोमकी राजधानी पूर्वकी तरफ ॥ यमकी राजधानी दक्षिणकी तरफ ॥ वरुणकी राजधानी पश्चिमकी तरफ ॥ वैश्रवणकी राजधानी उत्तरकी तरफ ॥

॥ इति लोरुपाल द्वार ॥ १५ ॥

हिवे त्रायतशक द्वार कहे छे ॥ एकेरु इद्र महाराजके तेवीम २ त्रायतशक देवता माता पिता गुरु स्थानरु जांगरा ॥

॥ इति त्रायतशक द्वार ॥ १६ ॥

हिवे अणीकाद्वार कहे छे ॥ एकेरु इद्रमहाराजके सात २ अणिकाका अधिपति ॥ तेना नाम हाथी घोडा रथपायक नाटक गधर्व वृषभ ॥ पेहेला देवलोरुके इद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख अडसठ हजार सैन्य ॥ दूसरे देवलोरुके इद्र महाराजके प्रत्येक अणिकामे एक क्रोड एक लाख साठ हजार सैन्य ॥ तीसरा देवलोरुके इद्र महाराजके प्र० अ० एक्याण्णवे लाख चमालीस हजार सैन्य ॥ चौथा देवलोरुके इद्र महाराजके प्र० अ० अठ्याशी लाख नच्चेह हजार सैन्य ॥ पाचमे देवलोरुके इद्र महाराजके प्रत्ये० अ० छेंत्तर लाख बीस हजार सैन्य ॥ छठा देवलोकके इद्र महाराजके प्र० अ० त्रेसठ लाख पचास हजार सैन्य ॥ सातमा देवलोरुके इद्र महाराजके प्र० अ० पचास लाख अशी हजार सैन्य ॥ आठमा देवलोरुके इद्र महाराजके प्र० अ० अडतीस लाख दस हजार सैन्य ॥ नवमा दसमा देवलोकके इद्र महाराजके प्र० अ० पचीस लाख चालीस हजार सैन्य ॥ इग्या-

रमे वारमे देवलोकके इद्र महाराजके प्र० अ० वारा लाख सत्तर हजार सैन्य ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति अणिकाद्वार ॥ १७ ॥

हिवे प्रखदाद्वार कहे छे ॥ प्रखदा ३ प्रकारकी ॥ अभ्यतर १ मध्य २ बाहिर ३ ॥ पहिले इद्र महाराजके अभ्यतरकी प्रखदा वारा हजार ॥ मध्यमकी प्रखदा चवदा हजार ॥ बाहिरकी प्रखदा सोळा हजार ॥ दूसरे दे० इ० म० अभ्यतरकी प्रखदा दस हजार ॥ मध्यमकी० वारा हजार ॥ बाहिर० चवदे हजार ॥ तीसरे दे० इ० म० अभ्यतरकी० आठ हजार ॥ मध्यमकी० दस हजार ॥ बाहिरकी० वारा हजार ॥ चोथे दे० इ० महा० अभ्यतरकी० छे हजार ॥ मध्यकी० आठ हजार ॥ बाहिरकी० दस हजार ॥ पाचमे दे० इ० महा० अभ्यतरकी० चार हजार ॥ मध्यकी० छे हजार ॥ बाहिरकी० आठ हजार ॥ छठे देव लो० इ० महा० अभ्यतरकी० दोय हजार ॥ मध्यकी० चार हजार ॥ बाहिरकी० छे हजार ॥ सातमे दे० इ० महा० अभ्यतरकी० एक हजार ॥ मध्यकी० दोय हजार ॥ बाहिरकी० चार हजार ॥ आठमे देवलोक० इ० महा० अभ्यतर० पाचशे ॥ मध्यकी० १ हजार ॥ बाहिरकी० दोय हजार ॥ नवमा दसमा दे० इ० महा० अभ्यतर० अठ्ठाईसे ॥ मध्यकी० पाचशे ॥ बाहिरकी० १ हजार ॥ इग्याग्मा वारमां दे० इ० महा० अभ्यतर० सपासे ॥ मध्यकी० अठ्ठाईसे ॥ बाहिरकी० पाचशे ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति प्रखदा द्वार ॥ १८ ॥

हिवे अग्रमेपी द्वार कहे छे ॥ पहला दूसरा देवलोकके इद्रके आठ २ अग्रमेपी ॥ एकेक अग्रमेपीके सोले २ हजार परिवार ॥ एक लाख अठ्ठावीस हजार तो मृत्गी देयी ॥ एकेक देवी भोग

निमित्त उत्तर वैक्रेयसे सोळे २ हजार रूप करे ॥ सर्व रूप दो अब्ज चारकोड अशी लाख रूप थया ॥ इतनेही रूप इंद्र करे ॥

॥ इति अग्रमेपी द्वार ॥ १९ ॥

द्विजे प्रचारणा द्वार कहे छे ॥ पहिला दृजा देवलोकमे मनु-  
प्यनी परे प्रचारणा ॥ तीसरे चोये देवलोकमे स्पर्श सबधी प्रचारणा ॥  
पांचमे छठे देवलोकमे बचन सत्रधी प्रचारणा ॥ सातमे आठमे  
देवलोकमे रूप सबधी प्रचारणा ॥ नवमे दसमे इग्यारमे बारमे  
देवलोकमे मन सबधी प्रचारणा ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति प्रचारणा द्वार ॥ २० ॥

द्विजे विमानद्वार कहे छे ॥ पेहेलो पातक नामे विमान ॥ दु-  
सरो पुष्कल नामे विमान ॥ तीसरो सुमानस नामे विमान ॥ चौथो  
सुवच्छल नामे विमान ॥ पांचमो नंदीरुद्धन नामे विमान ॥ छठो  
कांभ नामे विमान ॥ सातमो घाम नामे विमान ॥ आठमो विवग्  
नामे विमान ॥ नवमो विमल नामे विमान ॥ दसमो सर्वोद्भद्र नामे  
विमान ॥ इग्यारमो बारमो प्रियगु नामे विमान ॥ आगे नास्ति ॥

॥ इति विमानद्वार ॥ २१ ॥

द्विजे आनाजानाद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीमें चारों जातका  
देवता आवे ॥ दूसरी नारकीमे तीन जातका देवता आवे ॥ तीसरी  
नारकीमें दो जातका देवता आवे ॥ ज्योतिषी वाणव्यंतर दळ्या ॥  
चौथी नारकीसे सातमी नारकी तक एक एक विमानिक देवता  
आवे जावे ॥

॥ इति आनाजानाद्वार ॥ २२ ॥

हिंवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ बाणव्यतर ज्योतिषी देवता ऊंचो या  
नीचो देखे तो पचीस योजन तक देखे ॥ भुवनपति असुरकुमार  
ऊचा देखे तो पेहेला दूजा देवलोक तक देखे ॥ नीचा देखे तो  
पेहेली नारकी तक संपूर्ण देखे ॥ तिरछा देखे तो असख्याता द्वीप  
समुद्र देखे ॥ पेहेला दूजा देवलोकवाला ऊपर अपनी ध्वजा पतारा  
तक देखे ॥ नीचा देखे तो पेहेली नारकीके अतक देखे ॥ तिरछा  
देखे तो असख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ तीसरा चौथा देवलोकवाला  
ऊचा तिरछा पूर्वत देखे ॥ नीचा दूमरी नारकीतक देखे ॥ पाचमा  
छद्दा देवलोकवाला ऊंचो तिरछो पूर्वत ॥ नीचा तीसरी नारकी  
तक ॥ सातमा आठमा देवलोकवाला ऊंचो ति० पू० ॥ नीचा चौथी  
ना० ॥ नवमासे चारमा देवलोकवाला ऊंचो ति० पू० ॥ नीचा पाव  
ना० ॥ नव ग्रीवोकवाला देवता ऊंचो ति० पू० ॥ नीचो छठी  
ना० ॥ पांच अणुत्तर विमानवाला देवता ऊंचो ति० पू० ॥ नीचा  
सातमी ना० ।

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ २३ ॥

हिंवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ असुरकुमारके दृष्ट शक्तिसे उत्तर वैक्य  
करे तो जग्ग एरु जजुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा असख्याता भरे ॥ पेहेला  
देवलोकके दृष्ट शक्तिसे उत्त० ॥ जग्गद्वीप जंबुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अस॥  
दूजा देवलोकके इद्र श० उ० नो जग्गद्वीप जजुद्वीप जाझेरा भरे ॥  
उत्कृष्टा अस० ॥ तीसरा देवलोकके इद्र श० उ० जग्गद्वीप चार ज  
जुद्वीप ॥ उत्कृष्टा अस० । चौथा दे० इ० श० उ० ज० चार ज  
जुद्वीप जाझेरा ॥ उ० अस० ॥ पाचमा देवलोकके इद्र शक्तिसे उ०  
जग्गद्वीप आठ जजुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥ छद्दा देवलोकके इद्र  
शक्तिसे उ० ॥ जग्गद्वीप आठ जजुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा अस० ॥  
सातमा देवलोकके इद्र शक्तिसे उ० जग्गद्वीप सौला जजुद्वीप भरे ॥

उत्कृष्टा अत्त० ॥ आठवा देवलोकके इद्र शक्तीसे उ० जघन्य सोत्रा  
जमुद्वीप जाझेरा भरे ॥ उत्कृष्टा अत्त० ॥ नवमा दसमा देवलोकके  
इद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जमुद्वीप भरे ॥ उत्कृष्टा अत्त० ॥ इग्या-  
रमा वारमा देवलोकके इद्र शक्तीसे उ० जघन्य ३२ जमुद्वीप जाझे-  
रा० ॥ उत्कृष्टा असलपाना द्वीप समुद्र भरे ॥ आगे उत्तर वैक्रिय-  
नास्ति ॥

॥ इति शक्तिद्वार ॥ २४ ॥

दिवे पुण्यद्वार कहे छे ॥ बाणव्यतर देवता सो वरसमे जितना  
पुण्य क्षय करे उतना ज्योतिपी देवता २०० वरसमे क्षय करे ॥  
ज्योतिपी देवताके इद्र तीनसे वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना  
शुक्लपति चांगसे वरसमे क्षय करे ॥ शुक्लपतीके इद्र पांचशे वरसमे  
जितना पुण्य क्षय करे उतना पेहेरा दुमरा देवलोकवाला हजार व-  
रसमे पुण्य क्षय करे ॥ तीसरा चोथा देवलोकवाला [२०००] वर-  
समे जितना पुण्य क्षय करे उतना पाचवा उठा देवलोकवाला (३०००)  
वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ सातमा आठमा देवलोकवाला (४०००)  
वरसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना नवमा दसमा इग्यारमा नारमा  
देवलोकवाला (५०००) वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ नव नवश्रीवेकका  
तीन त्रिगडा ॥ पहिला त्रिगडावाला जितना एक लाख त्रिपमे पुण्य  
क्षय करे उतना दूसरा त्रिगडावाला (२०००००) वरसमे पुण्य  
क्षय करे ॥ तिसरा त्रिगडावाला जितना (३०००००) वरसमे  
पुण्य क्षय करे उतना चार अणुत्तर विमानवाला (४००००००)  
वरसमे पुण्य क्षय करे ॥ चार अणुत्तर विमानवाला चार लाख व-  
रसमे जितना पुण्य क्षय करे उतना सर्वार्थमिद्ध विमानका देवता  
(५०००००) वरस पीडे पुण्य क्षय करे ॥

॥ इति पुण्यद्वार ॥ २५ ॥



कहे जे हुं पण आयु । इम कहिने मिश्र गुणठाणावाले । वांदवाने  
 पग उपाडयो ॥ तेहवामा दूजो महा मिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे  
 पुछ्युं के स्यांभणि जावोठो । तिवारे मिश्र गुणठाणावालो कहे,  
 जे । साधु महा पुरुष ने वांदवा जडये छे ॥ तिवारे महा मिथ्याति  
 कहे जे । एहने वांदे स्यु थाय । ए तो मेला घेला छे ॥ इम कहिने  
 भोलप्रि नांख्यो पाठो वेठो । तिवारे साधु ज्ञानिने श्रावके वादिनें  
 पुछ्युं जे स्वामि वादवा पग उपाडयो, तेहने स्युं गुण निपनो ।  
 तिवारे ज्ञान गुरु कहे छे । जे काला ऊडद सरिखो हतो ते छडि-  
 दाल सरिखो थयो ॥ कृष्ण पक्षी टलिने शुक पक्षी थयो ॥ अनादि  
 कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो ॥ समकित सन्मुख थयो पण  
 पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान  
 मोडी बंदणा नमस्कार करीनें पूजता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने  
 स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवत कहे छे ॥ ते जीव चार गति  
 ( २४ ) दंडकृमा भमीनें पिण देश उणो अर्द्ध पुद्रु परावर्तनमां  
 उत्कृष्टो संसारनो पार पामशे ॥ ३ ॥ चोथो अविरिति सम्यक्त्वदृष्टि  
 गुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण ॥ सात प्रकृतीनें क्षयोप समावे । अन-  
 तानुगधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) सम्यक्त्व मोहनीय  
 (५) मिथ्यात्व मोहनीय (६) मिश्र मोहनीय (७) ए सात प्रकृतीनें  
 काईक उदय आवे ॥ तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामा दल छे तेहनें  
 उपसमावे तेहनें क्षयोपसम सम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असख्याती  
 वार आवे ॥ अने सात प्रकृतीना दलने सर्वथा उपसमावे दांके  
 तेहने उपसम सम्यक्त्व कहिये ॥ ते समकित पांचवार आवे । अने  
 सात प्रकृतीना दलने सर्वथा क्षय करे । तिवारे सायक समकित्व कहिये ॥ ते  
 समकित्व एकवार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक् पदार्थ ॥  
 ॥ द्रव्य प्रकी (१) क्षेत्र थकी (२) काल थकी (३) भाव थकी (४) नवकार

सियादि ॥ छे मासी तप जाणे सरदेह परूपे पण फरशी सके नही ॥  
 तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूजता  
 हुता ॥ स्वामिनाथ ते जीवने सु गुण निपनो ॥ तिवारे श्री भगवंत  
 कहे छे । हे गौतम ते जीव समकित व्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्ततो  
 थको जघन्य तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पधरे भवे मोक्ष जाय ॥  
 वेदक समकित एकवार आवे एक समयनी स्थिति छे । पूर्वे जो आ-  
 युष्यनो वध न पडयो होय तो ॥

॥ हिवे ये सात बोलां वंध पाडे नही ते कहे छे ॥

नरकनो आयुष्य (१) भवनपतीनो आयुष्य (२) वाणव्यतरनो  
 आयुष्य (३) ज्योतिपीनो आयुष्य (४) तिर्यचनो आयुष्य (५) स्त्री  
 वेदनो आयुष्य (६) नपुसक वेदनो आयुष्य (७) ए सात बोलां  
 आयुष्यनो वंध पाडे नही ते जीव समकितना आठ आचार अराधी  
 चतुर्विध सघनी परम हर्षसे भक्ती करतो थको जघन्य पहिले देव-  
 लोके उपजे ॥ उत्कृष्ट चारमे देवलोकें उपजे । पन्नवणानी साखे ॥  
 पूर्ण करमने जे करी व्रत पचखाण करी न सके । पण अनेक व-  
 र्पनी श्रमणोपासकनी प्रवर्जा पालक कहिये ॥ दशाश्रुतस्कंधे श्रावक  
 कहा छे ते माटे ॥ दरशन श्रावकने अवीरीय समदीठी कहिये ॥४॥

हिवे पांचमं देशधिरति गुणठाणं तेहना स्यु लक्षण ॥ इग्यारे  
 प्रकृतीने क्षयोप समावे ॥ सात वो पूर्व कही ते ॥ अने प्रत्याख्यानी  
 क्रोध (८) मान (९) माया (१०) लोभ (११) एव इग्यारे प्रकृतीने  
 क्षय करे तेहने क्षायक समकित कहिये ॥ अने इग्यारे प्रकृतीने का-  
 ईक हांके फाईक क्षय करे तेहने क्षयोपसम समकित कहिये ॥ पा-  
 चमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यधी क्षेत्रधि कालधि  
 भावधि नोकारसी आदि देइने छे मासी तप जाणे सरदेह परूपे

शक्ति प्रमाणें फरसे ॥ एक पञ्चखाणधि गाडिने १२-व्रत ॥ ११  
 श्रावकनी पडिमां आदरे जावत् संलेखणा सुधि अनशन करि आगधे ।  
 तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पूछता  
 हुवा । ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्री भगवते कष्टु ॥ ज-  
 घन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो १५ भवे मोक्ष जाय ॥ जघ-  
 न्य पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्कृष्टा १२ मे देवलोके उपजे । तेने  
 साधुना व्रतनि अपेक्षायें देशविरति कहिये ॥ पण परिणामधि अत्र-  
 तनी क्रिया उतरी गई छे ॥ अल्प इच्छा ॥ अल्प आरभ ॥ अल्प परि-  
 ग्रही ॥ सुशील । सुव्रति ॥ धर्मिष्ठ । धर्मव्रति । कल्प उग्रविहारी ।  
 महा सवेग विहारी ॥ उदारो ॥ वैराग्यवत ॥ एकांतआर्य ॥ सम्य-  
 ग्मार्गी ॥ सुसाधु । सुपात्र ॥ उत्तम । क्रियावादि । आस्तिक्य ।  
 आराधक । जैद तर्ग प्रधावक ॥ अरिहतना शिष्य वर्णव्या छे । गी-  
 तार्थ जाणे छे ॥ सिद्धांतनि शाख छे । श्रावकपणुं । एक भवमां  
 प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥

हिचे छठुं प्रमत्त सजति गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण ॥ १५ प्र-  
 कृतिने क्षयोपशमावे ते ११ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने पञ्चखाणाव-  
 रणीय क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एव  
 १५ प्रकृतिने क्षय करे तो १ क्षायिक समकित कहिये ॥ अने १५ प्र-  
 कृतिने दाके तो उपशम समकित कहिये ॥ अने कांइ दांके ने कांइ,  
 क्षय करे तो क्षयोपशम समकित कहिये ॥ तिवारे गौतम स्वामी हाथ  
 जोडी मान मोडी श्री भगवतने पूछता हुवा । ते जीवने स्यु गुण  
 निपनो । तिवारे श्री भगवते कष्टुं जे ॥ ते जीव द्रव्यधि क्षेत्रधि का-  
 लधि भावधि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसी आदि छे मासि  
 तप जाणे-सरदहे-परूपे-फरसे ॥ साधुपणुं एक भवमां नवसें वार  
 आवे । ते जीव जघन्य तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा १५ भवे

मोक्ष जाय ॥ आराधक जीव । जग्रन्व पहिठे देवलोके उपजे । उ-  
त्कृष्टा अनुत्तर त्रिमाने उपजे ॥ १७ भेदे सजम निर्मल पाछे ॥ १२  
भेदे तपस्या करे पण जोग चपल । कपाय वपल । वचन चपल । दृष्टि  
चपलताना अंश छे । तेणे करिने यत्रपि उत्तम अप्रमादि थका रहे छे ।  
तोपण प्रमाद रहे छे माटे प्रमादपणे करि ॥ तथा कृष्णादिकु लेशा ॥  
अशुभ जोग ॥ कोइक काले प्रणति प्रणमे छे माटे ॥ कपाय प्रकृष्ट  
मत्त थइ जाय छे ॥ तेहने प्रमत्त संजति गुणठाणु कहिये ॥ ६ ॥

सातसु अप्रमत्त संजति गुणठाणुं तेहनु स्यु लक्षण ॥ पांच प्रमाद  
छांटे । तिवारे सातमे गुणठाणे आवे । ते ॥ ५ ॥ प्रमादना नाम  
॥ गाथा ॥ म<sup>१</sup>द वि<sup>२</sup>सय क<sup>३</sup>साया । नि<sup>४</sup>हा रि<sup>५</sup>गहा पचमा भणिया ।  
ए<sup>६</sup> पच पमाया । जीवा पंडति ससारे ॥ १ ॥

ए ५ प्रमाद छांटे अने १६ प्रकृतिनें उजामावे ॥ १५ ॥ प्रकृति  
पूर्वे कहि ते अने सजलनो ज्ञोध । एवं १६ प्रकृतिनें क्षयोपशमावे ॥  
तेहने स्यु गुण निपनो ॥ से जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यधि क्षेत्रधि  
कालधि भावधि तथा नोकारसि आदि देइने छे मासी तप ध्यान  
जुगतपणे जाणे-सरदहे-परूपे-फरसे ॥ से जीव जग्रन्व । तेज भवे  
मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो तिजे भवे मोक्ष जाय ॥ ८ ॥ ते तो प्राये कल्पा-  
तीतनी थाय ॥ ध्यानने त्रिपे ॥ अनुष्ठानने त्रिपे । अप्रमत्त उत्त  
थका रहे छे । तथा शुभ छेश्यापणेन करिने न<sup>१</sup>दिने प्रमत्त कपाय  
जेहने तेहने अप्रमत्त संजति गुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥

आठमं नियट्टि गदर गुणठाणुं तेहनु स्यु लक्षण ॥ १७ प्रकृतिने  
क्षयोपशमावे ॥ १६ ॥ पूर्वे कहि ते अने सजलनो गदर । ५ ॥ १७ ॥  
प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडी मानमोडी ।  
श्री भगवतने पृठता हुवा । स्वामीनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ।

तिवारे श्री भगवंते कहु ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण ॥ जे कोई काले जीवने कोई दिने आव्युं नथि । ते श्रेणी जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि । कालथि । भावथि । नो-कारसी आदि देइ छे मासी तप जाणे-सरदहे-परुपे-फरसे । ते जीव । जघन्य । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टा तिजे भवे मोक्ष जाय । इहांथि श्रेणि २ करे । उपशम श्रेणि ॥ १ ॥ ने क्षपक श्रेणि ॥ २ ॥ उपशमश्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावे तो इग्यारमा गुणठाणा सुवि जाय ॥ पडिजाइ पण थाय । हायमान परिणाम पण परिणामे ॥ अने क्षपक श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमांथि निर्जरा करतो । नवमे दशमे गुणठाणे थइने वारमे गुणठाणे जाय । अपडि वाइज होय । वर्द्धमान परिणाम परिणामे । हिवे नियट्टि वादरनो अर्थ ते निवर्त्यो छे वादर कपायथि । वादर संपराय क्रियाथि । श्रेणिकखे । अभ्यंतर परिणामे । अव्यवसाय स्थिरथते वादर चपल-ताथि निवर्त्यो छे । माटे नियट्टि वादर गुणठाणुं कहिये । तथा दूजुं नांम । अपूर्व करण गुण ठाणुं पण कहिये ॥ स्या माटे जे ॥ कोई काले जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहंति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज क-रण ते ॥ पंडित वीर्यनुं आवरण क्षयकरण रूप करण परिणाम धार । वर्द्धनरूप श्रेणि करे ॥ तेहने अपूर्व करण गुणठाणुं कहिये ॥ ८ ॥

हिवे नवमु अनियट्टि वादर गुणठाणु तेहनुं स्युं लक्षण ॥ एरु विश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥ १७ प्रकृति पूर्वे रुहि ते अने सं-जलनि माया ॥ १ ॥ स्त्री वेद ॥ २ ॥ पुरुष वेद ॥ ३ ॥ नपुंसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ ति-वारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवंतने पृष्ठ-

ता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे भग-  
वते कष्ट । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देईने  
छमासी तप ॥ द्रव्यधि क्षेत्रधि कालधि भावधि निर्विकार अमायी ॥  
विषय निरवडापणे । जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य  
तेज भवे मोक्ष जाय । उत्कृष्टा तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियष्टि  
बादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्ये नथि अश मात्र हजि बादर सप-  
राय क्रिया रहि छे माटे अनियष्टि बादर गुणठाणु कहिये ॥ तथा  
आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गभीर छे ॥ ते अन्य पच  
संग्रहादिक ग्रथ तथा सिद्धांतधि समजवा ॥ ९ ॥ दशसु सूक्ष्म सपराय  
गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ २७ ॥ प्रकृतिने क्षयोप समावे ॥ २१ ॥  
प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अगति  
॥ ३ ॥ भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुर्गंठा ॥ ६ ॥ एवं ॥ २७ ॥  
प्रकृतिने क्षयोप समावे ॥ तिवारे गौतम स्वामी हाथ जोडी मानमोडी ॥  
श्री भगवतने पूजता हुवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ।  
तिवारे भगवते कष्ट । ते जीव ॥ द्रव्यधि क्षेत्रधि कालधि भावधि  
जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छेमासी तप निरभि-  
लाप निर्वेच्छक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अत्रिभ्रमपणे जाणे  
सरदहे परूपे फरसे ते जीव । जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय । उत्कृष्टा  
तीजे भवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म योडिक लगारेक पातलीसी सपराय  
क्रिया रहि छे तेहने सूक्ष्म सपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥

इग्यारसु उपशात मोह गुणठाणुं तेहनु स्युं लक्षण ॥ २८ ॥  
प्रकृतिने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कही ते । अने सज-  
लनो लोभ ॥ १ ॥ एव ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने  
उपशमावे-सर्वथा दांके । भस्म भारि प्रच्छन्न अग्निवत् । तिवारे  
गौतमस्वामी हाथ जोडी मान मोडी श्री भगवतने पूजता हुवा ।

स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्री भगवंते कहु ।  
 ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यधि क्षेत्रधि कालधि भावधि नोकारसी  
 आदि देइने छ मासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चाग्रिपणे ॥  
 जाणे-सरदहे-परुपे-फरसे । एहवामां जो काल करे तो । अनुत्तर  
 वीमानमा जाय पडि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोभनो  
 उदय थाय तो कपाय अग्नि प्रकटे पडि पडे दशमांथि पडे तो पहिला  
 गुणठाणा मुधि जाय । पण इग्यारमेंथी चढवूं तो नथि । उपशांत  
 ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि ओलव्यानिपरे टाल्यो  
 नही ढांक्थो छे माटे उपशांत मोह गुणठाणु कहिये ॥ ११ ॥ बारसुं  
 क्षीणमोह गुणठाणु तेहजु स्युं लक्षण जे ॥ २८ ॥ प्रकृतिने सर्वथा  
 खपावे । क्षयक श्रेणि । क्षायकभाव । क्षायक समकित ॥ क्षायक  
 जथाख्यात चारित्र ॥ करणसत्य । जोग सत्य । भावसत्य अमायी  
 अकपायी वीतरागी । भाव निर्ग्रथ । संपूर्ण संबुड ॥ सपूर्ण भाविता-  
 त्मा ॥ महा तपस्वी । महा सुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी  
 ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्च रहे ।  
 ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्भव छे नहि । छेहले समये पांच  
 ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पांच विध अंतराय क्षयकर-  
 णोत्रमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षय करि । केवल  
 ज्योति प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कर्यो छे मोह सर्वथा जे गुणठाणे  
 तेहने क्षीण मोह गुणठाणुं कहिये ॥ १२ ॥

तेरगु सजोगि केवलि गुणठाणुं तेहजुं स्युं लक्षण । दश बोल  
 सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥२॥ सलेशी  
 ॥ ३ ॥ शुकल लेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यात चारित्र ॥ ५ ॥ क्षायक  
 समकित ॥ ६ ॥ पडित वीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवल  
 ज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल सहित ॥

जयन्य । अतर्मुहूर्त । उत्कृष्टा देशे उणी पूर्व कोडि सुधि ॥ विचरे  
 यणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करीने ॥ दूजा तिजा शुक्ल  
 ध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे गुणठाणे जाय ॥ सजोगी ते शुभ  
 मन वचन कायाना जोग सहित छे पाहाज्यचलोप करण छे । गम-  
 नागमनादिक चेष्टा शुभसहित छे । केवल ज्ञान केवल दर्शन । उप-  
 योग समयातर । अविडिन्नपणे शुद्ध प्रणये शाटे सजोगि केवलि  
 गुणठाणुं कहिये ॥ १३ ॥

द्विचे चउदमु अजोगि केवलि गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ शुक्र  
 ध्याननो चोथो पायो समुत्तिन्न क्रिय अनतर अप्रतिपाती । अनिवृति  
 ध्याता मन जोग रुधि वचन जोग रुधि कायजोग रुधि आन प्राण-  
 निरोध करि रूपातीत परम शुक्लध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोल सहित  
 विचरे । तेरमे ॥ १० बोल कदा तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी  
 ॥ २ ॥ शुक्ललेशी ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जोने शेष ॥ ७ बोल सहित  
 सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनिपरे । ञडोल । अचल । स्थिर अवस्थाने  
 पागे शैलेशी पणे रहि षच लघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष  
 वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥  
 कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पागे ॥ दारि उदारिक । तेजस कार्मण ।  
 सर्वथा छांदिने समश्रेणि प्रज्जुगति अन्य आकाश प्रदेशानावगाह  
 तो अणफर सतो । एक समय मात्रमां । उद्ध गति । अ-  
 विग्रह गतिये तिहा जाय । एरडवीज वधन मुक्तवत् । निर्लेप  
 सुंजिवत् । कोटड मुक्त वाणवत् ॥ इधनवन्दि मुक्त धूम्रवत् । तिहां  
 सिद्धक्षेत्रे जे सान्मारोपयोगे सिद्ध थाय । बुद्ध थाय ॥ पारांगत  
 थाय । परंपरगत थाय । सकल कार्य अर्थ साधि ॥ कृतकृतार्थ ।  
 निद्रितार्थ । अतुल सुखसागर निर्मग्न ॥ सादि अंतत भागे सिद्ध



चक्रवर्तसु दृणो ऊंचो हुवे ६ श्री देवी चक्रवर्तसु ४ आंगुल नीची हुवे (७)

॥ इति अवग्गहणाद्वार ॥ ३ ॥

हिवे उपजणद्वार कहे छे ॥ चक्र रतन ( १ ) छत्र रतन ( २ ) धरम रतन ( ३ ) दंड रतन ( ४ ) ए चार आयुधसालामे उपजे खड्ग रतन ( ५ ) मणि ( ६ ) कागणी रतन ( ७ ) ए ( ३ ) लक्ष्मीना भंडारमें उपजे सेन्यापति ( १ ) गाथापती ( २ ) बड्डई [ ३ ] प्रोहित ( ४ ) ए ४ रतन निज नगरमे उपजे अस्व रतन ( ५ ) गज रतन [ ६ ] ए दोय बेताद्वय परवतनी मुलमे उपजे श्री देवी विग्राधरोनी श्रेणीमे उपजे ७ ॥

॥ इति उपजणद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हिवे आगतद्वार कहे छे ॥ पेहेली नारकीना नीकल्या १६ पदवी पामे ७ एकेंद्री रतन टल्या ॥ १ ॥ दूजी नारकीना नीकल्या १५ पदवी पामे १६ मांसु चक्रवर्त टल्या ॥ २ ॥ तीजी नरकना नीकल्या १३ पदवी पामे १५ मांसु बलदेव ( १ ) वासुदेव ( २ ) ए टली ॥ ३ ॥ चोयी नारकीना नीकल्या १२ पदवी पामे १३ मांसु १ तीर्थकर टल्या ॥ ४ ॥ पांचमी नारकीना नीकल्या ११ पदवी पामे १२ मांसु १ केवलिरि टली ॥ ५ ॥ छठी ना १० पदवी पामे ११ मांसु १ साधरी पदवी टली नारका नीकल्या ३ पदवी पामे १२ १ ( १ ) भवनपती ( १ ) १० नीकल्या २१ पदवी १० १ दोय पदवी टली ॥ ८ १ मेपीना नीकल्या १८ १ टली १० ॥ ३ १

मांथी ७ एकेंद्री रतन वरज्या (९-१०) पेला वीजा देवलोकना नी-  
कल्या २३ पदवी पांमे ( ११ ) तीजा देवलोकसू छेने आठमा  
देवलोक ताइरा नीकल्या १६ पदवी पांमे ७ एकेंद्री रतन टल्या  
( १२ ) नवमा देवलोकसू छेने ९ त्रैवेग ताइरा नीकल्या ( १४ )  
पदवी पांमे १६ मांसू हाथी (१) घोडो (२) ए २ टली (१३) पांच  
अणुत्तर विमानथी निकल्या ८ पदवी पांमे ते ९ मोटकी पदवीपासू  
१ वासुदेवरी पदवी टळी (१४) पृथिवी पाणी वनस्पति सनी तिर्यच  
सनी मनुष्यना निकल्या ११ पदवी पांमे तीर्थकर (१) चक्रवर्त (२)  
बलदेव (३) वासुदेव (४) ए ४ टली (१५) तेउ (१) वाउना  
नीकल्या ९ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन हाथी (१) घोडो (२) ॥  
९ पांमे (१६) बेंद्री तेंद्री चोइद्री असनी तिर्यच असनी मनुष्यना नीक-  
ल्या पदवी १८ पांमे २३ मांसू पांच पदवी मध्य टली (१७)  
सिद्धमि पदवी १ समदृष्टीनी पावे १८ ॥

॥ इति आगतद्वार ॥ ५ ॥

दिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पेहेले नारकीसू छेने चौथी नारकी  
ताई ११ पदवीको धणी जाय ७ एकेंद्री रतन चक्रवर्त (१) वासुदेव  
(२) मडलीक (३) समदृष्टी (४) एव ११ (१) पाचमी छट्टी नार-  
कीमे ९ पदवीरो धणी जाय ११ मासू हाथी (१) घोडो (२) ए २  
टल्या (२) सातमी नारकीमे सात पदवीरो धणी जाय ९ मासू श्री  
देवी (१) समदृष्टी (२) ए २ टल्या (३) शुभनपती वाणव्यंतर  
ज्योतिपी इणमे १० पदवीको धणी जाय सात पचेंद्री रतनमांसू एक  
श्री देवी टनी ६ तो पचेंद्री रतन साधु (१) मडलीक राजा (२)  
श्रावक (३) समदृष्टी (४) एव १० पदवीको धणी जाय (४) [पर मूल  
गुण विराधक जाय ] पेहेला दूजा देवलोकमाहे १० पदवीरो धणी  
जाय पर उत्तर गुण विराधक साधु श्रावक जाय आराधक पिण

जाय (५) तीजा देवलोकसंलेने आठमा देवलोक ताई एहि १० पदवीको  
 धणी जाय पर अरिधरु जाय (६) नवमां देवलोकसंलेने १२ मां देवलोक  
 साई ८ पदवीको धणी जाय एही १० पदवी मांसु हाथी (१) घोडो (२) ए  
 २ टल्या (७) नव ग्रीवेक ५ अणु तर विमानमे २ पदवीको धणी जाय  
 साधु समदृष्टी (८) ५ थावर असन्नी मनुष्यमे १४ पदवीको धणी जाय ७  
 एकेंद्री रतन ६ पंचेंद्री रतन ( १ श्रीदेवी टली) मडलीक राजा एव  
 १४ (९) ३ विकलेंद्री गर्भेज तिर्यच मनुष्य असन्नी तिर्यचमे १५  
 पदवीको धणी जाय सात एकेंद्री रतन ६ पंचेंद्री रतन मडलीक  
 राजा समदृष्टी एवं १५ पदवीको धणी जाय (१००)

॥ इति गतिद्वार ॥ ६ ॥

हिवे पदवी पावणद्वार कहे छे ॥ तीर्थरुमे ६ पदवी पावे मंड-  
 लीक राजानी (१) चक्रवर्तनी (२) तीर्थकरनी (३) साधुनी (४)  
 समदृष्टनी (५) केवलीनी (६) [१] चक्रवर्तमे एहीज ६ पदवी पावे  
 (२) बलदेवमे ५ पदवी पावे मडलीरुनी [१] बलदेवनी (२) साधुनी  
 (३) समदृष्टनी [४] केवलीनी (५) एवं ५ पावे (३) वासुदेवमे ३  
 पदवी पावे मंडलीरुनी (१) वासुदेवनी (२) समदृष्टनी (३) एव ३  
 (४) केवलीमें तथा साधुमे ८ पदवी पावे नव मोटकी पदवीमेसूं १  
 वासुदेवनी टली (५-६) श्रावकमे ३ पदवी पावे १ श्रावकनी १  
 समदृष्टनी १ मडलीरुनी एवं (३) (७) मंडलीरुमे ६ पदवी पावे  
 मडलीरुनी (१) साधुनी (२) श्रावकनी (३) समदृष्टनी [४] केव-  
 लीनी (५) वासुदेवनी एव ६ पावे (८) समदृष्टिमे १५ पदवी पावे  
 ९ मोटकी ६ पंचेंद्री रतन १ श्री देवी टली (९)

॥ इति पदवी पावणद्वार ॥ ७ ॥

हिवे सेवणद्वार कहे छे ॥ ७ एकेंद्री रतन ७ पंचेंद्री रतन एवं १४ रतननी एक एक हजार देवता सेवा करे (१) तीर्थकरनी ६४ इंद्र असख्याता देवता सेवा करे (२) चक्रवर्तनी २ हजार तो दोय भुजाना ओर १४ रतनना १४ हजार एवं (१६) सोळे हजार देवता सेवा करे (३) बलदेवनी ४ हजार देवता सेवा करे (५) केवलीनी अनेक देवता सेवा करे (६) साधु श्रावक समदृष्टी ए ३ नी एक एक देवता सेवा करे (७)

॥ इति सेवनद्वार ॥ ८ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ पहलो आरो ४ कोडा कोड सागररो दूजो ३ कोडाकोड सागरनो ए दोय आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (१) तीजो आरो दोय कोडाकोड सागरनो पदवी २१ पावे बलदेवनी वासुदेवनी ए २ टली (२) चोथो आरो १ कोडाकोड सागरनो जीणमे ४२ हजार बरस गये वाट पदवी पावे २३ (३) पांचमे आरामे ५ पदवी पावे [४] छहा आरामे पदवी नथी ए तो अवसरपणी काल आश्री कही (६) अत्र उक्त. सरपणी काल आश्री कहे छे ॥ पेला आरामे पदवी नथी (२) दूजा आरामे पदवी पावे १ समदृष्टीनी (३) तीजा आरामां पदवी २१ पावे (४) चोथा आरामां पदवी २३ पावे (५) पांचमां आरामे ५ पदवी पावे (६) छहा आरामे १ पदवी पावे समदृष्टिनी (६)

॥ इति कालद्वार ॥ ९ ॥

हिवे दंडकद्वार कहे छे ॥ एक दंडक सांतुनारकीनो दस भवन-पतीना दस दंडक ओर ज्योतीपी वीमानीक देवताना दोय दंडक एव १४ में एक पदवी समदृष्टिनी पावे (१) पृथिवीकायमे पदवी पावे सात एकेंद्री रतन (२) ४ धावर असत्री मनुष्यमे पदवी नथी (३)

विकलेद्री असन्नी तिर्यच अपरज्याप्तमै पदवी १ पावे समदिष्टिनी (४) सन्नि तिर्यचमै पदवी ४ पावे हाथी (१) घोडो (२) श्रावक (३) समदिष्टि एवं ४ (५) अढीद्वीपनी वारला तिर्यचमे २ पदवी पावे श्रावक (९) समदृष्टी [२] एव २ (६) असन्नीमे पदवी ८ पावे सात तो एकेंद्री रतन एक समदृष्टि एव ८ (७) सन्नीमाहें १६ पदवी पावे (७) एकेंद्री रतन टल्या (८) मनुष्यमै १६ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन टल्या (९)

॥ इति दंडकद्वार ॥ १० ॥

हिवे गुणठाणाद्वार कहे छे ॥ पेहेला गुणठाणामे १४ पदवी पावे ७ एकेंद्री रतन [६ पंचेंद्री रतन [ १ श्री देवी टली ] मंडलीक राजा एवं (१४) (१) दूजे गुणठाणामे १ पदवी पावे समदिष्टिनी (२) तीजा गुणठाणे २ पदवी पावे श्री देवी मंडलीक एवं २ (३) चौथा गुणठाणामे ६ पदवी पावे तीर्थकर ( १ ) चक्रवर्त (२) बलदेव (३) घासुदेव [४] समदृष्टि [५] मंडलीक (६) [४] पांचमे गुणठाणामे ३ पदवी पावे [१] समदिष्टिनी [२] श्रावकनी ( ३ ) मंडलीकनी एवं १ (५) छठा गुणठाणासुं लेने १० गुणठाणा ताई पदवी २ पावे साधुनी (१) समदृष्टिनी ए २ पावे [६] ११ मा १२ मां गुणठाणामे १ पदवी पावे [ ७ ] १३ मा १४ मा गुणठाणामे ३ पदवी पावे [ १ ] तीर्थकरनी (२) केवलीनी (३) साधुनी ए ३ [८]

॥ इति गुणठाणाद्वार ॥ ११ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ ह्वी वेदमां पदवी ४ पावे श्री देवी (१) श्रावकनी (२) साधुनी (३) समदृष्टि ए (४) ( १ ) एक मनुष्यणीमे ६ पदवी पावे ( १ ) श्री देवी (२) साध (३) श्रावक (४) समदृष्टि (५) तीर्थकर (६) केवली ए छे [ २ ] ॥ समचे पुरुष वेदमां पदवी

१३ पावे २३ पदवीमासू ७ एकेंद्री रतन ८ श्री देवी ९ तीर्थकर  
 १० केवली ए १० टली (३) समचे मनुष्यमे पदवी ११ पावे  
 ४ पचेंद्री रतन ९ मोटकी मांसूं तीर्थकर (१) केवली २ ए २ टली  
 (४) मनुष्य पुरुषमां पदवी १३ पावे तीर्थकर केवली ए २ वधी ११  
 तेहीज, एव १३ (५) जन्म नपुंसकमे २ पदवी पावे १ श्रावक २  
 समदृष्टि ए (६) कृत नपुंसकमे ४ पावे (१) श्रावकनी (२) साधुनी  
 (३) समदृष्टिनी (४) केवली ए ४ पावे (७) अवेदीमां ४ पावे [१]  
 समदृष्टी (२) साधु (३) तीर्थकर (४) केवली ए ४ पावे [८] अमर  
 पदवी १ बलदेवनी इण पदवीमे मरे नही (९)

॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ भर्तक्षेत्रमा जघन्य १ पदवी पावे सम-  
 दृष्टिनी (१) मज्जम भरतक्षेत्रमे ८ पदवी पावे चक्रवर्त टल्यो [२]  
 भरतक्षेत्रमे उचकृष्टी २१ पदवी पावे ( १ ) बलदेव ( २ ) वासुदेव  
 दौष ए टली (३)

॥ इति क्षेत्रद्वार ॥ १३ ॥

हिवे लोकद्वार कहे छे ॥ उचा लोकमां ५ पदवी पावे [ १ ]  
 ; केवली (२) साधुनी [३] श्रावकनी [४] समदृष्टिनी (५) मंडलीक  
 राजानी ए ( ५ ) पावे [ १ ] नीचा लोकमे २३ पावे (०) व्रीछा  
 लोकमे २३ पावे ( ३ )

॥ इति लोकद्वार ॥ १४ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ स्वर्लिंगीमां ४ पदवी पावे (१) तीर्थ-  
 कर (२) साधुनी (३) समदृष्टी (४) केवली ए ४ पावे (१) अन्य  
 लिंगीमां ४ पावे (१) समदृष्टी (२) श्रावक (३) साधुनी (४) केवली  
 ए ४ पावे (२) ग्रह लिंगीमे १३ पावे १ सेन्यापति (२) गाथा

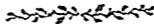
च्यार गतिमां पंचेन्द्रिय आश्री विरहकाल जघन्य [१] समयनो ॥  
 उत्कृष्टो (१२) मुहुर्त्तनो ॥ सर्व इद्र स्थानकनो विरह जघन्य (१)  
 समयनो उत्कृष्टो (६) मासनो ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे विरह  
 द्वाराख्यं नवम प्रकरणम् ॥





## ॥ प्रकरण दसवा-रूपी अरूपी द्वार ॥



(१८) पापस्थानक (८) कर्म (१) मन (१) वचन जोग [१] कार्मण शरीर ए (२९) मे १६ बोल पावे ते किसान ५ वरण (२) गध [५] रस (४) फरस (१) उनो (२) ठाढो (३) चीगटो (४) लुखो ए (२९) चोपरसि जाणवा ॥ हिवे जीवसजुक्तपुद्गल अठफरसी कहे छे (४) शरीर (६) छेलेस्या (१) घणोदधि (१) घणवाय [१] तणवाय (१) कायारो जोग ए १४ बोलमें वीस बोल पावे ते कहे छे ५ वरण (५) रस (२) गध (८) फरस ए २० बोल पावो ॥ हिवे जीवरहित पुद्गलना भेद (२) पावे अनत प्रदेसी सीक्षवध (१) सुपम (२) वादर हिवे अनंत प्रदेसी सूक्ष्म वय ते किसान (५) वरण (५) रस (२) गंध (४) फरस उनो ठाढो लुपो चीगटो ए १६ बोल ॥ हिवे अनत प्रदेसी वादर पंध ते किसान (२०) बोल उपर मडीयाते हिवखधना प्रदेशमे बोल जघन्य पावे ५ उत्कृष्टा २० बोठ पावे हिवे (१) प्रदेसीया प्रमाणवाला पुद्गलमे पावे (१) वरण (१) रस (२) बोल सित्तराते किसान चीगटो लुपो तथा (२) बोल उसणारा लुपो चीगटो ॥ रूपी पुद्गलना बोल सपूर्ण ॥ हिवे अरूपीना बोल कहे छे ॥ जीवनीज गुणना बोल ॥ जीवनी कलक (१) जीवास्तीकाय ससारी (२) जिनसिध ॥ हिवे ससारी जीवना भेद



कहे छे (६) भावलेस्या प्रवर्तमान (३) दृष्टि सरदहणारूप (१२) उपीयोग जाणवा रूप (४) सगन्या (२४)- दडकमाहे सगन्या समभाव वर्ते ॥ जीयना प्रणमा (१८) पापसुं निवर्तवो (४) बोल कहे छे (१) उठाण कहता उभा थायवो (२) कर्म रुहता गमण कीरीया रुवो; (३) बलते कहता शरीरनो प्रान्तर (४) वीर्य कहतां जीवनो उछाव हीमर्त करे वीर्यना दोय भेद (१) सकर्ण ते ससरी जीवमे पावे [२] अर्कण ते सिद्धांमे पावे पुरसाकार ते कहता अभीमान करने सगलांना काम करे (४) बुद्धिना नाम (१) उतपातिया (२) वीनीया (३) ऋमीया (४) परणामीया (४) मतिना बोल कहे छे ॥ उग्र रुहेतां हेलो पाढे ते सुणे (२) इहां कहतां हेलो कीणने दीनो चिंतवे (३) उवाइ कहतां ओलख्यो हेलो फलाणाने दीनो (४) धारणा समाचार सुणीने हीये धारलीना ए (४) बोल अरूपी अजीव (१) धरमास्ती (२) अधरमास्ती (३) अकासास्ती (४) कालास्ती ए (४) जीवसजुक्त पुद्गल ए (२९) चोपरसी ए (१४) अठपरसी (१) पुद्गल चोपरसी (अथवा) अठपरसी जीवरहित पुद्गलमे (१६) सूक्ष्ममे (२०) वादरमे एक ॥ प्रमाणुमे जघन्य (५) बोल पावे उत्कृष्टा (२०) बोल पावे ॥

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे रूपी  
अरूपी द्वाराख्यं दशम प्रकरणम् ॥



# प्रकरण इग्यारवा-सो बोलनो वासठियो॥

## गाथा.

<sup>१</sup> जीव <sup>२</sup> गर्ड <sup>३</sup> इंदीय <sup>४</sup> काए <sup>५</sup> जोए <sup>६</sup> बेय <sup>७</sup> कसाय <sup>८</sup> लेणाय <sup>९</sup> समत्त <sup>१०</sup> णाय  
<sup>१०</sup> दसणे <sup>११</sup> सजए <sup>१२</sup> उव <sup>१३</sup> उग्ग <sup>१४</sup> अहारे (१) <sup>१५</sup> भासग्ग <sup>१६</sup> परित <sup>१७</sup> पज्जते <sup>१८</sup> सुहुम  
<sup>१९</sup> सन्नी <sup>२०</sup> भवत्थ <sup>२१</sup> चरिमेय <sup>२२</sup> जीव <sup>२३</sup> खेते <sup>२४</sup> वये <sup>२५</sup> पोग्गले <sup>२६</sup> महाड्डए <sup>२७</sup> चेव (२)

जीवका रण जोग उप लेखा  
 भेद ठागा योग योग

१	समुच्चै जोयम	१४	१४	१५	१२	६	सवेसु थोही मनु यनी १
२	तारकीमे	३	४	११	९	३	ते थनी मनु य अम यात गुणा २
३	तिर्यचम	१४	५	१३	९	६	नेरिया असयात गुणा ३
४	तिर्यचणीम	२	५	१३	९	६	तिर्यचणी अमयात गुणा ४
५	मनुष्यमै	३	१४	१५	१२	६	देवता असयात गुणा ५
६	मनुष्यगीमै	२	१४	१२	१०	६	देवागना सत्याग गुणी ६
७	देवतामै	३	४	११	९	६	मिद्ध भगवान अनत गुणा ७
८	देवागनामै	२	४	११	९	४	तिर्यच अनत गुणा ८
९	मिद्ध भगवानमै	०	०	०	२	०	समुच्चय जीव त्रिवे सादिया इति जीवद्वार ॥ १ ॥
१०	महदियामै	१४	१२	१५	१०	१	सवेसु थोटा पवेदिया २
११	एकेदियामै	४	९	१०	३	३	तथेको चौरिदिया विनेसादिया ३

१२	बेहद्वियामें	२	२	४	५	३	तेहद्विया विले साहिया ३
१३	तेहद्वियामें	२	२	४	५	३	बेहद्विया विले साहिया ४
१४	अनेद्वियामें	२	२	४	६	३	अनेद्विया अनतगुणा ५
१५	एकेद्वियामें	४	१२	१५	१०	६	एकेद्विया अनतगुणा ६
१६	अनेद्वियामें	१	२	७	२	१	सहद्विया विलेसाहिया ७ इति द्वियद्वार ॥ २ ॥
१७	सकाहियामें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोटा असकाहिया १
१८	पृथ्वीकाहियामें	४	१	३	३	४	तेउकाहिया असरयात गुणा २
१९	अपकाहियामें	४	१	३	३	४	पृथ्वीकाहिया विलेसाहिया ३
२०	तेउकाहियामें	४	१	३	३	३	अपकाहिया विलेसाहिया ४
२१	वाउकाहियामें	४	१	३	३	३	वाउकाहिया विलेसाहिया ५
२२	घनस्पति काहियामें	४	१	३	३	४	अकाहिया अनतगुणा ६
२३	अस काहियामें	१०	१४	१५	१२	६	घनस्पति काहिया अनतगुणा ७
२४	अकाहियामें	०	०	०	२	०	अकाहिया विलेसाहिया ८ इति कायद्वार ॥ ३ ॥
२५	सजोगीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसू थोटा मन जोगी १
२६	मन जोगीमें	१	१३	१४	१२	६	वचन जोगी असरयातगुणा २
२७	वचन जोगीमें	५	१३	१४	१२	६	अजोगी अनतगुणा ३
२८	काय जोगीमें	१४	१३	१५	१२	६	कायजोगी अनतगुणा ४
२९	अजोगीमें	१	१	०	२	०	सजोगी विलेसाहिया ५ इति जोगद्वार ॥ ४ ॥
३०	सवेदीमें	१४	०	१५	१०	६	सर्वसू थोटा पुरुषवेदी १

३१	स्त्री वेदीमें	२	९	१३	१०	६	स्त्री वेदी सख्यात गुणी २
३२	पुरुष वेदीमें	२	९	१५	१०	६	अवेदी अनंत गुणा ३
३३	नपुसक वेदीमें	१४	९	१५	१०	६	नपुसक वेदी अनंत गुणा ४
३४	अवेदीमें	१	५	११	९	१	सवेदी विसेसाहिया ५ इति वेदीदार ॥ ५ ॥
३५	सकपाईमें	१४	१०	१५	१०	६	सर्वसू थोडा अकपाई १
३६	क्रोध कपाईमें	१४	९	१५	१०	६	ते थकि मान कपाई अनत गुणा २
३७	मान कपाईमें	१२	९	१५	१०	६	क्रोध कपाई विसेसाहिया ३
३८	माया कपाईमें	१४	९	१५	१०	६	माया कपाई विसेसाहिया ४
३९	लोभ कपाईमें	१४	१०	१५	१०	६	लोभ कपाई विसेसाहिया ५
४०	अकपाईमें	१	४	११	९	१	सकपाई विसेसाहिया ६ इति कपायदार ॥ ६ ॥
४१	सलेशीमें	१४	१३	१५	१२	६	सर्वसू थोडा सुकलेशी १
४२	कृष्ण लेशीमें	१४	६	१३	९	१	पद्मलेशी असख्यात गुणा २
४३	नील लेशीमें	१४	६	१३	९	१	तेजूलेशी असख्यात गुणा ३
४४	कापोत लेशीमें	१४	६	१३	९	१	अलेशी अनंत गुणा ४
४५	तेजु लेशीमें	३	७	१५	१०	१	कापोतलेशी अनंत गुणा ५
४६	पद्म लेशीमें	२	७	१५	१०	१	नीललेशी विसेसाहिया ६
४७	सुकल लेशीमें	२	१३	१५	१२	१	कृष्णलेशी विसेसाहिया ७
४८	अलेशीमें	१	१	०	२	०	सलेशी विसेसाहिया ८ इति लेशादार ॥ ७ ॥
४९	सन्नागीमें	६	१२	१५	९	६	सर्वसू थोडा मनपर्यवनागी १

५०	मति नागीमें	६	१०	१५	७	६	अवधि नागी असत्घात गुणा २
५१	श्रुत नागीमें	६	१०	१५	७	६	मति नागी श्रुत नागी माहो माहीतुहा विसे साहिया ३-४
५२	अवधि नागीमें	२	१०	१५	७	६	विभग अन्नागी असंख्यात गुणा ५
५३	मन पर्यंत नागीमें	१	७	१४	७	२	केवलनागी अनंतगुणा ६
५४	केवल नागीमें	१	२	७	७	१	सन्नागी विसे साहिया ७
५५	मति अन्नागीमें	१२	७	१३	६	६	शति अन्नागी रत अन्नागी माहोमाहीतुहा अनंतगुणा ८-९
५६	श्रुत अन्नागीमें	१४	२	१२	६	२	
५७	विभग अन्नागीमें	२	७	१३	६		इति नाग द्वार ॥ ८ ॥
५८	सम्यक्दृष्टीमें	६	१२	१५	७	६	सर्वभू भाग सास्वादान सम द्वितीया १
५९	मिथ्यादृष्टीमें	१०	५	१३	६	६	पराशम समकृती असायात गुणा २
६०	समा मिथ्या दृष्टीमें	११	१	१०	६	६	समा मिथ्या दृष्टी सत्यात गुणा ३
६१	सांख्यदान समकृतमें	६	१	१३	६	६	वेदक
६२	उपसम समकृतमें	७	८	१५	७	६	शयोपसम समकृती माहोमाही तुहा सत्यात गुणा ४-५
६३	वेदक समकृतमें	१२	४	१५	७	६	शायक समकृती असात गुणा मिथ्या दृष्टी अनंत गुणा ७
६४	शयोपसम समकृतमें	२	४	१५	७	६	सम्यक् दृष्टी विसेसा हिया ८
६५	क्षायक संगतिमें	७	११	१५	९	६	इति समकृत द्वार ॥ ९ ॥
६६	चतु दरमगमें	६	१०	१३	१०	६	सर्वसू थोटा अवधि दर्शनी १
६७	अचतु दरमगमें	१०	१२	१५	१०	६	चतु दर्शनी असत्घात गुणा २

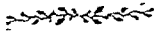
८	अग्रधि दर्शनमे	६	१२	१४	१०	६	केवल दर्शनी अनत गुणा ३
९	केवल दर्शनमे	१४	१२	१५	१०	६	अचपु दर्शनी अनत गुणा ४ इति दर्शन द्वार ॥ १० ॥
१०	समुच्चे सनतीमे	१	०	१५	९	६	सर्वमू थोटा सूक्ष्म सपरायना धगी १ परिहार विसुद्धिना
११	सामाहक छेडोपस्थाप नी चारित्रमे	१	४	१४	७	६	वगी सत्यात गुणा २ यथा स्यातना धगी सत्यात गुणा ३
१२	परिहार विसुद्धी चा रितमे	८	२	९	७	१	छेडोपस्थापनी चारितना धगी सत्यात गुणा ४ सामाहक
१३	सूक्ष्म सपराय चारि त्रमे	१	१	९	७	३	चारितना धगी सत्यात गुणा ५ सजती विले साहिया
१४	यथा स्यात चारित्रमे	१	४	११	९	१	६ सजना सजती असत्यात गुणा ७ नो सजतीनो अस
१५	सत्यतीमे	०	४	१३	९	६	सजतीनो सजता सजती अनत गुणा ८
१६	सजता सत्यतीमे	१	१	१२	६	६	असजती अनत गुणा ९
१७	नो सजतीनो असजती नो नाग सजतीमे	०	०	०	२	०	इति सनयद्वार ॥ ११ ॥
१८	साकार वडत्तामे	१४	१४	१५	१२	६	सर्वमू थोटा अनाकार वडत्ता १ साकार वडत्ता सत्यात गुणा २
१९	अनाकार वडत्तामे	१४	१३	१५	१२	६	इति उपयोग द्वार ॥ १२ ॥
२०	आहारिकमे	१४	१	१२	१२	६	सर्वमू थोटा अनाहारीक १ अहारीक असत्यात गुणा २
२१	अनाहारिकमे	८	५	११	१०	६	इति आहारीक द्वार ॥ १३ ॥
२२	भासकमे	५	१३	१२	१२	६	सर्वमू थोटा भासक १ अभासक अत गुणा २
२३	अभासकमे	१०	५	५	११	६	इति भासक द्वार ॥ १४ ॥
२४	परतमे	१४	१४	१५	१२	६	सर्वमू थोटा परत १
२५	अपरतमे	१४	१	१३	६	६	नोपरतनो अपरत अनत गुणा २

८६	नोपरतनो अपरतमें	०	०	०	२	०	अपरत अनत गुणा ३ इति परतद्वार ॥ १० ॥
८७	पर्जासामें	७	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा नोपर्जासानो अपर्जासा १
८८	अपर्जासामें	७	३	५	९	६	अपर्जासा अमत्तगुणा २ पर्जासा सत्पयात्त गुणा ३
८९	नोपर्जासानो अपर्जासामें	०	०	०	२	०	इति पर्जासद्वार ॥ १६ ॥
९०	सूक्ष्ममें	२	१	३	३	३	सर्वसू थोडा नोसूक्ष्मनोपादर १ पादर अनतगुणा २
९१	बादरमें	१२	१४	१५	१२	६	सूक्ष्म अत्तरयात्त गुणा ३
९२	नोसूक्ष्मनो बादरमें	०	०	०	२	०	इति सूक्ष्मद्वार ॥ १७ ॥
९३	सन्नीमें	२	१२	१५	१०	६	सर्वसू थोडा तो सन्नी १ नो सन्नी असन्नी अनतगुणा २
९४	असन्नीमें	१२	२	६	६	४	असन्नी अनतगुणा ३
९५	नोसन्नीनो असन्नीमें	१	२	७	२	१	इति सन्नीद्वार ॥ १८ ॥
९६	अभ्यमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा अभ्य १ नोअभ्यनो अभ्य अनतगुणा २
९७	अअभ्यमें	१४	१	१३	६	६	अभ्य अनतगुणा ३
९८	नोअभ्यनो अअभ्यमें	०	०	०	२	०	इति अभ्यद्वार ॥ १० ॥
९९	अचरमें	१४	१४	१५	१२	६	सर्वसू थोडा अचरम १ अचरम अनतगुणा २
१००	अअचरमें	१४	१	१३	८	६	इति अचरमद्वार ॥ २० ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे शत  
संज्ञाख्यं एकादश प्रकरणम् ॥



## प्रकरण बारवा-९८ बोलनो वासठीयो.



हिये पञ्जणाजी सूत्रके तीजा पदणे अनुसारें ९८ बोल कहे छे. ॥

१	सर्वसू धोडा गर्भेज मनुष्यमे	२	१४	१५	१०	६
२	मनुष्यनी सख्याद्वगामे	२	१४	१३	१२	६
३	षाडर तेवडाहया अयाप्ता असख्यात गु०	१	१	१	३	३
४	पाँच अणुत्तर विमानवासी देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	६	१
५	नवमीवेकका वपरली त्रिकका देवता सख्यात गु	२	३	११	९	१
६	नवमीवेकका विषली त्रिकका देवता संख्यातगुणा०	२	३	११	९	१
७	नवमीवेकका नीचली त्रिकका देवता सख्यातगु०	२	३	११	९	१
८	बारमा देवलोकका देवता संख्याद्वगामे	२	४	११	९	१
९	इग्यारमा देवलोकका देवता सख्यात गुणामे	२	६	११	९	१
१०	बसमा देवलोकका देवता सख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
११	नवमा देवलोकका देवता सख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१२	सातमी नरकना नेरीया असख्यात गुणामे	२	४	११	९	१



१३	छट्ठी नरकना नेरीया असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१४	आठमा देवलोकका देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१५	सातमा देवलोकका देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१६	पाँचमी नरकना नेरीया असख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
१७	छट्ठा देवलोकना देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१८	चौथी नरकना नेरीया असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
१९	पाँचमा देवलोकना देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२०	तीजी नरकना नेरीया असख्यातगुणामे	२	४	११	९	२
२१	षोया देवलोकना देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२२	तीजा देवलोकना देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२३	दूजी नरकना नेरीया असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२४	समूर्ष्टम् मनुष्य असख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
२५	दजा देवलोकना देवता असख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२६	दूजा देवलोकनी देवी असख्यातगुणीमे	२	४	११	९	१
२७	पेछा देवलोकना देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
२८	पेछा देवलोकनी देवी सरयातगुणीमे	२	४	११	९	१
२९	भवनपती देवता असख्यातगुणामे	३	४	११	९	४
३०	भवनपतीनी देवी सख्यातगुणीमे	२	४	११	९	४

३१	पेली नरकना मेरिया असंख्यातगुणामे	३	४	११	९	१
३२	खेघर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३३	खेघरणी संख्यातगुणीमे	२	५	१३	९	६
३४	स्थलघर पुरुष संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
३५	स्थलघरणी संख्यातगुणीमे	०	५	१३	९	६
३६	जलघर पुरुष संख्यातगुणामे	०	५	१३	९	६
३७	जलघरणी संख्यातगुणीमे	०	५	१३	९	६
३८	घाणव्यंतर देवता संख्यातगुणामे	३	४	११	९	४
३९	घाणव्यंतरनी देवी संख्यातगुणीमे	३	४	११	९	४
४०	ज्योतिषी देवता संख्यातगुणामे	२	४	११	९	१
४१	ज्योतिषीनी देवता संख्यातगुणामे	०	४	११	९	१
४२	खेघर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४३	स्थलघर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४४	जलघर नपुंसक संख्यातगुणामे	२	५	१३	९	६
४५	बोरिंदी पयासा संख्यातगुणामे	१	१	२	३	३
४६	दचेद्री पयासा विमेषाहियामे	२	१२	१५	१०	६
४७	बेरिंदी पयासा विमेषाहियामे	१	१	२	३	३
४८	तरिंदी पयासा विमेषाहियामे	१	१	२	३	३

४९	पर्षेद्री अपर्याप्ता असत्यातगुणामे	२	३	५	९	४
५०	चोर्दिद्री अपयाप्ता विलेसाहियामे	१	२	३	५	३
५१	तेर्दिद्री अपर्याप्ता विलेसाहियामे	१	२	३	५	३
५२	वेर्दिद्री अपयाप्ता विलेसाहियामे	१	२	३	५	३
५३	वादर वनस्पती काह्या प्रजाप्ता प्रत्येक शरीरी अस०	१	१	१	३	३
५४	वादरनिगोदा पजाप्ता शरीर असत्यातगुणा	१	१	१	३	३
५५	वादर पृथ्वीकाह्या पजाप्ता असत्यातगुणा	१	१	१	३	३
५६	वादर अपकाह्या पजाप्ता असत्यातगुणामे	१	१	१	३	३
५७	वादर वाउकाह्या पयाप्ता असत्यातगुणामे	१	१	४	३	३
५८	वादर तेउकाह्या अपयाप्ता असत्यातगुणामे	१	१	३	३	३
५९	प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पतीकाह्या अप० संख्या०	१	१	३	३	४
६०	वादरनीगोदा अपयाप्ता असत्यातगुणामे	१	१	३	३	३
६१	वादर पृथ्वीकाह्या अपयाप्ता असत्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६२	वादर अपकाह्या अपर्याप्ता असत्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६३	वादर वाउकाह्या अपर्याप्ता असत्यातगुणा	१	१	३	३	३
६४	सूक्ष्म तेउकाह्या अपयाप्ता असत्यातगुणा	१	१	३	३	३
६५	सूक्ष्म पृथिवीकाह्या अपयाप्ता विलेसाहिया	१	१	३	३	३
६६	सूक्ष्म अपकाह्या अपर्याप्ता विलेसाहियामे	१	१	३	३	३

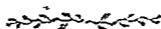
६७	सूक्ष्म घाउकाइया अपर्यासा वितेसाहियामे	१	१	३	३	३
६८	सूक्ष्म तेउकाइया प्रजासा सत्यात गुणामे	१	१	१	३	३
६९	सूक्ष्म पृथ्विकाइया पर्यासा वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७०	सूक्ष्म अपकाइया पर्यासा वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७१	सूक्ष्म वाउकाइया पर्यासा वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७२	सूक्ष्म निगोदा अपर्यासा असत्यात गुणामे	१	१	३	३	३
७३	सूक्ष्म निगोदा पर्यासा सत्यात गुणामे	१	१	१	३	३
७४	अभव्य जीव अनत गुणा	१४	१	१३	६	६
७५	पञ्चाई सम्यग्दृष्टि अनत गुणा	१४	१	१३	६	६
७६	सिद्ध भगवान अनत गुणा	०	०	०	२	०
७७	घादर वनस्पतीकाइया पर्यासा अत गुणा	१	१	१	३	३
७८	घादर पर्यासा वितेसाहिया	६	१४	१०	१२	६
७९	घादर वनस्पतीकाइया अपर्यासा असत्यात गुणामे	१	१	३	३	४
८०	घादर अपर्यासा वितेसाहिया	६	३	५	०	६
८१	समुच्चय घादर वितेसाहिया	१२	१४	१५	१२	६
८२	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया अपर्यासा असत्यात गुणामे	१	१	३	३	३
८३	सूक्ष्म अपर्यासा वितेसाहिया	१	१	३	३	३
८४	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्यासा सत्यात गुणामे	१	१	१	३	३

४९	पर्वेद्री अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	२	३	५	९	१६
५०	चौरिंद्री अपर्याप्ता वित्सेसाहियामे	१	२	३	६	३
५१	तेरिंद्री अपर्याप्ता वित्सेसाहियामे	१	२	३	५	३
५२	चेरिंद्री अपर्याप्ता वित्सेसाहियामे	१	२	३	५	३
५३	वादर वनस्पतीकाह्या प्रजाप्ता प्रत्येक शरीरी असं०	१	१	१	३	३
५४	वादरनिगोदा प्रजाप्ता शरीर असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५५	वादर पृथ्वीकाह्या प्रजाप्ता असंख्यातगुणा	१	१	१	३	३
५६	वादर अपकाह्या प्रजाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	१	३	३
५७	वादर वाउकाह्या प्रजाप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	४	३	३
५८	वादर तेउकाह्या अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
५९	प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पतीकाह्या अप० संख्या०	१	१	३	३	४
६०	वादरनिगोदा अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
६१	वादर पृथ्वीकाह्या अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६२	वादर अपकाह्या अपर्याप्ता असंख्यातगुणामे	१	१	३	३	४
६३	वादर वाउकाह्या अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६४	सूक्ष्म तेउकाह्या अपर्याप्ता असंख्यातगुणा	१	१	३	३	३
६५	सूक्ष्म पृथिवीकाह्या अपर्याप्ता वित्सेसाहिया	१	१	३	३	३
६६	सूक्ष्म अपकाह्या अपर्याप्ता वित्सेसाहियामे	१	१	३	३	३

६७	सूक्ष्म घाउकाइया अपर्याप्ता वितेसाहियामे	१	१	३	३	३
६८	सूक्ष्म सेऊकाइया प्रजाहा मख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
६९	सूक्ष्म पृथ्विकाइया पर्याप्ता वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७०	सूक्ष्म अपकाइया पर्याप्ता वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७१	सूक्ष्म घाउकाइया पर्याप्ता वितेसाहियामे	१	१	१	३	३
७२	सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता असख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
७३	सूक्ष्म निगोदा पर्याप्ता मख्यात गुणामे	१	१	१	३	३
७४	अभय जीव अतगुणा	१४	१	३	६	६
७५	पदवाई सम्यगुदृष्टि अनत गुणा	१२	१	३	६	६
७६	सिद्ध भगवान अनत गुणा	०	०	०	२	०
७७	वादर वनस्पतिकाइया पर्याप्ता अतगुणा	१	१	१	३	३
७८	वादर पर्याप्ता वितेसाहिया	६	१४	१५	१२	६
७९	वादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असख्यातगुणामे	१	१	३	३	३
८०	वादर अपर्याप्ता वितेसाहिया	६	३	५	९	६
८१	समुच्चय वादर वितेसाहिया	१२	१४	१५	१२	६
८२	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असख्यात गुणामे	१	१	३	३	३
८३	सूक्ष्म अपर्याप्ता वितेसाहिया	१	१	३	३	३
८४	सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता खख्यात गुणामे	१	१	१	३	३

८५	सूक्ष्म पर्याता विसेसाहिया	१	१	१	३	३
८६	सभुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया	२	१	३	३	३
८७	भवसिद्धिया जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
८८	निगोदा जीव विसेसाहिया	४	१	३	३	३
८९	चनस्पतीकाह्या विसेसाहिया	४	१	३	३	४
९०	एकेंद्री जीव विसेसाहिया	४	१	५	३	४
९१	तिर्येच विसेसाहिया	१४	५	१३	९	६
९२	मिथ्यादृष्टि जीव विसेसाहिया	१४	९	१३	६	६
९३	भविरती जीव विसेसाहिया	१४	४	१३	९	६
९४	सकसाई विसेसाहिया	१४	१०	१५	१०	६
९५	छमरथ जीव विसेसाहिया	१४	१२	१५	१२	६
९६	सजोगी जीव विसेसाहिया	१४	१३	१५	१२	६
९७	ससारथा जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६
९८	सर्व जीव विसेसाहिया	१४	१४	१५	१२	६

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डेऽष्टनवति  
संज्ञाऽख्यं द्वादश प्रकरणम् ॥ १२ ॥ ( बोल )





## प्रकरण तेरवां-योगको वासठियो.

की	योगको वासठियो.	जीव	गुणठाणा	जोग	उपयोग	लेखा	माय	आत्म	धुइक
१	समुच्चै जीवमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
२	पेहेला गुणठाणामे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
३	दूजा गुणठाणामे	६	१	१३	६	६	३	७	१९
४	तीजा गुणठाणामे	१	१	१०	६	६	३	६	१६
५	चौथा गुणठाणामे	२	१	१३	६	६	५	७	१६
६	पाँचमा गुणठाणामे	१	१	१२	६	६	५	७	७
७	छठ्ठा गुणठाणामे	१	१	१४	७	६	५	८	१
८	सातमा गुणठाणामे	१	१	५	७	३	५	८	१
९	आठमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
१०	नवमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	५	८	१
११	दसमा गुणठाणामे	१	१	५	४	१	५	८	१
१२	द्ग्यारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	७	७	१
१३	बारमा गुणठाणामे	१	१	५	७	१	४	७	१



१४	तेरमा गुणठाणामे	१	१	७	२	१	३	७	१
१५	चवदसा गुणठाणामे	१	१	०	२	०	३	६	१
१६	सच मन जोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
१७	असत मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१८	मिश्र मनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
१९	त्रिचहार मनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१६
२०	सत वचनजोगमे	१	१३	१४	१०	६	५	८	१६
२१	असत वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२२	मिश्र वचनजोगमे	१	६	१४	१०	६	५	८	१६
२३	विहार वचनजोगमे	१	१३	१४	१२	६	५	८	१९
२४	उदारिक जोगमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	१०
२५	उदारिक मिश्रमे	९	६	१५	१२	६	५	८	१०
२६	वेक्रेय जोगमे	३	६	१४	१०	६	५	८	१७
२७	वेक्रेय मिश्रमे	३	५	१४	१०	६	५	८	१७
२८	आहारीक जोगमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
२९	आहारीकमिश्रमे	१	१	१४	७	६	५	८	१
३०	कामेण जोगमे	८	४	१	१०	६	५	८	२४
३१	उदय भाषमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४

३२	अपगम भावमे	२	८	१५	७	६	५	८	१६
३३	क्षायक भावमे	२	११	१५	९	६	५	८	१६
३४	क्षयोपनाम भावमे	१४	१२	१५	१०	६	५	८	२४
३५	परिणामिक भावमे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३६	द्रव्य आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
३७	कषाय आत्मामे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
३८	योग आत्मामे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
३९	उपयोग आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४०	ज्ञान आत्मामे	६	१२	१५	९	६	५	८	१९
४१	दर्शन आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४२	चारित्र्य आत्मामे	१	९	१५	९	६	५	८	१
४३	वीरी आत्मामे	१४	१४	१५	१२	६	५	८	२४
४४	मिथ्यात्व आश्रयमे	१४	१	१३	६	६	३	६	२४
४५	भवृती आश्रयमे	१४	५	१३	९	६	५	७	२४
४६	प्रमाद आश्रयमे	१४	६	१५	१०	६	५	८	२४
४७	कषाय आश्रयमे	१४	१०	१५	१०	६	५	८	२४
४८	योग आश्रयमे	१४	१३	१५	१२	६	५	८	२४
४९	समकित सबरमे	१	१०	१५	९	६	५	८	२

५०	वृत्त संघरमे	१	१५	९	६	५	८
५१	प्रमाद सघरमे	१	८	७	९	३	५
५२	कपाय सघरमे	१	४	७	९	१	५
५३	अजोग ते सघरमे	१	१	०	२	०	३
५४	उपशम चारित्रमे	१	१	५	७	१	५
५५	क्षायक चारित्रमे	१	३	७	९	१	४
५६	क्षयोपशम चारित्रमे	१	१	४	७	६	५
५७	वार वीरजेमे	१४	४	१३	९	६	५
५८	पडीत वीरजेमे	१	९	१५	९	६	५
५९	बाह्यपडित विरज	१	१	१२	६	६	५
६०	सीधामे	०	०	०	२	०	२

॥ इति श्री सिद्धांत शिरोमणौ द्वितीय खण्डे योग

कोष्ठाख्यं त्रयोदश प्रकरणम् ॥





## प्रकरण चवदशां-४३ बोलकी अल्पावहत.

- (१) सर्वसुं थोडा मिश्र दृष्टी.
- (२) ते थकी पुरुषपेदी असखेजगुणा.
- (३) ते थकी स्त्रीपेदी सखेजगुणा.
- (४) ते थकी देवगतीया विसेसाहिया.
- (५) ते थकी सभी सखेजगुणा.
- (६) ते थकी भायक संखेजगुणा.
- (७) ते थकी सइंदिया असंखेजगुणा.
- (८) ते थकी अभव्य जीव अनतगुणा.
- (९) ते थकी परत अनंतगुणा.
- (१०) ते थकी शुक्लपक्षी विसेसाहिया.
- (११) ते थकी अजोगी अनतगुणा.
- (१२) ते थकी अणेदीया.
- (१३) नोसत्री नोअसत्री तुळा विसेसा०.
- (१४) ते थकी सम्यक् दृष्टि विसेसाहिया.
- (१५) ते थकी असत्रीका अलद्रीया विसेसा०.

- (१६) ते थकी भव्यका अलद्धिया.
- (१७) अचर्म तुल्ला विसेसाहिया.
- (१८) ते थकी वादर जीव अनंतगुणा.
- (१९) ते थकी अणाहारी असंखेजगुणा.
- (२०) ते थकी अमजाप्ता असंखेजगुणा.
- (२१) ते थकी मजाप्ता संखेजगुणा.
- (२२) ते थकी आहारीक विसेसाहिया.
- (२३) ते थकी सूक्ष्मजीव विसेसाहिया.
- (२४) ते थकी कृष्णपक्षी विसेसाहिया.
- (२५) ते थकी अपरत विसेसाहिया.
- (२६) ते थकी भव चरम.
- (२७) अचरम तुला विसेसाहिया.
- (२८) ते थकी असनी विसेसाहिया.
- (२९) नपुंसक विसेसाहिया.
- (३०) ते थकी तिर्यच विसेसाहिया.
- (३१) ते थकी कृष्ण लेशी विसेसाहिया.
- (३२) ते थकी मिध्यात्वी विसेसाहिया.
- (३३) ते थकी अनाणी विसेसाहिया.
- (३४) ते थकी अविरती विसेसाहिया.
- (३५) ते थकी फासेदिया विसेसाहिया.
- (३६) ते थकी आहारथा विसेसाहिया.
- (३७) ते थकी संसारथा, नो व, नो अभव, ना.

- (३८) अलङ्करीया तुला विसेसाहिया  
 (३९) ते थकी अभवका अलङ्करीया विसे०  
 (४०) ते थकी रसेंद्रीना अलङ्करीया विसे०  
 (४१) ते थकी पचेंद्रीना अलङ्करीया विसे०  
 ४२) ते थकी अभासरु विसेसाहिया  
 (४३) ते थकी सन्नीना अलङ्करीया विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
 त्रिचत्वारिंशत् संज्ञाऽल्प बहुत्वाऽख्यं  
 चतुर्दश प्रकरणम् ॥



- (४३) अद्वापल्यना उत्कृष्ट असख्यातमे भागनो काल असंखेजगुणं  
 (४४) अद्वापल्यनो काल सखेजगुणो.  
 (४५) मनुष तिर्यचनी उत्कृष्ट यितनो काल संखेजगुणो.  
 (४६) अद्वासागरनो काल सखेजगुणो.  
 (४७) नररुदेवनी उत्कृष्ट यितनो काल सखेजगुणो.  
 (४८) कालचक्रनो काल सखेजगुणो.  
 (४९) क्षेत्रपल्यनो काल संखेजगुणो.  
 (५०) क्षेत्र सागरनो काल सखेजगुणो.  
 (५१) तेजकायनी उत्कृष्ट काययितनो काल असंखेजगुणो.  
 (५२) वाउकायनी उत्कृष्ट काययितनो काल विसेसाहिया.  
 (५३) अपकाइया कायनीयितनो विसेसाहीया.  
 (५४) पृथिवीकायनी काययितनो विसेसाहिया.  
 (५५) कर्मण पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.  
 (५६) तेजस पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.  
 (५७) उदारिक पुद्गल प्रावर्तनो काल अनंतगुणो.  
 (५८) श्वासोश्वास पुद्गल प्रा० काल अ० ॥  
 (५९) मन पुद्गल प्रावर्तननो काल अनतगुणो.  
 (६०) वचन पुद्गल प्रावर्तननो काल अनतगुणो.  
 (६१) वैक्रेय पुद्गल प्रावर्तननो काल अनतगुणो.  
 (६२) वनस्पतीकायनी उत्कृष्ट यितनो काल असखेजगुणो.  
 (६३) अतीत काल अनतगुणो.  
 (६४) अनागत काल वि. १ समाधिक.  
 (६५) सर्व काल विसेसाहिया.

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे पंचपट्टि

मंताऽल्प ब्रह्मवाऽख्यं पंचदश प्रकरणम् ॥



## प्रकरण सोलवा ६२ बोलकी अल्पावहुत.

- (१) सर्वसू थोडा छपन्न अंतर्दीपना स्त्री पुरुष माहोमाही तुळा.
- (२) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना स्त्री पुरुष सखेज गुणा.
- (३) ते थकी हरीवास रम्यकवासना स्त्री पुरुष संखेजगुणा.
- (४) ते थकी हेमवय एरणवयना स्त्री पुरुष सखेजगुणा.
- (५) ते थकी भरत ईरवर्तना पुरुष माहोमाही तुळा सखेजगुणा.
- (६) ते थकी भरत ईरवर्तनी स्त्री माहोमाही तुळा सखेजगुणी.
- (७) ते थकी महाविदेहना पुरुष संख्यात गुणा.
- (८) ते थकी माहाविदेहनी स्त्री संख्यातगुणी.
- (९) अणुत्तर विमानना देवता असखेजगुणा.
- (१०) नव नवप्रीवेफना उपरली त्रिकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
- (११) ते थकी बीचली त्रिकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
- (१२) ते थकी नीचली त्रिकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
- (१३) ते थकी वारमा देवलोकना पुरुषाः [देवता] संख्यातगुणा.
- (१४) ते थकी ग्यारमा देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
- (१५) ते थकी दसमा देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
- (१६) ते थकी नवमा देवलोकना पुरुषाः (देवता) संख्यातगुणा.
- (१७) ते थकी सातमी नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.
- (१८) ते थकी छठी नरकना नपुसक (नेरिया) असखेजगुणा.

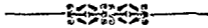


- (१९) ते थकी आठमां देवलोकना पुरुषाः (देवता) असंख्यातगुणा.
- (२०) ते थकी सातमां देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
- (२१) ते थकी पांचमी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
- (२२) ते थकी छठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
- (२३) ते थकी चौथी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
- (२४) ते थकी पांचमां देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
- (२५) ते थकी तीजी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंख्यातगुणा.
- (२६) ते थकी चौथा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
- (२७) ते थकी तीजा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा.
- (२८) ते थकी दूजी नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.
- (२९) ते थकी ५६ अंतर्द्वीपना नपुंसक असंखेज गुणा.
- (३०) ते थकी देवकुरु उत्तरकुरुना नपुंसक सखेजगुणा.
- (३१) ते थकी हरिवास रम्यकवासना नपुंसक संखेजगुणा.
- (३२) ते थकी हेमवय एरणवयना नपुंसक सखेजगुणा.
- (३३) ते थकी भरत ईरवर्तना नपुंसक संखेजगुणा.
- (३४) ते थकी महाविदेहना नपुंसक सखेजगुणा.
- (३५) ते थकी दूजा देवलोकना पुरुषाः (देवता) असंखेजगुणा.
- (३६) ते थकी दूजा देवलोकनी स्त्री (देवी) सखेजगुणी.
- (३७) ते थकी पेला देवलोकना पुरुषाः (देवता) सखेजगुणा.
- (३८) ते थकी पेला देवलोकनी स्त्री (देवी) सखेजगुणी.
- (३९) ते थकी भवनपती पुरुषाः (देवता) असंखेजगुणा.
- (४०) ते थकी भवनपतीनी स्त्री (देवी) असंखेजगुणी.
- (४१) ते थकी पेली नरकना नपुंसक (नेरिया) असंखेजगुणा.
- (४२) ते थकी खेचर पुरुषाः असंखेजगुणा.

योडी ॥ २ ॥ ते यकी पूर्व दिशे विसैसाहिया क्यू महाराज ॥ हे  
 गोतम ! भवनपत्यांना भवन नथी ॥ अने चद्रमां सूर्यनादीया पृथिवी  
 कायना छे ॥ ३ ॥ ते यकी पडिम दिसे विसैसाहिया क्यू महाराज ॥  
 हे गोतम ! पडिम दिसे बारै हजार योजनरो गोतम दियो पृथिवी  
 कायनो इषको पडयो छे ॥ ते माटे पृथिवीकाय घणी छे ॥ ४ ॥  
 तेउकाय (१) मनुप (२) सिद्ध भगवान् ए (३) सर्वथी थोडा कठीणे  
 महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानो क्यू महाराज ॥ हे गोतम !  
 पांच भर्त पाच ईरवर्तना क्षेत्रानां तिहां मनुष्य थोडा तिहां अग्निना  
 जीव थोडा तिहां सिद्ध भगवान् पिण थोडा सीजे ॥ १ ॥ २ ॥  
 ते यकी पूर्व दिशे सख्यातगुणा ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पांच  
 महाविदेह क्षेत्र थोडा जठै मनुष्य घणा जठै अग्निना जीव घणा जठै  
 सिद्ध भगवान् पिण घणा सिजे ॥ ३ ॥ ते यकी पडिम दिसे विसै-  
 साहिया ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम महाविदेहनी विजय  
 हजार योजननी ऊडी छे तिहां मनुष्य घणा तिहां अग्निना जीव घणा  
 तिहां सिद्ध भगवान् पिण घणा सीजे ॥ ४ ॥ वाउकायने वाणव्यतर  
 सर्वथी थोडा कठीने महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे क्यू महाराज ॥  
 हे गोतम ! भूमि कठिण छे ॥ १ ॥ ते यकी पश्चिम दिसे विसैसाहिया  
 क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! हजार योजननी गीजय ऊडी छे तिहां  
 पोलाडमे वाउकाय घणी ने वाणव्यतर घणा ॥ २ ॥ ते यकी उत्तर  
 दिसे विसैसाहिया क्यू महाराज ॥ उत्तर दिसे (३) क्रोड ने (६६)  
 लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमे वाउकाय घणी ने  
 भवणपत्यांना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ॥ ३ ॥ ते यकी  
 दक्षिण दिसे विसैसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! तिहा (४) क्रोड  
 (६) लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमे वाउकाय घणी  
 भवणपत्यांना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ते माटे ॥ ४ ॥



## ॥ प्रकरण सतरवा दिसाणुवाई. ॥



समुच्चै जीव (१) पाणी (२) वनस्पती (३) वेइद्री (४) तेइद्री (५) चोइद्री (६) तिर्यैच पंचेद्री (७) ए ७ बोल सर्वथी थोडा थोडा कठीने छे महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम कानी ॥ क्यों महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम कानी वारै हजार जोजनरोगोतम दीपो ॥ पृथ्वीकायनो पडयो छे ॥ तिहां पाणी थोडो तिहां नीलण फूलण थोडी तिहां वेइद्रियादिक जीव थोडा ते भणी सर्व जीव थोडा ॥ १ ॥ ते थकी पूर्व दिसे विसेसाहिया ॥ क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे गोतम दीपो नथी ॥ २ ॥ ते थकी दक्षिण दिलै विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! चंद्रमा सूर्यका दीपा नथी ॥ ३ ॥ ते थकी उत्तर दिस संख्यातगुणा क्यूं महाराज ॥ हे गोतम ! असख्यातमे दीपमे संख्याता क्रोडान कोड योजनरो मान सरोवर भयो छै ॥ जठै पाणी घणो । जठै नीलण फूलण गणी, जठै वेइद्रियादिक जीव घणा ॥ ते भणी सर्व जीव घणा ॥ ४ ॥ पृथिवीकायना जीव सर्वथी थोडा कठीने महाराज ॥ हे गोतम ! दक्षिण दिसे क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! (४) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहां पोलाड घणी तिणसू पृथिवीकाय थोडी ॥ १ ॥ ते थकी उत्तर दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! (२) क्रोड ने (६६) लाख भवणपत्याना भवण छे ॥ तिहा पोलाड थोडी तिणसू पृथिवीकाय

थोडी ॥ २ ॥ ते थकी पूर्व दिशे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे  
 गोतम ! भवनपत्यांना भवन नथी ॥ अने चंद्रमां सूर्यना दीया पृथिवी  
 कायना छे ॥ ३ ॥ ते थकी प्ठिम दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥  
 हे गोतम ! प्ठिम दिसे बरै हजार योजनरो गोतम दियो पृथिवी  
 कायनो इधको पडयो छे ॥ ते माटे पृथिवीकाय घणी छे ॥ ४ ॥  
 तेउकाय (१) मनुप (२) सिद्ध भगवान् ए (३) सर्वथी थोडा कडीणे  
 महाराज ॥ हे गोतम ! उत्तर दक्षिण कानी क्यू महाराज ॥ हे गोतम !  
 पांच भर्त पांच ईरवर्तना क्षेत्राना तिहां मनुप्य थोडा तिहां अग्निना  
 जीव थोडा तिहां सिद्ध भगवान् पिण थोडा सीजे ॥ १ ॥ २ ॥  
 ते थकी पूर्व दिशे सख्यातगुणा ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पांच  
 महाविदेह क्षेत्र मोटा जठै मनुप घणा जठै अग्निना जीव घणा जठै  
 सिद्ध भगवान् पिण घणा सिजे ॥ ३ ॥ ते थकी प्ठिम दिसे विसे-  
 साहिया ॥ क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! पश्चिम महाविदेहनी विजय  
 हजार योजननी ऊडी छे तिहां मनुप्य घणा तिहां अग्निना जीव घणा  
 तिहां सिद्ध भगवान् पिण घणा सीजे ॥ ४ ॥ वाउकायने वाणव्यंतर  
 सर्वथी थोडा कडीने महाराज ॥ हे गोतम ! पूर्व दिसे क्यू महाराज ॥  
 हे गोतम ! भूमि कडिण छे ॥ १ ॥ ते थकी पश्चिम दिसे विसेसाहिया  
 क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! हजार योजननी विजय ऊडी छे तिहां  
 पोलाडमे वाउकाय घणी ने वाणव्यतर घणा ॥ २ ॥ ते थकी उत्तर  
 दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ उत्तर दिसे (३) कोड ने (६६)  
 लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहां पोलाडमे वाउकाय घणी ने  
 भवणपत्यांना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ॥ ३ ॥ ते थकी  
 दक्षिण दिसे विसेसाहिया क्यू महाराज ॥ हे गोतम ! तिहा (४) कोड  
 (६) लाख भवणपत्यांना भवण छे तिहा पोलाडमे वाउकाय घणी  
 भवणपत्यांना भवण उपरे वाणव्यतरना नगर घणा ते माटे ॥ ४ ॥



## प्रकरण अठारवां-लद्धी.

गाथा ॥ जीव (१) गई (२) इदीय (३) काए (४) सुहुम (५)  
 पज्जत (६) भवत्येय (७) भवसिद्धिया (८) सन्नी (९) लद्धी (१०)  
 उपयोग (११) योगेय (१२) लेशा (१३) क्पाय (१४) वेदेय (१५)  
 आहारे (१६) णाणगोयरे (१७) काल (१८) अंतर (१९) अप्पा  
 बहू (२०) पज्जवाचेवदारांई (२१) ॥ १ ॥

हिवे जीवद्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमे ५ ग्यानकी भजना ॥  
 ३ अग्यानकी भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर देव एहमे ३  
 ग्यानकी नेमा, ३ अग्यानकी भजना ॥ शेष ६ नर्क ज्योतिपी विमा-  
 णीक देव एहमे ३ ग्यानकी नेमा, ३ अग्यानकी नेमा ॥ पाच थाव-  
 रमे ग्यान नथी ॥ २ ॥ अग्यानकी नेमा ॥ तीन चिकलेंद्रीमे २ ग्यान-  
 की नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ निर्यचपचेंद्रीमे ३ ग्यानकी भजना ॥  
 ३ अग्यानकी भजना ॥ मनुष्यमे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी  
 भजना ॥ सिद्ध भगवानमे केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिवे ( गई ) गतद्वार कहे छे ॥ गति याने वाटे बहतो जीव

जाणवो ॥ नर्क गतीयामे देवगतीयामे ३ ग्यानकी नेमा ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ तिर्यच गतीयामे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ मनुष्य गतीयामे ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सिद्धगतीयामे केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति गतद्वार ॥ २ ॥

हिवे इदीयद्वार कहे छे ॥ सइदिया पचेदियामे ४ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ एकेदियामे ग्यान नथी ॥ अग्यानकी नेमा ॥ घेयेदिया तेयेदिया चोयेदियामे २ ग्यानकी नेमा ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अणेदियामे केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति इदीयद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयामे तस काइयामे ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ पृथिवी अप तेउ वाउ वनस्पतीमे ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ अकाइयामे केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कायद्वार ॥ ४ ॥

हिवे सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ सुक्ष्ममे ग्यान नथी ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ वादरमे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो सुक्ष्म नो वादरमे केवलज्ञाननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सूक्ष्मद्वार ॥ ५ ॥

हिवे प्रजाप्तद्वार कहे छे ॥ समुच्चै प्रजाप्तामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुच्चय अप्रजाप्तामे ३ ग्यान ३ अग्यानकी

भजना ॥ पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर एहना अमजाप्तामे ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्यानकी भजना ॥ सातमी नर्कनो अमजाप्तोवर्जी शेष नारकी ज्योतिपी विमाणीरु एहना प्रजाप्ता अने अमजाप्ता ने पहली नर्क भवणपती वाणव्यतर एहना प्रजाप्ता ॥ यसरुमें ३ ग्यान ३ अग्यानकी नेमा ॥ सातमी नर्कना अमजाप्तामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ पांच अणुत्तर विमानना अमजाप्ता प्रजाप्ता ए १० में ३ ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी । पांच वावरना अमजाप्ता प्रजाप्ता तीन विकलेंद्रीना प्रजाप्ता असन्नी तिर्यच पचेद्रीना प्रजाप्ता असन्नी मनुष्य एहमे ग्यान नथी २ अग्यानकी नेमा ॥ तीन विकलेंद्रीना अमजाप्ता असन्नी तिर्यच पचेद्रीना अमजाप्ता सन्नी तिर्यचना अमजाप्ता ए ५ वोलमे २ ग्यान २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी तिर्यचना अमजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ सन्नी मनुष्यना अमजाप्तामें ३ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥ सन्नी मनुष्यमा प्रजाप्तामे ५ ग्यानकी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो अमजाप्ता नो प्रजाप्तामें केवलग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ ६ ॥

हिवे भवत्यद्वार कहे छे ॥ नर्क भवथा देव भवथामें ३ ग्यानकी नेमा ३ अग्यानकी भजना ॥ तिर्यच भवथामें ३ ग्यान ३ अग्यानकी भजना ॥ मनुष्य भवथामें ५ ग्यानकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ अभवथामें केवल ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ ७ ॥

॥ इति भवत्यद्वार ॥ ७ ॥

हिवे भवसियाद्वार कहे छे ॥ भवसिद्धियामें ५ ग्यानकी ३ अग्यानकी भजना ॥ अभव सिद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ नो भव नो अभव सिद्धियामें २ ग्यानकी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति भवसियाद्वार ॥ ८ ॥

दिवे सन्नीद्वार कहे छे ॥ सन्नीमें ४ ग्यानकी भजना ॥ ३  
अध्याननी भजना ॥ असन्नीमें २ ग्यान २ अग्याननी नेमा ॥ नो  
सन्नी नो असन्नीमें २ ग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति सन्नीद्वार ॥ ९ ॥

दिवे लद्धीद्वार कहे छे ॥ कही विहाण भते लद्धी पनता गोयमा,  
दश विहालद्धी पनता ॥ तजहा ग्यान लद्धी (१) दर्शन लद्धी  
(२) चारित्र लद्धी (३) चरिता चरित लद्धी (४) दाण लद्धी (५)  
लाभ लद्धी (६) भोग लद्धी (७) उपभोग लद्धी (८) वीर्य लद्धी  
(९) इद्री लद्धी (१०) भार्गवः समुच्चै ग्यान लद्धियामें ५ ग्यानकी  
भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धीयामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी  
भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्यानना लद्धीयामे ४ ग्याननी भजना ॥  
अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें [ अये गइया केवलग्यानी अये  
गइया ] ३ अग्याननी भजना ॥ अवधग्यानना लद्धियामें ४ ग्या-  
ननी भजना अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें अवधग्यान वर्जिनें ४  
ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ मनपर्यवग्यानना लद्धियामें ४ ग्या-  
ननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें मनपर्यव वर्जिनें ४  
ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ केवलग्यानना लद्धियामें केवलनी  
नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामें केवल वर्जित ४ चार ग्या-  
नकी भजना ॥ ३ अग्यानकी भजना ॥ समुच्चय अनाण लद्धियामें अने  
मति अनाण श्रुत अनाण लद्धियामें ज्ञान नथी ॥ ३ अग्यानकी भज-  
ना ॥ तस अलद्धियामें ५ ग्यानकी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ विभग  
नाणना लद्धियामें ग्यान नथी ॥ ३ अग्यानकी नेमा ॥ तस अलद्धि-  
यामे ५ ग्यानकी भजना ॥ २ अग्यानकी नेमा ॥

॥ इति ज्ञान लद्धीना २० प्रोल ॥



हिचे दर्शनलढ्डी कहे छे ॥ दर्शन लढ्डीना ८ बोल ॥ समुच्चय दरसण लद्धियामे ५ ग्यान ३ अग्यानकी भजना तस अलद्धिया जीवा नथी ॥ सम्यक् दरसण लद्धियामे ५ ग्यानकी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामे ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ मिध्या दरसण लद्धियामे ग्यान नथी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ समामिध्या दरसण लद्धियामे ग्यान नथी ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति दर्शन लद्धियाना ८ बोल ॥

समुच्चय चरित लद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे मनपर्यवग्यान वर्जी ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ ( १ ) सामाइक छेटोपस्थापनीक ( २ ) परिहार विमुधी ( ३ ) सूक्ष्म सप्राय चारित्र ( ४ ) ना लद्धियामे ४ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ३ अग्याननी भजना ॥ जथाज्ञायक चारित्रना लद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ चरिता चरित लद्धियामे ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ दाण लढ्डी लाभ लढ्डी भोग लढ्डी उपभोग लढ्डी वीर्य लढ्डी ग्यानांलद्धियामे ५ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे केवलग्याननी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ बाल वीर्य लद्धियामे ३ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ तस अलद्धियामे ५ ज्ञाननी भजना ॥ अज्ञान नथी ॥ बाल पिढत वीर्य लद्धियामे ३ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अलद्धियामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥

पिंहत त्रियं लद्धियामें ५ ग्याननी भजना ॥ अग्यान नथी ॥ तस अल-  
द्धियामें मनपर्यवग्यान त्रिजिं ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥  
समुच्चै इद्री लद्धियामें ४ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥  
तस अलद्धियामें केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥ श्रुतेद्री चक्षुरिद्री  
घ्राणेद्रीना लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस अल-  
द्धियामें अये गइया केवलग्यानी अये गइया ॥ २ अग्याननी नेमा ।  
'फरसेद्रिया लद्धियामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ तस-  
अलद्धियामें केवलग्याननी नेमा अग्यान नथी ॥ लद्धीनां ७०  
बोळ जाणवा ॥

॥ इति लद्धीद्वार ॥ १० ॥

हिचे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकारवउत्तामे ५ ग्याननी भज-  
ना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ मतिग्यान श्रुतग्यान अवधग्यान  
मनपर्यवग्यान साकार वउतामे ४ ग्याननी भजना अग्यान नथी ॥  
केवलग्यान साकारवउतामे केवलनी नेमा अग्यान नथी अणा-  
कारवउतामे ५ ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना चक्षु दर-  
सण अणाकारवउतामे अचक्षु दर्शण अणाकारवउतामे ४ ग्याननी  
भजना ३ अग्याननी भजना अवधि दर्शण अणाकारवउतामे ४  
ग्याननी भजना ३ अग्याननी नेमा ॥ केवल दर्शण अणाकारवउतामे  
केवलनी नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥

हिचे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगी मनजोगी वचनजोगी काय  
जोगीमें ५ ग्याननी भजना ३ ॥ अग्याननी भजना अजोगीमें केवलनी  
नेमा ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति योगद्वार ॥ १२ ॥

दिवे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीमें शुक लेशीमे ५ ग्याननी  
३ अग्याननी भजना ॥ कृष्ण नील कापोत तेजुं पद्म तेजीमें ४  
ग्याननी भजना ॥ ३ अग्याननी भजना ॥ अलेशीमें केवलनी नेमा ॥  
अग्यान नथी ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ १३ ॥

दिवे कपायद्वार कहे छे ॥ सकृपाइमे क्रोध मान माया लोभा  
कप्राह्यामें ४ ग्याननी ३ अग्याननी भजना ॥ अकृपाइमे ५ ग्याननी  
भजना ॥ अग्यान नथी ॥

॥ इति कपायद्वार ॥ १४ ॥

दिवे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीमे स्त्रीवेदीमे पुरुषवेदीमें नपुसक  
वेदीमें ४ ग्यान ३ अग्याननी भजना ॥ अवेदीमे ५ ग्याननी भजना ॥  
अग्यान नथी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ १५ ॥

दिवे आहारीकद्वार कहे छे ॥ आहारीकमे ५ ग्याननी भजना  
३ अग्याननी भजना अणाहारीकमे मनपर्यवग्यान वर्जनी ४ ग्याननी  
भजना ३ अग्याननी भजना ॥

॥ इति आहारीकद्वार ॥ १६ ॥

दिवे नाणगोचरद्वार अन्य जगेथी जाणवो ॥ १७ ॥ दिवे काल-  
द्वार कहे छे ॥ समुच्चै सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीए ( १ )  
साइए सपज्जवसीए ( २ ) साइए अपज्जवसीएनी धिति नथी ॥ साइए  
सपज्जवसीएनी धिति जगन्य तो अंतरमुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी ६६ सागर

जाझेरी ॥ मतिग्यानी श्रुतग्यानीनी जघन्य अतरमुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागरनी ॥ अधिग्यानीनी जघन्य एक समानी उत्कृष्टी ६६ सागरनी ॥ मनपर्ययनी जघन्य एक समानी उत्कृष्टी देश उणा क्रोड पूर्वनी ॥ केवलग्यानीनी यिति नथी ॥ समुच्चय अनाणी मति अनाणी श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ अणाइए अपजवसीए (१) अणाइ सपजवसीए (२) साइए सपजवसीए ॥ ए ३ नी यिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्टी अनतो काल देश उणा अर्द्धपुद्गल परावरतननी विभग अनाणीनी, जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर देश उणा क्रोड पूर्वाधिक ॥

॥ इति कालद्वार ॥ १८ ॥

हिवे अतर्द्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद ॥ साइए अपजवसीएनो आंतरो नथी ॥ साइए सपजवसीएको आतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल जाव देश ० ॥ मतग्यानी श्रुत ग्यानी अवध मनपर्यव नाणीनो आतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल देश ० ॥ केवलज्ञाननो आतरो नथी ॥ समुच्चय अनाणी मत श्रुत अनाणीना ३ भेद ॥ साइए सपजवसीएनो आंतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो ६६ सागर जाझेरी ॥ विभग नाणनो आंतरो जघन्य अतर्मुहूर्तनो उत्कृष्टो अनंतो काल [ जाव वन-सइ कालो ]

॥ इति अंतर्द्वार ॥ १९ ॥

सर्वसू थोडा मनपर्जवनाणी (१) अधिनाणी असण्यातगुणा (२) मत-नाणी श्रुत नाणी विसेसाइया माहोमाही तुला (३) केवलनाणी अनंत-गुणा (४) सनाणी विसेसाइया (५) ॥ सर्वसू थोडा विभग नाणी (१) मत श्रुत अनाणी तुला अनंत (२) भेली अल्पापहुत्व ॥ सर्वसू

थोडा मनपर्जवनाणी (१) अवधि असख्यातगुणा (२) मति श्रुती  
नाणी तुला विसेसाहिया (४) विभंग अनाणी असख्यातगुणा (५)  
केवल नाणी अनंतगुणा (६) सनाणी विसेसाहिया (७) मत श्रुत  
अज्ञानी तुला अनंतगुणा (९)

॥ इति अल्पावहुत्वद्वार ॥ २० ॥

सर्वथी थोडा मनपर्यय ग्यानरा पज्जवा (१) अवधि ग्यानरा  
पज्जवा अनतगुणा (२) श्रुत ग्यानरापजव अनतगुणा (३) मतग्या-  
नरा पज्जवा अनतगुणा (४) केवल ग्यानरा पज्जवा अनतगुणा [५]  
सर्वथी थोडा विभग अनाणना पजवा (१) श्रुत अनाणना पजवा  
अनंतगुणा [२] मतग्यानरा पजवा अनतगुणा [३] भेली अल्पावहु-  
त्व ॥ सर्वथी थोडा मनपर्यव पजवा [१] विभगना पजवा अनत-  
गुणा [२] अवधि० पजवा अनतगुणा [३] श्रोत्र अग्यान पजवा  
अनतगुणा [४] श्रुत नाण० पजवा विसेसाहिया [५] मत अनाण  
पजवा अनतगुणा (६) मति नाण० पजवा विसेसाहिया (७) केवल  
नाण० पजवा अनंत [८]

॥ इति पज्जवद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
'लद्धी' आख्यं अष्टादश प्रकरणम् ॥





## प्रकरण एकोणीसवां-कायस्थित.

### ॥ गाथा ॥

जीव (१) गई (२) इदीय (३) काय (४) जोए (५) वेय  
 (६) कपाय [७] लेस्या (८) समत्त (९) णाण (१०) दसणे (११)  
 सजय [१२] उपयोग [१३] आहारे (१४) भासक (१५) परत्त  
 (१६) पळत्ते (१७) सुद्धम (१८) सन्नी (१९) भवत्थ (२०) चरमेय  
 (२१) ए ए सत्तुपयाण कायठिए होडनायन्वा ॥ १ ॥ भावार्थः  
 जीवनो जीवपणे रहतो सदा काल शाश्वतो रहै जीव धुन्वे ( १ )  
 नित्ते [२] सासए (३) अक्षय (४) अवय (५) अवठिए [६] जीवनो  
 तीन कालमै फदेई अजीव हुवै नही ॥ जिणनें जीव कहिये ॥

॥ इति जीवद्वार ॥ १ ॥

हिंवे गतद्वार कहै छे ॥ नारकी देवतानी कायस्थित जघन्य १०  
 हजार वर्षनी उत्कृष्टी ३३ सागरनी ॥ देवीनी ज० १० हजार वर्षनी  
 उत्कृ० ५५ पल्पनी ॥ तिर्यचनी ज० अंतर्मुहूर्तनी उ० अनतो काल  
 अनती अपसरपणी अनती उत्सर्पणी ॥ अ० कालो अ० खेतो ॥  
 “ क्षेत्र यकी आवलिया ए असखेजे भागे ” आरलिकामै असंख्या-

तमे भाग जितरा समां होय तितरा पुद्गल प्रावर्तन कालतक जीव तिर्यचमें रुलै ॥ तिर्यचणी १ मनुष्य २ मनुष्यणी ए ३ नी का० ज० अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ पल्य पृथक् क्रोड पूर्व अधिक ॥ सिद्धसाइय अपजवसीए नर्क तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी देवता देवी ए ७ बोल अपजाप्तनी का० ज० उ० अतर्मुहूर्तनी ॥ नारकी देवता प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अतर्मुहूर्तनी ऊणी ॥ उ० ३३ सागर अतर्मुहूर्त ऊणी ॥ देवी प्रजाप्तनी का० जघन्य १० हजार वरसनी अतर्मुहूर्त ऊणी ॥ उन्कृष्ट ५५ पल्य अतर्मुहूर्त ऊणी ॥ तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी ए ४ प्रजाप्तनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी ३ पल्य अतर्मुहूर्त ऊणी ॥

॥ इति गतिद्वार ॥ २ ॥

हिचे इन्द्रिद्वार वहे छे ॥ सेरदियाना दोष भेद ॥ अणाईए अपजवसीए अभव्य (१) अणाईए सपजवसीए ॥ ते भव्य [२] एकेंद्रीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतोकाल जाव असखेजा पुग्गल परियट्टा ॥ बेचेंद्री तेरीद्री चोरेद्रीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता कालनी ॥ पचेंद्रीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १ हजार सागर पल्यके असंख्यातमे भाग अधिक ॥ अणेदिया साइए अपजवसीए सइदिया इकेदिया वेरिंदिया तेरिंदिया चोरेदिया पचेदिया ए ७ बोल अपजाप्तनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ सइदिया प्रजाप्तनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी एकेंद्री प्रजाप्तनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वरसनी ॥ वेरिंद्रीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता वरसानी ॥ तेरिंद्रीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता वरसानी ॥ चौरेंद्रीयानी का०

जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता मासनी ॥ पंचेद्रीयानी का०  
जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागरपूरी ॥

॥ इति इद्रीद्वार ॥ ३० ॥

हिचे कायद्वार कहे छे ॥ सकाइयाना २ भेट अणाइए अपज्जव-  
सीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) पृथिवी अप तेउ वायु ए ४  
नी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी ॥ उत्कृष्टी असख्यातो काल असख्याती  
अपसरपणी जाव असख्यात लोका ॥ वनस्पतीनी का० जघन्य  
अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव असखेजा पुगल परियट्टा ॥  
तसकायनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी दोय हजार सागर स-  
रयाता वरसाधिक ॥ अकाइया साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध ॥  
सकाइया पृथिवीकाइया अप तेउ वाउ वनस्पती तसकाइया ए ७  
अप्रजाप्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी सकाइया तसकाइया,  
प्रजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी पृथक् सो सागर  
जाझेरी ॥ पृथिवीकाइया अपकाइया वाउकाइया वनस्पतीकाइया  
प्रजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वर्षनी ॥  
तेउ प्रजाप्तानी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता रायेदी-  
यानी ॥ हिचे ७ बोल सूक्ष्मना कहे छे ॥ समुचै सूक्ष्म सूक्ष्म पृथिवीकाय  
सूक्ष्म अपकाय सूक्ष्म तेऊ काय सूक्ष्म वाउकाय सूक्ष्म वनस्पतीकाय  
सूक्ष्म निगोद ए ७ नी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असख्यातो  
काल असख्याती अपसरपणी असख्याती उत्तरपणी असख्यात  
कालो असख्यात क्षेत्रो असख्यात लोका ॥ ए ७ अप्रजाप्ता प्रजाप्ता-  
नी का० जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तनी ॥ हिचे ९ बोल वादरना ॥  
समुचैवादर (१) वादर पृथिवीकाय (२) वादर अपकाय (३) वादर  
तेऊकाय (४) वादर वाउकाय (५) वादर वनस्पतीकाय (६)



प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पती (७) वादर त्रस (८) वादर निगोद (९) जिणमें समुचे वादर वादर वनस्पती ए २ नी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल असंख्याती अपसरपणी असंख्याती उत्सरपणी असंख्यात कालो असख्यात क्षेत्तो ॥ क्षेत्रकी थकी आंगुलीया ए असंखेजइ भागे ॥ आगुलकाकै असख्यातमें भाग जितरा आंका प्रदेश होय तितरा कालचक्र जीव २ बोलमें रूलै ॥ वादर पृथिवीकाय वादरअपकाय वादरतेउकाय वादर वाउकाय प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पतीकाय वादर निगोद ए ६ नी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ७० कोडा कोड सागरनी ॥ वादर त्रसनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृ० दोय हजार सागर सख्याता वरसाधिक ए नव बोलअप्रजाप्तानी का० ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी समचै वादर वादर त्रस काय प्रजाप्ता जघन्य का० अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक सो सागर जाझेरी ॥ वादर पृथिवीकाय वादरअपकाय वादर वायुकाय वादर वनस्पतीकाय प्रत्येक शरीरी वादर वनस्पती एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी सख्याता हजार वरसनी ॥ वादर तेउनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी संख्याता रायेंदीयानी ॥ वादर निगोदनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ समुचै निगोदनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल अनती अवसरपणी अनती उत्सरपणी अनतो काल अनतो खेतो जाव अद्वाई पुगुल प्रावर्तन ॥

॥ इति कायाद्वार ॥ ४ ॥

हिचे योगद्वार कहे छे ॥ सजोगीना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ॥ अणाहए सपज्जवसीए ॥ मनजोगी वचननी का० जघन्य ? समानी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ कायजोगीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी

उत्कृष्टी अनतो काल ॥ जावणसड कालो ॥ अजोगी साडए अप-  
ज्जवसीए ॥

॥ इति जोगद्वार ॥ ५ ॥

हिचे वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदीना ३ भेद ॥ अणाइए अपज्जव-  
सीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) ए  
३नी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतोकाठ जाव देश उणा  
अर्ध पुद्दल भावर्तन ॥ सी वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टा  
स्त्री वेदना ५ भेद पहला भेदनी का० उत्कृष्टी ११० पल्य पृथक् कोड  
पूर्वाधिक ॥ दूजा भेदनी का० उ० १०० पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥  
तीजा भेदनी का० उ० १८ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥  
चोथा भेदनी का० उ० १४ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पांचमा  
भेदनी का० उ० ९ पल्य पृथक् कोड पूर्वाधिक ॥ पुरुष वेदनी का०  
जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाक्षेरी ॥ नपुसक  
वेदनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव वणसड  
कालो ॥ अवेदीना २ भेद साइए अपज्जवसीए ॥ साइए सपज्जवसीए ॥  
तेनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ ६ ॥

हिचे कपायद्वार कहे छे ॥ सरुपाईना ३ भेद अणाइए अपज्ज-  
वसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३)  
तेहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनता कालनी जाव देश  
उणा अर्द्ध पुद्दल भावर्तन ॥ कोत्र कथाइ यामान रुपाईया माया रु-  
पाईयानी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ लोभ कपाइयानी का०  
जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी अरुपाइयाना २ भेद साइए

अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति कपायद्वार ॥ ७ ॥

द्विषे लेशाद्वार कहे छे ॥ सलेशीना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) कृष्णलेशी शुक्रलेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३ सागर अतर्मुहूर्त अधिक ॥ नील लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर पल्यने असंख्यातमे भाग अधिक ॥ कापोत लेशीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३ सागर पल्यके असंख्यातमे भाग ॥ तेजु लेशीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी २ सागर पल्यने असंख्यातमे भाग ॥ पद्म लेशीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी १० सागर अतर्मुहूर्त अधिक ॥ अलेशी साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति लेशाद्वार ॥ ८ ॥

द्विषे सम्यक्तद्वार कहे छे ॥ समदृष्टीना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) तेहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी साश्वादान समकितनी जघन्य का० १ समयनी उत्कृष्टी ६ आवलिकानी ॥ उपसम समकितनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ वेदक समकितनी का० जघन्य उत्कृष्ट १ समयनी ॥ क्षयोपशम समकितनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ क्षायक सम्यक्त साइए अपज्जवसीए ॥ मिथ्यादृष्टिना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव देशोणा अर्ध पुह्ल मावर्तन ॥ मिश्रदृष्टीनी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति सम्यक्तद्वार ॥ ९ ॥

हिवे ज्ञानद्वार कहे छे ॥ सनाणीना २ भेद साइए अपज्जवसीए  
 (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी  
 उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ मति श्रुतिनाणीनी का० जघन्य अत-  
 र्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ मन नाणी पर्यवनी का० जघन्य  
 १ समयनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी ॥ केवलग्याननी का० साइए  
 अपज्जवसीए । मति श्रुत अनाणीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१)  
 अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का०  
 जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो कालनी जाव देशोणा अर्द्धपुद्गल  
 प्रावर्तन ॥ विभग अनाणीनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी ३३  
 सागर देशोणा कोड पूर्व अधिक ॥

॥ इति ज्ञानद्वार ॥ १० ॥

हिवे दर्शनद्वार कहे छे ॥ चक्षु दर्शननी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी  
 उत्कृष्टी हजार सागर जाझेरी अचक्षु दर्शनना २ भेद अणाइए अप-  
 ज्जवसीए [१] अणाइए सपज्जवसीए (२) अवधि दर्शननी का०  
 जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी १३२ सागर जाझेरी ॥ केवल दर्शननी  
 का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति दर्शनद्वार ॥ ११ ॥

हिवे सजतीद्वार कहे छे ॥ समुचै संजती सामाइक चारित्र छेदो-  
 पस्थापनीक चारित्र जथाक्षायक चारित्र ए ४ नी का० जघन्य १  
 समयनी उत्कृष्टी देशोणा कोड पूर्वनी परिहार विशुद्ध चारित्रनी का०  
 जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २९ वर्ष उण कोड पूर्वनी ॥ सूक्ष्म  
 समायचारित्रनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी

संजता सजतीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देसोणा कोड पूर्वनी असंजतीना ३ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) साइए सपज्जवसीए (३) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल जाव देशोणा अर्ध पुद्गल प्रावर्तना॥ नो सजती नो असजती नो सजता संजतीनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सयतिद्वार ॥ १२ ॥

हिवे उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकार वउत्ता अणाकार वउत्तानी का० जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति उपयोगद्वार ॥ १३ ॥

हिवे आहारिकद्वार कहे छे ॥ आहारीकना २ भेद छद्मस्थ आहारीक केवल आहारीक छद्मस्थ आहारिकनी का० जघन्य १ खोडागभव २ समय उणी उत्कृष्टी असख्यातो काल असरयाती अपसरपणी “ जाव आंगुलीयाए असखेजइ भागे ” आंगुलकै असख्यातमे भाग जितरा आकाश प्रदेश होय तितरा काल चक्र जीव छद्मस्थ आहारीक रहै ॥ केवल आहारिकनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी देसोणा कोड पूर्वनी ॥ अणाहारीकना २ भेद छद्म अणारीक (१) केवल अणारीक ( २ ) छद्मस्थ अणारीकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी २ समयनी केवल अणारीकना २ भेद सिद्ध अणाहारीक (१) संसारी केवली अणाहारीक (२) सिद्ध केवली अणारीकनी का० साइए अपज्जवसीए ॥ संसारी केवली अणाहारीकना २ भेद सजोगी केवली अणारीक ( १ ) अजोगी केवली अणारीक (२) सजोगी केवली अणारिकनी का० जघन्य उत्कृष्टी ३ समयनी अजोगी केवली अणारिकनी का० अंतर्मुहूर्तनी ॥

॥ इति आहारीक

द्विवे भासकद्वार कहे छे ॥ भासकनी का० जघन्य १ समयनी उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ अभासकना २ भेद साइए अपज्जवसीए (१) साइए सपज्जवसीए (२) एहनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल "जाय वणसइ कालो" ॥

॥ इति भासकद्वार ॥ १५ ॥

द्विवे परतद्वार कहे छे ॥ परतना २ भेद संसार परत (१) काय परत (२) संसार परतनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल. "जाय देगोणा अर्द्धपुद्गल प्रावर्त्तन काय परतनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असख्यातो काल "जाय पुढी कालो" अपरतना २ भेद संसार अपरत (१) काय अपरत (२) संसार अपरतना २ भेद अणाइए अपज्जवसीए (१) अणाइए सपज्जवसीए (२) काय अपरतनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनतो काल "जाय वणसइ कालो" नो परत्त नो अपरत्तनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति परतद्वार ॥ १६ ॥

द्विवे प्रजाप्तद्वार कहे छे ॥ प्रजाप्तनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ अप्रजाप्तनी का० जघन्य उत्कृष्टी अतर्मुहूर्तनी ॥ नो अमजाप्तानो प्रजाप्तानी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति प्रजाप्तद्वार ॥ १७ ॥

द्विवे मूढद्वार कहे छे ॥ मूढनी का० जघन्य अतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असख्यातो काल "जाय असग्यात लोणा" दाढरनी का०

जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी असंख्यातो काल " जाव आंगुलियाए असखेजइ भागे " नो सूक्ष्म नो वादरनी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सन्धीद्वार ॥ १८ ॥

हिवे सन्धीद्वार कहे छे ॥ सन्धीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी पृथक् सो सागर जाझेरी ॥ असन्धीनी का० जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी अनंतो काल " जाव देशो वत्तसइ कालो " नो सन्धीनी असन्धी का० साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति सन्धीद्वार ॥ १९ ॥

हिवे भवद्वार कहे छे ॥ भवते अणाइए सपज्जवसीए (१) अभव अणाइए अपज्जवसीए (२) नो भव नो अभव साइए अपज्जवसीए ॥

॥ इति भवद्वार ॥ २० ॥

हिवे चर्मद्वार कहे छे ॥ चर्मते अणाइए अपज्जवसीए ॥ अचर्मना २ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसीए ते अभव्य ॥ साइए अपज्जवसीए ते सिद्ध भगवान ॥

॥ इति चर्मद्वार ॥ २१ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
काय स्थित्याख्यं एकोनविंशति प्रकरणम् ॥



## प्रकरण वीसवा-गतागत.

		भागति-ते आविवी	गतीते जायवी तेहना वोल
१	प्रथम नारकीनी	२५ कर्म भूमि १५ पर्या हा पांच सनीऽसनी तिर्यच्छका पर्यासा १०	४० १५ कर्म भूमिना म नुष्य अने ५ सुनी तिर्यच प २० ना पर्यासा अपर्यासा
२	दुजी नारकीनी	२० पूर्वत् ५ असनी टल्या	२० १५ कर्मभूमिना अ पर्यासापर्यासा अने सनी तिर्यचना प र्यासा ने अपर्यासा पूर्व ४०
३	तीजी नारकीनी	१९ पूर्वे २० कदा जगमेसू एक भुजपर टल्यो.	४० ४० पूर्ववत्
४	चोथी नारकीनी	१९ पूर्वे १९ कदा जिग- मेसू नेचर १ टल्यो	४० ४० पूर्ववत्
५	पांचमी नारकीनी	१७ पूर्वे १८ कदा जि गमेसू एक स्थल- चर टल्यो.	४० ४० पूर्ववत्



आगत.

गत.

६	छठी मारकीनी	१६	पूर्वे १७ कला जिगमेसू उरपर टल्यो	४०	४० पूर्ववत्
७	सातमी नारकीनी	१६	इहां स्त्री टली	१०	५ सत्री तिर्यचका अपर्यासा एव १०
८	१० भवनपती १५ पर्माधामी १६ घ्यतर १० तिर्यग् जभकानी	१११	१०१ गमेज मनु घ्यना पर्यासा अने ५ सत्री ५ असत्री तिर्यगना पर्यासा एव १११	४६	१५ कर्म भूमिना मनुष्य ५ सत्री तिर्यच ए २० अने पृथ्वी १ अप २ वा ३ ए २३ ना पर्यासा अपर्यासा एव ४६
९	१० ज्योतिषीनी	५०	१५ कर्मभूमी ३० अकर्म० ५सत्री एना पर्यासा	४६	४६ पूर्ववत्
१०	प्रथम देवलोकीनी	५०	१० पूर्ववत्	४६	४६ पूर्ववत्

आगत.

गत.

१	तृजा देवलोकने	४०	१५ कर्मभूमी ५ सत्री ति० ५ देव कु० ५ उत्त० ५ हर वास० ५ र- म्यग्न० ए सर्वे ५०	४६	४६ पूर्ववत्
१२	श्रीजा देवलोकधि लेई ८ मा हगेनी	२०	१५ कर्म भूमीना ५ सत्री तिर्यचका प्रजासा	४०	१५ कर्मभूमी ५ सत्री तिर्यच ए २० का अप्रजा सा प्रजासा एव ४०
१३	नोप्रीवेकथी रई पांच अणुत्तर वि मान हगेनी	१५	१५ कर्मभूमीना प्रयासा	३०	१५ कर्मभूमीना प्रजासा अप्रजासा एव ३०
१४	पृथ्वी अप वन- स्पती ए ३ नी	२४३	१०१ मनु य अ संख्यानी० १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ४८ तिर्यच ६४ देव	१०१	६४ देवता वरजीने
१५	तेज (१) वाऊनी (२)	१०९	छठ पूर्ववत्	४८	तिर्यच सर्व
१६	३ विकलेद्रियनी	१०९	छठ पूर्ववत्	१०९	छठ पूर्ववत्

आगत.

गत.

१७	सखी तिर्य्यचनी	२६७	१७९ की लड ८१ देवता ८ मा देवलोक लगे ७ नारकी	५७७	८ मा देवलोक सू ऊपरला देवता षर्जी
१८	असखी तिर्य्यचनी  सखी तिर्य्यचनी	१७९  २६७	लड०  ११ जातना दे वता १७९ नी लड ओर सात नारकीना प्रजाप्ता	३९५  ५२७	१७९की लड ५१ देवता ५६ अंत- र्दीपा प्रथम नर्क एव ३९५ ते ५६३ माहिया नवमा देवलोकसे लेकर सवार्थसिद्ध १८ ना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ३६ बज्याशेष २७२द्वारा
१९	सखी मनुष्यनी	२७६	१७९ की लड तेव वाचना वर्जी ९० देवता ६ ना- रकीना प्रजाप्ता	५६३	जीवना सर्व भेद
२०	असखी मनुष्यनी	१७९	१७९ लडमाहि- धी त्तव वाचना ८ भेद टालीन ॥	१७९	१३१ मनुष्यना अने ४८ भेद तिर्य्यचना एव १७९
२१	देवकुल उत्तर कुली	२०	१५ कर्मभूमी ५ सखी तिर्य्यच एव २०	१२८	प्रथम ६४ जातका देवलोक अप्रजा प्ता प्रजाप्ता एव १२८

आगत.

गत.

२२	हरीवास २४ रम्यकवासी	२०	पूर्ववत्	१२६	७जा देवलोक सर्वा हे ६३ जातका देव ताना अप्रजाप्ता प्र- जाप्ता एव १२६
२३	हेमवय- प्रेरणयनी	२०	पूर्ववत्	१२४	भवापतीसे लेकर पहिला देवलोक सर्वा ६२ जातका देवताना अप्रजा- प्ता प्रजाप्ता० एव १२४
२४	५६ अतर्होपानी	२५	१५ कर्मभूमीना प्र जाप्ता ५ स्त्री ० अम्ली तियेच एव २०	१००	१० सुप्रनपती १६ वागव्यतर १४ पर माधामी १० तिये चका पुना अप्रजा प्ता प्रजाप्ता एव १००
२५	तीर्थकरनी	३८	१२ देवलोक ९ लोका तीक ९ नवप्रीवेक ३ नारकीपुना प्रजाप्ता एव ३८	मोक्ष	मोक्षनी
२६	चक्रवर्तीनी	८२	८१ जातका देवता १ नारकी पुना प्रजाप्ता एव ८०	१४	सात नारकीना प्र जाप्ता अप्रजाप्ता एव १४
२७	वासुदेवनी	३२	१२ देवलोक ९ नव- प्रीवेक ९ लोकातिक २ नारकी एव ३२	१४	पूर्ववत्

आगत.

गत.

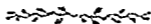
२८	बलदेवकी	८३	३ किलचिदी १५ प- रमाधामी घरजीन दो- स देवता और २ ना- रकी एव ८३	७० तथा मोक्ष	१२ देवलोक ९ न वमीचिक ९ लोकां तिक ५ अणुत्तर वि- मान एहना अप्रजा सा प्रजाप्ता
२९	केवलीनी	१०८	८१ जातका देवता १० कर्मभूमी ५ सन्नी ति- र्य चक्रा प्रजाप्ता पृथ्वि- पाणी यनस्पती ४ ना- रकी एव १०८	०	सिद्धगति
३०	साधुजीनी	२०५	मनुष्यवत् ५ नारकी- लगे	७०	बलदेववत्
३१	श्रावकनी	२०६	मनुष्यवत् ६ नारकी- लगे	४२	१२ देवलोक ९ लो- कांतिक एना प्रजा सा अप्रजाप्ता एव ४२
३२	समदष्टीनी	३६३	९९ जातका देवताका प्रजाप्ता ८६ युलिया सात नारकी अप्रजाप्ता- तेज घाडना ८ टक्या एव ५६३ मसू	२२२	८१ देवता १५ कर्म भूमी ५ सन्नीतिर्यच ६ नारकी ए १०७ प्रजाप्ता अप्रजाप्ता (२१४) ३ विकलेंद्रा ५ असन्नी तिर्यच
३३	मिश्रदष्टीनी	३६३	पूर्ववत्	०	गती नयी

आगत.

गत.

३४	मिथ्यादृष्टिनी	३७१	९९ जातका देवता ८६ युगुलिया ७ ना रकी प्रजाप्ता १७१ कि लह	५६३	५ मणुत्तरविमानवर्जी
३५	स्त्री वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६१	सातमी नारकीवर्जी
३६	पुरुष वेदनी	३७१	पूर्ववत्	५६३	सर्व
३७	नपुंसक वेदनी	२८५	पूर्व ३७१ कदा जिण मेसू ८६ युगुलिया टळया	५६३	सर्व
३८	सिद्ध भगवान्नी	१५	१५ कर्मभूमीना प्र जाप्ता	०	०

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे गताग-  
त्याख्ये विशति तम प्रकरणम्. ॥





## प्रकरण एकवीसवां-संजया.



### ॥ गाथा ॥

पणवण (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त (५) पढि-  
 सेवणा (६) नाणे (७) तित्थे (८) लिंग (९) सरीरे (१०) खित्ते  
 (११) काले (१२) गई (१३) सज्जम [१४] निकासे (१५) ॥ १ ॥  
 जोगु (१६) वओगे (१७) कसाए (१८) लेस्या (१९) परिणाम  
 (२०) वध (२१) वेदेय (२२) ॥ कम्मोदी रण (२३) उवसं ॥ पज-  
 हण (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भत्र (२७) आग-  
 रिसे (२८) काल [२९] तरेय [३०] ॥ समुग्घाय (३१) खेत्त (३२)  
 फुसणाय (३३) ॥ भावे (३४) परिमाणेय (३५) खल्लु ॥ अप्पा बहु  
 यसंजयाण (३६) ॥ ३ ॥

हिवे प्रथम पन्नवणद्वार कहे छे ॥ पन्नवण कहतां परुण्या सज-  
 याना भेद ॥ सामाइक चारित्र ( १ ) छेदोपस्थापनीय चारित्र ( २ )  
 परिहार विमुधि चारित्र [३] सूक्ष्म संपराय चारित्र (४) जथास्वायिक  
 चारित्र (५) हिवे उत्तरभेद कहे छे. सामाइक चारित्रना (२) भेद ।  
 इत्तरीण्य (१) आवकहिण्य ( २ ) इत्तरियते थोडा कालनो ॥ प्रथम  
 चरम तीर्वकरने वारै होय । ते किम सामाइकछेदीने छेदोपस्थापनीय  
 देवै ॥ सातमे दिने तथा चौथे मासे तथा छठे मासे ते भणी ( १ )  
 आयते जाव जीव लगै रहे ते मज्ज २२ तीर्वकरानै वारै । तथा महा-

विदेहका साधुओके होय ॥ ते किम बडी दिक्ष्या नहि देवै ॥ ते भणी (२) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्रना (२) भेद । साइयारे (१) निरइयारे (२) साइयारे तो अतिचार लांगां देवै (१) निरइयारे ते । अतिचार लागा पिना देवै । ते किम छोटी दिक्षा थकी बडी दिक्षा छेवै तथा पार्श्वनाथजीना साधु महावीरजीका सासनमें आवै जद छेदोपस्थापनीय छेवै ते भणी (२) ॥ २ ॥ परिहार विमुधि चारित्रना (२) भेद । निविसमाणे (१) निविठकाइय (२) निविसमाणे तो परिहार विमुधी तप करे ॥ ते किम नव (९) साधु गन्ठ वारै नीकलीनै तप करवा माडयो. १८ मासकौ प्रमाण बाध्यो जिणमें प्रथम छ मासमें चार साधु तप करे, चार साधु वैयाटव्य करै गुरु व्याख्यान करे ॥ बीजा छ मासमे वैयाटव्यका करणेनाला तप करे तपका करणेवाला वैयावच्च करे ॥ त्रीजा छ मासमें गुरु तप करे शेष ८ जणा वैयाटव्य करै ॥ अव तपनो प्रमाण कहे छेः—प्रथम छ मासमें सीत फालमै तो चौथ भक्त वरे उष्णकालमे छठ भक्त करै वर्षाकालमें अष्ट भक्त करे बीजा उ मासमें तीनुही ऋतुमें एकेक उपवास बधावें ॥ २ । ३ । ४ । त्रीजा छ मासमे पुनः तीनुही रितुमें पुनः एकेकोपवास बधावे । ३ । ४ । ५ । अर नवेंही साधु सदाही आंचिल करे इय अठरा मासताई तप करै जिणनै निविसमाणे कहिये ( १ ) निविठमाणे ते परिहार तप करी निवर्ते जिस्को कहिये (२) ॥ ३ ॥ सूक्ष्म सपराय चारित्रना (२) भेद ॥ सक्ले समाणेय (१) विमुधमाणे (२) सक्ले समाणे ते उपश्म श्रेणीयी पडता १० ये गुणठाणे आवै जद होवे (१) विमुधमाणे ते दोनुही श्रेणी चढता यका आवे (२) ॥ ४ ॥ जयाखायिक चारित्रना [२] भेद । छद्मस्य [१] केवली (२) छद्मस्य ते ११ में । १२ में गुणठाणे होवे [ १ ] केवली ते । १३ में । १४ में गुणठाणे होवै (२) ॥ ५ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥ १ ॥





## प्रकरण एकवीसवां-संजया,



### ॥ गाथा ॥

पण्णवण (१) वेय (२) रागे (३) कप्प (४) चरित्त (५) पडि-  
सेवणा (६) नाणे (७) तित्थे (८) लिंग (९) सरीरे (१०) खित्ते  
(११) काले (१२) गई (१३) संजम [१४] निकासे (१५) ॥ १ ॥  
जोगु (१६) वओगे (१७) कसाए (१८) लेस्या (१९) परिणाम  
(२०) वध (२१) वेदेय (२२) ॥ कम्मोदी रण (२३) उवसं ॥ पज-  
हण (२४) सन्नाय (२५) आहारे (२६) ॥ २ ॥ भव (२७) आग-  
रिसे (२८) काल [२९] तरेय [३०] ॥ समुच्चाय (३१) खेत्त (३२)  
फुसणाय (३३) ॥ भावे (३४) परिमाणेय (३५) खल्ल ॥ अप्पा बहु  
यसजयाण (३६) ॥ ३ ॥

हिवे प्रथम पन्नवणद्वार कहे छे ॥ पन्नवण कहतां परूच्या संज-  
याना भेद ॥ सामाइक चारित्र ( १ ) छेदोपस्थापनीय चारित्र ( २ )  
परिहार विसुधि चारित्र [३] सूक्ष्म सपराय चारित्र (४) जथास्वायिक  
चारित्र (५) हिवे उत्तरभेद कहे छे. सामाइक चारित्रना (२) भेद ।  
इत्तरीएय (१) आनरुहिण्य ( २ ) इत्तरियते थोडा काठनो ॥ प्रथम  
चरम तीर्थकरणे वारै होय । ते किमसामाइकछेदीने छेदोपस्थापनीय  
देवै ॥ सातमे दिने तथा चौथे मासे तथा छठे मासे ते भणी ( १ )  
आवते जाव जीव लगै रहे ते मय २२ तीर्थकरानै वारै । तथा महा-

विदेहका साधुओके होय ॥ ते क्रिम वडी दिक्ष्या नहि देवै ॥ ते भणी (२) ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय चारित्रना (२) भेद । साइयारे (१) निरइयारे (२) साइयारे तो अतिचार लांगां देवै (१) निरइयारे ते । अतिचार लागा पिनां देवै । ते क्रिम छोटी दिक्षा थकी वडी दिक्षा छेवै तथा पार्श्वनाथजीना साधु महावीरजीका सासणमें आवै जद छेदोपस्थापनीय छेवै ते भणी (२) ॥ २ ॥ परिहार विमुधि चारित्रना (२) भेद । निविसमाणे (१) निविठकाइय (२) निविसमाणे तो परिहार विमुधी तप करे ॥ ते क्रिम नव (९) साधु गच्छ वारै नीकलीनै तप करवा माइयो. १८ मासकौ प्रमाण वाध्यो जिणमें प्रथम छ मासमें चार साधु तप करे, चार साधु वैयाव्य करै गुरु व्याख्यान करे ॥ बीजा छ मासमे वैयाव्यका करणेवाला तप करे तपका करणेवाला वैयाव्य करे ॥ त्रीजा छ मासमें गुरु तप करे शेष ८ जणा वैयाव्य करै ॥ अत्र तपनो प्रमाण कहे छेः-प्रथम छ मासमें सीत कालमें तो चौथ भक्त करे उष्णकालमें छठ भक्त करै वर्षाकालमें अष्ट भक्त करे बीजा छ मासमें तीनूही ऋतुमें एकेरु उपवास वधावें ॥ २ । ३ । ४ । त्रीजा छ मासमे पुनः तीनूही रितुमें पुनः एकेकोपवास वधावे । ३ । ४ । ५ । अर नवेंही साधु सदाही आंचिल करे इम अठरा मासताई तप करै जिणनै निविसमाणे कहिये ( १ ) निविठमाणे ते परिहार तप करी निवर्ते जिस्को कहिये (२) ॥ ३ ॥ सूक्ष्म सपराय चारित्रना (२) भेद ॥ सक्ले समाणेय (१) विमुधमाणे (२) सक्ले समाणे ते उपश्रम श्रेणीथी पढतां १० मे गुणठाणे आवै जद होवे (१) विमुधिमाणे ते दोनूही श्रेणी चढता यका आवे (२) ॥४॥ जयाखायिक चारित्रना [२] भेद । छद्मस्य [१] केवली (२) छद्मस्य ते ११ में । १२ में गुणठाणे होवे [ १ ] केवली ते । १३ में । १४ में गुणठाणे होवै (२) ॥ ५ ॥

हिवै वेदद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संजया सवेदीभी होय ॥ तथा अवेदीभी होय ॥ सवेदी होय तौ । तीनूँहें वेद होय । अनं अवेदी होय ते उपश्रमवेदी तथा क्षीणवेदी होय ॥ परिहार विस्तृधि सवेदी-हीज होवै ॥ पुरुषवेदी तथा पुरुष नष्टसकवेदी होय । पिण ह्यै वेदी नही होय । अनं अवेदी पिण न होय ॥ सूक्ष्म संपराय अने जथाखायिक । सवेदी नही होय । अवेदीहीज होय तथा उपश्रम वेदी तथा क्षीण वेदी होय ॥ ५ ॥

॥ इति वेदद्वार ॥ २ ॥

हिवे रागद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार संजया तौ सरागी होय ॥ जथाखायिक चारित्र उपश्रम रागी होय ॥ तथा क्षीण रागी होय ॥

॥ इति रागद्वार ॥ ३ ॥

हिवे कल्पद्वार कहे छे ॥ सामाङ्क सूक्ष्म संपराय जथाखायिक । ए ३ थित कल्पी होय ॥ अथित कल्पी पिण होय । छेदोपस्थापनी । परिहार विशुद्धी । ए २ थित कल्पी तो होय । पिण अथित कल्पी न होय ॥

हिवे थित कल्पी अथित कल्पी नो अर्थ कहे छे ॥

थित कल्पी तो दस बोल पाले ॥ ते प्रथम चरम तीर्थकरनै परै होय ॥ अने अथित कल्पी ते ४ बोल तो निश्चयही पाले । अनै छै बोलकी भजना । पाले तथा न पाले ॥ ते दस बोलना नाम कहे छे ॥ सेज्यातर पिंडू. (१) महाव्रत ४ (२) पुरुष ज्येष्ठ ते साध्वी साधुने वंदना करे (३) कीर्ति कर्म ते लघु साधु बडा साधुने वदना करे ॥ ४ ॥ ए चार तो अथित कल्प कहीजे । अचेल ते वस्त्रनो प्रमाण करे ॥ वर्ण धरती अने मोल धकी ॥ ५ ॥ उदेसिक ते कोई साधुने

काजै आहारादिक निपजायौ ते आहारादिक ओर साधु ल्यावे ॥६॥  
 पडिद्वेषणा कल्प तं सांज प्रभातनौ पडिद्वेषणै करे ॥७॥ राज्य-  
 पिंड ॥ ८ ॥ मास कल्प ॥ ९ ॥ पजुमणा कल्प । १० । ए १०  
 जाणवा ॥ हिवे कल्प ( ३ ) आश्री कह छे ॥ सामायिक तो जिण  
 कल्पी होय ॥ यिउर कल्पी होय ॥ कल्पातीत होय (१) छेदोपस्था-  
 पनीय ॥ परिहार त्रिभुद्धि ॥ ए २ कल्पातीत न होय शेष दोय कल्प  
 होय । मूल्म सपराय जथाक्षायक । ए २ कल्पातीतहीन होय ॥  
 शेष २ न होय ॥ ५ ॥

॥ इति कल्पद्वार ॥ ४ ॥

हिवे चारित्रद्वार कहे छे ॥ सामाइक छेदोपस्थापनीकमाही नि-  
 यठा पावे ४ पुलाक (१) बुरुस (२) पडिसेवणा (३) कपाय कु-  
 सील (४) परिहार त्रिभुद्धिमे मूल्म सपरायमे नियठो पावे १ कपाय  
 कुसील ॥ जथाक्षायकमे नियठा पावे २ नियठो (१)

॥ इति चारित्रद्वार ॥ ५ ॥

स्नातक (२) हिवे पडिसेवणाद्वार कहे छे ॥ प्रथम २ संज्ञया ।  
 पडि सेवी अपडि सेवी दोनूही होवे । पडि सेवी होवे तो मूल गुण  
 उत्तर गुण दोन्याको होवै । मूल गुण पडि सेवी तो पांच महाव्रतामे  
 दोष लगावे । उत्तर गुण पडिसेवी ते । दस पञ्चखाणमै दोष लगावे  
 [ अनागय (१) अइकंत (२) कोटि सहिय (३) निपटीय (४) सागार  
 (५) अणागार (६) परिमाण कड [७] निविसेम ( ८ ) सकिय (९)  
 अद्धा ( १० ) यां मे दोष लगावे शेष ३ संज्ञया अपडिसेवी होय  
 ॥ ६ ॥ इति ॥

हिवे ७ मौनाणद्वार कहे छे । प्रथम ४ संज्ञया ३२

तथा ३ तथा ४ होवै । दोड़ होवै तो । मति श्रुति ॥ तीन होवै तो ।  
 मती श्रुति अग्रि ॥ तथा मति श्रुति मनपर्यय ॥ जथा-  
 क्षायकमे । ग्यान २ तथा ३ तथा ४ तथा १ पिण होय ॥ १ ॥ १  
 होय तो केवल होय ॥ ५ ॥ हिवे । सामायिक ( १ ) छेदोपस्थापनीय  
 (२) सूक्ष्म सपराय ( ३ ) ए ३ संजया भणे तो जघन्य ८ प्रवचन  
 माता तरु भणे । उत्कृष्टौ १४ पूर्व भणे । परिहार विशुद्धि । जघन्य  
 ८ पूर्व अने नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार वस्तु लगे भणे ॥ उत्कृष्टो  
 १० ऊणा पूर्व भणे ॥ जथाक्षायक जघन्य ८ प्रवचन माता तरु  
 भणे । उत्कृष्टी १४ पूर्व तथा सूत्रधी व्यतिरिक्त भणे ( ५ )  
 ॥ ७ ॥ इति

हिवे ८ मो तीर्थद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) सूक्ष्म सपराय (२)  
 जथाक्षायक (३) ॥ ए ३ संजया । तीर्थेति तथा आतीर्थेति होय ॥ तीर्थे कहिजे  
 ४ तीर्थ प्रवर्तमान विषे होवै । अतीर्थे कहिजे ४ तीर्थ विना होय ॥ ते  
 छद्मस्थ तीर्थकर होय । तथा प्रत्येक जुद्धी होय ॥ छेदोपस्थापनीय ।  
 परिहार विशुद्धी । ए २ संजया । तीर्थ होवे । पिण अतीर्थ न होय  
 ॥ ८ ॥ इति

हिवै ९ मो लिंगद्वार कहे छे ॥ लिंगका २ भेद । द्रव्य लिंग  
 तो साधुनौ भेष ॥ भावलिंग ते साधुना परिणाम ॥ परिहार विसुधी  
 टाली शेष ४ संजया । द्रव्ये तीन् लिंगी होवे । सलिंगी [ १ ] अन्य  
 लिंगी (२) गृहलिंगी (३) ॥ भाव आश्री नियमा सलिंगी होय । प-  
 रिहार विसुधी द्रव्ये अनै भावे सलिंगी होवे । शेष २ नथी ॥ ९ ॥ इति ॥

हिवे १० मो शरीरद्वार कहे छे ॥ सामायिक छेदोपस्थापनीय ए  
 २ मे शरीर ५ पांवे ॥ शेष ३ मे शरीर ३ पांवे । उदारिक (१) ते-  
 जस (२) कार्मण [३] ॥ १० ॥ इति ॥

हिवे ११ मो क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ पांचुही संजया १५ कर्म भू-

पिने विपे होय अरुर्मभूमिने विपे न होय ॥ विशेषः-छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विथुद्धि ए २ सजया महाविदेह क्षेत्रमे न होय अने १० क्षेत्रमे होने साहारण आश्री ४ सजया अडाईद्वीपमें सघलो होवे परिहार विथुद्धिको साहारण नथी ॥ ११ ॥ इति ॥

हिवे १२ मो कालद्वार कहछे । अवसर्पणी काल आश्री सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ सजया । जन्म आश्री प्रवर्तन आश्री तीजे चौथे पांचमे आरै होय । परिहार विथुद्धी ( १ ) सूक्ष्म सपराय (२) जयाक्षायक (३) ए ३ सजया जन्म आश्री ३-४ आरै होय ॥ अने प्रवर्तन आश्री । ३ । ४ । ५ । मै आरै होय । हिवे उत्सर्पणी काल आश्री कहे छे पाचही सजया । जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरै होय अने प्रवर्तन आश्री ३ । ४ । आरै होय ॥ हिवे चार पलि भाग आश्री कहछे ॥ सामायिक [१] सूक्ष्म सपराय ( २ ) जया क्षायक ए ३ सजया चोथो पलि भाग महाविदेहमे होवै । तीन पलि भागमे न होय ॥ अने छेदोपस्थापनीय (१) परिहार विथुद्धि (२) ए दोनुं चारही पली भागमे नथी ॥ हिवे साहारण आश्री कहे छे सामायिक (१) सूक्ष्म सपराय (२) जयाक्षायक (३) ए ३ संजयोता वारे आरामे अने चार पलिभागमे सघलेही होवे ॥ छेदोपस्थापनी पाच आरामे होय । ३।४।५ ए तीन अपसर्पणीका ॥ ३ । ४ । ए दोई उत्सर्पणीका । एव (५) परिहार विथुद्धिको साहारण नथी ॥ १० ॥

॥ इति ॥

हिवे १३ मो गतिद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थापनीय (२) ए २ सजया जघन्य तो प्रथम देवलोक ऊपजे उत्कृष्टा सर्वार्थ सिद्ध विमाणताई ऊपजे ॥ आउखो ॥ जघन्य दोइ पल्योपमवो उत्कृष्टो ३३ सागरोपमको । पदवी पावे ५ इंद्रकी (१) सामानिककी

(२) त्रायत्रिंशत्क्री (३) लोकरपालकी (४) अहमिंद्रकी (५) परिहार  
 विमृधी जघन्य प्रथम स्वर्गे ॥ उत्कृष्टो । आठमे स्वर्गे उपजे ॥  
 आउखो जघन्य दो पल्योपमको । उत्कृष्टौ । १८ सागरको ॥ पदवी  
 पावै ४ पूर्व ५ कही जिणमेसू अहमिंद्रकी टली ॥ सूक्ष्म संपराय (१)  
 जथाक्षायक (२) ए २ संजया जघन्य उत्कृष्टी पाच अणुत्तर विमानमै  
 हिज उपजे ॥ आउखौ अजघन्य अनै उन्कृष्टौ ३३ सागरकोहीज  
 पावै ॥ पदवी १ पावै अहमिंद्रकी ॥५॥ ए पाचही आराधक आश्री  
 जाणवा । विराधक होय तो भवण पत्यादिकमै उपजै ॥ १३ ॥ ॥ इति ॥

हिचे १४ मो सजमद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ सजयाका । संजमका  
 स्थानक असख्याता छे । जथाक्षायकको संजमको स्थानक एक  
 छे ॥ हिचे अल्पावहुत्व कहे छे ॥ सर्वधी थोडा जथाक्षायकको  
 स्थानक ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म संपरायका स्थानक असख्यातगुणा ॥२॥  
 परिहार विशुद्धिका स्थानक असख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा-  
 इक छेदोपस्थापनीका स्थानक माहोमांही ॥ तुछा असख्यात  
 गुणा ॥ ५ ॥ १४ ॥ इति ॥

हिचे १५ मो निकासद्वार कहे छे ॥ प्रथम तो पट्टगुणी हांणि  
 वृधिका नाम कहे छे ॥ अनंत भागहीन (१) असख्यात भागहीन (२)  
 सख्यात भागहीन (३) सख्यात गुणहीन (४) असख्यात गुणहीन  
 [५] अनंत गुणहीन (६) एही नाम वृधिका जाणवा । सामायिक (१)  
 छेदोपस्थापनीक (२) परिहार विशुद्धि (३) यां तीना थकी छट्टाण  
 वडिया ॥ सूक्ष्म संपराय जथाक्षायक थकी अनंत गुणहीन ( १ )  
 एवं छेदोपस्थापनी ॥ प्रथम तीनां थकी छट्टाण वडिया ॥ चरम ॥

थकी अनंत गुणहीन (२) एं परिहार विशुद्धी ॥ प्रथम तीनां थकी छद्वाण वट्टिया ॥ शेष २ थकी अनंत गुणहीन [३] सू म सपरायी । प्रथम तीन सजया थकी अनंतगुण अधिक ॥ आपणा स्थान थकी । अनंत गुणहीन होय ॥ अनंतगुण अधिक होय ॥ तुह्या पिण होय ॥ जयाक्षायक थकी अनंत गुणहीन होय (४) जथाक्षायकी । प्रथम चार सजया थकी अनंतगुण अधिक होय ॥ आपणमे तुह्या होय (५) हिवे चारित्रना पज्जवाकी अल्पावहृत्व कहे छे ॥ सर्वथी बोडा ॥ सामाइक १ छेदोपस्थापनीय चारित्रना जघन्य पज्जवा ॥ तेथी परिहार विशुद्धी जघन्य चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सामाइक छेदोपस्थापनीक उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सू म संपराय जघन्य चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी सू म सपरायना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेथी जथाक्षायक अजघन्य अनुत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा (५) ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥

हिवे सोलमो जोगद्वार कहे छे ॥ पाचूही सजयामे जोग पावै ३ मन वचन काया जोग । जथाक्षायक अजोगी पिण होवै ॥ १६ ॥ इति ॥

हिवे १७ मो उपयोगद्वार कहे छे ॥ चार सजया तौ दोई उपयोगी होई ॥ साकार वडत्ता अने अनाकार वडत्ता ॥ सू म सपरायी सागार वडत्ता होय । अनाकारोपयोग न होय ॥ १७ ॥ ॥ इति ॥

हिवे १८ मो कपायद्वार कहे छे ॥ सामायिक (१) छेदोपस्थापनीक (२) ए २ सजयामे । सजलकी ४ कपाय होय । तथा ३ होय । क्रोध टल्यो ॥ तथा २ होय ॥ क्रोध मान टल्यो ॥ तथा १ होय लोभ ॥ परिहार विशुद्धीमे ४ कपाय होय ॥ सू म सपरायीमे १ लोभ होय ॥ जथाक्षायकमे अस्पार्द्धिज होय अथवा ॥ उपम कपाई तथा क्षीण कपाई होय ॥ १८ ॥ इति ॥



(२) चरित पुलाय (३) लिंग पुलाय (४) आहासुहमं पुलाय (५) हिवे बुरुसना पांच भेद ॥ आभोग बुरुस [१] अणाभोग बुरुस (२) सवड बुरुस [३] असंवड बुरुस [४] आहासुहम बुरुस (५) कुसीलका दोय भेद ॥ पडिसेवणा कुसील (१) कपाय कुसील (२) पडिसेवणा कुसीलका पांच भेद ॥ नाण पडिसेवणा कुसील (१) दरसण पडिसेवणा कुसील (२) चरितपडी० (३) लिंगपडि० (४) आहासुहम पडिसेवणा कुसील (५) कपाय कुसीलका पांच भेद । नाण कपाय कुसील (१) दरसण कपायकुसील (२) चरित कपाय कु० (३) लिंग कपाय कु० (४) आहासुहम कपाय कुसील (५) ॥ नियटाना पांच भेद ॥ पढम समय नियटो (१) अपढिम समय नियटो (२) चरम समय नियटो (३) अचरम समय नियटो (४) आहासुहम नियटो (५) सनातकना पांच भेद ॥ अडवी (१) असवले [२] अक्रमंसे (३) समुद्रे नाण दर्शण वरे अरहाजीण केवली (४) अपडिसावी (५) इति ॥ १ ॥

हिवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग सवेदी होय । पुरुष वेदी होय (१) पुरुष नपुंसक वेदी होय (२) स्त्रीवेदी नही होय ॥ बुरुस (१) पडिसेवणा कुशील (२) मांही । वेद तीन पावे । स्त्री वेद ॥ पुरुष वेद होय २ ॥ कृत नपुंसक वेद होय [३] कपाय कुशील सवेदी होय । अवेदी होय । सवेदी होय तो तीनुंही वेद होय । अवेदी होय तो उवसमवेदी होय तथा क्षीणवेदी होय ॥ नियंठा अवेदी होय । उपसम वेदी होय । तथा क्षीणवेदी होय ॥ सनातक अवेदी होय तथा क्षीण वेदी होय ॥ इति ॥ २ ॥

हिवे राग कहे छे चार नियंठा सरागी होय ॥ पुलाक (१)  
 (२) पडिसेवणा कुशील (३) कपाय कुसील (४) ए ४

सरागी ॥ नियंठो उवसम तथा वीतरागी होय । तथा क्षीण वीतरागी होय । सन्नातक क्षीण वीतरागी होय ॥ इति ॥ ३ ॥

दिवे कल्प फहे छै ॥ छे नियठा-ठि-(स्थीति) कल्पी होय । अठि (अस्थीति) कल्पी होय ॥ (स्थिति) ठि-कल्पी तो पहिला तीर्थरर अने चोविसमां तीर्थररने वारै होय ॥ ठि-कल्पी दस बोल पालै । अचेल (१) उदेसिक (२) सेज्यातरपिंड (३) राजपिंड [४] किर्तीकर्म [५] पुरुष ज्येष्ठ (६) महाव्रत (७) पजुसणा कल्प [८] मासकल्प [९] पडकमणा कल्प (१०) ॥ अठि कल्पी चार बोल तो पालै । सेज्यातर पिंड [१] किर्तीकर्म (२) पुरुष ज्येष्ठ (३) महाव्रत (४) ए चार बोल ॥ छै बोलकी भजना पाछे या नहि पाछे । दिवे पुलाग थिवर कल्पी होय ॥ चुकस अने पडिसेवणा कुसिल जिन कल्पी होय थिवर कल्पीय पिण कल्पातीत नहि होय ॥ कपाय वुसील जिण कल्पी होय थिवर कल्पी होय ॥ कल्पातीत होय ॥ नियंठो अने सनातक कल्पातीत होय ॥ इति ॥ ४ ॥

दिवे चारित्रद्वार कहे छै ॥ चारित्र पांच । सामायिक चारित्र (१) छेदोपस्थापनीक चारित्र [२] परिहार विशुद्धी चारित्र [३] मुक्षम संपराय चारित्र ॥ ४ ॥ जथाक्षायक चाग्रि (५) पुलाग (१) चुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तिनुंमांही चारित्र पावे दोय सामायिक (१) छेदोपस्थापनी (२) कपाय कुसीलमांही । चारित्र पावे चार सामायिक (१) छेदोपस्थापनी (२) परिहार विशुद्धी (३) मुक्षम संपराय (४) दिवे नियठा तथा सन्नातकमे जथाक्षायक चारित्र पावे ॥ ॥ इति ॥ ५ ॥

दिवे पडिसेवणा द्वार कहे छै ॥ पुलाग मूल गुण पडि सेवि

होय ॥ उत्तर गुण पडि सेवी होय ॥ मूल गुण तो । पांच महाप्रत्तमे दोष लगावे ॥ उत्तर गुण दस विध पचखाणमे दोष लगावे ॥ बुक्स मूल गुण-पडिसेवी होय । उत्तर गुण पडिसेवी होय । पडिसेवणा कुसील पुलागनी परै जाणवो ॥ कपाय कुसील (१) नियटो (२) सनातक (३) ए तीनु अपडिसेवी होय ॥ इति ॥ ६ ॥

हिवेनाणद्वारकहे छे ॥ पुलाग (१) बुक्स (२) पडिसेवणा कुसील (३) येतीनुमाहै ग्यान दोष होय तथा तीन होय । दोष होय तो मति (१) श्रुति (२) तीन होय तो । मति (१) श्रुति (२) अवधि [३] तथा । मति १ श्रुति २ मनपर्यव (३) चार होय तो ॥ मति (१) श्रुति (२) अवधि (३) गनपर्यव [४] इमहिज कपाय कुसील तथा । नियटो जाणवो ॥ सनातकमाहै । एक केवलज्ञान जाणवो । हिवे भणे तो । पुलाग । जघन्य आठ पूर्व नवमा पूर्वनी तिजी आचार वत्थु ॥ लगे उत्कृष्टो नव पुर्व पुरा भणै ॥ बुक्स (१) पडिसेवणा कुसील (२) ए दोष ॥ जघन्य आठ पर वचन माता लगे । उत्कृष्टो भणे तो दस पूर्व ॥ कपाय कुसील (१) नियटो [२] ए दोष । जघन्य भणै तो आठ प्रवचन माता । उत्कृष्टो चवटै पुर्व भणै । सनातक श्रुतयी अधिक छे सर्वज्ञ छे ॥ इति ॥ ७ ॥

हिवे तीर्थद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुक्स (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन तो तीर्थमें होय ॥ साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकांमांही । कपाय कुसील [१] नियटो (२) सनातक (३) ए तीन तीर्थमांही होय । अतिर्थमांही होय । तिरामै होय तो । साधु-साध्वी श्रावक श्राविकांमांही होय अतिर्थमांही होय तो स्वय बुद्धी होय मन्येक बुद्धि होय तथा छद्मस्थ तीर्थकर होय ॥ इति ॥ ८ ॥

हिवे लिंगद्वार कहे छे ॥ बहु नियटा । द्रव्ये तो । सलिंगी होय ।

अन्यलिङ्गी होय । गृहलिङ्गी होय । भावै नियमामे सलिङ्गी होय ॥ इति ॥ ९ ॥

हिवे शरीरद्वार कहे छे ॥ शरीर यांच ॥ उदारिक (१) वैक्रेय [२] आहारिक (३) तेजस (४) कारमण [५] ॥ हिवे पुलाग (१) नियठे (२) सनातक (३) ए तीनमाहे शरीर पावे ३ उदारिक (१) तेजस (२) कारमण (३) बुकस (४) पडिसेवणा कुसील (५) मे शरीर तीन तथा चार पाये तीन पावे तो । उदारिक (१) तेजस (२) कारमण [३] अने चार पाये तो । उदारिक वैक्रे तेजस कारमण ॥ ४ ॥ हिवे कपाय कुसीलमे शरीर । तीन तथा । चार तथा । पाच पावे । तीन पाये तो । उदारिक (१) तेजस (२) कारमण (३) चार पावे तो उदारिक (१) वैक्रेय (२) तेजस (३) कारमण (४) पांच पाये तो । उदारिक (१) वैक्रेय (२) आहारीक (३) तेजस (४) कारमण (५) ईति ॥ १० ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे ॥ बहु नियठा जन्म आश्री । प्रवरतण आश्री । पनरे कर्म भूमीमाहि होय । साहारण आश्री । पुलाग वर-जीने । पाच नियठा अनेरा क्षेत्रमेंभी होय ॥ इति ॥ ११ ॥

हिवे कालद्वार कहे छे ॥ दस कोडा कोडी सागरनो अवसर-पणी काल । दस कोडा कोडी सागरनो उत्तरपणी काल । नो सर्प-णीनो उत्तरपणी कालना चार पली भाग ॥ हिवे अवसरपणी काल आश्री । पुलाग जन्म आश्री । तीजे चाये आरे होय ॥ प्रवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरै होय ॥ बुकस (१) पडिसेवणा कुसील (२) कपाय कुसील ( ३ ) ए तीन नियठा अपसरपणी काल आश्री । जन्म आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ प्रवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ साहारण आश्री ६ आरै मोहें होय । पुलागने साहारण नथी. निर्वे

(१) सनातक (२) अपसरपणी जन्म आश्री । ३ । ४ । आरे होय ॥  
 परवरतण आश्री । ३ । ४ । ५ । आरे होय ॥ साहारण आश्री ।  
 ६ । आरे होय उत्सर्पणी काल आश्री ॥ पुलाग जन्म प्रवरतन आ-  
 श्री । २ । ३ । ४ । साहारण नथी । नियहो सनातक । पुलाग नी  
 परै ॥ पण साहारण आश्री ६ आरामाहै होय ॥ उत्सर्पणी काल  
 आश्री बुकस ( १ ) पडिसेवणा कुसील [२] कपाय कुसील (३) ए  
 तीन नियंहा । जन्म आश्री । २ । ३ । ४ । आरे ओर प्रवरतन आ-  
 श्री । ३ । ४ । आरे होय ॥ साहारण आश्री ६ आरामाहै होय ॥  
 नी सगप्पणी नो उत्सगप्पणी कालना चार पली भाग ॥ पहिलो सु-  
 पम सुपम पलि भाग ॥ पांच देवकुरु । पांच उत्तरकुरुमें होय । प-  
 हिला आरा सरीखो जाणवो । १ । दूजो सुपम पलि भाग । दूजा  
 आरा सरीखो पांच हरिवास । पांच रमगवासमें होय ॥ तीजो सु-  
 पम दुपम पलि भाग ॥ तीजा आरा सरीखो । पांच हेमवय पांच  
 इरणवैमे होय । चोथो सुपम दुपम पलिभाग ॥ चोथा आरा सरीखो।  
 पांच महाविदेहमें होय ॥ बहु नियठा । जन्म प्रवर्तन आश्री । चोथो  
 पलि भागमें होय । पांच महाविदेह क्षेत्रमाहै होय। साहारण आश्री  
 पुलाग वंजी । अने ( दुसरा ) काल माहै होय ॥ इति ॥ १२ ॥

हिवे गतिद्वार कहे छे ॥ पुलाग जघन्य जाय तो पहिले देवलोक  
 पृथक् पलके आउखे उत्कृष्टो जाय तो आठमे देवलोक १८ सागरने  
 आउखे जाय ॥ आराधक आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री  
 चार जातना ॥ देवतामाहे जाय ॥ बुकस ( १ ) अने पडिसेवणा कु-  
 सील (२) जघन्य जाय तो । पहिले देवलोक पृथक् पलके आउखे ।  
 उत्कृष्टो १२ देवलोक जाय २२ सागरने आउखे ॥ यह आराधक  
 आश्री जाणवो ॥ हिवे विराधक आश्री चार जातना देवतामाहे  
 जाय ॥ कपाय कुसील आराधक आश्री जघन्य पहिले देवलोक जाय ।

वत्कृष्टो जाय तो पाच अणुत्तर विमाण ३३ सागरने आउखे जाय ।  
 विराधक आश्री ४ जातना मांहे जाय ॥ निर्यंठो आराधक आश्री जघन्य  
 वत्कृष्टो पांच अणुत्तर विमाणमे जाय । विराधक आश्री ४ जातनां  
 देवता मांहे जाय ॥ सन्नातक मोक्ष जाय । हिचे पदवी पावे पांच ॥  
 इंद्रनी (१) सामानिकनी (२) तावतसनी ( ३ ) लोगपालनी ( ४ )  
 अहमिंद्रनी ( ५ ) पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील ( ३ )  
 ए तीन नियंठा पदवी चार पावे । इंद्रनी (१) सामानिकनी ( २ )  
 तावतसनी (३) लोगपालनी ( ४ ) ये चार पदवीमाहीलि एकेक  
 पदवी पावे ॥ कपाय कुसील । पांच पदवी मांहीली एक पदवी पावे ।  
 नियंठो ( १ ) अहमिंद्रकी पदवी पावे । ए पांच पदवी आरा-  
 धक आश्री जाणवी । विराध अनेरी ( दूशरी ) गतमे जाय ॥  
 सन्नातक मोक्ष जाय ॥ इति ॥ १३ ॥

हिचे सजम स्थानद्वार कहे छै ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडि-  
 सेवणा कुसील [३] कपायकुसील (४) ए चार नियंठाना संजमका  
 स्थानक असख्याता असख्याता ॥ नियंठो तथा सन्नातकना संजमना  
 स्थानक एक एक ॥ सर्वसूं थोडा । नियंठं ( निर्ग्रथ ) सन्नातकना  
 ( सजमना ) थानक ॥ तेह थकी पुलागना थानक असंख्यात-  
 गुणा ॥ तेह थकी बुकसना थानक असख्यातगुणा ॥ तेहथी पडिसे-  
 वणा कुसीलका थानक असख्यातगुणा ॥ तेहथी कपाय कुसीलका  
 थानक असख्यातगुणा ॥ इति ॥ १४ ॥

हिचे निकासद्वार कहे छे । छे नियंठाना चारिग्रना पडव्वा अनंता  
 अनता ॥ सीयहीणे, सीयतुळे, सीधभीय, जे हीण तो । अनंत भाग  
 हिणेवा । असखेज भाग हिणेवा । संखेज भाग हीणेवा । सखेज गुणहीणेवा ।  
 असंखेज गुणहीणेवा । अनंतगुणहिणेवा । जेमभीये तो । अनंत भाग

मभियवा । असखेज भाग मभियवा । सखेज भाग मभियवा । सखेज गुण मभियवा ॥ असखेज गुण मभियवा । अनतगुण मभियवा । पुलाग पुलागयी छठाण वडिया । बुरुसयी अनतगुणहिण । पडिसेवणा कुसीलयी अनतगुणहिण । कपाय कुसीलयी उठाण वडिया । नियठा सन्नातकसू अनंतगुणहीण ॥ हिवे बुरुस पुलागयी अनतगुण अधिक ॥ पोतारा थानकसू उठाण वडिया । पडिसेवणा कुसीलयी छठाण वडिया ॥ कपाय कुसीलयी उठाण वडिया ॥ नियठा सन्नातकसू अनत गुणहीण । पडिसेवणा कुसील पुलागयी अनत गुण अधिक ॥ बुरुसयी छठाण वडिया, पोतारा थानकसू छठाण वडिया । कपाय कुसीलयी उठाण वडिया । नियठा सन्नातकयी अनतगुणहीण ॥ हिवे कपायकुसील पुलागयी उठाण वडिया । बुरुसयी छठाण वडिया पडिसेवणा कुसीलयी उठाण वडिया ॥ पोतारा थानकसू छठाण वडिया । नियठा सन्नातकयी । अनतगुणहिण ॥ हिवे नियठो पाउला चार नियठांयी । अनंतगुणअधिक । पोतारा थानकयी तूळा ॥ हिवे सन्नातकयी तूळा । हिवे सन्नातक चार नियठांयी अनतगुण अधिक । निर्ग्रथयी तूळा ॥ पोतारा थानकयी तूळा । हिवे पुलागना अने कपाय कुसीलना । जघन्य तो माहोमाही तुला सर्ययी थोडा । चारित्रना पज्जवा । तेइयी पुलागना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनतगुणा ॥ तेह थकी बुरुस अने पडिसेवणा कुसीलना ॥ जघन्य । उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा । अनतगुणा तेह थकी बुरुसना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा । अनतगुणा तेह थकी पडिसेवणा कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेह थकी कपाय कुसीलना उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ तेह थकी नियठा । अने सन्नातक दोनाका माहोमाही तूळा जघन्य उत्कृष्ट चारित्रना पज्जवा अनंतगुणा ॥ इति ॥ १५ ॥

हिवे जोगद्वार कहे छे । पुलाग (१) बुरुस (२) पडिसेवणा

कुसील (३) कपाय कुसील (४) नियंठो (५) ए पाच नियठा तो सजोगी होय ॥ अजोगी नवी ॥ सन्नातक सजोगी होय अजोगी होय ॥ सजोगी होय तो १३ गुणठाणै अजोगी होय तो १४ गुणठाणै । अजोगी होय ॥ इति ॥ १६ ॥

हिचे उपयोगद्वार कहे छे ॥ छै नियठा साकारवउता होय ॥ अणाकारवउता होय । साकारवउता ज्ञानको उपयोग ॥ अणाकार वउता दरसनको उपयोग ॥ इति ॥ १७ ॥

हिचे कपायद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील ( ३ ) ये तीन नियठामाही । कपाय एक सजलनी चोऊडी होय ॥ हिचै कपाय कुसील । माहे सजलनो क्रोध (१) मान ( २ ) माया (३) लोभ ( ४ ) ये चार पावे तथा तीन तथा दोय तथा एक पावै । चार पावै ते । सजलकी चोऊडी पावै । तीन पावै तो सजलको मान ( १ ) माया ( २ ) लोभ (३) दोय पावै तो माया (१) लोभ ( २ ) । एक पावै तो सजलको लोभ पावै । नियठोअहपाई होय । उरसत कपाई होय ॥ तथा क्षीण कपाई होय ॥ सन्नातक अकपाई होय ॥ पण क्षीण कपाई होय ॥ इति ॥ १८ ॥

हिचे लेश्याद्वार कहे छे । पुलाग ( १ ) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ये तीना माहै लेश्या । तीन पावै । तेजू (१) पदम (२) सूक ( ३ ) हिचे कपाय कुसीलमाही लेश्या ६ छैठी लेश्याना भाव लाधे ॥ नियठामे १ सूक लेश्या पावै ॥ सन्नातक सलेसी होय ॥ अलेसी होय ॥ सलेशी होय तो परम शुक्ल लेश्या होय । अलेशी होय तो १४ मे गुणठाणै अलेसी होय ॥ इति ॥ १९ ॥

हिचे परिणामद्वार कहे छे ॥ परिणाम ३ २।



(२) उवठिया ( ३ ) ॥ पुलाग (१) बुकस (२) पडिसेवणा कुसील  
 (३) कपाय कुसील ( ४ ) ए चारा माहे तीन परिणाम लाभे हायमान  
 (१) वृधमान (२) उवठिया ( ३ ) हायमान ( १ ) वृधमाननी थिति  
 जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी थिती जघ-  
 न्य एक समयनी उत्कृष्टी सात समयनी ॥ द्विवे नियठामाहे परिणाम  
 दोय लाभे । वृधमान (१) उवठिया ( २ ) वृधमानकी थिती जघन्य  
 उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी थिती जघन्य एक समयनी उ-  
 त्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी द्विवै सन्नातक माहे परिमाण दोय लाभै ॥ वृध-  
 मान (१) उवठिया (२) वृधमानकी थिति । जघन्य उत्कृष्टी । अंत-  
 र्मुहूर्तनी उवठिया थिति । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी देस उणी  
 पूर्व कोढनी ॥ इति ॥ २० ॥

द्विवै बधद्वार कहे छे ॥ पुलाग । आउखो कर्म वरजीने सात  
 कर्म बांधे ॥ बुकस ( १ ) पडिसेवणा कुसील ( २ ) सात कर्म बांधे  
 तथा आठ कर्म बांधे ॥ ७ बांधे तो ॥ आउखो वरजीने बांधे ॥ क-  
 पाय कुसील ६ बांधे तथा ७ बांधे तथा ८ बांधे ॥ छे बांधे तो ।  
 मोहनी । आउखो वरजीने ॥ ७ बांधे तो आउखो वरजीने ॥ ८  
 बांधे तो पुस बांधे ॥ नियठो एक सातावेदनी बांधे ॥ सन्नातक  
 बांधे तो एक सातावेदनी बांधे । तथा अवंध ॥ इति ॥

द्विवे वेदद्वार कहे छे  
 कुसील (३) कपाय कुसील  
 मोहनी वरजी ७ कर्म  
 नाम (३) मोत्र (४)

) बुकस  
 तो

उदीरे तथा ७ उदीरे ॥ आठ उदीरे ॥ ६ उदीरै तो आउखो वेदनी-  
वरजीने ॥ ७ उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे ।  
कपाय कुसील । ५ उदीरे तथा ६ उदीरे तथा सात ( ७ ) उदीरे ।  
तथा ८ उदीरे ॥ हिवे ५ उदीरे तो वेदनी ( १ ) मोहनी ( २ ) आउखो  
( ३ ) वरजीने ॥ ६ उदीरे तो वेदनी ( १ ) आउखो ( २ ) वरजी ॥ ७  
उदीरे तो आउखो वरजीने ॥ ८ उदीरे तो पुरा उदीरे ॥ नियठो  
२ उदीरै । तथा ५ उदीरै । ७ उदीरै तो नाम ( १ ) गोत्र ( २ ) ॥  
पांच उदीरै तो वेदनी ( १ ) मोहनी ( २ ) आउखो ( ३ )  
ए तीन फर्म वरजीने ॥ सन्नातक उदीरे तो २ उदीरे । नामा ( १ )  
गोत्र ( २ ) तथा नथी उदीरे ॥ इति ॥ २३ ॥

हिवे उवसंपजहणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग । पुलागपणो छाडीने ।  
७ ठिकाणें जाय कपाय कुसीलमे आवै १ । असमजपडवजे २ ॥  
बुकस बुकसपणो छाडीने चार ठिकाणे जाय ॥ पडिसेवणा कुसील  
माहे जाय ( १ ) कपाय कुसीलमाहे जाय ( २ ) असजम पडवजे ( ३ )  
सजमा सजम पडवजे ( ४ ) ॥ पडिसेवणा कुसील पडिसेवणा कुसील-  
पणो छाडीने । चार ठिकाणे जाय । बुकसमे आवै ( १ ) कपाय  
कुसीलमे जाय ( २ ) असंजम पडवजे ( ३ ) सजमा सजम पडवजे  
( ४ ) ॥ हिवे कपायकुसील । कपाय कुसीलपणो छाडीने ६ ठिकाणें  
जाय ॥ पुलागमे आवै ( १ ) बुकसमे आवै ( २ ) पडिसेवणा कुसीलमे  
आवै ( ३ ) नियठामें जाय ( ४ ) असंजम पडवजे ( ५ ) सजमासजम  
पडवजे ( ६ ) हिवे नियठो नियठापणो छाडीने ३ तीन ठिकाणें जाय  
कपायकुसीलमे आवै ( १ ) सन्नातकमे जाय ( २ ) असजमपडवजे  
( ३ ) ॥ सन्नातक सन्नातकपणो छाडीने मोक्ष जाय ॥ इति ॥ २४ ॥

हिवे संज्ञाद्वार कहे छे ॥ पुलाग ( १ ) नियठो २ मन्नातक ३ ए

(२) उवठिया ( ३ ) ॥ पुलाग ( १ ) चुकस ( २ ) पडिसेवणा कुसील  
 ( ३ ) कपाय कुसील ( ४ ) ए चारा माहे तीन परिणाम लाभे हायमान  
 ( १ ) वृधमान ( २ ) उवठिया ( ३ ) हायमान ( १ ) वृधमाननी यिति  
 जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी यिती जघ-  
 न्य एक समयनी उत्कृष्टी सात समयनी ॥ द्विवे नियठामाहे परिणाम  
 दोय लाभे । वृधमान ( १ ) उवठिया ( २ ) वृधमानकी यिती जघन्य  
 उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी ॥ उवठियानी यिती जघन्य एक समयनी उ-  
 त्कृष्टी अंतर्मुहूर्तनी द्विवे सन्नातक माहे परिमाण दोय लाभे ॥ वृध-  
 मान ( १ ) उवठिया ( २ ) वृधमानकी यिति । जघन्य उत्कृष्टी । अत-  
 र्मुहूर्तनी उवठिया यिति । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी देस उणी  
 पूर्व कोडनी ॥ इति ॥ २० ॥

द्विवे वधद्वार कहे छे ॥ पुलाग । आउखो कर्म वरजीने सात  
 कर्म बांधे ॥ चुकस ( १ ) पडिसेवणा कुसील ( २ ) सात कर्म बांधे  
 तथा आठ कर्म बांधे ॥ ७ बांधे तो ॥ आउखो वरजीने बांधे ॥ क-  
 पाय कुसील ६ बांधे तथा ७ बांधे तथा ८ बांधे ॥ छे बांधे तो ।  
 मोहनी । आउखो वरजीने ॥ ७ बांधे तो आउखो वरजीने ॥ ८  
 बांधे तो पुरा बांधे ॥ नियठो एक सातावेदनी बांधे ॥ सन्नातक  
 बांधे तो एक सातावेदनी बांधे । तथा अवध ॥ इति ॥ २१ ॥

द्विवे वेदद्वार कहे छे ॥ पुलाग ( १ ) चुकस ( २ ) पडिसेवणा  
 कुसील ( ३ ) कपाय कुसील ( ४ ) ए चार तो ८ कर्मवेदे ॥ नियठो  
 मोहनी वरजी ७ कर्म वेदै ॥ सन्नातक वेदनी ( १ ) आउखो ( २ )  
 नाम ( ३ ) गोत्र ( ४ ) ए चार अघातिया कर्म वेदै ॥ इति ॥ २२ ॥

द्विवे उदीरणाद्वार कहे छे ॥ पुलाग ६ कर्म उदीरै । आउखो  
 ( १ ) वेदनी ( २ ) वरजीने ॥ चुकस ( १ ) पडिसेवणा कुसील ( २ ) छे

पढवज्या आश्री कहे छे ॥ हिवे पुलाग पूर्वे पढवज्या आश्री । सीय अत्वि सीय नरथी । होवइ न होरई । जे होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक हजार होय ॥ चुकस अने पडिसेवणा कुसील । जघन्य उत्कृष्टो । प्रत्येक सो कोडी होय ॥ हिवे कपाय कुसील । पूर्वे पढवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक हजार कोडि होय ॥ हिवे नियठो पूर्वे पढवज्या आश्री जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो पावै ॥ हिवे सन्नातक पूर्वे पढवज्या आश्री । जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक कोडि होय ॥ इति ॥ ३५ ॥

हिवे अल्पाग्रहत्वद्वार रुहे छे ॥ सर्वथी थोडा । नियंठाना घणी तेह थकी पुलागना घणी सख्यात गुणा ॥ तेह थकी सन्नातकना घणी सख्यातगुणा ॥ ते थकी चुकसना घणी । सख्यात गुणा ॥ ते थकी पडिसेवणा कुसीलका घणी सख्यात गुणा ते थकी कपाय कुसीलका घणी सख्यात गुणा\*\* ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
नियंठाऽख्यं चाविशति प्रकरणम् ॥



\* ए पाचे नियठामे पुलाग (१) और निमप (२) ए दीय अ साश्रता छे अने दोप चार (५) साश्रता छे

\* ए छे नियठानो विचार भगवति शतक २५ मे उद्देशे ६ छे छे.

पडिसेवणा कुसील (२) ये दोनोंमांही समुद्घात ५ पावै ॥ वेदना (१) कपाय (२) मारणातिक (३) वैक्रेय (४) तेजस (५) हिवे कपाय कुसीलमांहे । ६ समुद्घात पावै । वेदना (१) कपाय (२) मारणातिक (३) वैक्रेय (४) तेजस [५] आहारीक (६) केवल समुद्घात टली ॥ नियंठामाहे समुद्घात नथी ॥ सन्नातक्रमे एक केवल समुद्घात पावे ॥ इति ॥ ३१ ॥

हिवे क्षेत्रद्वार कहे छे । छ नियठा-तो-लोकने संख्यातमे भाग होय । असंख्यातमे भाग होय ॥ घणे असंख्यातमे भागे होय । तथा सर्व लोकमै होय ॥ इति ॥ ३२ ॥

हिवे फरसणाद्वार कहे छे ॥ ५ नियठा-तो-लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ सनातक । लोकनो । असंख्यातमे भाग फरसे । घणो असंख्यातमो भाग फरसे । तथा सर्व लोक फरसे ॥ इति ॥ ३३ ॥

हिवे भावद्वार कहे छे ॥ प्रथम चार नियंठा-तो-खयोपसमभावे होय ॥ नियंठो उवशम भावे होय ॥ तथा क्षायक भावे होय । सन्नातक क्षायक भावे होय ॥ इति ॥ ३४ ॥

हिवे परिमाणद्वार कहे छे ॥ पुलाग (१) चुकस (२) पडिसेवणा कुसील (३) ए तीन वर्तमान-पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्पी सीय नत्थी होवई न होवई ॥ होय तो जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा प्रत्येक सो होय ॥ हिवे नियंठो । वर्तमान पडवज्या आश्री ॥ सीय अत्पी सीय नत्थी होवई न होवई । जे होय तो १ । २ । ३ । उत्कृष्टा ( १६२ ) एकसो वासठ होय तेमा ५४ उवसम श्रेणीका घणी । ( १०८ ) एकसो आठ क्षपक श्रेणीका घणी होय ॥ हिवे सनातक सीय अत्पी । सीय नत्थी । होवई न होवई जे होय तो । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टा १०८ एकसो आठ क्षपक श्रेणीका घणी होय ॥ हिवे पूर्व

परंभाषा बोले नहीं (५) कलहकारी भाषा बोले नहीं ॥ (६) मर्म-  
कारी भाषा बोले नहीं (७) छेदकारी भाषा बोले नहीं (८) " ए  
८ आठ बोल. ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी मार्ग चालता बोले नहीं ॥ २ ॥  
काल थकी पेहेर रात गया पछे उतावळो बोले नहीं. ॥ ३ ॥ भाव  
थकी उपयोग सहित अल्प वचन बोले. मिष्ट वचन बोले. चतुराईसे  
बोले. काम पढे तब बोले. निरग्र वचन बोले. (४)

द्विवे एपणा सुमतीना चार भेदः-द्रव्य थकी ४० दोषटाल आ-  
हार वस्त्र पात्र स्थानक लेवे. [१] क्षेत्र थकी दोषकोश उपरान्त आ-  
हार पाणी लेजावे नहीं. (२) काल थकी पेहला पेहरको चौथा  
पेहरमे भोगवे नहीं. (३) भाव थकी ५ पांच मांडलियाका दोष रहित  
भोगवे. (४)

द्विवे आयाण भड मत्त निखेवणा सुमतीका चार भेदः-द्रव्य  
थकी चार उपगर्ण राखे पडिहार ॥ पीठ (१) फलग (२) सेज्या  
(३) सथारी (४) ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी जठे धरे तहा पूज कर धरे.  
[२] काल थकी दोनो वखत पडिलेहणा करे [३] भाव थकी उपयोग  
सहित २५ प्रकारकी पडिलेहणा करे [४]

द्विवे उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमतीका चार  
भेदः-द्रव्य थकी घडी नीती लघु नीति जयणासू परठे (१) क्षेत्र थकी  
कोई गृहस्थ आवे नहीं (२) देखे नहि जेठे परठे (२) सजमकी आ-  
त्माकी घात नहीं हुवे जठे परठे [३] ऊंची नीची धरती ( जमीन )  
नहीं हुवे जहां परठे (४) पोली भूमी नहीं हुवे जहां परठे (५) थोडे  
कालसू भूमी अचित हुई होय जहां नहीं परठे (६) जघन्य एक हाथ  
छे आगुल लवी चौडी होय चार अगुल तरु नीचे अचित होय जहां  
परठे (७) वृणादिकना दिगळा नहीं होय जहां परठे. (८) समूर्तिष



## प्रकरण तेवीसवा-पंच सुमति तीन गुप्तीनो स्वरूप.



हिवे पंच सुमतीना नाम कहे छे । इरियासुमति ( १ ) भापा सुमति ( २ ) एपणा सुमति ( ३ ) आयाण भड मत्त निखेवणा सुमति ( ४ ) उच्चारपासवण जळ खेल परिठायणया सुमति [ ५ ] .

हिवे इरियासुमतीका च्यार भेदः—द्रव्य थकी देख कर चाले ( १ ) क्षेत्र थकी दूसरा ( साढे तीन हाथ ) प्रमाण ( २ ) काल थकी दिनका देख कर चाले रातका पूंजकर चाले. [ ३ ] भाव थकी उपयोग सहित “ वायणा ( १ ) पूच्छणा [ २ ] पर्यष्टणा ( ३ ) अणुप्पेहा ( ४ ) वम्मकहा ( ५ ) शब्द [ ६ ] रूप ( ७ ) रस ( ८ ) गध ( ९ ) स्पर्श [ १० ] ए दस बोल वर्जोने ” बोले. ॥ ( ४ ) ॥

हिवे भापा सुमतिना चार भेदः—द्रव्य थकी आठ बोल वर्जोने बोले. ( ते कहे छे. ) “अलिय वचन कहतां किसकुंभी आल ( कलक ) देवे नही ( १ ) हेलिय वचन कहता किसीकी निंदा करे नहीं ( २ ) खिसीय वचन कहतां किसीके ऊपर क्रोध करे नहीं ( ३ ) फरूस वचन कहता कठोर भापा बोले नही ( ४ ) गारथीय कहता टहस्थकी

परेभाषा बोले नहीं (५) कलहकारी भाषा बोले नहीं ॥ (६) मर्म-  
कारी भाषा बोले नहीं (७) छेदकारी भाषा बोले नहीं ( ८ ) " ए  
८ आठ बोल. ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी मार्ग चालता बोले नहीं ॥ २ ॥  
काल थकी पेहेर रात गया पछे उतावळो बोले नहीं. ॥ ३ ॥ भाव  
थकी उपयोग सहित अल्प वचन बोले. मिष्ट वचन बोले. चतुराईसे  
बोले. काम पढे तब बोले. निरवग्र वचन बोले. (४)

हिवे एपणा सुमतीना चार भेदः-द्रव्य थकी ४२ टोपटाल आ-  
हार वस्त्र पात्र स्थानक लेवे. [१] क्षेत्र थकी टोपकोश उपरात आ-  
हार पाणी लेजावे नहीं. ( २ ) काल थकी पेहळा पेहरको चौथा  
पेहरमे भोगवे नहीं. (३) भाव थकी ५ पाच माडलियाका दोप रहित  
भोगवे. (४)

हिवे आयाण भड मत्त निखेवणा सुमतीका चार भेदः-द्रव्य  
थकी चार उपगर्ण राखे पडिहार ॥ पीढ (१) फलग ( २ ) सेज्या  
( ३ ) संधारी ( ४ ) ॥ १ ॥ क्षेत्र थकी जठे धरे तहा पूज कर धरे.  
[२] काल थकी दोनो वरत पडिलेहणा करे [३] भाव थकी उपयोग  
सहित २५ प्रकारकी पडिलेहणा करे [४]

हिवे उच्चारपासवण जळ खेल परिठावणया सुमतीका चार  
भेदः-द्रव्य थकी बडी नीती लघु नीति जयणासू परठे (१) क्षेत्र थकी  
कोई गृहस्थ आवे नहीं (१) देखे नहि जेठे परठे (२) सजमकी आ-  
त्माकी घात नहीं हुवे जठे परठे [३] ऊची नीची धरती ( जमीन )  
नहीं हुवे जहा परठे (४) पोली भूमी नहीं हुवे जहा परठे (५) थोडे  
कालसू भूमी अचित हुई होय जहा नहीं परठे (६) जघन्य एक हाथ  
छे आंगुल लंबी चौडी होय चार अंगुल तक नीचे अचित होय जहां  
परठे (७) वृणादिकुना ढिगला नहीं होय जहां परठे. (८) समर्थिष



जीव रहित होय जहां परठे (९) विल रहित धरती होय जहां परठे ( १० ) ॥ २ ॥ काल थकी परठे जहां लगे (३) भाव थकी उपयोग सहित ( ४ ) ॥ इति ॥

हिंवे ३ गुप्तीना नाम कहे छे । मनगुप्ती ( १ ) वचनगुप्ती (२) कायगुप्ती ( ३ )

मनगुप्तीका ३ भेद सारंभ (१) समारभ ( २ ) आरभ ( ३ ) सारभ ते मन करी किसीका मरणादि चिंतवे नही ॥ चिंतवे जिणने सारभ कहिये ( १ ) समारभ ते मन करी पीडा ( वेदना ) उपजावे नही ॥ उपजावे जिणने समारभ कहिये (२) आरभ ते मन करी मत्रा-दिक गुणी किसी जीवने हणे नही ॥ हणे जिणने आरंभ कहिये.(३)

हिंवे वचनगुप्तीके ३ भेदः-सारभ (१) समारंभ (२) आरभ [३] पूर्ववत् यहां वचन थकी कहना.

हिंवे कायगुप्तीका ३ भेदः-बैठते, ऊठते, हलते, चलते सारंभ [१] समारंभ (२) आरभ [३] होय, इन ३ तीनोंमें काया प्रवर्तवे नही. ( ३ )

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे  
पंच सुमति त्रिगुप्ती स्वरूपाख्यं  
त्रयोविंशति प्रकरणम् ॥

# प्रकरण चौवीसवा-दस श्रावक यंत्र.

प्रकरण चौवीसवा-दस श्रावक यंत्र.

४३७

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
श्रावक नाम	आणद	कामदेव	सुरादेव-						
नगर नाम	वागिया	चपा	वगारसी	बुछगी पीया	वगारसी	वगारसी			
राजा नाम	जितराजु	जितराजु	जितराजु	जितराजु	जितराजु	जितराजु			
गुरु नाम	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी	महावीर स्वामी			
जात नाम	गाथापत्ति	गाथापत्ति	गाथापत्ति	गाथापत्ति	गाथापत्ति	गाथापत्ति			
स्त्री नाम	शिवनदा	भद्रा	भद्रा	भद्रा	भद्रा	भद्रा			
यगिज धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००			
घटयो धन प्रमाण	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००			
घट थिरो	४०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००	६०००००००			

१०	गाय सत्या	४००००	६००००	६००००	६००००	६००००
११	श्रावकपणो	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष	२० वर्ष
१२	उपसर्ग	०	गजनो	मातामारणनो	१६ सोला	रोगनो
१३	सथारो	एक मास	एक मास	एक मास	एक मास	एक मास
१४	देवलोक	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो
१५	विमाग नाम	धारणाभ	असगाभ	अरग प्रभ	अरगका.	
१६	स्थिति प्रमाण	चार पत्य	चार पत्य	चार पत्य	चार पत्य	चार पत्य
१७	भव प्रमाण	१	१	१	१	१
१८	मोक्षश्रेण	मोक्षमहाविदेहजाले	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
१९	सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा
२०	अध्ययन	१	२	३	४	४



उपसर्ग नाम	घन काठवानो	अग्नि मित्रानो	०	०	०	०
२ सद्यारो	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास	१ मास
३ देवलोक	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो	पहेलो
४ विमान नाम	अरुगदोवी	अरुगव	अरुगवडिक्कग	अरुगग	अरुगकिल	अरुगकिल
५ स्थिति प्रमाण	४ पल्य	४ पर्य	४ पर्य	४ पल्य	४ पल्य.	४ पल्य.
६ भव प्रमाण	१	१	१	१	१	१
७ मौक्ष क्षेत्र	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह	महाविदेह
८ सूत्र	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा	उपासकदशा
९ अध्ययन	५	६	७	८	९	१०

इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीयखण्डे दश श्रावक यंत्राड्ड्यं चतुर्विंशति प्रकरणम् ॥

# प्रकरण पंचीसमा-इंद्रियद्वार.

१ २ ३ ४ ५

नाम	श्रोत्रेन्द्रिय	चक्षुर्देन्द्रिय	घोशेन्द्रिय	रसेन्द्रिय	स्पर्शेन्द्रिय
संज्ञा	कद्वय वृक्षने मूलने आकार	चन्द्रमसूरने आकार	धमगनो आकार	दुर्बलानो आकार	नानाप्रकारनो आकार
लाभयोगी जाहपणो	अगूलके अस रयातमे भाग	अंगुलके अस	अंगुलके अस	गण्ड अंगूल अस अंगुल नवअं	जघन्य अके असा यात मे भाग उरुष्टो हजार योजन
इन्द्रियना प्रदेश	अंततप्रदेशी	अततप्रदेशी	अंततप्रदेशी	अततप्रदेशी	अततप्रदेशी
इंद्रिय प्रदेश केसला अपगाहे	असख्यात प्रदेश अपगाहे	असख्यात म अप	असख्यात म अप	असख्यात म अप	असा यात प्रदेश अपगाहे
प्रदेशानी अख्यातदुत	सलेज गुणा २	सर्वसूयोहा १	संवेज गुणा ३	असख्यात गुणा ४	संख्यात गुणा ५

૭	દ્વિ અવગહાણો અરપા વટુત	સહ્યાત ઝુના ૨	સર્વસૂ યોડા ૧	સહ્યાત ઝુના ૩	અસહ્યાત ઝુના ૪	સહ્યાત ઝુના ૫
૮	અવગહાણા અને પ્રદેશાનો મહી અરપા વટુત	સરયાત ઝુના ૨ અવ પ્ર	સર્વસૂ યોડા ૧ અવ પ્ર	અવપ્ર સરયાત ઝુના ૩	અવ. પ્ર અસહ્યાત ગુના ૪	અવગહાણા પ્રદેશ સહ્યા- ત ઝુના ૫
૯	કર્કશ ગુરુનાગુગ વેતલા	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના
૧૦	મટુ સ્થુના ગુગ વેતલા	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના	અનત ઝુના
૧૧	કર્કશ ગુરુનો અરપા વટુત	અનત ઝુના ૨	સર્વસૂ યોડા ૧	અનત ઝુના ૩	અનત ઝુના ૪	અનત ઝુના ૫
૧૨	મટુ સ્થુનો અરપા વટુત	અનત ઝુના ૪	અનત ઝુના ૫	અનત ઝુના ૩	અનત ઝુના ૨	સર્વસૂ યોડા ૧
૧૩	કર્કશ મટુ અને ઝુક સ્થુ નો અરપા	કર્કશ મટુ કર્કશ ઝુના ૨ અનત ઝુના	કર્કશ ઝુના સર્વસૂ યોડા ૧	અનત ઝુના ૩	અનત ઝુના ૪	અનત ઝુના ૫ મટુ અ
૧૪	સમુચય દ્વિનો વિષય	૧૨ યોજન	૧ લક્ષ યોજન	૯ યોજન	૯ યોજન	૯ યોજન

१५	जघन्य उपयोगनो काल	वितेसाहिया २	सर्वयी थोडा १	वितेसाहिया ३	वितेसाहि० ४	वितेसाहिया ५
१६	उरुकुष्ट उपयोगनो काल	वितेसा० २	सर्वयी थो० १	वितेसा० ३	वितेसाहि० ४	वितेसाहिया ५
१७	जघन्य उरुकुष्ट उपयोग तः कालनी अन्था	ज० उ० वितेसाहि० २	सर्व० ज उ वितेसाहि० १	ज उ विते सा० ४	ज० उ० विते- सा० ४	जघन्य-उरुकुष्ट वितेसाहि या १
१८	फारसा भणफारसानो प्रमाण	ज० अ० अ- स० उरुकुष्ट १२ योजन	ज० अ० अ- स० उरुकुष्ट ला स योजन	ज अ० अ० अ० उरुकुष्ट ९ यो जन	ज अ० अ० अ० उरुकुष्ट ९ यो जन	जघन्य अ लो अस रयातभे भाग उरुकुष्ट ९ योजन

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे इन्द्रियद्वाराख्यं पंचविंशति प्रकरणम् ॥







## प्रकरण छन्वीसवा सम्यक्त्व स्वरूप.



हिचे सम्यक्त्वना पांच भेद -साश्वादान सम्यक्त्व (१) उपशम सम्यक्त्व (२) वेदक सम्यक्त्व [३] क्षयोपशम सम्यक्त्व (४) क्षायक सम्यक्त्व (५)

हिचे पांच सम्यक्त्वनी स्थिती कहे छे। साश्वादान सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६ छे आविलकानी ॥ १ ॥ उपशम सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी ॥ २ ॥ वेदक सम्यक्त्वनी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट एक समयनी ॥ ३ ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्य एक समयनी उत्कृष्टी ६६ सागर जाझेरी ॥ ४ ॥ क्षायक सम्यक्त्वनी स्थिती नथी ॥ ५ ॥

हिचे साश्वादान सम्यक्त्व अने उपशम सम्यक्त्व एक भवाश्री जघन्य एकवार आवे उत्कृष्टी ५ वार आवे ॥ वेदक सम्यक्त्व जघन्य उत्कृष्ट एक वार आवे ॥ क्षयोपशम सम्यक्त्व जघन्य एक वार उत्कृष्टी असख्यातीवार आवे ॥ क्षायक सम्यक्त्व आया पीछे जाय नही. ॥

हिचे उपशम सम्यक्त्वना सात भेद:-अणतानुपधी क्रोध (१) मान (२) माया (३) लोभ (४) मिथ्यात्व मोहनी [५] मिश्रमोहनी

(६) सम्यक्त्व मोहनी (७) ए सातू प्रकृति उपशमावे जिणनें उपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ तथा ए सातू प्रकृति माहिली कोई क्षय करे, कोई उपसमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥

हिवे क्षयोपशम सम्यक्त्वना चार भेदः—चार प्रकृती क्षय करे तेनें उपशमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ १ ॥ तथा ५ प्रकृति क्षय करे दोय प्रकृती उपशमावे जिणनें क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक उपशमावे जिणनें क्षयोपशम स० क० ॥ ३ ॥ तथा ४ प्रकृती क्षय करे २ उपशमावे एक वेदे जिणनें क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ४ ॥

हिवे क्षयवेदकना ३ भेदः—चार प्रकृति क्षय करे अने ३ वेदे तेने क्षयवेदक सम्यक्त्व कहिये ॥ ५ ॥ तथा ५ प्रकृती क्षय करे दोय वेदे तेने क्षयवेदक स० क० ॥ ६ ॥ तथा ६ प्रकृती क्षय करे एक वेदे तेने क्षय वेदक स० क० ॥ ७ ॥ तथा ७ सातूही प्रकृती क्षय करे तेने क्षयक स० क० ॥ ८ ॥ ए नव भेद जाणवा. ॥

हिवे नव प्रकारनी सम्यक्त्व कहे छे । द्रव्य सम्यक्त्व [१] भाव सम्यक्त्व (२) निश्चय सम्यक्त्व (३) व्यवहार सम्यक्त्व (४) निसर्ग सम्यक्त्व (५) उपशम सम्यक्त्व ( ६ ) कारक सम्यक्त्व (७) रुचक सम्यक्त्व [८] दीपक सम्यक्त्व (९).

हिवे द्रव्य सम्यक्त्व जिणनें कहिये । श्री तीर्थरुज जिन वचन सत्य सरदे पिण परमार्थ नहि जाणे भेदानुभेद नहि जाणे शुस्नो दियो सम्यक्त्व गृहो ण ऊपर भेदनो दृष्टात ॥ १ ॥

हिवे भाव सम्यक्त्व जिणनें कहिये । भाव सम्यक्त्वनो धणी परमार्थ जाणे भेदानुभेद जाणे निण ऊपर आरिणाको ( काच )

दृष्टान्त जिम आरसामाही जेसो स्वरूप देखे तैसो दीसे. तेने भाव सम्यक्त्व कहिये ॥ २ ॥

हिवे निश्चय सम्यक्त्व किणने कहिये. ज्ञान दर्शन चारित्र्ये विसे शुभ भाव प्रवर्ते तेने निश्चय सम्यक्त्व कहिये. ॥ ३ ॥

हिवे व्यवहार सम्यक्त्व किणने कहिये ॥ लक्षण करि जाणे साधूनी समाचारीमे प्रवर्ते तथा श्रावक व्रत पाले सामाझू पोपध प्रतिक्रमण करे त्याग पक्ष्वाण लेवे जिणने व्यवहार सम्यक्त्व कहिये. ( ४ )

हिवे निसर्ग सम्यक्त्व किणने कहिये ॥ ते गुरुना उपदेश विना जिन धर्म सत्य सरदे, जातिस्मरण ज्ञान करी जाणे मृगाणुत्रनी परे ॥ जिणने निसर्ग सम्यक्त्व क० ॥ ५ ॥

हिवे उपदेश सम्यक्त्व किणने कहिये । गुरुना उपदेशथी देव-गुरु धर्म ए ३ तत्व सत्य सरदे तेने उपदेश सम्यक्त्व कहिये ॥ ६ ॥

हिवे कारक सम्यक्त्व किणने कहिये । ते शुद्ध क्रिया पाले शुद्ध आचार पाले जिम सिद्धान्तमाही ह्यो तिम प्रवर्ते तेने कारक सम्यक्त्व कहिये ॥ ७ ॥

हिवे रुचक सम्यक्त्व किणने कहिये । गुरुना वचन ऊपरे रची राखे क्रिया करणकी रची राखे पिण करी सके नही जिणने रुचक सम्यक्त्व कहिये ॥ ८ ॥

हिवे दीपक सम्यक्त्व किणने कहिये ॥ दीपकनी परे जिम दीपक अन्य जगे चादणो करे पिण आपणे नीचे अधारो ग्हे तिम अन्य

लोगांको प्रतियोरे पिण पोते सम्यक्त्व पावे नहीं जिणने दीपक सम्यक्त्व कहीये ॥ ९ ॥

हिंवे विस्तारथी व्यवहार सम्यक्त्वना ६७ भेट कहे छे ॥ सम्यक्त्वनी चार ४ सरदणा ॥ जीवादिऊ ९ पदार्थनी ओलखण (पहछान) करे ॥ १ ॥ तत्वना जाण आचार्य बहु श्रुतीनी सेवा करे ० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो परिचय टाले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म पर प्रेम न राखे ॥ ४ ॥

हिंवे ३ लिंगः- स्त्री लिंग पुरुषलिंग नपुसकलिंग\* एवं ॥ ७ ॥

हिंवे दस प्रकारनो विनय कहे छे । अरिहतणो विनय करे (१) सिद्धनो विनय (गुणग्राम) करे ० (२) ज्ञानी पुरुषनो विनय करे (३) सूत्र सिद्धान्तनो विनय करे (४) धर्मी पुरुषनो विनय करे (५) साधु-जीनो विनय करे (६) धर्माचार्यनो विनय करे (७) उपाध्यायजिनो विनय करे (८) प्रवचननो विनय करे (९) सम्यक्दृष्टीनो विनय करे (१०) एव ॥ १७ ॥

हिंवे सम्यक्त्वनी ३ शुद्धता ॥ मनशुद्धता (१) वचन शुद्धता (२) कायशुद्धता (३) एव ॥ २० ॥

हिंवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण सम (१) सवेग [२] निरवेग (३) अणुकंपा (४) आसता । [५] एव २५

\* पुरुषलिंग ते जिम तरह पुरुष रंग राग उपर राचे तिम धी धी तरागनी वागी उपर राचे ( १ ) स्त्री लिंग ते जिम २-३ दिननो भूषो पुरुष क्षीर सफराना भोजनने आदर देवे तिम श्री वीतरागनी वागीने आदर देवे (२) नपुसकलिंग ते विच रागनी वागी सुगी हर्षवतहुवे (३)

हिवे सम्यक्त्वनी आठ भावना-सूत्र सिद्धान्तनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे (१) धर्म कथानो कहनहार (वक्ता) होय तो जिण मार्ग दीपावे [२] न्यायनो जाणकार होय तो जिणमार्ग दीपावे (३) अवसरनो जाण होय तो जिण मार्ग दीपावे ( ४ ) तपस्त्री होय तो जिण मार्ग दीपावे ( ५ ) विद्वान् होय तो जिणमार्ग दीपावे (६) मिष्ट वचनी होय तो जिण मार्ग दीपावे (७) कवी होय तो जिण मार्ग दीपावे ( ८ ) एव ॥ ३३ ॥

सम्यक्त्वना ५ आभरण-धर्मने विषे चतुर होय (१) चतुर्विध संघनी सेवा करे (२) गुणवतनी भक्ति करे (३) धर्मने विषे स्थिर चित्त राखे [४] अन्यमतीने हेतू दृष्टात करी म्मजावा समर्थ होय (५) एव ॥ ३८ ॥

हिवे सम्यक्त्वना ५ लक्षण-सुख दुःख आया धीरता ( धैर्य ) राखे । १ । वैराग्यवत होय । २ । दिनदिन प्रत्यय आरभसू निवर्ते । ३ । अनुकम्पावत होय । ४ । जिण धर्म ऊपरे विश्वासवन्त होय ॥ ५ ॥ एवं ॥ ४३ ॥

हिवे सम्यक्त्वना छे दोष टाले ॥ पर पाखंडीने वदना नही करे ( १ ) पर पाखंडीसुं चारवार बोले नहीं ( २ ) पर पाखंडीको घणो परिचय करे नहीं (३) पाखंडीने मोक्षनो कारण जाण दान देवे नही (४) पाखंडीसु घणो वाद करे नही ( ५ ) पाखंडीसे बिना बोलाया बोले नहीं (६) एवं ४९ ॥

हिवे सम्यक्त्वनीने छे प्रकारनो आगार ॥ राजा मिथ्यात्वी कोई कार्य करावे तो आगार (१) न्यातनो आगार (२) जोरावरनो आगार ( ३ ) देवतानो आगार ( ४ ) माता पिताको आगार ॥ (५) कारणसु अन्यमतीने दान देणाको आगार (६) एव ५५ ॥

द्विवे सम्यक्त्वनी छे भावना ॥ हे जीव सम्यक्त्व सदा निर्मल छे । तें रागद्वेष करी मलीन करी छे ताहागे निजगुण निर्मलही राखवो ॥ ए पहिली भावना ॥ १ ॥

द्विवे दुजी भावना-जिम नगरने कोट दरवाजा करीने टोपद चोपद सर्व जीवने आधारभूत छे । जिम सम्यक्त्व रूपया नगरने विषे ज्ञानदर्शन चारित्र, सयम व्रत पचखाण विनय व्यावच सम्यक्त्व रूप राजानें आधारभूत छे ॥ २ ॥ द्विवे तीजी भावना ॥ सर्व धर्मनो उपाय सम्यक्त्व छे ॥ ३ ॥ द्विवे चोयी भावना जिम सर्व जीवने पृथ्वी आधारभूत छे तिम जीव धर्मने त्रिपै सम्यक्त्व आधारभूत छे ॥ ४ ॥

द्विवे पांचमी भावना जिम दूधनो भाजन शख-शखमाही दूध विणसे नही खाटो थाय नही तिम सर्व ज्ञान धर्मरूप दूधनो भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ५ ॥

द्विवे छठी भावना जिम चक्रवर्तिने रत्ननो भाजन निधान छे तिम सर्ववृत्ती देशवृत्ती रत्ननो भाजन सम्यक्त्व छे ॥ ६ ॥ ॥ एव ६१ ॥

द्विवे सम्यक्त्वना छे म्यानरु ॥ जीवादिकु हेय-गेय-उपादेयनो स्वरूप चितवे (१) जीवसदा शाश्वत छे (२) शुभ अशुभनो कर्ता जीव छे (३) कीमा कर्मनो भोगवणहार जीव छे (४) किणही ऊपर रागद्वेष करे नहीं (५) जीवने मोहनी आदि अष्ट कर्म क्षयकर्या वटे मोक्ष छे (६) एव ६७ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे

सम्यक्त्व स्वरूपाख्यं पद्मविंशति

प्रकरणम् ॥ २६ ॥



## प्रकरण सत्तावीसवा-प्रमाणबोध ॥

हिवे भव्य जीवना सुख वोऽने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनु मान सूत्र अनुयोग द्वारथी कहे छे ॥ तेमां प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्मा अगुळ ॥ १ ॥ उत्से-  
धांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥

हिवे आत्म अंगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादि १५ क्षेत्र छे ॥ तिहां जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतापोतानें १२ अगुले १ सुख थाय ॥ अने ९ मुखे एक पुरुषनुं ऊंचपणानु मान थाय ॥ एटले १२ नवा अठोत्तरसो १०८ आत्म अंगुलनो पुरुष उचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥

हिवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्रमाणे उंडि जलनि कुडी होय, ॥ तेने जले करि परिपूर्ण भरिये ॥ ते माही पुरुष वेशे ॥ तिवारे एरु द्रोण प्रमाणे जलकुंडि माहीथी वाहिर निरुळे ॥ तथा एरु द्रोण प्रमाणे जले करि कुडि उणी होय ते कुडी माहि ते पुरुष वेशे तिवारे परिपूर्ण जले भराय ॥ तिवारे ते मानो

पेत पुरुष कहिये ॥ हिवे द्रोण ते केवडो होय ते कहे छे ॥ वे असलीये १ पसली थाय ॥ वे पसलीये १ सइ थाय ॥ चार सइये १ कुडव थाय । चार कुडवे १ पाथो थाय ॥ चार पाथे १ आढो थाय ॥ चार आढे एक द्रोण थाय ॥ ए द्रोणनूं मान कहू ॥ ए रीते मानो पेत पुरुष कहिये ॥ २ ॥ हिवे उन्मान युक्त पुरुष केहने कहिये ॥ जे पुरुष तोड्यो थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मान युक्त पुरुष कहिये ॥ अर्द्धभारनूं मान कहे छे ॥ एक हजारने पचाश पले अर्द्ध भार थाय ॥ ए अर्द्ध भारनूं मान कहूं ॥ ३ ॥ हिवे ए ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षण साधियादिक ॥ व्यजन मस तिलादिक ॥ गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम पुरुष जाण्यो ॥ हिवे उत्तम पुरुष १०८ आत्म अंगुलनो उचो होय ॥ १ ॥ मध्यम पुरुष १०४ आत्म अंगुलनो उचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुष ९६ आत्म अंगुलनो उचो होय ॥ ३ ॥ हिवे जे पुरुष १०८ आत्म अंगुलथि न्युनाधिक होय ॥ स्वर आदेय वचन ॥ १ ॥ सत्व धीर्य ॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होय ते परनो दास-किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्म अंगुले १ पगना मध्य भागनु पढोलपणु थाय ॥ वे पगे १ विहथि वेत थाय । वे विहथि वेते ए १ हाथ थाय ॥ वे हाथे एक कुक्षि थाय । वे कुक्षिये अथवा ४ हाथे १ धनुष थाय ॥ वे हजार धनुषे १ गाउ थाय । चार गाउए १ जोजन थाय ॥ जे काले जे आरे जे मनुष्यनु आत्म अंगुल होय ते आत्म अंगुले-ते ते खतना ॥ नगर ॥ गाम ॥ वन ॥ कुवा ॥ तलाव ॥ बवडी ॥ गढ ॥ पोला ॥ कोठा ॥ यान ॥ ॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलना मान मळपा छे ॥ १ ॥ हिवे उत्सेधांगुलनु मान कहे छे ॥ अनता सूक्ष्म परमाणु आ मेला करिये ॥ तिवारे १ व्यवहारि परमाणु थाय ॥ तथा जालीने विपे रखा सूर्यना किरण तेषां रहिजे रज उडती देखाय छे ॥ ते रजनो १



अनंतमो भाग तेने व्यवहारि परमाणुं कहिये ॥ अन्यमति रजना ते त्रिशमा भागने परमाणुं कहे छे ॥ ते व्यवहारि परमाणुं ॥ शस्त्रे करि तरवारनी तथा छर पलानि धाराये करि पण छेदाय भेदाय नही ॥ अग्निमांही सोसरो निकली जाय पण बले नही ॥ दाजे नही ॥ तथा पुष्कर सवर्त महां मेहमाहीं चाल्यो जाय पण पलळे भिंजाय नही ॥ तथा गंगा महा नदीनो प्रवाह ऊंचो चुल हिमवत पर्वतथी पडे छे ते प्रवाह साहमो चाल्यो जाय पण खलाय नही ॥ घात पामे नही ॥ तथा पाणिना आवर्तन तथा विंदु वा मांही रहे पण तिहां सडीगलीने पाणि न थड जाय ॥ ते अति तिखे शस्त्रे करिने देवतानी शक्तिये छेदता भेदता एक खण्डनो विजो खड न थाय ॥ तेने तत्वज्ञाता परमाणु कहे छे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिले तिवारे १ उष्ण सन्नियो थाय ॥ आठ उष्ण सन्निये १ सण सन्नियो थाय ॥ आठ सणसन्निये १ उर्द्धरेणु थाय ॥ आठ उर्द्धरेणुये १ त्रश रेणु ते वेंद्रीयादिक त्रश जीवने चालता रज उडे ते थाय ॥ आठ त्रशरेणुये १ रथरेणु ते रथादिक हिंडता रज उडे ते थाय ॥ आठ रथरेणुए १ देवकुरु उत्तर कुरूना जुगलिया मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणु थाय ॥ आठ देवकुरु उत्तरकुरूना वालाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रनु जाडपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रनु जाडपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना वालाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेहना मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणु थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना वालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यना वालाग्रनु जाडपणुं -थाय ॥ एहवा ८ वालाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु वाय ॥ आठ जुये १ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मये १ अगुल थाय ॥ छ अगुल १ पग थाय ॥ १२ अगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले, १ हाथ थाय ॥ ४८ अगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ मनुष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ

धाय ॥ चार गाउंए १ योजन थाय ॥ ए उत्सेधागुळे २४ दंडरुनी  
अवघेणापवी छे ॥

दिवे प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे भरतादिक चक्रवर्तीनु कांगणि  
रत्न होय ॥ ते ८ सोनइया भारने तोले छे ॥ सोनइयानु तोल कहे  
छे ॥ ४ मधुर त्रिफले ॥ १ श्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १  
अडद थाय ॥ २ अडदे १ गुजा थाय ॥ ६ गुंजाये १ मासो थाया ॥  
१६ मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ८ सोनइया भारनुं कांगणि  
रत्नहोय ॥ तेने छे तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांश छे ॥ सोनीनी अहिरणनें  
सठाणे छे ॥ ते कांगणि रत्ननी एकेकी हांश उत्सेधागुलनि पहोलि छे ॥  
अने जे उत्सेधांगुल ते समण भगवत महावीरनु अर्द्ध अंगुल थाया ॥  
तेने हजारगुणु करिये ॥ तिवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीर  
स्वामीना पांचसे आत्म अगुले १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एहवा ६ प्रमा-  
णांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १  
हाय थाय ॥ ४८ अगुले १ कुशि थाय ॥ १६ अगुले एक धनुप  
थाय ॥ २ हजार धनुपे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउये एक योजन थाय ॥  
ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी पर्वत त्रिमान नरकवासा द्वीप समुद्र नरक  
देवलोक लोक अलोक शाश्वती जमीन रत्न प्रधादिक २८ बोलनुं  
तथा द्वीप समुद्रादि २८ बोलनु ॥ लात्रपणु ॥ पहोलपणु ॥ उच-  
पणु उहपणु ॥ परिधि प्रमुखना मान मळया छे ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना  
अगुल कथा ते प्रत्येक २ ना त्रण भेद ॥ श्रेणि अगुल ॥ १ ॥ प्रत-  
रागुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥ ३ ॥ तीहां असत्कल्पनयि श्रेणि ते अ-  
सख्यातां जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांयी ॥ अने एक आकाश प्र-  
देशनी पहोळी ॥ जाडपणे लोकात सुधि तेने श्रेणि कहिये ॥ १ ॥  
ते श्रेणिनें श्रेणि गुणो करिये तेने मतर कहिये ॥ २ ॥ ते मतरने  
श्रेणि गुणो करिये तेने घन कहिये ॥ ३ ॥ ते घनकृत लोकने स-

# प्रकरण अहावीसवा-चौदा बोलनी लड.

४५६

सिद्धांत-शिरामणी-द्वितीय खण्ड.

१ २ ३ ४

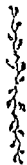
सख्या	चौदे योल्नी लड	जीवका भेद	गुण ठाणा	जोग	उप-योग	लेशा	दडक	उदय-भाव	उपनाम भा०	क्षायक भा०	क्षयोप-सामभा	परिणा-मिया भा०	चार गत	उक्ताय	आत्मा
१	चौदा भेदोका जीव चादेळिया	१४	१४	२१५	४१०	३६	५११२१३२	१८	१	१	९१७२६	८१०	१	२	५
२	१४ गुणठाणाका जीव १४ लिया	१	१४	९१५	८१२	६	६२२२९	८	९	९	९२६३२१०	१०	१	२	८
३	१५ योगका जीव १५ लिया	१	७	२१२	१५	६	११४२०	३२	१	६	९१९३२१	१०	१	१	८
४	१२ उपयोगका जीव १२ लिया	१	८	३११	६१२	१	११०१७	३१	१	८	७१३२४३२	१०	१	१	८

५	६ लेखाका जीव ६ लिया	१	६	१	६	१	११५	३१२	६	१	६२०३२	१	८	१	९१६३२	८१०	१	७	१	५	६	८
६	२४ बूढका २४ जीव लिया	५	११	१	६	११५	५११	४	६	२४२४२९३३	१	१	१	१	९२८२०	८१०	४	४	६	६	६	८
७	दोभाका ३३ बोलका ३३ जीव लिया	२	१४	१	११४	२१५	३१२	५	६	८२४३३३३	१	८	१	१	९२६३२	८१०	४	४	६	६	६	८
८	उपनाम भावका ८ बोलका ८ जीव लिया	१	२	१	३	५१४	४	१	६	१	२१०२२	८	८	१	११६२२	८१०	१	२	१	१	१	७
९	क्षायक भावका १३ बोलका १३ जीव लिया	१	२	१	४	१११	२	१	६	१	२	४२२	४	७	१३१३१६२१	५१०	१	२	१	१	१	६
१०	क्षयोपनाम भाव का ३२ बोलका ३२ जीव लिया	१	१४	५	१२	९१५	१०१०	६	६	१२४२२३३	५	८	१	१	२३०३२१०१०	१	४	१	६	६	६	८
११	परिणामिक भा वका १० बोलका १० जीव लिया	१	१०	१	१५	३१२	१	६	१	१०१५३३	१	८	१	१	३१७३२१०१०	११	४	१	६	६	६	८

१२	पारागत ४ जीव लिया	१	४	१	४	१	१५	३११	२	६	४	४२१२९	१	८	१	९१६२९	८१०	४	४	१	२	६	६	८
१३	छेमायका छे जीव लिया	२	५	१	२	१	१५	३	९	६	६	६२४३०	१	८	१	९१३२५	८१०	१	२	६	६	६	६	८
१४	८ आरमाका जीव लिया	१	८	१	८	१	१५	३१२	१	६	१	८११३३	१	८	१	३१५३२	९१०	१	४	१	४	१	६	८

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे चतुर्दश संज्ञास्थं अष्टाविंशति

प्रकरणम् ॥





## प्रकरण २१ वा १२ चक्रवर्ति यंत्र.

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

क्र.सं.	वर्ण	नगरी नाम	क्षेत्र प्रमाण	आयुष्य प्रमाण	श्री नाम	माता नाम	पिता नाम	१२ चक्रवर्ती के नाम
१	व	वलिता	५०० घण्टु	१४ टाल वर्ष	सुभद्रा	सुमगला	ऋषभ	भारत
२	ब	अयोध्या	४५० घण्टु	७२ टाल वर्ष	भद्रा	यकोवती	सुमति	सागर
३	ग	सावयथी	४२ घण्टु	५ टाल वर्ष	सुनदा	भद्रा	विजय	मयव
४	घ	हस्तगपुर	४१ घण्टु	३ टाल वर्ष	जया	सहदेवी	समुद्रविजय	सनतकुमार
५	ङ	हस्तगपुर	४० घण्टु	१ टाल वर्ष	विजया	अरुला	विश्वसेन	शान्तीराय
६	च	हस्तगपुर	३५ घण्टु	१५ हजार वर्ष	कन्यश्री	श्री	शूरसेन	कुंभनाथ
७	छ	हस्तगपुर	३० घण्टु	१४ हजार वर्ष	शूरश्री	देवी	सुदर्भा	अरिनाथ
८	ज	यागरसी	२८ घण्टु	६० हजार वर्ष	पौमश्री	ज्वाला	पौमुत्त	समभूम
९	झ	यागरसी	२० घण्टु	३० हजार वर्ष	वसुंधरा	ताता	कर्त्तरीर्थ	महापद्म
१०	ट	कपिलपुर	१५ घण्टु	१० हजार वर्ष	देवी	भैरवाणी	महाहरिविजय	हरिलिन
११	ड	राजगृही	१२ घण्टु	३०० वर्ष	लक्ष्मीपती	चयाराणी	पद्मराजा	जयनाम
१२	ण	कैपिलपुर	७ घण्टु	७०० वर्ष	हुरुमती	सुखी	महाराजा	महावृत्त







२६	वारांगना	२४
२७	देश प्रमाण	३२०००
२८	महानगर सख्या	३२०००
२९	सामान्य नगर	८४०००
३०	नवाकटक पडाव	३२०००
३१	राजधानी सत्या	१६०००
३२	वेलावल	३६०००
३३	द्वीपनी सख्या	१६०००
३४	जळ पथनगर मान	१६०००













८९	कुमारपत्र	७० लाख पूर्व	५०००० पूर्व	२५००० वर्ष	५०००० वर्ष	२५००० वर्ष	२५००० वर्ष	२२७५० वर्ष	२१००० वर्ष	५०००० वर्ष	५०००० वर्ष	३२५ वर्ष	३०० वर्ष	५६ वर्ष
९०	मांडलिकपण	१००० वर्ष	५००० पूर्व	२५००० वर्ष	५०००० वर्ष	२५००० वर्ष	२२७५० वर्ष	२१००० वर्ष	५०००० वर्ष	५०००० वर्ष	५०००० वर्ष	३२५ वर्ष	३०० वर्ष	५६ वर्ष
९१	खड साध्या	६०००० वर्ष	३०००० वर्ष	२८००० वर्ष	१०००० वर्ष	८०० वर्ष	६०० वर्ष	५०० वर्ष	४०० वर्ष	३०० वर्ष	१५० वर्ष	१०० वर्ष	१६ वर्ष	
९२	राजपदवी भोगवी	६ लाख पूर्व उगा १ ला	७० लाख पूर्व	३९००० वर्ष	९९००० वर्ष	२४००० वर्ष	२३१५० वर्ष	२०६०० वर्ष	४९५०० वर्ष	१८७०० वर्ष	१८७०० वर्ष	१९०० वर्ष	६०० वर्ष	
९३	वीक्षा प्राली	१००००० पूर्व	१००००० पूर्व	५००००० पूर्व	१००००० वर्ष	२१००० वर्ष	२३७५० वर्ष	२१००० वर्ष	०	१०००० वर्ष	७३३० वर्ष	४० वर्ष	०	

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे द्वादश  
चक्रवर्ती यंत्राख्यं एकोनत्रिंश प्रकरणम् ॥





हिवे एरुवीसमो मनुष्यनो दडरु कहे छे ॥ उदारिकुना दोय भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमां वद्ध ते ॥ कदाचित् मनुष्य सख्याता होय ॥ समुत्तिमनो विरह पडे छे तेथि कदाचित् असख्यातो होय । जघन्य पदे ॥ त्रीणजमलपद (२४) निउपरने (५) जमलपद (३२) निहेठे ॥ अर्थात् २९ आरुनी सख्या प्रमाणे ॥ अथवा पाचमो वर्ग । छटा वर्ग साथे । गुणता जे राशी थाय ॥ अथवा ९६ वार यथोत्तर वमणा करिये ॥ अथवा ९६ वार अर्द्धा अर्द्धा करता शेष एक रहे ॥ एटला अक प्रमाणे मनुष्य जाणवा ॥ तेनो आरु आ प्रमाणे ॥ ७९ । २२ । ८१ । ६२ । ५१ । ४२ । ६४ । ३३ । ७५ । ९३ । ५४ । ३९ । ५० । ३३६ ॥ १ ॥ उत्कृष्ट पडे असख्याता होय ॥ समुत्तिम गर्भेज भेलता कालथी असख्यात उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला क्षेत्रथी अगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनो प्रथम वर्गमूल त्रीना वर्गमूल साथे गुणता जे राशी थाय तेटला भागमा मनुष्यनु एकेक शरीर मुक्ता ॥ एक श्रेणी खाली थाय उत्कृष्ट शरीरमां एकेरु शरिर वद्धारे नाखिये तो ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमां वद्ध सख्याता कालथि सख्याता कालना समय जेटला १ मुक्त अनता अधिकवत् ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ आहारिकुनां दोय भेद अधिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना दोय भेद उदारिकवत् २ । ४ । ५ ॥ ए एरुविश दडरु ॥ इति ॥

हिवे वाधीसमो वाणव्यतरनो दडरु कहे छे ॥ उदारिकुना दोय भेद ॥ वद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमा वद्धते असख्याता कालथी असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असख्यातमे भागे जेटली त्रेणियो तेना प्रदेश जेटला अथवा सख्यात

योजन शतना वर्ग कर्ता जे आवे । तेदला २ भागमां ॥  
वाणव्यतरनु शरीर मुक्ता प्रतर भराय तेदला बद्ध वैक्रेय छे  
॥ १ ॥ मुक्त उधीरवत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना वध्व नधी १  
मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना वध्व मुक्त वैक्रेयवत् ॥  
॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ इति घात्रिसमो दडक ॥

हिचे तेवीणमो ज्योतिपीनो दडक कहे छे ॥ आहारिकना २ भेद ॥  
वध्व नधी (१) मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना ते भेद ॥  
वध्व [१] मुक्त [२] ॥ तेमां वध्व असख्याता कालथि असख्यात उत्स-  
र्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रधी प्रतरने असख्यातमे भागे ।  
जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ अथवा २५६ अगुलनो जे  
वर्ग तेदला प्रदेश प्रमाणे ॥ एक खड उपरे ॥ एकेकु ज्योतिपीनुं श-  
रीर मुक्त प्रतर भराय ॥ १ ॥ मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ २ ॥ आ-  
हारिकना वध्व नधी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस का-  
र्मणना वध्व मुक्त वैक्रेयवत् ॥ इति ॥ २३ मो दडक ॥

हिचे २४ मो वैमानिकनो दडक कहे छे ॥ आहारिकना वध्व  
नधी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ वध्व  
॥ १ ॥ मुक्त ॥ २ ॥ तेमां वध्व असख्याता छे ते कालथि असख्यात  
उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला । क्षेत्रधी प्रतरने असख्यातमे  
भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ तेनी विष्कम  
शुची अगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनी राशीनो बीजो वर्गमूल ॥  
त्रीजा वर्गमूल साये गुणता जे आवे तेदली श्रेणियो जाणत्री ॥ अ-  
थवा अगुल आकाश प्रदेश राशीनो । त्रीजो वर्गमूल तेनो घन क-

हिवे एकवीसमो मनुष्यनो दडरु कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमां वद्ध ते ॥ कदाचित् मनुष्य सख्याता होय ॥ समुत्थिमनो विरह पडे छे तेथि कदाचित् असख्यातो होय । जघन्य पदे ॥ त्रीणजमलपद (२४) निःपरने (५) जमलपद (३२) निहेठे ॥ अर्थात् २९ आकनी सख्या प्रमाणे ॥ अथवा पाचमो वर्ग । छट्टा वर्ग साथे । गुणता जे राशी थाय ॥ अथवा ९६ वार यथोत्तर वमणा करिये ॥ अथवा ९६ वार अर्द्धा अर्द्धा करता शेष एरु रहे ॥ एटला अक प्रमाणे मनुष्य जाणवा ॥ तेनो आरु आ प्रमाणे ॥ ७९ । २२ । ८१ । ६७ । ५१ । ४२ । ६४ । ३३ । ७५ । ९३ । ५४ । ३९ । ५० । ३३६ ॥ १ ॥ उत्कृष्ट पदे असख्याता होय ॥ समुत्थिम गर्भेज भेलता कालथी असख्यात उत्सर्पणी अवसर्पणीना समय जेटला क्षेत्रथी अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनो प्रथम वर्गमूल त्रीना वर्गमूल साथे गुणता जे राशी थाय तेटला भागमां मनुष्यनु एकेरु शरीर मुक्ता ॥ एक श्रेणी खाली थाय उत्कृष्ट शरीरमां एकेरु शरिर चद्वारे नाखिये तो ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमां वद्ध सख्याता कालथि सख्याता कालना समय जेटला १ मुक्त अनता अधिकवत् ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ आहारिकना दोय भेद अधिकवत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कर्मणना दोय भेद उदारिकवत् २ । ४ । ५ ॥ ए एकविश दडरु ॥ इति ॥

हिवे वाचीसमो वाणव्यतरनो दडरु कहे छे ॥ उदारिकना दोय भेद ॥ वद्ध नथी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ते पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना २ भेद ॥ वद्ध (१) मुक्त (२) तेमा वद्धते असख्याता कालथी असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असख्यातमे भागे जेटली श्रेणियो, तेना प्रदेश जेटला अथवा सख्यात

योजन गतना वर्ग कर्ता जे आवे । तेदला २ भागमां ॥  
वाणव्यतरनु शरीर मुक्ता मतर भराय तेदला वद्ध वैक्रेय छे  
॥ १ ॥ मुक्त उधीकवत् ॥ २ ॥ २ ॥ आहारिकना वध नयी १  
मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस कार्मणना वध मुक्त वैक्रेयवत् ॥  
॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ इति वाविसर्मां दडक ॥

हिवे तेवीगमो ज्योतिपीनो दडक कहे छे ॥ आहारिकना २ भेद ॥  
वध नयी (१) मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना वे भेद ॥  
वध [१] मुक्त [२] ॥ तेमा वध असख्याता कालथि असख्यात उत्स-  
र्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला क्षेत्रथी प्रतरने असख्यातमे भागे ।  
जेटली श्रेणियो तेनां आकाश प्रदेश जेटला ॥ अथवा २५६ अंगुलनो जे  
वर्ग तेदला प्रदेश प्रमाणे ॥ एक खड उपरे ॥ एकेकु ज्योतिपीनु श-  
रीर मुक्त मतर भराय ॥ १ ॥ मुक्त अनता पूर्ववत् २ ॥ २ ॥ आ-  
हारिकना वध नयी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ ॥ ३ ॥ तैजस का-  
र्मणना वध मुक्त वैक्रेयवत् ॥ इति ॥ २३ मो दडक ॥

हिवे २४ मो वैमानिकनो दडक कहे छे ॥ उदारिकना वध  
नयी ॥ १ ॥ मुक्त अनता ॥ २ ॥ १ ॥ वैक्रेयना दोय भेद ॥ वध  
॥ १ ॥ मुक्त ॥ २ ॥ तेमा वध असख्याता छे ते कालथी असख्यात  
उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला । क्षेत्रथी प्रतरने असख्यातमे  
भागे जेटली श्रेणियो तेना आकाश प्रदेश जेटला ॥ तेनी विष्कम  
शुची अंगुल प्रमाणे आकाश प्रदेशनी राशीनो बीजो वर्गमूल ॥  
त्रीजा वर्गमूल माये गुणता जे आवे तेदली श्रेणियो जाणती ॥ अ-  
थवा अंगुल आकाश प्रदेश राशीनो । त्रीजो वर्गमूल तेनो घन क-

रेये ॥ तेदली श्रेणियो जाणवि ॥ १ ॥ मुक्त पूर्ववत् ॥ २ ॥ २ ॥

माहारिकना वध्ध नधि ॥ १ ॥ मुक्त अनता पूर्ववत् ॥ २ ॥ ३ ॥

वैजस कार्मणना वद्ध (१) मुक्त (२) वैक्रेयवत् २ । ४ । ५ ॥

॥ इति २४ मो विमानिकनो दंढक ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे वद्ध  
मुक्त संज्ञाख्यं त्रिशत्प्रकरणं ॥





## प्रकरण एकतीसवा-५६३ जीवके भेदनी चर्चा ॥

हिवे जीवना ५६३ भेद ते मांही १४ भेद नारकीना ४८ भेद  
तिर्यचना ३०३ भेद मनुष्यना १९८ भेद देवताना ॥ ए सर्व मलीने  
पांचसे त्रैसट भेद थाए ॥ ते माहिलाः-

(१) स्त्री वेदमे जीवका भेद ३४० पावे ते ५ सत्री तिर्यचना  
अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एव दस १० ॥ अने १०१ गर्भेज मनुष्यना  
अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एव २१२ ॥ अने ६४ जातका देवताना (दूजा  
देवलोक तक) अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं सर्व मिली ३४० ॥

(२) पुरुष वेदमे जीवका भेद ४१० ॥ ५ सत्री तिर्यचना प्रजाप्ता  
अप्रजाप्ता एव १० ॥ अने २०२ गर्भेज मनुष्यना १९८ देवताना  
एव सर्व ४१० ॥

(३) नपुंसक वेदमे जीवका भेद १९३ ॥ १४ नारकीना ४८  
जातना तिर्यचना १३१ मनुष्यना युगुलिया वर्जिने एव सर्व १९३ ॥

(૪) સમુચય ૩ મેદમાં જીવકા ૪૦ મેદ લાભે ॥ તે દસ સન્ની તિર્યચના અને ૧૫ કર્મભૂમીના અપ્રજાપ્તા ને પ્રજાપ્તા એવ સર્વ ૪૦ મેદ માહી ૩ વેદ લાભે ॥

(૫) કેવલ સમકિતિમે જીવકા મેદ દસ ૧૦ ॥ ૫ અણુત્તર વિમાનકા અપ્રજાપ્તા ને પ્રજાપ્તા એવ ૧૦ ॥

(૬) સમુચય સમકિતમાહી જીવકા મેદ ૨૩૩ નારકીના ૧૩ મેદ સાતવી નારકીનો અપ્રજાપ્તો વર્જી તિર્યચ સન્નીના ૧૦ ॥ અને અસન્નીના ૫ અપ્રજાપ્તા ॥ વિગલેદ્રીના ૩ અપ્રજાપ્તા ॥ એવં ૧૮ તિર્યચના ॥ મનુષ્ય કર્મભૂમીના ૩૦ ને પાંચ દેવકુરુ પાચ ઉત્તર કુરુના પ્રજાપ્તા એવ ૪૦ ॥ મનુષ્યના અને દેવતામાહી પરમાગ્રામીને ત્રીણ કિલમિપી એ અટરા જાતીના દેવતા વર્જીને ॥ એમયાસો જાતીના દેવતાના અપ્રજાપ્તા ને પ્રજાપ્તા ૧૬૨ મેદ એવ સર્વ ૨૩૩ ॥

(૭) મિથ્યાદટ્ટીમે જીવકા ૩૩૦ મેદ ॥ તે ૧ સાતમી નારકીનો અપ્રજાપ્તો ને પ્રજાપ્તો ને તિર્યચના ૩૦ ॥ તે એકેદ્રીના ૨૨ અસન્ની પચેદ્રી ૫ ના પ્રજાપ્તા ૩ વિગલેદ્રીના પ્રજાપ્તા એવં ૩૦ ॥ અને મનુષ્યના ૨૬૩ તે ૧૦૧ સમુઠ્ઠિમ મનુષ્યને અને ૫૬ અતર્દીપાના અપ્રજાપ્તા અને પ્રજાપ્તા અકર્મભૂમીના ૩૦ અપ્રજાપ્તા ને દેવકુરુ ॥ ઉત્તર કુરુના તર્જીને ૨૦ ॥ ના પ્રજાપ્તા એ ૨૬૩ અને દેવતાના ૩૬ તે ૧૮ ॥ અપ્રજાપ્તા ને પ્રજાપ્તા ॥ એવં સર્વ મિલી ૩૩૦ ॥

(૮) સમા મિથ્યાદટ્ટીમે ૯૪ મેદ ॥ નારકીના ૭ ॥ સન્ની તિર્યચના ૫ મનુષ્ય ૧૫ ॥ કર્મભૂમીના સન્નીના ॥ દેવતામાહી પરમાગ્રામી કિલમિપી નવત્રીવેચક અણુત્તર વિમાનના એ ૩૨ ॥ વરજીને ઘાકી ૬૭ જાતીના દેવતા એવ સર્વ મિલી ૯૪ ॥

(९) २ दृष्टी ते समदृष्टी (१) अने मिथ्यातदृष्टी (२) ए दोयमे जीवका भेद १२० ॥ पहिली ६ नरकना अमजाप्ता, ५ सन्नी, ५ असन्नी ३ विगलेंद्री, ए १३ ना अमजाप्ता ॥ मनुष्यमा १५ कर्मभूमिना अमजाप्ता ॥ देवकुरु उत्तरकुरुना ( १० ) प्रजाप्ता एव २५ मनुष्यना ॥ देवतामा भवनपती। १० चाणव्यतर १६ जभडा १०, ज्योतिषी १०, देवलोक १२, लोकातिक ९, एव ६७ ना अमजाप्ता। अने ९ ग्रीवैयकना प्रजाप्ता ने अमजाप्ता एव ८५ देवताना सर्व मिली १२९ ॥

( १० ) ३ दृष्टीमे जीवका भेद ९४ ॥ ते समा मिथ्यातदृष्टीनी परे जाणतु ॥

( ११ ) प्रजाप्तामे जीवका भेद २३१ ॥ ७ नारकीना २४ तिर्यचना १०१ सन्नी मनुष्यना ९९ देवताना एव २३१ ॥

( १२ ) अमजाप्तामे ३३२ जीवके भेद ते २३१ तो पूर्ववत् अने १०१ समुच्छिम मनुष्य अमजाप्ता छे ॥ एव सर्व ३३२ ॥

( १३ ) सास्त्रता २५० जीवके भेद ॥ ७ नारकीना प्रजाप्ता तिर्यचना ५ सन्नीना अमजाप्ता वर्जिनै ॥ ४३ भेद मनुष्यना १०१ सन्नीना ॥ प्रजाप्ता ९९ जातीना देवता प्रजाप्ता एव सर्व मिली २५० ॥

( १४ ) अशाश्वनामां ३१३ जीवका भेद ॥ ७ नरकना अमजाप्ता ५ सन्नी निर्यचना अमजाप्ता १०१ समुच्छिम मनुष्यना १०१ सन्नी मनुष्यना अमजाप्ता एव २०२ मनुष्यना, ९९ जातिना देवताना अमजाप्ता एव सर्व मिली ३१३ ॥

( १५ ) सनीमांहीं जीवका भेद ४२४ ॥ ते १४ नारकीना ५



सनी तिर्यचना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, सन्नी मनुष्यना १०१  
अमजाप्ता ने प्रजाप्ता एव २०२ भेद, ९९ जातीना देवताना अ-  
मजाप्ता ने प्रजाप्ता । ए । १९८, एव सर्वमिली ४२४ भेद जाणवा ॥

(१६) असन्नीमे जीवके भेद १३९ ॥ ते १०१ समुष्टिम मनु-  
ष्य ३८ भेद तिर्यचना सन्नीना १० वर्जिनै । एव १३९ भेद, अस-  
न्नीमे लांभे ॥

(१७) ५६३ जीवके भेदमांही ३७१ भेद मरे, ते ७ नास्कीना  
प्रजाप्ता ९९ जातना देवताना प्रजाप्ता ४८ तिर्यचना ८६ जातना  
युगलियाना प्रजाप्ता । १३१ मनुष्यना एव सर्व ३७१ भेद ॥

(१८) ५६३ जीवका भेदमांही १९२ भेद अमर ॥ ७ नारकी-  
ना अमजाप्ता । ९९ जातका देवताना अमजाप्ता ॥ एव १०६ अने  
८६ जातना युगलियाना अमजाप्ता एव १९२ ॥

(१९) कृष्णलेशी नील लेशी कपोत लेशी ए ३ में जीवका भेद  
४५९ । ते ६ नारकीना ४८ तिर्यचना एव ५४, अने ३०३ मनु-  
ष्यना, ५१ जातना देवताना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता एव सर्व मिली  
४५९ ॥

(२०) तेजूलेशामांही जीवका भेद ३४३ ॥ ते वादर पृथिवी  
वादर पाणी वादर वणसइ ए ३ ना अमजाप्ता, सन्नी तिर्यचना १०,  
सन्नी मनुष्यना २०२, ६४जातिना देवताना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ।  
१२८ । एव सर्व मिली ३४३ ।

( २१ ) पद्मलेशामा ६६ जीवका भेद ॥ ते पाच सन्नी तिर्य-  
चना अमजाप्ताने प्रजाप्ता ए १०, अने १५ ऊर्मभूमिना अमजाप्ता  
प्रजाप्ता ए ३० ॥ देवतामे दूजो किलमिषी १ त्रीजो २ चोयो ३

पाचमो देवलोक ए ४, नें नव लोकातिक ए १३ ना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता मिली २६, ए सर्व ६६ ॥

(२२) शुक्ल लेशामाही ८४ जीवका भेद ॥ ते सन्नी तिर्यचना १०, सन्नी मनुष्यना ३०, ते कर्मभूमीना, देवतामांही एक श्रीजो किलमिपी १ छठेथी नारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक ० ग्रीवेयक, ५ अणुचर विमान, एवं २२ ना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ ए ४४ ए सर्व मिली ८४ ॥

( २३ ) डै लेशामाहि ४० जीवका भेद ॥ ते १० सन्नी तिर्यचना, अने ३० सन्नी मनुष्यना कर्मभूमीना, ए सर्व मिली ४० ॥

(२४) आगली ४ लेशामाही २७७ जीवका भेद ॥ प्रथम ५१ जातिना देवताना अमजाप्ता नें प्रजाप्ता एव १०२, जुगलिया ८६ जातिना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १७२, अने वादर पृथिवी १ वादर वाणी २ वणसई ३ ए ३ ना अमजाप्ता एवं सर्व मिली २७७ ॥

(२५) उदारिक कायजोगमा ३५१ जीवका भेद ॥ ३०३ मनुष्यना, ४८ तिर्यचना, एव ३५१ ॥

( २६ ) उदारिकना मिश्रमा २४७ जीवका भेद ॥ १०१ समुर्द्धिम मनुष्य, १०१ सन्नीना अमजाप्ता, अने १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, तिर्यचना २४ अमजाप्ता १ वादर वायुकायनो प्रजाप्तो, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ एव सर्व मिली २४७ ॥

( २७ ) वैक्रय काययोगमा २३३ जीवका भेद ॥ १०८ देवताना, १४ नारमीना, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता, वादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मभूमीना सन्नी मनुष्यना प्रजाप्ता । एवं सर्व मिली २३३ ॥

( २८ ) वैक्रेय मिश्रमां २१९ जीवके भेद ॥ ते ९ ग्रीवके, ५ अणुत्तर विमान, एवं १४ ॥ प्रजाप्ता वर्जिने शेष २१९ भेद ॥

( २९ ) आहारिक मिश्रमां जीवका भेद १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

( ३० ) कार्मण काययोगमाही ३४७ जीवका भेद ॥ ते ३३२ अप्रजाप्ताना भेद पूर्वे क्त्वा ते अने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एवं सर्व ३४७ ॥

( ३१ ) सत्यमनादिक ४ ने सत्यवचनादिक ३, ए ७ जोगमे जीवका भेद २१३ ॥ ते ९९ जातीना देवता अने ७ नारकी अने १०१ सत्री मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यच एव सर्व मिली २१२ ना प्रजाप्ता ॥

( ३२ ) व्यवहार वचनमाही २२० जीवका भेद २१२ तो सत्यमनादि ७ जोगमा क्त्वा तेहीज अने ५ असन्नी तिर्यचना ॥ अने त्रिण विगलेद्री ए ८ ना प्रजाप्ता एव सर्व २२० ॥

( ३३ ) आहारिक शरीरमां १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

( ३४ ) तेजस कार्मण शरीरमांही ५६३ भेद ॥

( ३५ ) अर्णाहारिकमे ३४७ जीवके भेद । ते कार्मण जोगनी परे जाणया ॥

( ३६ ) आहारिकमे ५६३ जीवके भेद ॥

( ३७ ) मन सहितमे २१२ जीवके भेद । ते सत्य मन योगनी परे जाणवा ॥

( ३८ ) मन गृहितमे ३५१ जीवके भेद ॥ ते ७ नरकना अ  
प्रजाप्ता ॥ ४३ तिर्यचना ते ५ सन्नीना प्रजाप्ता वर्जाने शेष ४  
भेद अने १०१ समुच्छिम मनुष्य, ने १०१ सन्नी मनुष्यना  
अप्रजाप्ता । ए २०१, अने ९९ जातीना देवताना अप्रजाप्ता ए  
सर्व ३५१ भेद ॥

( ३९ ) नजरे आवे ते २२५ जीवके भेद ॥ ते ७ नारक  
९९ जातीना देवता १०१ गर्भेज मनुष्य । ५ सन्नी तिर्यच, ५ अ-  
सन्नी तिर्यच, ३ त्रिगलेंद्री । ५ एकेंद्री वादर, ए सर्वेना प्रजाप्ता  
एव २२५ भेद ॥

( ४० ) नजरे न आवे ते ३३८ जीवके भेद ॥ ३३२ भेद तो  
अप्रजाप्ताना अने ५ सुक्ष्म एकेंद्री अने १ साधारण ए ६ ना प्रजाप्ता  
एव सर्व मिली ३३८ भेद ॥

( ४१ ) गर्भेजमा । २१२ जीवका भेद ॥ २०२ सन्नी मनु-  
ष्यना, १० सनी तिर्यचना ए २१२ ॥

( ४२ ) विना गर्भेजमांही ३५१ जीवके भेद ते १४ नारकीना  
१९८ देवताना ३८ समुच्छिम तिर्यचना १०१ समुच्छिम मनुष्यना  
एव सर्व ३५१ ॥

( ४३ ) ब्रह्म नाडीमाही ५६३ जीवका भेद ॥

( ४४ ) थापर नाडीमांही १५० जीवके भेद ॥ ते १०१  
समुच्छिम मनुष्य १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता एवं ११६ अने ३४ तिर्य-  
चना ते २२ एकेंद्रीमाहीथी एक वादर तेउनो प्रजाप्तो वर्जाने २१  
एकेंद्रीना, ३ त्रिगलेंद्रीना अप्रजाप्ता, ५ । सन्नी तिर्यचना  
अप्रजाप्ता, ५ असन्नी तिर्यचना अप्रजाप्ता ॥ एव १५० ॥

(४५) नाण आत्मां २३३ जीवके भेद ॥ सातमी नरकनो अमजाप्तो वरजी १३ नारकीना, ५ सत्री तिर्यचना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, अने ५ असत्री तिर्यचना अमजाप्ता, अने ३ त्रिगलें-द्रीना अमजाप्ता ए १८ तिर्यचना, अने १५ कर्मभूमिना अमजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३०, अने ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ए १० ना प्रजाप्ता एवं ४० मनुष्यना अने १५ परमाधामी ३ किलमिपी, ए १८ ना प्रजाप्ता ने अमजाप्ता ए ३६ भेद वरजीने शेष १६२ भेद देवताना एवं सर्व थईने २३३ भेद ॥

(४६) चारित्र आत्मांही जीवके भेद १५, कर्मभूमिना प्रजाप्ता ॥

(४७) शेष ६ आत्मांही ५६३ जीवका भेद ॥

(४८) अमजाप्तो मरीने १७९ भेदमे जाय ॥ ते १०१ समु-छिप्त मनुष्य, ४८ तिर्यच, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, अमजाप्ता ३०, एव १७९ ॥

(४९) स्त्री मरीने ५६१ भेदमा जाए ॥ सातमी नारकीका २ भेद वरजीने शेष ५६१ मा जाए ॥

(५०) पुरुष मरीने ५६३ मांही जाए छे ॥

(५१) नपुसंक मरीने ५६३ जीवके भेदमांही जाए ॥

(५२) वेदनी समुद्घातमे ५६३ जीवके भेद ॥

(५३) कपाय समुद्घातमे ५६३ जीवके भेद ॥

(५४) मारणातिक समुद्घातमे ३७१ जीवके भेद ॥

(५५) वैक्रेय समुद्घातमे ११९ जीवके भेद ॥ ते पूर्वं वैक्रेय मिश्र जोगमाही कखा छे ते जाणवा ॥

(५६) तेजस समुद्रघातमाही १०५ जीवके भेद ॥ ते ८५ देवताना प्रजाप्ता ने १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता ५ सन्नीना प्रजाप्ता एव सर्व १०५ ॥

(५७) आहारीक समुद्रघातमाही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५८) केवल समुद्रघातमाही १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता लाभे ॥

(५९) (६०) (६१) आगली ३ पर्यामाही ५६३ जीवके भेद ॥

(६२) श्वासोश्वास पर्यामाही ५५२ जीवके भेद ॥ एकेंद्रीना ११ अप्रजाप्ता वर्ज्या ॥

(६३) भाषापर्यामाही ३२६ जीवके भेद ॥ ते ७ नारकीना, अने सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता १०, असन्नी तिर्यचना ५, अने ३ विगलेंद्रीना, एव ८ ना प्रजाप्ता, अने सन्नी मनुष्यना २०२, अने ९९ जातीना देवता प्रजाप्ता एव ३२६ ॥

(६४) मनपर्यामाही २१२ जीवके भेद ॥ ७ नारकी ५ सन्नी तिर्यच, १०१ सन्नी मनुष्य, ९९ जातीना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता एव २१२ भेद ॥

(६५) अजीवना ५६० भेद ॥ तेमाहीयी लोकरमां ५५७ भेद ते धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ ए २ देश आकाशास्ति कायनो स्कंध ए ३ वरजी शेष ५५७ लाभे ॥

(६६) अलोकरमाहे अजीवना भेद ६ लाभे ॥ ते आकाशास्तिकायनो देश १ प्रदेश २ आकाशास्तिकायना द्रव्यादिक ४ बोल, एव ६ लाभे ॥

(६७) विभंग अज्ञानमाही २२२ जीवना भेद ॥ ५ अणुत्तर विमानना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए १०, वर्ज्या, बाकी १८८ देवताना

अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, अने १४ नारकी ने १५ कर्मभूमि मनुष्य प्रजाप्ता ने ५ सत्री तिर्यचना प्रजाप्ता एवं सर्व २२२ ॥

(६८) अवविज्ञानमें २१० भेद ॥ ते १५ परमाधामी, ३ क्लिपिपी ए १८ वर्जिने, १६२ जातीना देवता अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने १३ नारकीना सातमी नरकनो १ अप्रजाप्तो वर्ज्यो, १५ कर्मभूमीना मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ताना ३०, ने ५ सत्री तिर्यचना प्रजाप्ता । एवं सर्व २१० ॥

(६९) अवधि दर्शनमांही २४७ जीवका भेद ॥ १९ देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, १४ नारकीना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने १५ कर्मभूमी मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता, ने ५ सत्री तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ ए २४७ ॥

(७०) परत्तमांही जीवना भेद ५६३ लाभे ॥

(७१) अपरत्तमांही जीवना भेद ॥ ५५३ लाभे ॥ ५ अणुत्तर विमानना १० भेद वर्जिने शेष ५५३ लाभे ॥

(७२) सजतीमांही जीवका भेद १५, कर्मभूमीना गर्भेज प्रजाप्ता लाभे ॥

(७३) संजता सजतीमांही जीवका २० भेद ॥ १५ कर्मभूमीना मनुष्य गर्भेज प्रजाप्ता अने ५ सत्री तिर्यचना प्रजाप्ता । एवं २० ॥

(७४) असजतिमांही ५५३ जीवना भेद ॥

(७५) पहिला गुणठाणामांही ५५३ भेद ॥ ते अणुत्तर विमानना १०१ वर्जिने ॥

(७६) सास्त्रादान गुणठाणामांही २१३ जीवना भेद ॥ ते १३ नारकीना १८ तिर्यचना, कर्मभूमी मनुष्यना ३०, देवतामांही १५

परमाधामी ३ किलमिपना ५ अणुत्तर विमानना ए २३ जातिना वरजीने वाकी ॥ १५२ देवताना । एव सर्व मिली ॥ २१३ भेद ॥

(७७) मिश्र गुणठाणामाही ९४ भेद ॥ ७ नारकी प्रजाप्ता, ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजाप्ता एव २७, १५ परमाधामी, ३ किलमिपी, ९ नयग्रीवेक, १५ अणुत्तर विमान, १ एव २२ वर्जने ६७ देवताना प्रजाप्ता एव ९४ ॥

(७८) चोवा गुणठाणांमाही जीवका भेद २२५ । पूर्वे सम्यक्त्वमांही २३३ भेद कथा छे ते माहीथी ५ असन्नी तिर्यच ने ३ विकण्ठेद्री ए ८ टळया ॥ शेष २२५ ॥

(७९) पाचमा गुणठाणांमाही जीवके भेद २० ॥ १५ कर्मभूमी ५ सन्नी तिर्यचना प्रजाप्ता ॥ एव २० ॥

(८०) उट्टा गुणठाणासू लेने १४ मा गुणठाणा तांही जीवका भेद १५ ॥ ते कर्मभूमीना प्रजाप्ता ॥

(८१) धर्मास्तिकायना खटमाही अजीवना भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनो खट प्रदेश २ अधर्मास्तिकायनो खट ३ प्रदेश ४ आकाशस्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ पुट्टलास्तिकायना ४ भेद । एव सर्व ११ ॥

(८२) अगईद्वीप वारे अजीवना भेद १० ॥ पूर्वे कथा ते माहीथी एक काल टळयो ॥

(८३) धर्मास्तिकायना देशमे अजीवका भेद ११ ॥ धर्मास्तिकायनो देश १ प्रदेश २ आकाशस्तिकायनो प्रदेश ३ प्रदेश ४ अधर्मास्तिकायनो देश ५ प्रदेश ६ काल ७ अने पुट्टलास्तिकायना ४ भेद ए ११ ॥

(८४) धर्मास्तिकायना प्रदेशमे अजीवका भेद ८ ॥ ते धर्मा-



स्तिकायनो प्रदेश १ अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २ आकास्तिकायनो  
प्रदेश ३ काल ४ पुद्गलास्तिकायना ४ भेद ॥ एव ८ ॥

( ८५ ) अधर्मास्तिकायना खंदमे अजीवके भेद ११ ॥ धर्मा-  
स्तिकायनी परे जाणवां ॥

( ८६ ) आकास्तिकायना खंदमां अजीवका भेद ११ ॥ अजी-  
वना १४ भेदमांहीथी धर्मास्तिकायनो देश १ अधर्मास्तिकायनो  
देश २ आकास्तिकायनो देश ३ । ए ३ टळया ॥ शेष ११ ॥

( ८७ ) आकास्तिकायना देशनादोय २ भेद लोकाकाश (१)  
अलोकाकाश (२) ते लोकाकाशना २ भेद । संपूर्ण (१) ने अधूरो  
(२) संपूर्णमां अजीवका इग्यारा ११ भेद लाभे ॥ पूर्ववत् ॥

( ८८ ) अधूरांमां अजीवका ११ भेद ॥ धर्मास्तिकायनो स्कद  
अधर्मास्तिकायनो स्कद आकास्तिकायनो स्कंध ए ३ भेद टळया  
शेष ११ ॥

( ८९ ) अलोकाकाश देशमां अजीवका भेद २ ॥ आकास्ति-  
कायनो देश १ ने प्रदेश २ ॥

( ९० ) आकास्तिकायना प्रदेशमां अजीवका भेद ८ । पूर्ववत् ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ द्वितीय खण्डे ५६३  
जीव भेद चर्चाख्यं एकत्रिंशत्प्रकरणम् ॥ ३१ ॥



श्रीमद्द्वार्षेः सुता भृत्सकल गुण गणो देव वीरो वरेशः ।  
 तत्पादाम्बुद्भवस्य मच्चुर मधु रस लेहु कामेप्वलीषु ॥  
 पूज्यश्री स्वामि दासः प्रवरपद धरः तस्य शिष्या प्रशिष्यात्  
 पारपर्येण भूतो भरत भुवि बृहत्कीर्तिमा त्रेखराजः ॥ १ ॥

येनेय वसुधा सुधाशुभया कीर्त्या कृताऽलकृता ।  
 भूपाला मणि मस्तका अपि कृताः पादागता वदितु ॥  
 तस्माच्छ्री नथमल्ल आदर धरः श्रीकुद नाख्यो मुनिः ।  
 जातोऽस्यां भुवि धर्मपालन परस्तस्माद्गुरुर्ज्ञानधीः ॥ २ ॥

तत्पादाब्ज पराग सेवन परोऽह रामचंद्रो मुनिः  
 तस्यैव कृपया कृतिं च रचया चक्रे भवान्मोचने  
 सच्छिष्यो मुनि हर्षचद्र इतिमां कर्तुं मुहुः प्रार्थयत्  
 तस्य प्रार्थनयाऽनया जन शिवे ग्रथः क्षमोनिर्मितः ॥ ३ ॥

कृतोऽय रामचद्रेण जिनवीर मसादतः  
 पादक श्रावकानावै विदधातु सुमहलं ॥ ४ ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त शिरोमणौ धर्म ग्रंथे मुनि राम-  
 चंद्र कृतौ द्वितीय खण्ड. समाप्तिमगमत् ॥

॥ शुभं सर्व ॥



## ॥ मुनिवरेष्वभ्यर्थना ॥

भो पूज्य पद मुनिवराः । ग्रन्थान्ते भवतः प्रसादार्थं अभ्यर्थितु  
मिच्छामि । मया पूज्य श्री रेखराजते वासि परंपरानुगत गुरुवर्यं श्री  
बुन्दनमल्लारव्यस्यपढाब्जपदपदेन रामचद्रेणाय सिद्धान्त शिरोमणिः  
इत्यभिधानको ग्रन्थो विनिर्मितः । सच मद्गुरु जन हस्त लिखित  
पुस्तकेषु यथा व लिखित अनुसृत्याऽऽ त्रिशङ्करणात्मकः कृतः  
स्यात् । कार्यकारणार्थं मनेक ग्रथावलोकनमपि विधाय क्रमेण शोभ-  
नानि प्रकरणानि न्यस्तानि । तस्मिन् द्वितीये खण्डे वेष्टुचित् प्रकर-  
णेषु अदभ्र प्रमादा दृश्यन्ते । ते तु भाषा सवधिनः वेचिद्रचना स-  
वधिनश्च । निरसन तेषा क्षमपर तेषु प्रकरणेषु भेदाभेद विधाय  
तान्दूरी कर्तुं नाह प्रभुरत्यल्पावकाशत्वात् ।

तन्मन्ये समर्था व्याख्यातारः पाठकाश्च विवेके न आत्म समा-  
धान समन्ततो प्रिप्रिच्य वि राय श्रावक समुदाये व्याख्या पयिष्यन्ति ।  
मय्यनुग्रहेण ग्रथवर्ति सम दोषान्विहाय गुणानुरक्त तथा क्षममेव गृणहति  
इति बलवती आशा मम मनसि वर्तते । इति कर्तुं व्यवसितानां किलाह  
बहूपकृति भाखानितिश्च सर्वम् ।

ग्रथ प्रणेता,

मुनि रामचंद्र.

हिंगणघाट.

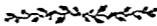
# (अथ शुद्धि पत्रम्)

सामायिक प्रतिक्रमणादि नित्य स्मरणम्.

पृष्ठ.	पक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
०	७	(ब)	(६)
२	८	ठाणाउ	ठाणाओ
"	"	जीवियाउ	जीवियाओ
३	५	मभिण	मभिणदण
७	११	सुण	सुय
९	१	अतिच्च्यार	अतिचार
"	३	फल सदेह	फल प्रते सदह
"	५	लागो	लागी
१०	९	विरमणा	विरमण
"	१२	भेल समेल	भेल समेल कीधी होय
११	२	विखराको	विखेराको
"	७	विखराको	विखेराको
१२	६	औपधि	औपधिनो
"	११	दग्गिदावणया	दवग्गिदावणया
१३	१४	वारयी	वारयी
"	१८	वग	वन्नग
१४	६	परठी होय	परठियो होय
"	१७	निमत्रणा	आमत्रणा
१५	२०	चारे	चारु

१६	६	संसप्पजगे	संसप्पओगे
"	"	"	"
१७	४	ओगुत्तमो	ओगुत्तमा
१८	४	मे,	मे,
"	५	खामि	खामेमि
१९	७	दोपा	दोप
"	१५	संस्कारेमि	सकारेमि
२४	४	जूण	योनि
"	१७	साढा	साढ
३१	४	छप्पाणे	छप्पाणे
३२	१३	वियासण	वियासणं पच्चखामि
"	१५	ठाणेण	ठाणेण
३३	१०	पारिद्धाविया	पारिद्धावणिया
"	१४	"	"
३४	९	सूरे	०
"	११	पारिद्धाविया	पारिद्धावणिया
३५	१३	होवेगो !	होवेगा !
३६	१	दश यति धर्म	दशविध यति धर्म
३७	६	चौपठ	चौसठ
"	१३	होणा !	होज्यो !
३८	५	"	"
"	१०	"	"
३९	११	वय	वत्थ
४०	५	खेशर	केशर
"	७	मीरजादा	

६१	४	धारवा	धारणा
६२	२०	जार	जुवार
॥	॥	घउ	गउं
६४	१	खोडण	खोदन
॥	७	र्षीछी	विछु
॥	६	मूल	मूलमें
६७	१६	पहिछाण	पहिछान
६९	२	सश	संशय
		श्लोकमें	रामचद्राधि
		रामचद्राधि	रामचद्राधि



## सिद्धांत शिरोमणि प्रथम खंड.

### प्रकरण १ ला-स्तोत्र.

१	५	सार्दूल	शार्दूल
॥	९	शेर्वेश	सर्वेश
॥	१०	सीतल	शीतलं
२	१	सिध	सघं
॥	॥	सासादरवैष्णद	सासाद्धरिं वैष्णवं
॥	२	मेतत्सगत	एतत्सगत
॥	॥	एव	येव
॥	३	पार्श्वैः	पार्श्वैः
॥	॥	शुभैः	शुभैः
॥	४	मदो	मदोः
॥	॥	नरस्तदतरे	नरस्तदितरे

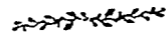
११	५	मार्ग्रे	मार्गे
११	६	वप्यार्थे	वश्यार्थे
११	१२	नीलंघत्पटलंघनाय	नीलघत्पटलंघनाय
११	१५	कृत्वा	कृत्वा
११	१६	ध्यत्नाधेन	यत्नौधेन
३	९	स्वप्सति	स्तृप्यति
११	१२	दृष्ट्वा	दृष्ट्वा
११	१३	द्वस्त	ध्वस्त
५	१	नत्वा	नत्या
६	२	स्फूर्जित	स्फूर्जित
११	१३	पुत्रस्या जुलवल	पुत्रस्यातुवल
११	१५	विक रोपि	विकारोपि
७	१	विधेयै	विधेयैः
११	४	वर	त्वर
११	१५	मुद्गा	मुग्धा
११	२१	सिदश	सिदश
११	२२	श्राता	भ्राता
८	५	प्रसम	प्रशम
११	८	नम	नमो नमः
११	११	नमः	नमो नम
११	१७	द्वय	वि
९	६	भृत्वा	भृत्या
११	१५	किमिते	किमिति
११	८	रत्युम	रत्युग्र
११	३	जन्मातररथ	जन्मातररथ

०	अनुष्ठुभ्	अनुष्ठुप्
१६	बहत्पद्मामुक्ते	बहत्पद्मामुक्ते
९	स्पृशाति	स्पृशति
१०	जगत्साक्षि	जगत्साक्षी
"	भानुखियो	भानुरिवयो
२१	श्च	स्त्र
१	शीता	सिना
७	जिनाग्रमः	जिनाग्रिमः
१२	निःश्वेदो	निःस्वेदो
७	चित्यात्मा	श्चित्यात्मा
६	विश्वस्टइ	विश्वस्टइ
८	महालासो	महोलासो
१४	स्याद्रलगर्भोः	स्याद्रलगर्भः
२१	सूची	सूची
२२	क्षुद्र	क्षुब्ध
२१	दिग्मार्ग	दिङ्मार्ग
७	चतुर्ध्वेष	चतुर्ध्वेषु
११	भेदेपि	भेदोपि
१२	जिनायैच	परेशाय
१६	यमकै	यमकैः
"	सुपरिः	सुपदै
१	ग्रहि	ग्रहे
६	भवते	भवती
७	सेवकः	सेवके
१६	शायिनी	शायिनः



	॥	आयुधं	आयुधं
	॥	१६ सुमे	शुभे
२७	२	महोदेवं	महादेव
	४	कंदर्प्य	कंदर्प
	६	अरनाथ	अर्हनाथं
	११	मेनं	मेतत्
२८	३	जज्ञश पभावेणस्येया	जस्त पभावेणसया
	२	विनाश	विणास
	५	दुस्कं	दुक्ख
	६	नयिध्य	नत्थित्य
	८	तश	तस्त
	१०	पाश	पास
	११	ह्री	०
	१२	मूल	मूल
२९	१५	शीघ्रौ	शीघ्रं
३०	५	समशरण	समवशरण
	२३	व्याधिः	व्याधीः
३१	१२	मिधि २	मिधि २
	१५	एहि २	०
	॥	ग्रहण	ग्रहाण
	१८	पूरमध्य	पूरीमध्ये
	१७	दोपाय	दोपा
	१६	कुरु २	कुरु २
३४	४	मणुवो	मणुओ
	१२	हय	इह

३४	१३	हियेण	हियेण
३५	२	जिना दिश जाता	जिना देश जाता
"	३	शंकराणी	शंकराणि
"	१७	वागेश्वरि	वागीश्वरि
३६	१३	सचेतन	सचेतः



### प्रकरण २ रा-छन्द.

३७	३	वाणि	वांण
"	१०	करुणासिधु	करुणा २ सिधु
"	१३	अत्रै	अछे
"	१४	थुर	थुर
"	१५	मन्मथ	मन्मथ
"	१६	नवनिधि तुज नामे	नवनिधि सिद्धी तुज नामे
३८	१	बकुला	बहुला
"	"	बकुल	बहुल
"	"	विपहारी	विपहारी
"	१७	यखी	पखी
३९	२	अहियाइ	अहिथावे
"	३	घोटिक	घोटिक
"	"	छेटे	छूटे
"	४	इस	इण
"	८	नदुकए	नहुक्कए
"	१७	घरिज	घूरज

४०	९	प्रतपेए	प्रतापए
"	२१	खसरवाण	खसरवाण
४१	८	पुजे	पुज्या
"	"	रिझ्या	रिझ्या
४२	९	उष्टते	ओष्टते
"	१८	दर्शण	दर्श
४३	९	शुणयो	शुणयो
४४	४	कूक्षे ते	कूक्षे
"	९	पचागन	पचाग्नि
"	१३	अगठ	आगल
४५	१	सुणही	सुणहो
४६	४	छमउरी	छमउर
"	८	वादल	वावल
४७	१६	इसठो	इसठो
"	१७	इसठो	इसठो
४८	२१	अरूप	घरूप
५०	१४	नित्यसु	नित तसु
"	१५	फणी	फणी
५१	८	अज्याने	अजाने
"	११	अंब	वंबुल
"	१८	भाख्या	भाखे
"	२१	नव रेणु	भव रेणु
५३	८	देवा	देवं
५४	५	भानिदहिकंदनि	आनदहिकंदन
"	२०	मभु गुण सागर पार न	मभु गुण पारन सागर

		वारित्तिर	वारी तीर
५५	३	सुवर्ग	सुचंग
"	१९	कोऊ	कोड
५८	७	मूर्त्ति	सूर्त्ति
"	१९	गुडो	गोडो
५९	१५	देना	देवा
६०	७	चक्र	चक्र
६१	६	भंडे	मडे
"	१२	मयग	मगल
"	१६	सभय	समय
६२	८	विनाय	उिनाय
"	१९	नामा	वामा
६४	७	ठाण	थान

❦

### प्रकरण ३ रा-पद.

❦

६७	२	भागतही	भागतहें
६८	४	बुछे	खुछे
"	१२	उस सिखे ठण	उस सिरवे ठण
"	१५	होयगारिं	होय गया
६९	७	श्वघांत	श्वघांत
"	१८	हटे न किनसू नहि वृसना मूररटे निरजन.	} हटे न किनसू रटे नि- रजन नही वृष्णा मूर. रहे
"	१९	रह	

६९	"	कसूर	करूर
"	२०	मोर	मोह
"	२२	कंवन	कचन
७०	७	मिलहे	मिले
७१	७	पठि	पढि
"	२०	उटाय	ओटाय
"	२३	पिपे	पिये
७२	३	पुरखा	पुरुषा
"	७	सष्टा	शब्दा
७३	९	नाथ तेरी	नाथ जगमें
"	"	बुलाया	भुलाया
७५	४	जांन	जानत
"	५	भूली	भूमि
७७	४	ढढग	ढग
७८	२	मानते मेरा	मानले मेरा
७९	"	रूपहे	रूपहे
८०	९	पकर लोरु	फकर लोक
"	११	जाने न	जाने जो
८१	८	दिय	दिव्य
८१	१३	इस्त नमे	इस तनमें
८२	१६	देह वाई	देह पाई
"	१७	विख्या	विरथा
८४	१९	खाज रही	वाज रही
८५	९	दिलमोद समाई	दिलमे समाई
८६	१	लेव	जव

८९	१८	ब्रम	ब्रह्म
९०	१४	जाइ	जाय
"	१८	चंदा विन सूरज निश- दिन	विन चदा विन सूर- ज निशदिन
९३	४	सुर वसे	सुखसे
"	१२	लेजावे	लेजासी
"	"	चलेरारे	चलेलारे
९४	४	रे चेतन पोते तू परना	रे चेतन पोते तूं पापी परना
"	७	क्यू छूटे	कियं छूटे

### प्रकरण चौथा-स्तवन.

९६	६	देर	देह
"	१०	पांपां	पाया
"	१८	नेसीसर	नेमि सर
९७	३	विण	पिण
"	५	रायी	राखी
"	१०	दुपणी	दुःखणी
"	"	चीव पढयो	जीव पढयो
"	१६	सुपे	सुखे
९८	१	पारो	खारो
"	३	रग	सग
"	१६	मारथ उारे	मार पडारे

१८	१८	तपोधनी	तपोधनी
१९	२	अंधरारे	अंधरारे
१००	२	धेलाई	धेलाई
"	३	मुंह नाई	मुह माई
"	५	जटकर	झटकर
"	१४	करन	देखन
"	१८	दयो	दियो
"	२१	जोसरोरे,	जोसरोरे,
१०१	८	थारे	थाने
१०२	१३	सुवाता	सुहाता
"	२३	मकर	मकरजो
१०५	१०	हृदय चरव	हृदय चख
"	११	कै	कहे
१०६	१	जूल	झूले
"	८	॥ श० ॥ १ ॥	॥ स० ॥ १ ॥
"	९	भूल मती	हूल मती
१०७	१	जिस	जिम
"	११	इरु कर्मी	इरु कर्मी
"	१७	लिख्योसु	लिख्यो सो
१०८	१४	मरे	डरे
"	१६	इसमो	इसडो
"	२२	दिजीयो	दिजो
१०९	१	थारो	थारो
"	"	माणो	आणो
"	२	मितरा	नितरा

१०९	१४	एक	एह
"	१९	फल	०
११०	४	सिरघणी	शिर धणी
"	१३	शीफलवद्धी	श्री जगपति
"	१७	वात	रात
१११	२	मानी	मानो
"	१४	काड	पाड
"	१७	छेल	ठेल
"	२०	फलक	पलक
११२	४	अव	०
"	१५	किन	किम
"	१९	कै	कहे
११३	४	हुलसी	हुलसी
"	६	कहोम	क दौड
"	१५	पांणी	आणी
"	२५	भेल	भिन्न
११५	१	वलिधन	वलिधन
"	५	द्वार जरे देत	द्वार जरे न देत
"	१५	मोचे	मोचे
"	१६	बल	विन
११६	११	जस बांग	जसमान
"	१४	पुन्हा	पुनः
"	१६	जीशे	जीरो
"	१९	उपजे	उपज्यो
"	२२	विगज	विगय



११७	१२	मोडे	मांडे ;
११८	१	जान	जात
"	३	डर	डरके
"	४	फिर	०
११९	४	घेठा	घेठा
"	६	वेध	वैद्य
"	"	"	"
१२०	७	बहु	बहु
१२२	१०	भानु	भानू
११४	६	निंदा कर पराई.	निंदा म कर पराई.

❦

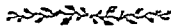
प्रकरण ५ वां--लावणी.

❦

१२४	११	कच्चा	वच्चा
"	१५	शरने	रसीये.
१२५	५	भव विकार	सव विकार
१२६	१२	परया	पन्या
१३०	१०	भरण	भरण
"	२१	व्याख्यानो	व्याख्यानो
१३१	८	ऊपमयावे	ओपम पावे
१३३	६	हे	यह
१३४	३	मिलाना	मिलाना
"	१६	दोष	दो
१३५	६	विधामा ना	विधाना
"	८	पर पर पद	पर पद



## प्रकरण ७ वां--व्याख्यांन.



१५६	६	धूज	ध्वजा
"	९	रत्नी	रत्ननी
१५८	५	त्यू	ज्यूं
१६२	१०	भळे	भेले
"	१४	नूकाजी	वूकाजी
१६४	७	हजारदि	हजारहि
१६५	२	छोर द्यो	छोड द्यो
१६६	१	घर २	धर २
"	१०	मुज	तुज
"	१९	गुजराती	गुजराती
१७०	९	सुनादो	सुनावो
१७१	१७	कुम २	कुमर
"	१९	जजे अति, जणकार	झझे अति झणकार
१७४	८	पडि बंधोधर पास	इन्द्र आई पास
"	९	संच	ताम
१७५	७	पांति	पक्ति
"	१६	पूजे	पूगे
"	१७	पूजे	पूरो
१७८	६	ताढा हिमवत पाणी	} उंडा हेमवंत सरि- खा पांणी
"	७	काढा	

१७८	२४	वस	वस
१८०	४	ग्यात	वन
"	४	शक्रद्रजे	शक्रद्रने
"	१०	साव	पाप
१८१	४	पारव	पाख
"	६	गाताथापति	गाथापति
"	८	कैलामे	कैलाशमे
"	१३	घर	घर
१८२	१६	उशध्येन	उत्तराध्येन
१८३	९	लही केवल निज रूप रत-	लहो केवल गौतम
		न निज	तक्षिणीही.
१८४	११	सारवी	साखी
"	१९	भांयोए	भांयोए
१८६	१५	भोया	भोपा
"	१६	साहे	साह
१९०	६	घनराई	घनराई
"	१७	भेली	लीजे
१९३	१३	काय	काप
१९४	२०	यतः	गर्वाना
१९७	२३	गीरवाना	लावा
१९८	७	लाहा	सिधुश्री
२०२	१७	सिधुश्री	वदल
२०३	१०	वल	सव सैन्य
"	११	वहु चमू	
२०५	११	भवियण	गही
"	१७	सही	

२६४	६	तेजनीर्तनी	तेजनी
०६५	३	वेरिंद्री	वेरिंद्री
"	१३	तेइंद्रिने	तेइंद्रिने
०७०	४	पाच मान्निदेह	पांच महाविदेह
२७१	११	"	"
२७४	२१	सुमति	सुमति
३४७	८	पात्रो	पात्रे
"	१०	वंग्र	वध
३५४	९	कसत्री	असत्री
३५५	२	पदणे	पदने
"	४	मनुष्यनी	मनुष्यणी
"	५	अयाप्ता	अपर्याप्ता
"	१२	समूर्च्छम्	समूर्च्छिम्
३६२	३	सच	सत्य
"	१०	विहार	व्यवहार
३६३	१२	वीरी	विर्य
३६४	४	अजोग	शुभ योग
३७७	५	नानादिक	स्नानादिक
"	१४	पांचमी	पांचमे
३८०	२२	भवसिया	भवसिद्धिया
३८५	२२	अनंत	अनंतगुणा
३८६	१	अवधि	अवधि नांणी
"	१२	श्रोत्र	श्रुत
३८७	६	पउत्ते	पञ्जेत्ते

१९८	२	५ सत्री तिर्यचक्रा अपर्याप्ता	} ५ सत्री तिर्यचक्रा पर्याप्ता अपर्याप्ता वनस्पती ॥
"	३	वन	
"	५	१०	०
३९९	४	१०१ मनुष्य असख्यानी०	} १०१ समुल्लिखित म- नुष्य
३९९	"	१७१	
४००	५	देवलोक	देवताना
४०४	३	तित्ये	तित्ये
४१८	२३	राग	राग द्वार
४१९	३	कल्प	कल्प द्वार

अन्तिम पृष्ठ श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
०	१ श्रीमद्भद्र	श्रीमद्
"	१ शिष्या	शिष्य
	४ सुमहलं	सुमगल
मुनिवरेष्वभ्य- र्थना	४ पदाब्ज	पदाब्ज

(१) "सिद्धांत शिरोमणि" की अन्त 'णि' ह्रस्व रहना चाहीये-

(२) जहां 'प्रकरण पहिला अकलंक स्तोत्र' हे, वहां "प्रकरण पहिला स्तोत्र" एसा होना.

(३) जहां 'प्रकरण द्वितीय छन्द.' हे, वहां 'प्रकरण दूसरा छन्द' यह होना.

## ( जाहिर खबर. )

वाचक वर्ग !

इसके शिवाय और भी कहीं जगह बहुत अशुद्धियें ( ह्रस्व-दीर्घ प्लुत स्वल्पविराम अर्द्धविराम पूर्णविराम पटच्छेद इत्यादि ) रह गई हैं. जिस्को सर्व स्वधरमी बंधु सुधारके पढ़ेंगे एसी आशा है.

( नोट ) इसमें ग्रंथ कर्त्ताका ओर प्रेस मालिकका कोई दोष नहीं है.

आपका हितैषी.

मगनमल गणेशमल कासवा.

मु० हिंमणघाट.

जि० वर्धा ( सी. पी. )



